कपड़ा पहन लिया करें और किसी को खाना पकाने का हुक्म फ़रमा दिया करें, ताकि आप उन लोगों को खिलायें और आप भी उनके साथ खा लिया करें। हज़रत उमर रज़ि॰ ने इर्शाद फ़रमाया, यह तो तुम्हें मालूम है कि आदमी के हालात से उसके घर वाले ही अच्छी तरह वाक़िफ़ हुआ करते हैं। हज़रत हफ़्सा रज़ि॰ ने अर्ज़ किया, बेशक, हज़रत उमर रज़ि॰ ने फ़रमाया, मैं तुम को क़सम देकर पूछता हूँ, क्या तुम्हें मालूम नहीं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नुबुव्वत के बाद इतने साल ज़िंदा रहे, इस ज़माने में हुज़ूर सल्ल॰ और हुज़ूर सल्ल॰ के घर वाले अगर रात को खाना नोश फ़रमा लेते थे, तो दिन में भूखे रहते थे और दिन में खा लेते थे, तो रात को भूखे रहते थे। क्या तुम्हें मालूम नहीं कि नुबुव्वत के बाद इतने साल तक हुज़ूर सल्ल॰ ज़िंदा रहे, लेकिन हुज़ूर सल्ल॰ ने और उनके घर वालों ने ख़ैबर के फ़त्ह होने तक कभी भी पेट भर कर खजूरें भी नहीं खायीं। मैं तुम से क़सम देकर पूछता हूँ, क्या तुम्हें मालूम नहीं कि एक मर्तबा तुमने ऊँचे ख़्वान पर (मेज़ की तरह) खाना रख दिया था, तो हुज़ूर सल्ल॰ के चेहरा-ए -अन्वर पर तग़य्युर आ गया था, यहां तक कि उसको हटा कर ज़मीन पर खाना रखा गया (जब हुज़ूर ने नोश फ़रमाया) मैं तुम से क़सम देकर पूछता हूँ, कि क्या तुम्हें मालूम नहीं कि हुज़ूर सल्ल॰ अपनी अबा को (चादर की एक क़िस्म) दोहरा करके उस पर आराम फ़रमाया करते थे। तुमने एक मर्तबा उसको चोहरा (चार तेह) करके बिछा दिया था तो हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि तुम ने मुझे रात के उठने से रोका (कि चार तह हो जाने से बिस्तरा नर्म हो गया, जिस से नींद अच्छी तरह आ गयी) इसको दोहरा ही कर दो जैसा कि रोज़ाना हुआ करता था। मैं तुम से क़सम देकर पूछता हूँ कि क्या तुम्हें मालूम नहीं कि हुज़ूर सल्ल॰ अपना कपड़ा धोने के लिए बदने मुबारक से उतारते और उसको धोते, ऐसी हालत में अगर बिलाल (रज़ि॰) नमाज़ के लिए बुलाने आ जाते थे तो हुज़ूर सल्ल॰ के पास दूसरा कपड़ा न था, जिसको पहन कर नमाज़ पढ़ायें, हुज़ूर सल्ल॰ उसी को खुश्क करके पहन कर नमाज़ पढ़ाया करते थे। मैं तुम से क़सम देकर पूछता हूँ कि क्या तुम्हें मालूम नहीं कि बनू ज़फ़र की एक औरत ने हुज़ूर सल्ल॰ के लिये दो कपड़े तैयार किये थे। एक लुंगी, एक चादर, उन में से उसने एक पहले भेज दिया, दूसरे को भेजने में देर लगी तो हुज़ूर सल्ल॰ उसी को (बदन पर इस तरह लपेट कर दोनों कोनों में गर्दन पर गिरह लगायी थी। कि बदन न खुल जाये) पहन कर नमाज़ के लिए तशरीफ़ ले गये,

हुज़ूर सल्ल॰ के पास दूसरा कपड़ा न था, जिस को पहन कर नमाज़ के लिए तशरीफ़ ले जाते।

इसी तरह और वाक़िआत गिनवाते रहे, यहां तक कि उन वाक़िआत को याद दिला कर हज़रत हफ़्सा रज़ि॰ को भी रूलाया और ख़ुद भी इतने रोये कि चीख़ें मारने लगे। हमें यह अंदेशा हुआ कि इस ग़म में कहीं उनकी जान न निकल जाये। एक और हदीस में है कि हज़रत उमर रज़ि॰ ने फ़रमाया, मेरे दो रफ़ीक़ थे (हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और हज़रत अबू बक्र रज़ि॰) वे दोनों एक ही रास्ते पर चले, अगर मैं उनका रास्ता छोड़ कर दूसरा रास्ता इख़्तियार करूँ तो मेरे साथ भी वह मामला नहीं किया जायेगा जो उन के साथ किया गया मैं ख़ुदा-ए-पाक की क़सम उनकी (दुनिया की) सख़्त ज़िन्दगी पर अपने आपको मजबूर करूँगा ताकि (आख़िरत की) उनकी शादाब ज़िन्दगी को पा सकूँ। *(एह्या)*

फ़तावा आलमगीरिया में लिखा है कि खाने के चंद मरातिब हैं :-

1. पहला दर्जा फ़र्ज़ है और वह इतनी मिक़्दार है जिस से आदमी हलाकत से बचे। अगर कोई शख़्स इतना कम खाए या खाना पीना छोड़ दे जिस से हलाक हो जाए तो गुनाहगार होगा, और

2. दूसरा दर्जा सवाब का है कि इतनी मिक़्दार खाए, जिस से खड़े होकर नमाज़ पढ़ी जा सके और रोज़ा सहूलत से रख सके।

3. तीसरा दर्जा जायज़ का है और वह नं॰ 2 की मिक़्दार पर पेट भरने की मिक़्दार तक इज़ाफ़ा है ताकि बदन में क़ुव्वत पैदा हो। इस दर्जे में न तो सवाब है, न गुनाह है, मामूली हिसाब इस में है बशर्ते कि माल हलाल तरीक़े से हासिल हुआ हो,

4. चौथा दर्जा हराम है, वह पेट भरने से ज़ायद मिक़्दार है अलबत्ता इस दर्जे में अगर मक़्सूद रोज़े पर क़ुव्वत हो कि कल को रोज़ा रखना है या यह ग़रज़ हो कि मेहमान भूखा न रहे, तो इस मिक़्दार में भी मुज़ाइक़ा नहीं और कम खाने का ऐसा मुजाहदा, जिससे फ़राइज़ में नुक़्सान आवे, जायज़ नहीं, अलबत्ता अगर इस में नुक़्सान न आवे तो कम खाने का मुजाहदा करने में मुज़ाइक़ा नहीं कि इस में नफ़्स की इस्लाह भी है और खाना भी रग़्बत से खाया जाता है। इसी तरह किसी जवान को कम खाने का मुजाहदा, ताकि उस की शहवत का ज़ोर टूट

जाये, जायज़ है। (आलमगीरिया)

इस तक़्सीम में नं॰ 2 पर साहिबे दुर्रे मुख़्तार रह॰ वग़ैरह ने कलाम किया है और इतनी मिक़्दार को फ़र्ज़ में दाख़िल किया है जिस से खड़े होकर नमाज़ पढ़ी जा सके। आलमगीरी की अख़ीर इबारत से भी इस की ताईद होती है।

(١٢) عن علیؓ قال قال رسول اللّٰہ صلی اللّٰہ علیہ وسلم من رضی من اللہ بالیسیر من الرزق رضی اللّٰہ منہ بالقلیل من العمل رواہ البیہقی فی الشعب کذا فی المشکوٰۃ

12. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जो शख़्स हक़ तआला शानुहू से थोड़ी रोज़ी पर राज़ी रहे, हक़ तआला शानुहू भी उसकी तरफ़ से थोड़े से अमल पर राज़ी हो जाते हैं।

फ़ायदाः- इस हदीसे पाक में आमदनी की कमी में हक़ तआला शानुहू के एक ख़ास एहसान पर तंबीह की गयी है कि इस सूरत में आदमी की तरफ़ से अगर नेकियों में कमी होती है, वह मालिकुल मुल्क भी उस कमी को बख़ुशी क़ुबूल फ़रमा लेते हैं। इस के बिल मुक़ाबिल जब अल्लाह तआला शानुहू की तरफ़ से अताया में इफ़रात हो और आदमी किसी चीज़ में कमी को भी गवारा न करे, तो उस मालिक की तरफ़ से भी यही मुतालबा है कि फिर उसके हुक़ूक़ की अदायगी में तुम्हारी तरफ़ से भी इफ़रात होना चाहिए और ज़ाहिर है कि जिस मुलाज़िम को तनख़्वाह मुंह मांगी दी जाए, फिर वह अपनी मन्सबी ख़िदमत में कोताही करे तो उसकी नमक हरामी में क्या तरद्दुद है,लेकिन हमारा मामला इसके बरअक्स है कि ग़ुरबा को तो अल्लाह तआला की तरफ़ रुजूअ़ करने की तौफ़ीक़ भी हो जाती है, ज़िक्र और नवाफ़िल के लिए वक़्त भी मिल जाता है, लेकिन जहां चार पैसे हाथ में आए या उनके आने के असबाब पैदा हुए, फिर फ़र्ज़ नमाज़ों के वास्ते भी वक़्त नहीं मिलता और क़लील रोज़ी पर क़नाअत जब हासिल हो सकती है जब आदमी पांच बातों का एहतिमाम करेः-

1. अपने इख़्राजात में कमी करे, ज़रूरत की मिक़्दार से ज़्यादा ख़र्च न करे, उलमा ने लिखा है कि तंहा आदमी हो तो उसको एक जोड़ा काफ़ी है, कई कई जोड़े बनाने की ज़रूरत नहीं है, ऐसे ही मामूली रोटी सालन पर गुज़र हो सकता है। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जो ख़र्च में मियाना रवी इख़्तियार करे, वह फ़क़ीर नहीं होता।

2. अगर बक़द्रे ज़रूरत मयस्सर हो तो आइंदा की फ़िक्र में न पड़े और

हक़ तआला शानुहू के वायदे पर एतिमाद करे कि हक़ तआला शानुहू ने रोज़ी का ज़िम्मा ले रखा है। शैतान हमेशा आदमी को आइन्दा की सोच में डाले रखा करता है कि कुछ ज़ख़ीरा फ़ंड के तौर पर जमा रखना चाहिए, आदमी के साथ हरज भी लगा हुआ है, बीमारी भी लगी हुई है, वक़्ती इख़राजात भी पेश आते रहते हैं फिर तुझे दिक़्क़त और मशक़्क़त होगी और इन ख़्यालात की वजह से उसको मशक़्क़त और आइंदा के फ़िक्र और सोच में परेशान रखा करता है, और फिर आदमी का मज़ाक उड़ाया करता है कि यह बेवक़ूफ़ आइंदा की तक्लीफ़ के डर से जो मौहूम है, इस वक़्त की यक़ीनी मशक़्क़त और तक्लीफ़ उठा रहा है।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि॰ से इर्शाद फ़रमाया कि अपने ऊपर ज़्यादा ग़म सवार न करो, जो मुक़द्दर में है, वह होकर रहेगा और जितनी रोज़ी तुम्हारी है, वह आकर रहेगी। हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि हक़ तआला शानुहू अपने मोमिन बंदे को रोज़ी उस जगह से अता फ़रमाते हैं जहां से उसका गुमान भी न हो और क़ुरआन पाक में भी यह मज़्मून वारिद है।

3. इस अम्र पर ग़ौर किया करे कि थोड़े पर क़नाअत में लोगों से इस्तिग़्ना की कितनी बड़ी इज़्ज़त हासिल है और हिर्स और तमअ् में लोगों के सामने कितना ज़लील होना पड़ता है। इसको बहुत एहतिमाम से ग़ौर किया करे कि उसको एक तक्लीफ़ ज़रूर बर्दाश्त करनी है या लोगों के सामने हाथ फैलाने की ज़िल्लत की या अपने नफ़्स को लज़ीज़ चीज़ों से रोकने की। और यह दूसरी तक्लीफ़ जो है, उस पर अल्लाह के यहां सवाब का वायदा भी है और पहली में आख़िरत का वबाल है, इसके अलावा लोगों के सामने हाथ फैलाने वाला आदमी उनको हक़ बात कहने से रूक जाता है। अक्सर दीन के बारे में मुदाहनत करनी पड़ती है। हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि आदमी की इज़्ज़त उसका लोगों से इस्तिग़्ना है। इसी वजह से मशहूर मक़ूला है कि जिस से तू इस्तिग़्ना करे तू उस का हमसर है (यानी उसे देने पर मजबूर नहीं है) और जिसकी तरफ़ एहतियाज पेश करे, उसका क़ैदी है और जिस पर एहसान करे, उसका हाकिम है।

4. दुनियादार मालदारों के अंजाम को सोचा करे, यहूद नसारा और बेदीन सरवत वालों का अंजाम सोचे, और अंबिया और औलिया का अंजाम सोचे उन के हालात को ग़ौर से पढ़े और तहक़ीक़ करे, फिर अपने नफ़्स से पूछे कि अल्लाह के मुक़र्रब लोगों की जमाअत में शरीक होना पसंद करता है या

अहमक़ों और बेदीन लोगों की मुशाबहत पसंद करता है।

5. माल के ज़्यादा होने में जो ख़तरात पहले बयान हो चुके हैं, उन को ग़ौर किया करे कि कितने मसाइब इसके साथ हैं, जब आदमी इन पांचों को ग़ौर करता रहेगा, तो थोड़े पर क़नाअत आसान हो जायेगी। (एह्या)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि॰ हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद नक़ल करते हैं कि वह शख़्स फ़लाह को पहुँच गया जो मुसलमान हो और थोड़ी रोज़ी दिया गया हो और हक़ तआला शानुहू ने उसको उसी पर क़नाअत अता फ़रमा रखी हो। हज़रत फ़ुज़ाला बिन उबैद रज़ि॰ हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद नक़ल करते हैं कि मुबारक है वह शख़्स जिसको इस्लाम लाने की तौफ़ीक़ हो गयी हो और उस की आमदनी बक़द्रे ज़रूरत हो और उस पर वह क़ानेअ् हो। (तर्ग़ीब)

हज़रत अबूदर्दा रज़ि॰ हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद नक़ल करते हैं कि जब भी सूरज निकलता है उसके दोनों जानिब फ़रिश्ते रोज़ाना यह एलान करते हैं, ऐ लोगो! अपने रब की तरफ़ मुतवज्जह हो जाओ, जो माल थोड़ा हो और वह किफ़ायत कर जाए, वह बेहतर है उस कसीर माल से जो अल्लाह तआला शानुहू के अलावा दूसरी तरफ़ मश्ग़ूल करे।

(١٣) عن معاذ بن جبلٌ ان رسول الله صلى الله عليه وسلم لما بعث به الى اليمن قال اياك والتنعم فان عباد الله ليسوا بالمتنعمين رواه احمد كذا فى المشكوٰة

13. हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि जब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनको यमन (का हाकिम बना कर) भेजा तो यह इर्शाद फ़रमाया कि अपने आपको नाज़ व नेमत में परवरिश करने से बचाते रहना, इसलिए कि अल्लाह के नेक बंदे नाज़ व नेमत में लगने वाले नहीं होते।

फ़ायदा:- हाकिम और गवर्नर हो जाने के बाद राहत व आराम के असबाब कसरत से मुहैया हो ही जाते हैं, हर क़िस्म की नेमतें भी आसानी से मयस्सर हो जाती हैं, इसलिए हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने, जब कि यह हाकिम बना कर भेजे जा रहे थे, इस चीज़ से बचने की ख़ुसूसी तंबीह फ़रमायी। हुज़ूर सल्ल॰ की वसाया में, इसी तरह हज़रात ख़ुलफ़ा-ए-राशिदीन की वसाया और अहकाम में इस चीज़ पर ख़ास तौर से तंबीहें बड़ी क़सरत से की गयी हैं।

—हज़रत फ़ुज़ाला बिन उबैद रज़ि॰, अमीर मुआविया रज़ि॰ की तरफ़ से मिस्र के क़ाज़ी थे, उनकी ख़िदमत में एक सहाबी रज़ि॰ किसी हदीस की तहक़ीक़ के लिए तशरीफ़ ले गये, उन्होंने जाकर देखा कि क़ाज़ी साहब के बाल भी परेशान से हैं और पांव भी नंगे हैं, उन्होंने दर्याफ़्त किया कि तुम इस ज़मीन के हाकिम हो, मैं तुम्हारे बालों को बिखरा हुआ देख रहा हूँ। हज़रत फ़ुज़ाला रज़ि॰ ने फ़रमाया कि हुज़ूर सल्ल॰ ने हमें ज़ेब व ज़ीनत की कसरत से मना फ़रमाया था, फिर उन्होंने पूछा कि मैं तुम्हें नंगे पावं देख रहा हूँ, हज़रत फ़ुज़ाला रज़ि॰ ने फ़रमाया कि हमें हुज़ूर सल्ल॰ का यह भी इर्शाद था कि कभी नंगे पांव भी चला करें। अब्दुल्लाह में बिन मुग़फ़्फ़ल रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल॰ ने बालों में रोज़ाना कंघा करने से मना फ़रमाया है। (अबू दाऊद)

(١٤) عن جبير بن نفيرٌ مرسلاً قال قال رسو ل الله صلى الله عليه وسلم ما اوحى الى ان اجمع المال واكون من التاجرين ولكن اوحى الى ان سَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَكُن مِّنَ السّٰجِدِيْنَ وَاعْبُدْ رَبَّكَ حَتّٰى يَاْتِيَكَ الْيَقِيْنُ (رواه فى شرح السّنة وابونعيم فى الحلية عن ابى مسلم كذا فى المشكوٰة

14. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि मुझे हक़ तआला शानुहू ने यह वही नहीं भेजी कि मैं ताजिर बनूं और माल जमा करूँ, बल्कि यह वही भेजी है कि (ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तुम अपने परवर दिगार की तस्बीह और तहमीद करते रहो और नमाज़ें पढ़ने वालों में रहो और अपने रब की इबादत करते रहो, यहां तक कि (इसी हालत में) तुमको मौत आ जाये।

फ़ायदा:- यह वही जिसकी तरफ़ इशारा फ़रमाया है, सूरः हिज्र की आख़िरी आयत है और हदीसे पाक का यह मज़्मून मुतअद्दद सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम से नक़ल किया गया। चुनांचे सुयूती रह॰ ने दुर्रे मंसूर में हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद, अबू मुस्लिम ख़ौलानी, अबूदर्दा रज़ियल्लाहु अन्हुम अज्मईन से हुज़ूर सल्ल॰ का यह इर्शाद नक़ल किया है।

एक और हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद नक़ल किया गया है कि बेहतरीन आदमी दो शख़्स हैं:-

1. एक वह जो अपने घोड़ों की बाग पकड़े हुए अल्लाह के रास्ते में जान दे देने को तलाश करता फिरता हो।

2. दूसरा वह शख़्स जिसके पास चंद बकरियाँ हों और किसी जंगल या पहाड़ी में (यानी ग़ैर मारूफ़ जगह, जहां यकसूई हो) नमाज़ पढ़ता हो, ज़कात देता हो, अपने मौला की इबादत में मशग़ूल रहे, यहां तक कि उसको उसी हालत में मौत आ जाये, आदमियों को उस से ख़ैर के सिवा कोई (शर) न पहुँचे।

(दुर्रे मंसूर)

हक़ तआला शानुहू के इस पाक इर्शाद की तामील जिस तरह हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने विसाल तक करके दिखा दी, वह हुज़ूरे अक़्दस सल्ल॰ की सीरत पर नज़र रखने वालों से मख़्फ़ी नहीं और फिर जितने जितने हक़ तआला शानुहू की तरफ़ से इन्आमात ज़्यादा होते थे, उतना ही हुज़ूर सल्ल॰ की तरफ़ से इबादत में इन्हिमाक ज़्यादा होता था।

हज़रत आइशा रज़ि॰ फ़रमाती हैं कि जब सूरः फ़त्ह नाज़िल हुई तो हुज़ूर सल्ल॰ ने इबादत में और भी ज़्यादा कोशिश शुरू कर दी। किसी ने पूछा, या रसूलल्लाह सल्ल॰ इस आयते शरीफ़ा में तो आपकी अगली पिछली लग्ज़िशें सब ही माफ़ कर दी गयीं, फिर इतनी मशक़्क़त हुज़ूर सल्ल॰ बर्दाश्त करते हैं? हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया क्या मैं शुक्र गुज़ार बंदा न बनूँ।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि जब सूरः फ़त्ह नाज़िल हुई तो हुज़ूर सल्ल॰ ने इतनी तवील नमाज़ कर दी कि पांव पर वरम आ गया और इबादत में इतनी कसरत कर दी कि सूख कर पुरानी मशक की तरह से हो गये और जब वह अर्ज़ किया गया जो ऊपर गुज़रा तो हुज़ूर सल्ल॰ ने वही जवाब इर्शाद फ़रमाया कि क्या मैं शुक्र गुज़ार बंदा न बनूँ?

हज़रत हसन रज़ि॰ कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल॰ इबादत में इतनी ज़्यादा कोशिश फ़रमाते थे कि पुरानी मशक की तरह से बिल्कुल सूख गये थे, इसके बाद फिर वही सवाल व जवाब ज़िक्र फ़रमाया। हज़रत अबू जुहैफ़ा रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल॰ इतनी लंबी नमाज़ पढ़ते थे कि पांव मुबारक फट गये थे। हज़रत अनस रज़ि॰ कहते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इतनी देर तक नमाज़ में खड़े रहते थे कि पांव पर वरम आ गया था।

इनके अलावा और भी बहुत सी अहादीस में कसरत से इस क़िस्म के मज़्मून नक़ल किये गये और उन में से अक्सर में लोगों की तरफ़ से यही दर्ख़्वास्त कि हुज़ूर सल्ल॰ के लिए तो माफ़ी का क़त्ई इर्शाद क़ुरआन पाक में

आ चुका है और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यही जवाब "क्या मैं शुक्र गुज़ार बंदा न बनूँ?" ज़िक्र किया गया है। (दुर्रे मंसूर)

क्या हम लोग भी कभी इस चीज़ को सोच लेते हैं कि हक़ तआला शानुहू का फ़लां ख़ुसूसी इंआम हुआ है, उसके शुक्राने में दो रकअत मुख़्तसर ही पढ़ लें।

मुतअद्द अहादीस में आया है कि जब हुज़ूर सल्ल॰ के पास कहीं से फ़तह की ख़बर आती या कोई ख़ुशी की बात सुनने में आती, हुज़ूर सल्ल॰ शुक्र के लिए सज्दे में गिर जाते थे और इन सब अहवाल के बावजूद अल्लाह तआला शानुहू से ख़ौफ़ का यह हाल था कि :-

बुख़ारी शरीफ़ में हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद नक़ल किया गया, ख़ुदा की क़सम, मुझे मालूम नहीं, हालांकि मैं अल्लाह का रसूल हूँ कि क़ियामत में मेरे साथ और तुम्हारे साथ क्या मामला किया जायेगा। *(मिश्कात)*

"मालूम नहीं का मतलब यह है कि तफ़्सीली अहवाल का इल्म नहीं, बा-इख़्तियार बादशाह को हक़ है कि जो चाहे करे।"

हज़रत उम्मे दर्दा रज़ि॰ ने अपने ख़ाविंद हज़रत अबू दर्दा रज़ि॰ से अर्ज़ किया, कि आप इस तरह माल की तलाश और जुस्तजू क्यों नहीं करते, जिस तरह फलां शख़्स करते हैं। (आख़िर वह भी तो माल कमाते हैं, तुमको तो इसकी फ़िक्र ही नहीं) हज़रत अबूदर्दा रज़ि॰ ने फ़रमाया कि मैं ने हुज़ूर सल्ल॰ से सुना है कि तुम्हारे आगे एक बड़ी दुश्वार गुज़ार घाटी (मैदाने हश्र) आने वाली है, उसमें से भारी बोझ वाले (जिनके ज़िम्मे हिसाब किताब का बोझ हो, सहूलत से) नहीं गुज़र सकते, इसलिए मेरा दिल चाहता है कि मैं उस घाटी में हल्का रहूँ। *(मिश्कात)*

यानी मेरे ज़िम्मे हिसाब का ज़्यादा बोझ न हो ताकि मैं हल्का फुल्का उसमें से गुज़र जाऊँ।

इन हज़रात को बहुत ही ख़ौफ़ इसका रहता था कि क़ियामत में क्या गुज़रेगी? इसलिए हर वक़्त वहां की फ़िक्र और तैयारी में मशग़ूल रहते थे और हमको हर वक़्त दुनिया का फ़िक्र सवार रहता है और उस घाटी का ख़्याल भी नहीं आता।

हस्सान बिन सिनान रह॰ एक जगह जा रहे थे, रास्ते में एक मकान नज़र

पड़ गया जो पहले से वहां न था, कहने लगे, यह मकान कब बना है, फिर अपने नफ़्स को ख़िताब करके कहा, तूने फ़ुज़ूल बात क्यों पूछी? तुझे इस से क्या ग़रज़ थी कि यह कब बना? तुझे एक साल रोज़े रखने की सज़ा दूँगा। एक साल तक रोज़े रखे कि फ़ुज़ूल बात क्यों की?

मालिक बिन ज़ैग़म रज़ि॰ कहते हैं कि हज़रत रिबाह क़ैसी रज़ि॰ हमारे घर अस्र के बाद आए और मेरे वालिद को पूछने लगे कि कहां है? मैं ने कहा सो रहे हैं। कहने लगे कि यह वक़्त क्या सोने का है? यह कह कर वापस चले गये। मैं ने उनके पीछे आदमी भेजा कि अगर आप फ़रमावें तो जगा दें। वह आदमी उनके पीछे गया तो वह इतने में एक क़ब्रस्तान में दाख़िल हो चुके थे और वहां अपने आप को मलामत कर रहे थे और यह कह रहे थे, हां! क्या यह सोने का वक़्त है? तुझे इस से क्या मतलब था, आदमी जिस वक़्त चाहे सोए, तुझे क्या ख़बर थी कि यह सोने का वक़्त है या नहीं है। मुझे अल्लाह की क़सम कि तुझे साल भर तक ज़मीन पर सोने के लिए नहीं लिटाऊँगा। मगर यह कि तू बीमार हो जाये या तेरी अक़्ल जाती रहे तो मजबूरी है। तेरा नास हो, तू कब तक लोगों पर तान करता रहेगा। तू अपनी हरकतों से बाज़ नहीं आयेगा। यह कहते जाते थे और रोते जाते थे। वह क़ासिद यह देख कर वापस आ गया और उस की हिम्मत न पड़ी कि उनसे कोई बात करे।

हज़रत तल्हा रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि एक सहाबी रज़ि॰ एक दिन अपने कपड़े उतार कर सख़्त गर्म रेत में लोट रहे थे और यह कह रहे थे कि मज़ा चख ले और जहन्नम की गर्मी इस से बहुत ज़्यादा सख़्त होगी। रात को मुर्दार बना (सोता) रहता है, दिन को बेकार फिरता है। वह इसी हाल में थे कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनको देख लिया, उनके पास तशरीफ़ ले गये। वह अर्ज़ करने लगे, हुज़ूर सल्ल॰! मेरी तबीअत पर ऐसा ग़लबा इसका हुआ क्या अर्ज़ करूँ? हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया तुम्हें इसकी ज़रूरत न थी। तुम्हारे लिए आसमान के सब दरवाज़े खोल दिये गये और अल्लाह जल्ल शानुहू तुम्हारे साथ अपने फ़रिश्तों से फ़ख़्र कर रहे हैं, फिर हुज़ूर सल्ल॰ ने अपने साथियों से फ़रमाया कि अपने लिए इन से तोशा लो, सब ने उन से दुआ की दर्ख़्वास्त की, फिर हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि सबके लिए दुआ करो।

हज़रत हुज़ैफ़ा बिन क़तादा रज़ि॰ कहते हैं कि एक शख़्स ने एक बुज़ुर्ग से पूछा कि जब तुम्हारा नफ़्स किसी चीज़ को चाहे, तो तुम इसकी क्या सूरत

इख़्तियार करते हो, वह कहने लगे कि मुझे अपने नफ़्स से जितना बुग़्ज़ है उतना सारी दुनिया में किसी से भी नहीं, भला मैं उसकी ख़्वाहिश को कैसे पूरा कर सकता हूँ, जिस से मुझे इस क़दर नफ़रत हो।

हज़रत मज्मअ् रज़ि॰ ने एक मर्तबा कोठे की तरफ़ मुँह उठाया तो एक ना मेह्रम औरत पर निगाह पड़ गयी, उन्होंने अह्द कर लिया कि जब तक ज़िंदा रहूँगा कभी सर ऊपर नहीं उठाऊंगा।

इसके अलावा बहुत से वाक़िआत इन हज़रात के इमाम ग़ज़ाली रह॰ ने नक़ल किये हैं, जिन में ज़रा सी मामूली बात भी अगर उनसे सादिर हो जाती थी तो अपने नफ़्स को सख़्त सज़ा देते थे और यह सब क्यों था, सिर्फ़ उसी घाटी के डर की वजह से जिस का अबूदर्दा रज़ि॰ ने अपनी बीवी से ज़िक्र किया, और हम सब उस से ऐसे मुत्मइन हैं जैसा कि वह घाटी इन हज़राते सहाबा-ए-किराम रज़ि॰ के ही रास्ते में आयेगी, हम तो हवाई जहाज़ में सवार होकर उस पर से गुज़र जायेंगे। हम लोग किस क़द्र अपनी जानों पर ज़ुल्म कर रहे हैं कि भूल कर भी उस घाटी का ख़्याल नहीं आता?

इसके बाद इमाम ग़ज़ाली रह॰ तहरीर फ़रमाते हैं कि बड़े ताज्जुब की बात है कि तू अपने ग़ुलाम को (अपने नौकर को) अपनी औलाद को जब उन से कोई कोताही हो जाती है, सज़ा देता है और यह कहता है कि अगर तंबीह न की गयी तो वे बेक़ाबू हो जायेंगे, सरकश हो जायेंगे, लेकिन अपने नफ़्स की कभी परवाह नहीं करता कि यह सरकश होता जा रहा है। दूसरों की सरकशी से तुझे इतना नुक़्सान नहीं पहुँचता जितना तेरे नफ़्स की सरकशी से तुझे नुक़्सान पहुँचता है, इसलिये कि दूसरों की सरकशी से अगर नुक़्सान पहुँचता है तो वह तेरी दुनिया का नुक़्सान है और तेरे नफ़्स की सरकशी से तेरी आख़िरत को नुक़्सान पहुँच रहा है, जो कभी फ़ना होने वाली नहीं हैं, उसकी नेमतें ख़त्म होने वाली नहीं हैं, उनका नुक़सान कितना सख़्त नुक़्सान है। यही वजह है कि असलाफ़ में से अगर किसी से आख़िरत के कामों में कुछ कोताही हो जाती थी तो वह उसकी तलाफ़ी की इंतहाई फ़िक्र करता था।

हज़रत उमर रज़ि॰ की एक मर्तबा अस्र की नमाज़ जमाअत से फ़ौत हो गयी तो उन्होंने उसकी तलाफ़ी में एक बाग़ जिसकी क़ीमत दो लाख दिरम थी, सदक़ा कर दिया।

हज़रत इब्ने उमर रज़ि॰ की जिस दिन किसी नमाज़ की जमाअत फ़ौत हो जाती तो उस दिन शाम को सारी रात जागा करते थे। एक दिन मग़्रिब की नमाज़ को देर हो गयी थी तो दो ग़ुलाम उसकी तलाफ़ी में आज़ाद किये।

जब किसी शख़्स को इबादत में सुस्ती पैदा हो तो मुनासिब यह है कि हक़ तआला शानुहू के किसी ऐसे बंदे की सोहबत में रहे जो इबादत में ज़्यादा इन्हिमाक से मशग़ूल हो और अगर किसी ऐसे की सोहबत मयस्सर न आवे तो फ़िर ऐसे लोगों के अहवाल को इबरत और ग़ौर की निगाह से पढ़ा करे (जिन में से बहुत से वाक़िआत रौज़ुर्रियाहीन में लिखे हैं जिसका मुख़्तसर उर्दू तर्जुमा नुज़्हतुल बसातीन भी है।)

एक बुज़ुर्ग कहते हैं कि जब मुझे इबादात में सुस्ती होने लगती है तो मैं हज़रत मुहम्मद बिन वासेअ् रह॰ के हालात देखता हूँ और एक हफ़्ता मुसलसल इस अमल को जारी रखता हूँ। (इसी तरह दूसरे औलिया अल्लाह की सवानेह उमरियां हैं बशर्ते कि मोतबर हज़रात की लिखी हुई हों) कि इन लोगों के अहवाल का देखना इस शौक़ के पैदा करने के लिए बहुत ज़्यादा मुफ़ीद है और यह चीज़ भी सोचने की है कि उनकी सारी मशक़्क़तें और मेहनतें आख़िर ख़त्म हो गयीं, लेकिन अब हमेशा हमेशा के लिए उनकी नेमतें, उनकी राहतें बाक़ी रह गयीं जो कभी भी ख़त्म होने वाली नहीं हैं। किस क़दर हसरत है हम जैसों पर जो इन अहवाल को जानते और देखते हुए भी दुनिया कमाने और दुनिया की लज़्ज़तों में मशग़ूल रहते हैं और उन हमेशा के मज़े उड़ाने वालों के हालात से भी नसीहत नहीं पकड़ते।

हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू का इर्शाद है और बाज़ लोगों ने इसे हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद बताया है कि हक़ तआला शानुहू ऐसे लोगों पर रहम फ़रमाये जिनको लोग बीमार समझें और वे वाक़ेअ् (हक़ीक़त) में बीमार न हों, हज़रत हसन बसरी रह॰ फ़रमाते हैं कि उन को इबादात की कसरत ने मशक़्क़त में डाल रखा है जिस से लोग उनको बीमार समझते हैं।

उनका यह भी इर्शाद है कि मैं ने ऐसे हज़रात को देखा है और उन की सोहबतों में रहा हूँ, जिनको दुनिया की किसी चीज़ के आने से ख़ुशी न होती थी, जाने से रंज न होता था, उनकी निगाह में दुनिया के माल व मताअ् की हक़ीक़त उस मिट्टी से ज़्यादा ज़लील न थी जो जूतों में लगी रहती है।

मैं ने ऐसे लोगों को देखा है कि उम्र भर में कभी न उनका कोई कपड़ा तेह होकर रखा गया, न कभी किसी खाने की चीज़ के पकाने की फ़रमाइश की, न कभी सोने के लिए उनको बिस्तरे की ज़रूरत हुई, ज़मीन पर लेटे सो गये। ज़मीन के और उनके दर्मियान में कोई चीज़ भी आड़ न होती थी। वे लोग अल्लाह की किताब पर अमल करने वाले थे, उस के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत का इत्तिबाअ् करने वाले थे। जब रात हो जाती तो सारी रात पाँवों पर (नमाज़ में) खड़े रहते या ज़मीन पर अपने मुंह को (सज्दे में) बिछा देते और उनकी आंखों से उन के रूख़्सारों पर आंसुओं की लड़ी बंधी रहती। रात भर अपने रब से बातें करते रहते (सही हदीस में आया है कि नमाज़ी आदमी अल्लाह तआला से बातें करता है।) अज़ाब से निजात को अपने मौला से मांगते रहते, जब कोई नेक काम उन से हो जाता, उस पर अल्लाह तआला का बड़ा शुक्र अदा करते, उस से खुश होते और उस के क़ुबूल होने की दुआ करते, जब कोई बुरी बात हो जाती उस से बहुत रंजीदा होते, अल्लाह से तौबा करते, माफ़ी की दुआ और इस्तिग़फ़ार करते। इसी हाल में उन्होंने अपनी उम्रें गुज़ार दीं।

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० जब बीमार हुए तो एक मज्मा उनकी इयादत के लिए गया, उन में एक नौजवान निहायत कमज़ोर ज़र्द रंग, दुबला पतला भी था। हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० ने दर्याफ़्त फ़रमाया, तुम्हारा यह क्या हाल हो रहा है? वह कहने लगे कि आज़ार और बीमारियां लाहक़ (लगी) हैं। हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० ने फ़रमाया कि नहीं, सही बात बताओ? वह कहने लगे कि मैं ने दुनिया का मज़ा चखा, वह बहुत ही कड़वा निकला, उस की रौनक़, उस की हलावत, उस का लुत्फ़ उस की राहत मेरी निगाह में बहुत ही ज़लील बन गयी, उस का सोना और उस का पत्थर, मेरी निगाहों में बिल्कुल बराबर है, और अल्लाह तआला शानुहू का अर्श गोया हर वक़्त मेरे सामने रहता है और मैदाने हश्र में एक जमाअत का जन्नत की तरफ़ जाना, दूसरी जमाअत का जहन्नम में फेंका जाना मेरी निगाह के गोया सामने रहता है जिसकी वजह से मैं सारे दिन अपने को (रोज़े में) प्यासा रखता हूँ और सारी रात (अल्लाह की याद में) जागता रहता हूँ और ये दोनों चीज़ें भी अल्लाह तआला के सवाब और अज़ाब के मुक़ाबले में कोई भी हक़ीक़त नहीं रखतीं।

हज़रत दाऊद ताई रह० रोटी के टुकड़े पानी में भीगे हुए पी लिया करते थे, रोटी न खाते थे। किसी ने उन से इसकी वजह दर्याफ़्त की तो फ़रमाया कि

इसके पीने में और रोटी चबा कर खाने में क़ुरआन पाक की पचास आयतों का हर्ज होता है। एक दिन उनके घर में कोई शख़्स आया वह कहने लगा कि आपके हुजरे की कड़ी टूट गयी, वह फ़रमाने लगे कि मैं ने बीस बरस से इसकी छत नहीं देखी।

ये हज़रात जैसे फ़ुज़ूल बात करने से एहतिराज़ करते थे। ऐसे ही इधर उधर फ़ुज़ूल देखने से भी बचते थे।

मुहम्मद बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० कहते हैं कि मैं अहमद बिन रज़ीन रह० के पास सुबह से अस्र तक रहा, मैं ने उन को इधर उधर देखते हुए नहीं देखा, किसी ने उनसे इसके मुताल्लिक़ पूछा तो फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने ये आंखें इसलिए दी हैं कि इन से उस की अज़्मत और बड़ाई की चीज़ों को इब्रत की निगाह से देखे, जब यह न हो तो वह देखना ख़ता है।

हज़रत मस्रूक़ रज़ि० की बीवी कहती हैं कि मस्रूक़ रज़ि० की पिण्डलियों पर रात भर नमाज़ में खड़े रहने से वरम आ जाता था, जब वह नमाज़ में मुन्हमिक होते तो मैं उनके पीछे बैठी हुई उनकी हालत पर तरस खाकर रोती रहती थी।

हज़रत अबू दर्दा रज़ि० फ़रमाते हैं कि अगर दुनिया में तीन लज़्ज़त की चीज़ें न होतीं तो मेरे लिए इस दुनिया में एक दिन जीना भी गवारा न था:-

1. एक सख़्त गर्मी के दिन दोपहर के वक़्त (रोज़े में) प्यासे रहने की लज़्ज़त।

2. दूसरी आख़िरी शब (रात) में सज्दा करने में जो लुत्फ़ आता है, उस की लज़्ज़त,

3. तीसरी ऐसे बुज़ुर्गों की सोह़बत जिनकी बातों में उमदा मेवे ऐसे चुने जाते हैं जैसे बाग़ में से उम्दा से उम्दा फल छाँट कर चुने जाते हैं।

असवद बिन यज़ीद रह० इबादत में इतनी मशक़्क़त उठाते और गर्मियों की शिद्दत में रोज़े रखते कि उनका बदन काला पड़ गया था। अल्क़मा बिन क़ैस रज़ि० ने उन से पूछा कि आप अपने बदन को इस क़दर अज़ाब क्यों देते हैं? फ़रमाने लगे (क़्यामत में) इस के एज़ाज़ के लिए यानी यह मशक़्क़त इस लिए उठाता हूँ कि क़यामत के दिन इस बदन को एज़ाज़ नसीब हो जाये।

एक बुज़ुर्ग का क़िस्सा लिखा है कि वह रोज़ाना एक हज़ार रक्अत

नमाज़ खड़े होकर पढ़ते, जब पांव रह जाते यानी खड़े होने से आजिज़ हो जाते, तो एक हज़ार रक्अत बैठकर पढ़ते और अम्र के बाद आजिज़ी से बैठकर कहते या अल्लाह, इस मख़्लूक़ पर बड़ी हैरत है कि किस क़दर उन्होंने तेरा बदल दूसरी चीज़ों को बना लिया, कैसी ताज्जुब की बात है, उनका दिल तेरे सिवा किसी चीज़ से किस तरह मानूस होता है बल्कि ताज्जुब की बात यह है कि तेरे ज़िक्र के सिवा कोई दूसरी चीज़ उनके दिल में किस तरह चमकती है।

हज़रत जुनैद बग़दादी रह० फ़रमाते हैं कि मैं ने हज़रत सिर्री सक़ती रह० से ज़्यादा इबादत करने वाला किसी को नहीं देखा, अट्ठानवें बरस तक किसी ने उनको मरज़ुल मौत के अलावा लेटे हुए नहीं देखा।

हज़रत अबू मुहम्मद जरीरी रह० ने मक्का मुकर्रमा में एक साल का एतिकाफ़ किया, जिस में न तो बिल्कुल सोए, न बात की. न किसी लकड़ी या दीवार का साहारा लिया या टेक लगायी। हज़रत अबूबक्र कतानी रह० ने उन से पूछा कि इस मुजाहदे पर तुम्हें किस चीज़ से क़ुदरत हासिल हुई? वह फ़रमाने लगे कि अल्लाह तआला शानुहू ने मेरे बातिन की पुख़्तगी को देखा, उस ने मेरे ज़ाहिर को इस पर क़ुदरत अता फ़रमा दी। हज़रत अबूबक्र कतानी रह० ने यह सुन कर सोच और फ़िक्र में गर्दन झुका ली और थोड़ी देर कुछ सोचते रहे फिर इसी सोच व फ़िक्र में चले गये।

एक शख़्स कहते हैं कि मैं हज़रत फ़त्ह बिन सईद मूसली रह० के पास से गुज़रा, वह दोनों हाथ फैलाये रो रहे थे और उनके आंसू उंगलियों के बीच में से नीचे गिर रहे थे और ये ज़र्द थे (यानी आंसुओं में ख़ून की आमेज़िश थी) मैं ने उन से क़सम देकर पूछा कि यह ख़ून के आंसू किस सदमे में गिरा रहे हो, (ख़ैर तो है क्या आफ़त आ गयी) वह फ़रमाने लगे कि अगर तुम क़सम न देते तो मैं न बताता। हां मैं इस पर रो रहा हूँ कि मैं ने हक़ तआला शानुहू का जो हक़ मुझ पर था, उस को अदा नहीं किया। मैं ने कहा कि ख़ून क्यों आ गया? कहने लगे, कि इस ख़ौफ़ से कि मेरा यह रोना कहीं ग़ैर मोतबर और झूठा (निफ़ाक़ से) न हो।

वह शख़्स कहते हैं कि जब उनका इंतिक़ाल हो गया तो मैं ने उनको ख़्वाब में देखा, मैं ने उन से पूछा कि आपके साथ क्या मामला हुआ? फ़रमाया कि मेरी मग़्फ़िरत हो गयी। मैं ने पूछा कि तुम्हारे आंसुओं का क्या हश्र हुआ?

फ़रमाया कि हक़ तआला शानुहू ने मुझे अपने क़रीब फ़रमा कर इर्शाद फ़रमाया कि ये आंसू कैसे थे, मैं ने अर्ज़ किया इस पर रंज था कि आपका जो हक़ मुझ पर वाजिब है, वह मैं अदा न कर सका। इर्शाद हुआ कि ख़ून क्यों था? मैं ने अर्ज़ किया कि ख़ौफ़ से, कि यह रोना झूठा न हो, ग़ैर मोतबर न हो जाये। इर्शाद हुआ कि आख़िर तू इस सब से क्या चाहता था? मेरी इज़्ज़त की क़सम, तेरे किरामन कातिबीन चालीस साल से तेरे आमाल का सहीफ़ा ऐसे ला रहे हैं कि उस में कोई ख़ता लिखी हुई नहीं होती।

अब्दुल वाहिद बिन ज़ैद रह॰ कहते हैं कि मेरा गुज़र एक गिरजा पर हुआ, वहां एक राहिब (दुनिया से मुन्क़तअ़) रहता था, मैं ने उस को राहिब कह कर आवाज़ दी, वह न बोला, फिर दूसरी दफ़ा पुकारा, फिर भी न बोला, फिर तीसरी दफ़ा जब मैं ने पुकारा तो वह मेरी तरफ़ मुतवज्जह हुआ और कहने लगा कि मैं राहिब नहीं हूँ, राहिब वह शख़्स होता है जो अल्लाह ताला शानुहू से डरता हो, उस की किबरियाई में उस की ताज़ीम करता हो, उस की बलाओं पर सब्र करता हो, फिर उस के तक़्दीरी फ़ैसलों पर राज़ी हो, उस की नेमतों का शुक्र अदा करता हो, उस की अज़्मत के सामने तवाज़ोअ़ से रहता हो, उस की इज़्ज़त के मुक़ाबले में अपने को ज़लील रखता हो, उस की क़ुदरते कामिला का इताअत करने वाला हो, उस की हैबत से आजिज़ी करता हो, उस के हिसाब और उस के अज़ाब की हर वक़्त फ़िक्र में रहता हो, दिन में रोज़ा रखता हो, रात को बेदार रहता हो जहन्नम के ख़ौफ़ ने और मैदाने हश्र के सवाल ने उसकी नींद उड़ा दी हो, जिस में ये बातें हों, वह राहिब है, मैं तो एक हड़काया कुत्ता हूँ। इस वजह से यहां बैठ गया हूँ कि कहीं किसी को काट न खाऊँ।

मैं ने उस से पूछा क्या बात है कि लोग हक़ तआला शानुहू की बड़ाई को जानते हैं फिर भी उस से उनका रिश्ता टूटा हुआ है, उसने कहा कि सिर्फ़ दुनिया की मुहब्बत ने और उसकी ज़ेब व ज़ीनत ने उनका रिश्ता तोड़ रखा है। दुनिया गुनाहों का घर है, समझदार और आक़िल वह शख़्स है जो इसको अपने दिल से फेंक दे और अल्लाह जल्ल शानुहू की तरफ़ मुतवज्जह हो जाये, और ऐसे काम इख़्तियार करे जो अल्लाह तआला शानुहू के क़रीब कर दें।

हज़रत उवैस क़रनी रह॰ जो मशहूर बुज़ुर्ग हैं, किसी दिन फ़रमाते कि आज की रात रूकूअ़ करने की है, पस तमाम रात रूकूअ़ में गुज़ार देते, फिर कहते कि आज की रात सज्दे की है तो तमाम रात एक सज्दे में गुज़ार देते। जब

उत्बा गुलाम ताईब हुए तो खाने पीने की ज़रा भी परवाह न करते थे। उनकी मां ने एक मर्तबा उन से कहा, अपने नफ़्स पर रहम खा, कुछ राहत भी ले लिया कर, कहने लगे, उस पर रहम खाने ही के लिए सब कुछ कर रहा हूँ, थोड़े दिन की मशक़्क़त है, फिर हमेशा हमेशा राहत ही लेना है।

अब्दुल्लाह बिन दाऊद रह० कहते हैं कि ये (बुज़ुर्ग हज़रात) जब कोई इन में चालीस साल की उम्र को पहुँच जाता है तो वह बिस्तर उठा कर लपेट देता है यानी फिर सोने का नम्बर ख़त्म हो जाता है।

हज़रत कहमस बिन हसन रह० हर रात में एक हज़ार रक्अत नमाज़ पढ़ते और अपने नफ़्स को ख़िताब करके कहते कि ऐ हर बुराई की जड़ (नमाज़ के लिए) खड़ा हो जा। जब ज़ोअफ़ बहुत ज़्यादा हो गया तो रोज़ाना पांच सौ रक्अतें कर दी थीं और इस पर रोया करते थे कि मेरा आधा अमल जाता रहा।

हज़रत रबीअ् रह० कहते हैं कि मैं हज़रत उवैस क़रनी रह० के पास आया, वह सुबह की नमाज़ पढ़ कर तस्बीह पढ़ने में मशग़ूल हो गये थे, मुझे ख़्याल हुआ कि इस वक़्त इनका हरज होगा। मैं फ़राग़त के इंतिज़ार में बैठ गया, वह इसी हाल में बैठे पढ़ते रहे, यहां तक कि ज़ुहर का वक़्त हो गया, वह ज़ुहर की नमाज़ पढ़ने खड़े हो गये और अस्र की नमाज़ तक पढ़ते रहे फिर अस्र की नमाज़ से फ़ारिग़ होकर उसी जगह मग़्रिब तक बैठे रहे, फिर मग़्रिब की नमाज़ पढ़ी, इशा की नमाज़ पढ़ी, फिर सुबह तक वहीं जमे रहे, दूसरे दिन सुबह की नमाज़ के बाद बैठे थे, इसी हाल में कुछ ग़ुनूदगी सी आ गयी, चौंक कर कहने लगे या अल्लाह, ऐसी आंख से तुझ से पनाह मांगता हूँ जो बार बार सोती हो और ऐसे पेट से पनाह मांगता हूँ जो भरता ही न हो। मैं यह सब हालत देखकर वहां से यह कह कर चला आया कि मुझे तो इब्रत के वास्ते यही काफ़ी है, जो मैं ने देख लिया।

अहमद बिन हर्ब रह० कहते हैं, कि ताज्जुब तो उस शख़्स पर है जिसको यह मालूम है कि आसमानों पर उस के लिए जन्नत को आरास्ता किया जा रहा है और उसके नीचे जहन्नम भड़काई जा रही है, इन दोनों के दर्मियान उसको कैसे नींद आती है। एक शख़्स कहते हैं कि मैं हज़रत इब्राहीम बिन अधम रह० के पास गया, वह इशा की नमाज़ के बाद अपनी अबा में लिपट कर एक करवट लेते और सुबह तक उसी तरह लेटे रहे न तो हरकत की, न करवट बदली, सुबह

को उठकर बग़ैर वुज़ू किये नमाज़ पढ़ ली। मैं ने उनसे कहा अल्लाह तआला तुम्हारे हाल पर रहम करे। सारी रात लेटे सोते रहे और बग़ैर वुज़ू ही नमाज़ पढ़ ली। फ़रमाने लगे कि मैं सारी रात कभी जन्नत के बाग़ों में दौड़ता था कभी जहन्नम की घाटियों में, ऐसी हालत में नींद कहां आ सकती थी?

कहते हैं कि अबूबक्र बिन अयाश रह॰ चालीस बरस तक बिस्तरे पर नहीं लेटे और अपने बेटे को नसीहत की कि इस खिड़की (कोलकी) में गुनाह न करना, मैं ने इस में बारह हज़ार क़ुरआन पाक ख़त्म किये हैं। जब उनका इंतिक़ाल होने लगा तो मकान के एक कोने की तरफ़ इशारा करके फ़रमाया कि इस कोने में मैं ने चौबीस हज़ार क़ुरआन पाक ख़त्म किये हैं।

हज़रत समनून रह॰ पांच सौ रक्अत नफ़्ल रोज़ाना पढ़ते थे। उन्हीं का एक क़िस्सा अल्लामा ज़ुबैदी रह॰ ने लिखा है कि बग़दाद में एक शख़्स ने चालीस हज़ार दिरहम फ़ुक़रा पर तक़्सीम किये, समनून रह॰ फ़रमाने लगे कि दिरहम तो हमारे पास हैं नहीं, चलो हम हर दिरहम के बदले एक रक्अत नमाज़ पढ़ लें, यह कह कर मदाइन गये और वहां चालीस हज़ार रकअतें पढ़ीं।

अबूबक्र मुतव्विअी रह॰ कहते हैं कि मेरा मामूल अपनी जवानी में इक्तीस हज़ार या चालीस हज़ार मर्तबा (रावी को शक है) रोज़ाना क़ुल हुवल्लाह् शरीफ़ पढ़ने का था।

एक शख़्स कहते हैं कि मैं आमिर बिन अब्दुल क़ैस रह॰ के साथ चार महीने रहा, मैं ने उनको दिन में या रात में सोते नहीं देखा। हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू के एक शागिर्द कहते हैं कि एक मर्तबा हज़रत अली रज़ि॰ सुबह की नमाज़ पढ़ा कर दायीं जानिब मुंह कर के बैठे, आप पर रंज का असर बहुत था, तुलूअे आफ़ताब तक आप बैठे रहे, उस के बाद हाथ को (अफ़सोस के साथ) पलट कर फ़रमाया ख़ुदा की क़सम, मैं ने हुज़ूर सल्ल॰ के सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अज्मईन को देखा, आज कोई बात भी उनकी मुशाबहत की नहीं देखता।

वे हज़रात इस हालत में सुबह करते थे कि उन के बाल बिखरे हुए होते, चेहरे ग़ुबार आलूदा और ज़र्द होते थे। वे सारी रात अल्लाह तआला के सामने सज्दे में पड़े रहते थे या उस के सामने खड़े क़ुरआन पाक पढ़ते रहते थे। खड़े खड़े कभी एक पांव पर सहारा दे लेते थे, कभी दूसरे पांव पर, जब वे अल्लाह

तआला शानुहू का ज़िक्र करते थे। तो ऐसे (मज़े में) झूमते थे जैसे कि हवाओं में दरख़्त हरकत करते हैं। और (अल्लाह तआला शानुहू के शौक़ और ख़ौफ़ से) उनकी आंखों से इतने आंसू बहते कि उन के कपड़े तर हो जाते थे। अब लोग बिल्कुल ही ग़फ़लत में रात गुज़ार देते हैं।

हज़रत अबू मुस्लिम ख़ौलानी रह० ने एक कोड़ा अपने घर की मस्जिद में लटका रखा था और अपने नफ़्स को ख़िताब करके कहा करते कि उठ खड़ा हो, मैं तुझे (इबादत में) अच्छी तरह घसीटूँगा, यहां तक कि तू थक जायेगा मैं नहीं थकूँगा और जब उन पर कुछ सुस्ती होती तो उस कोड़े को अपनी पिण्डलियों पर मारते और फ़रमाते कि ये पिण्डलियां पिटने के लिए मेरे घोड़े की बनिस्बत ज़्यादा मुस्तहिक़ हैं। यह भी कहा करते कि सहाबा-ए-किराम रज़ि० यों समझते हैं कि (जन्नत के सारे दर्जे) वही उड़ा कर ले जायेंगे, नहीं हम उन से (उन दर्जों में) अच्छी तरह मुज़ाहमत करेंगे ताकि उनको भी मालूम हो जाये कि वह भी अपने पीछे मर्दों को छोड़कर आये हैं।

हज़रत क़ासिम बिन मुहम्मद बिन अबीबक्र रह० फ़रमाते हैं कि मैं एक दिन सुबह को अपनी फूफी हज़रत आईशा रज़ि० की ख़िदमत में सलाम के लिए हाज़िर हुआ, वह चाश्त की नमाज़ पढ़ रही थीं और यह आयते शरीफ़ा पढ़ रही थीं :-

فَمَنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا وَوَقٰنَا عَذَابَ السَّمُوْمِ (طور ع ١)

"फ़मन्नल्लाहु अलैना व वक़ाना अज़ाबस्समूम०" (तूर, रूकूअ .)

तर्जुमाः- पस एहसान किया हक़ तआला शानुहू ने हम पर, पस हम को जहन्नम के अज़ाब से बचा लिया।

हज़रत आइशा रज़ि० इस आयते शरीफ़ा को बार बार पढ़ती जाती थीं और रोती जाती थीं। क़ासिम रह० कहते हैं कि मैं बहुत देर तक तो इंतिज़ार करता रहा, फिर मुझे ख़्याल आया कि मैं इतने बाज़ार हो आऊँ। ज़रूरियात से फ़ारिग़ होकर वापसी में सलाम करता जाऊँगा। मैं बाज़ार चला गया और वहां से फ़राग़त के बाद जब मैं वापस आया तो वह उसी तरह खड़ी हुई इसी आयत को पढ़ रही थीं और रो रही थीं।

मुहम्मद बिन इस्हाक़ रह० कहते हैं कि अब्दुर्रहमान बिन असवद हज के लिए जब आये तो उनके एक पांव में तक्लीफ़ थी, वह इशा के बाद सिर्फ़ एक

पांव के सहारे खड़े हुए और सुबह तक एक ही पांव पर खड़े होकर नफ़्ल पढ़ते रहे, हत्ताकि उसी वुज़ू से सुबह की नमाज़ पढ़ ली।

एक बुज़ुर्ग कहते हैं कि मुझे मौत से सिर्फ़ इसलिए डर लगता है कि फिर तहज्जुद की नमाज़ जाती रहेगी और वह लुत्फ़ जो इस नमाज़ में आता है, वह ख़त्म हो जायेगा।

हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू का इर्शाद है कि सुलहा (नेक लोगों) की अलामत, रात के जागने से चेहरों का ज़र्द हो जाना और रातों को रोने की वजह से आंखों का चौंधा हो जाना और रोज़ों की कसरत से होठों का खुश्क हो जाना है, उनके चेहरे ख़ौफ़ज़दा रहते हों।

हज़रत हसन बसरी रह० से किसी ने पूछा कि इबादत की कसरत करने वालों के चेहरे ऐसे ख़ूबसूरत किस तरह हो जाते हैं? उन्होंने फ़रमाया कि जब वे तंहाई में रहमान के साथ मशगूल होते हैं, तो वह रहमत वाला अपने नूर का साया उन पर डाल देता है।

हज़रत क़ासिम बिन राशिद रह० कहते हैं कि ज़मआ रह० हमारे क़रीब मुहसब में (जो मक्का मुकर्रमा के क़रीब एक जगह है) ठहरे हुए थे, उनके साथ उन की बीवी और बेटियां भी थीं, वह रात को बहुत लम्बी नमाज़ पढ़ते रहते, जब पिछला पहर हो जाता तो वह ज़ोर से आवाज़ देते, अरे मुसाफ़िरो! क्या रात भर सोते ही रहोगे, उठो चलो। इस आवाज़ पर सब के सब जाग जाते, कोई वुज़ू कर रहा है कोई नमाज़ पढ़ रहा है कोई किसी कोने में बैठा रो रहा है, कोई क़ुरआन पाक पढ़ रहा है। जब सुबह हो जाती तो वह फ़रमाते कि रात के चलने वाले सुबह को ठहर जाया करते हैं।

एक बुज़ुर्ग कहते हैं कि मैं बैतुल मक़्दिस के पहाड़ों में जा रहा था, एक जगह पहुंच कर मैं ने एक आवाज़ सुनी, मैं उस आवाज़ की तरफ़ चल दिया, देखा कि एक सब्ज़ा है, वहां एक दरख़्त है, उस के नीचे एक शख़्स खड़े होकर नमाज़ पढ़ रहे हैं और यह आयत बार बार पढ़ते हैं :-

يَوْمَ تَجِدُ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ مِنْ خَيْرٍ مُّحْضَرًا ۚ وَمَا عَمِلَتْ مِنْ سُوْءٍ ۚ تَوَدُّ لَوْ اَنَّ بَيْنَهَا وَبَيْنَهُ اَمَدًا بَعِيْدًا ۗ وَيُحَذِّرُكُمُ اللّٰهُ نَفْسَهُ ۗ (آل عمران ع ۳)

"यौ-म तजिदु कुल्लु नफ़्सिम्मा अमिलत् मिन ख़ैरिम् मुह्-ज़रवं वमा अमिलत् मिन् सूइन तवद्दु लौ अन्-न बैन-हा व बैन-हू अ-म-दम्

बअ़ीदा, व युहज़्ज़िरूकुमुल्लाहु नफ़्सहू॰" *(आले इमरान, रूकूअ 3)*

"जिस दिन हर शख़्स अपने अच्छे कामों को (जो उस ने दुनिया में किये होंगे) सामने लाया हुआ पायेगा और अपने बुरे कामों को (भी अपने सामने लाया हुआ पायेगा) और इस बात की तमन्ना करता होगा; काश! इस दिन के दर्मियान और उस आदमी के (यानी मेरे) दर्मियान बहुत बड़ी दूर दराज़ की मसाफ़त हाइल हो जाती (कि यह बुरे आमाल उसके सामने न आते) और तुमको अल्लाह तआला शानुहू अपने से डराता है (उसके मुतालबे और हिसाब और अज़ाब से बहुत एहतिमाम से डरते रहो)

यह बुज़ुर्ग कहते हैं कि मैं चुपके से उनके पीछे बैठ गया, वह बार बार इसी आयते शरीफ़ा को पढ़ रहे थे और रो रहे थे, इतने में उन्होंने ज़ोर से एक चीख़ मारी और बेहोश होकर गिर गये, मुझे बहुत क़लक़ हुआ कि यह मेरी नहूसत से बेहोश होकर गिर गये, बहुत देर में उनको होश आया तो वह कहने लगे, ऐ अल्लाह, मैं तुझ से पनाह मांगता हूँ, झूठे तौर पर खड़े होकर रोने वालों से (गोया उन्होंने अपने इस पढ़ने और रोने को निफ़ाक़ का रोना क़रार दिया) और ऐ अल्लाह, मैं तुझ से पनाह मांगता हूँ बेहूदा लोगों के आमाल से (कि मेरा यह पढ़ना और रोना लग्व आदमियों का पढ़ना है कि मेरे बराबर दूसरा कौन बेहूदा होगा) ऐ अल्लाह, मैं तुझ से ग़ाफ़िल लोगों के ऐराज़ से पनाह मांगता हूँ (कि यह मेरा फ़ेअ्ल भी ग़फ़लत के साथ हो रहा है) फिर कहने लगे, या अल्लाह, डरने वालों के दिल तेरी ही तरफ़ आजिज़ी करते हैं और नेक अमल में कोताही करने वाले तेरी ही (रहमत की) तरफ़ उम्मीदें लगाते हैं, आरिफ़ लोगों के दिल तेरी ही बड़ाई के सामने ज़लील होते हैं।

इसके बाद उन्होंने दोनों हाथ झाड़े (जैसा कि मिट्टी वग़ैरह हाथ को लग जाने से झाड़े जाते हैं।) और फ़रमाया मुझे दुनिया से क्या काम और दुनिया को मुझ से क्या काम, ऐ दुनिया, तू अपने बेटों के पास चली जा, तू अपनी नेमतों के क़द्र दानों के पास चली जा तू अपने आशिक़ों के पास चली जा, उन्हीं को धोखे में डाल (मुझे दिक़ न कर) फिर कहने लगे, पहले ज़माने वाले कहां चले गये? सब के सब मिट्टी में मिल गये, बोसीदा होकर ख़ाक में रल गये और जूं जूं ज़माना गुज़र रहा है, लोग फ़ना होते जा रहे हैं।

मैं ने उन बुज़ुर्ग से कहा कि मैं बड़ी देर से आप के फ़ारिग़ होने के

इंतिज़ार में बैठा हूँ, फ़रमाने लगे, ऐसे शख़्स को फ़रागत कहां हो सकती है जिसको वक़्त ख़त्म होने का फ़िक्र हो रहा है वह जल्दी करता है कि वक़्त ख़त्म होने से पहले पहले कुछ कर लूँ और वक़्त जल्दी कर रहा है कि मैं किसी तरह जल्दी ख़त्म हो जाऊँ। वह कैसे फ़ारिग़ हो सकता है जिस को वक़्त गुज़र जाने से मौत के जल्दी आ जाने का फ़िक्र सवार हो, वह कैसे फ़ारिग़ हो सकता है जिस के औक़ात तो गुज़रते जा रहे हों और उन गुज़रे हुए औक़ात में जो गुनाह किये हैं वे उस के हिसाब में जमा हों।

फिर वह हक़ तआला शानुहू की तरफ़ मुतवज्जह होकर कहने लगे तू ही मेरी इस मुसीबत के लिए (यानी जो गुनाह मेरे हिसाब में जमा हो गये) और हर आने वाली मुसीबत के लिए पनाह की जगह है (तेरी ही रहमत से बेड़ा पार हो सकेगा), फिर थोड़ी देर इस में मशग़ूल रहे, फिर क़ुरआन पाक की दूसरी आयत:-

وَبَدَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مَالَمْ يَكُوْنُوْا يَحْتَسِبُوْنَ ٥ (زمر ع ٥)

"व बदा लहुम् मिनल्लाहि मालम् यकूनू यह्तसिबून॰"

(ज़ुमर, रूकूअ 5)

तर्जुमा:- और ख़ुदा तआला की तरफ़ से उनके साथ वह मामला पेश आयेगा जिस का उनको गुमान भी न था।

यह एक आयते शरीफ़ा का टुकड़ा है, पूरी आयते शरीफ़ा यह है :-

وَلَوْ اَنَّ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَا فِى الْاَرْضِ جَمِيْعًا وَّمِثْلَهٗ مَعَهٗ لَافْتَدَوْا بِهٖ مِنْ سُوْٓءِ الْعَذَابِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ط وَبَدَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مَالَمْ يَكُوْنُوْا يَحْتَسِبُوْنَ ٥ (زمر ع ٥)

"व लौ अन्-न लिल्लज़ी-न ज़-ल-मू मा फ़िल् अर्ज़ि जमीअंव् व मिस्ल-हू म-अ-हू लफ़्तदौ बिही मिन् सूइल् अज़ाबि यौमल् क़ियामः व बदा लहुम् मिनल्लाहि मालम् यकूनू यह्तसिबून॰" *(ज़ुमर, रूकूअ 5)*

और इस आयते शरीफ़ा का तर्जुमा यह है कि -:

जिन लोगों ने (दुनिया में) ज़ुल्म किया था (यानी कुफ़्र व शिर्क वग़ैरह किया था, जैसाकि दूसरी जगह इर्शाद है कि शिर्क करना ज़ुल्मे अज़ीम है।) अगर उनके पास दुनिया भर की तमाम चीज़ें हों और इन सब के साथ इतनी ही चीज़ें और भी हों तो वे लोग क़ियामत के दिन सख़्त अज़ाब से छूट जाने के लिए

(बे-तरद्दुद) उन सब को फ़िदये में दे दें (लेकिन फ़िदया उस दिन क़ुबूल नहीं है, जैसा कि सूरः बक़रः में कई जगह और सूरः माइदः में गुज़रा) और (उन लोगों के साथ) ख़ुदा तआला की तरफ़ से वह मामला पेश आयेगा जिस का उनको (वहम और) गुमान भी न था। (कि इतनी सख़्ती भी हो सकती है। इस जगह कई आयतें इस मज़्मून के मुनासिब हैं।)

ग़रज़ उन बुज़ुर्ग ने यह आयते शरीफ़ा पढ़ी और पहले से बहुत ज़्यादा ज़ोर से चिल्लाये और बेहोश होकर इस तरह गिरे कि मैं ने यह समझ लिया कि जान निकल गयी। मैं उनके क़रीब पहुँचा तो वह तड़प रहे थे। बहुत देर के बाद इफ़ाक़ा हुआ तो वह यह कह रहे थे कि या अल्लाह, जब (क़ियामत में) आपके सामने खड़ा हूँ तो महज़ अपने फ़ज़्ल से मेरी बुराईयां माफ़ कर दीजियो, और अपनी सत्तारी के पर्दे में मुझे छुपा लीजियो और सिर्फ़ अपने करम से मेरे गुनाह माफ़ कर दीजियो।

मैं ने उन से कहा कि जिस (पाक ज़ात) की रहमत की तुम उम्मीद कर रहे हो उसी के वास्ते से मेरी यह दर्ख़्वास्त है कि ज़रा मुझ से बात कर लीजिये, वह फ़रमाने लगे कि तुझे ऐसे शख़्स से बात करना चाहिए, जिस के कलाम से तुझे नफ़ा पहुँचे और जिस शख़्स को उस के गुनाहों ने हलाक कर रखा हो (यानी मैं) ऐसे शख़्स से बात करना छोड़ दे।

इसके बाद फ़रमाया कि मैं इस जगह अल्लाह जाने कितने बरस से शैतान से लड़ रहा हूँ। मैं उस से लड़ाई में मश्ग़ूल हूँ और वह मुझ से लड़ने में मश्ग़ूल है (कि वह मुझ को अल्लाह तआला शानुहू की तरफ़ से तवज्जोह हटाने की हर वक़्त कोशिश में लगा रहता है), उस को अब तक तेरे सिवा कोई सूरत ऐसी न मिली जिस से वह मुझे उस चीज़ से हटा देता जिस में मैं मशग़ूल हूँ। (यानी अल्लाह तआला की तरफ़ तवज्जोह से) पस तू मुझ से दूर हो जा तू (शैतान के) धोखे में पड़ा हुआ है, तूने मेरी ज़ुबान को मुनाजात से मुअत्तल कर दिया और मेरे दिल को (हक़ तआला शानुहू से हटाकर) अपनी बात की तरफ़ मुतवज्जह कर लिया, मैं अल्लाह तआला शानुहू से तेरे शर से पनाह मांगता हूँ और उस पाक ज़ात से इस की भी उम्मीद रखता हूँ कि वह अपने गुस्से से मुझे पनाह अता फ़रमायेगा।

यह साहब जो बात करना चाहते थे, कहते हैं कि मुझे यह डर हुआ कि मैं ने उनकी हक़ तआला शानुहू की तरफ़ से तवज्जोह को हटा दिया है, ऐसा न

हो कि मुझ पर इस बात की वजह से कोई अज़ाब नाज़िल हो जाये, इसलिए मैं उनको उसी जगह छोड़ कर चला आया।

हज़रत क़ुर्ज़ बिन वबरः रह० हर रोज़ तीन क़ुरआन शरीफ़ ख़त्म किया करते थे और इस के अलावा इबादात में हर वक़्त मुन्हमिक रहते थे, किसी ने अर्ज़ किया कि आपने अपने नफ़्स को बड़ी मेहनत में डाल दिया, फ़रमाने लगे कि सारी दुनिया की उम्र कितनी है, उस ने अर्ज़ किया सात हज़ार बरस, फ़रमाया क़ियामत का दिन कितना है? अर्ज़ किया पचास हज़ार बरस। फ़रमाने लगे कि क्यों कर तुम में से कोई शख़्स इस से आजिज़ रह सकता है कि दिन के सातवें हिस्से में मेहनत कर ले, ताकि सारे दिन राहत से रहे (यानी अगर किसी शख़्स को सिर्फ़ साढ़े तीन घंटा मेहनत करके सारा दिन राहत का मिले तो कौन छोड़ सकता है) पस अगर क़ियामत के दिन की राहत के लिए कोई दुनिया की पूरी ज़िन्दगी सात हज़ार बरस मेहनत कर ले, तब भी बड़े नफ़े का सौदा है, चेजायेकि आदमी की उम्र दुनिया की तमाम उम्र में से भी बहुत थोड़ा सा हिस्सा है और आख़िरत की ज़िन्दगी क़ियामत के दिन के बाद भी बे इंतिहा है।

ये चंद क़िस्से नमूने के तौर पर ज़िक्र किये गये। इमाम ग़ज़ाली रह० फ़रमाते हैं कि यह थी पहले ज़माने के बुज़ुर्गों की आदत और ख़स्लत अगर तेरा मुतमर्रिद (सर्कश) नफ़्स इबादत ख़ुद नहीं कर सकता, तो इन मर मिटने वालों के अहवाल में ग़ौर कर, और यह ग़ौर कर कि इन अकाबिर का इक़्तिदा और इन बुज़ुर्गों की जमाअत में शामिल होना बेहतर है जो दीन के हकीम और आख़िरत में बसीरत रखने वाले अक़्लमंद थे, या अपने ज़माने के उन जाहिल बेवक़ूफ़ों की इक़्तिदा बेहतर है जो दीन से ग़ाफ़िल हैं। ऐसा हरगिज़ न कर कि अक़्लमंदों का इत्तिबा छोड़ कर अहमक़ों का इत्तिबा करे। अगर तुझे यह वहम हो कि ये क़वी लोग थे, इनका इक़्तिदा मुश्किल है तो फिर चंद औरतों के हालात भी सुन ले, और तू मर्द होकर इस से तो आजिज़ न बन कि औरतों जैसा भी न हो, तू ही ग़ौर कर, वह मर्द कितना ख़सीस है जो दीन में औरतों का भी साथ न दे सके। अब ग़ौर से सुनः-

हज़रत हबीबा अदविया रह० जब इशा की नमाज़ से फ़ारिग़ हो जातीं तो अपने कपड़ों को अपने ऊपर अच्छी तरह लपेट कर छत पर खड़ी हो जातीं और दुआ में मशग़ूल हो जातीं और कहतीं, या अल्लाह, सितारे छिटक गये और लोग सो गये, बादशाहों ने अपने दरवाज़े बंद कर दिये और हर शख़्स अपने महबूब के

साथ तख़्लिए (तन्हाई) में चला गया और मैं तेरे सामने खड़ी हूँ, यह कह कर नमाज़ शुरू कर देतीं और सारी रात नमाज़ पढ़तीं, जब सुबह सादिक़ हो जाती तो कहतीं या अल्लाह रात चली गयी और दिन का चांदना हो गया, काश, मुझे ये मालूम हो जाता कि मेरी यह रात तूने क़ुबूल फ़रमा ली ताकि मैं अपने को मुबारक बाद दूँ या तूने रद्द फ़रमा दी ताकि मैं अपनी ताज़ियत करूँ। तेरी इज़्ज़त की क़सम, मैं तो हमेशा इसी तरह करती रहूँगी, तेरी इज़्ज़त की क़सम, अगर तूने मुझे दरवाज़े से धकेल दिया तब भी तेरे करम और तेरी बख़्शिश का जो हाल मुझे मालूम है, उसकी वजह से मैं तेरे दर से हटूँगी नहीं।

हज़रत उजरः रह० नाबीना थीं, सारी रात जागतीं और जब सहर का वक़्त होता तो बहुत ग़मगीन आवाज़ से कहतीं, या अल्लाह, आबिदों की जमाअत ने तेरी तरफ़ चल कर रात के अंधेरे को क़तअ् किया, वे तेरी रहमत और तेरी मग़्फ़िरत की तरफ़ एक दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश करते रहे। या अल्लाह मैं सिर्फ़ तुझ ही से सवाल करती हूँ, तेरे सिवा किसी दूसरे से मेरा सवाल नहीं कि, तू मुझे साबिक़ीन के गिरोह में शामिल कर ले और आला इल्लिय्यीन तक पहुँचा दे, और मुक़र्रब लोगों के दरजे में दाख़िल कर दे और अपने नेक बंदो में शामिल कर दे, तू सब रहम करने वालों से ज़्यादा रहम करने वाला है। हर ऊँचे दरजे वाले से बुलंद है। सारे करीमों से ज़्यादा करीम है। ऐ करीम! (मुझ पर करम कर) यह कह कर सज्दे में गिर जातीं कि उनके रोने की आवाज़ सुनाई देती और सुबह तक रोती रहतीं और दुआयें करती रहतीं।

यह्या बिन बुस्ताम रह० कहते हैं कि हम हज़रत शअवाना रह० की मज्लिस में हाज़िर होते और उनके रोने चिल्लाने को सुनते। मैं ने अपने एक साथी से कहा कि किसी वक़्त तंहाई में उनके पास जाकर समझायें कि इस रोने में कुछ कमी कर दें। मेरे साथी ने कहा कि अच्छा जैसी तुम्हारी राय हो। हम उन के पास तंहाई में गये और उन से जाकर कहा अगर तुम इस रोने में कुछ कमी कर दो और अपनी जान पर तरस खाओ तो यह ज़्यादा बेहतर है कि बदन में कुछ ताक़त रहेगी, देर तक इस से काम ले सकोगी, वह यह सुनकर रोने लगीं और कहने लगीं कि मेरी तो यह तमन्ना है कि मैं इतना रोऊँ कि आंख में आंसू न रहे, फिर ख़ून के आंसुओं से रोना शुरू कर दूँ। यहां तक कि मेरे बदन का सारा ख़ून आंखों से निकले एक भी क़तरा ख़ून का न रहे, और कहने लगीं कि मुझे रोना कहां आता है, मुझे रोना कहां आता है। बार बार इसी लफ़्ज़ को कहती रहीं कि

मुझे रोना कहां आता है, यहां तक कि बेहोश हो गयीं।

मुहम्मद बिन मआज़ रह० कहते हैं कि मुझ से एक इबादत गुज़ार औरत ने बयान किया कि मैं ने ख़्वाब देखा कि मैं जन्नत में दाख़िल होने को जा रही हूँ, वहां देखा कि सारे आदमी जन्नत के दरवाज़े पर खड़े हैं, मैं ने पूछा क्या बात है, ये सब के सब दरवाज़े पर क्यों जमा हो गये? किसी ने बताया कि एक औरत आ रही हैं, जिनके आने की वजह से जन्नत को सजाया गया है, ये बस उनके इस्तिक़बाल के वास्ते बाहर हो गये हैं, मैं नें पूछा वह औरत कौन हैं? कहने लगे कि ऐका की रहने वाली एक स्याह (काली) बांदी हैं, जिनका नाम शअवाना रह० है। मैं ने कहा, ख़ुदा की क़सम वह तो मेरी बहन है। इतने में देखा कि शअवाना रह० एक निहायत उम्दा ख़ुशनुमा असील ऊँटनी पर बैठी हवा में उड़ी आ रही हैं। मैं ने उनको आवाज़ दी कि मेरी बहन। तुम्हें अपना और मेरा ताल्लुक़ मालूम है, अपने रब से दुआ कर दो कि मुझे भी तुम्हारे साथ कर दें। वह यह सुनकर हंसीं और कहने लगीं, अभी तुम्हारे आने का वक़्त नहीं आया। लेकिन मेरी दो बातें याद रखना (आख़िरत के) ग़म को अपने साथ चिमटा लो और अल्लाह तआला की मुहब्बत अपनी हर ख़्वाहिश पर ग़ालिब कर दो, और इस की परवाह न करो कि मौत कब आयेगी, यानी हर वक़्त उसके लिए तैयार रहो।

एक बुज़ुर्ग कहते हैं कि मैं एक दिन बाज़ार जा रहा था, मेरे साथ मेरी हब्शी बांदी थी, मैं उसको एक जगह बिठा कर आगे चला गया और उस से कह गया कि यहीं बैठी रहना, मैं अभी आता हूँ। जब मैं वापस आया तो वह उस जगह न मिली, मुझे बहुत ग़ुस्सा आया और ग़ुस्से की हालत में घर वापस आ गया। जब उस ने मुझे देखा तो मेरे चेहरे से ग़ुस्से को महसूस किया, कहने लगी, मेरे आक़ा! इताब में जल्दी न करो, ज़रा मेरी बात सुन लो, आप मुझे ऐसी जगह बिठा कर गए, जहां कोई अल्लाह का नाम लेने वाला नहीं था, मुझे यह डर हुआ कि कहीं यह जगह ज़मीन में न धंस जाये (जिस जगह अल्लाह तआला का ज़िक्र न हो, उस जगह जितनी जल्दी अज़ाब आ जाये क़रीने क़ियास है) उसकी इस बात से मुझे बड़ा ताज्जुब हुआ। मैं ने उससे कहा कि तू आज़ाद है, कहने लगी आक़ा, तुमने मेरे साथ अच्छा सुलूक नहीं किया। मैं ने कहा क्यों? कहने लगी कि पहले जब मैं बांदी थी तो मुझे दोहरा सवाब मिलता था (जैसा कि हदीस में आया है कि जो ग़ुलाम अल्लाह की इताअत करे और अपने मौला की ख़िदमत करे, उसको दोहरा अज्र है) अब आपने आज़ाद करके मेरा एक अज्र

ज़ाया कर दिया।

हज़रत ख़्वास रह० जो मशहूर बुज़ुर्ग हैं कहते हैं कि हम हज़रत रहला आबिदा रह० के पास गये, वह रोज़े रखते रखते काली पड़ गयीं थीं और नमाज़ पढ़ते पढते (पांव शल हो गये थे जिसकी वजह से) अपाहिज हो गयी थीं। बैठ कर नमाज़ पढ़ती थीं और रोते रोते नाबीना हो गयीं थीं हमने जाकर हक़ तआला शानुहू की रहमत और माफ़ी का ज़िक्र किया कि शायद इस से उनके मुजाहदे की शिद्दत में कुछ कमी आये। उन्होंने मेरी बात सुनकर बेतहाशा एक चीख़ मारी, फिर कहने लगीं कि मुझे अपनी हालत मालूम है, उस ने मेरे दिल को ज़ख़्मी कर रखा है और मेरे जिगर को छील दिया है, काश, मैं तो पैदा ही न हुई होती, यह कह कर उन्होंने अपनी नमाज़ की नीयत बांध ली।

नमूने के तौर पर दो एक वाक़िआत ज़िक्र किये गये हैं। इमाम ग़ज़ाली रह० ने और भी इस क़िस्म के वाक़िआत औरतों के नक़ल किये हैं। इसके बाद कहते हैं कि अगर तू अपने नफ़्स की निगहदाश्त करने वाला है तो तेरे लिए ज़रूरी है कि इन मेहनत करने वाले मर्दों और औरतों के अहवाल को ग़ौर व फ़िक्र की निगाह से देखे ताकि तेरी तबीअत में निशात बढ़े और मेहनत की तुझे हिर्स पैदा हो, और अपने ज़माने के आदमियों के अस्वाल देखने से एहतिराज़ कर कि उन में से अक्सर ऐसे मिलेंगे कि अगर तू उनका इत्तिबा करेगा तो वे तुझे अल्लाह के रास्ते से गुमराह कर देंगे।

इन मेहनत करने वालों के वाक़िआत की कोई तायदाद नहीं है। हमने नमूने के तौर पर चंद लिखे हैं, जो इब्रत के लिए काफ़ी हैं। अगर तू ज़्यादा हालात देखना चाहे तो "हुलीय तुल औलिया" का मुताला किया कर कि उस में सहाबा रज़ि० और तबिईन रह० और उन के बाद वालों के अहवाल तफ़सील से लिखे हैं (और कुछ वाक़िआत शारेहे एहया ने भी ज़िक्र किये हैं) और उनके अहवाल के देखने से मालूम होगा कि तू और तेरे ज़माने के लोग दीन से कितने दूर हैं, और अगर तेरे दिल में अपने ज़माने के लोगों को देखकर यह ख़्याल आये कि पहले ज़माने में चूंकि ख़ैर की कसरत थी इसलिए उस ज़माने में यह सहल था, अब अगर इन हालात पर अमल किया जाये तो लोग पागल कहेंगे, इसलिए जो हश्र इस ज़माने के सब आदमियों का होगा, वह मेरा भी हो जायेगा, मुसीबत जब आम आती है तो उस में सब ही को शामिल होना पड़ता है तो यह तेरे नफ़्स का धोखा है। तू ही बता कि अगर कहीं से पानी का सैलाब आ गया हो

जिस में सब ही बहते जा रहे हों तो अगर कोई शख़्स तैरना जानता है या किसी और ज़रिये से बच सकता है तो क्या वह यह समझ कर चुप हो जाये कि इस मुसीबत में तो सब ही गिरफ़्तार हैं, हालांकि सैलाब की मुसीबत बहुत थोड़ी देर की है, ज़्यादा से ज़्यादा यह कि मौत आ जायेगी, इस से ज़्यादा तो कुछ न होगा, और आख़िरत का अज़ाब निहायत सख़्त है, कभी ख़त्म होने वाला नहीं, इस बात को अच्छी तरह समझ लेना चाहिए और हमेशा ग़ौर करते रहना चाहिए। *(एहया)*

हज़रत इब्राहीम अधम रह० से किसी ने अर्ज़ किया कि अगर आप किसी वक़्त तशरीफ़ रखा करें तो हम आपकी ख़िदमत में हाज़िर हो जाया करें कि कुछ इर्शादात सुनें, उन्होंने फ़रमाया, मुझे चार काम इस वक़्त दरपेश हैं, उनमें मशग़ूल हूँ उन से फ़राग़त पर यह हो सकता है :-

1. जब अज़ल में अहद लिया गया था तो हक़ तआला शानुहू ने एक फ़रीक़ के मुताल्लिक़ फ़रमाया था कि ये जन्नती हैं और दूसरों को फ़रमाया था कि ये दोज़ख़ी हैं। मुझे हर वक़्त यह फ़िक्र रहता है कि न मालूम मैं किन में हूँ।

2. जब बच्चा मां के पेट में शुरू होता है तो उस वक़्त एक फ़रिश्ता जो उस नुत्फ़े पर मुक़र्रर होता है, वह हक़ तआला शानुहू से पूछता है कि इस को सईद लिख दूँ या बदबख़्त, मुझे हर वक़्त यह फ़िक्र रहता है कि न मालूम मुझे क्या लिखा गया।

3. जब फ़रिश्ता आदमी की रूह क़ब्ज़ करता है तो यह पूछता है कि इस रूह को मुसलमानों की रूहों में रखूँ या काफ़िरों की, न मालूम मेरे मुताल्लिक़ उस फ़रिश्ते को क्या जवाब मिलेगा?

4. क़ियामत में हुक्म होगा:-

وَامْتَازُوا الْيَوْمَ اَيُّهَا الْمُجْرِمُوْنَ ٥ (يٰس)

"वम्ताज़ुल् यौ-म अय्युहल् मुज्रिमून०" *(सूरः यासीन)*

आज मुज्रिम लोग फ़रमांबरदारों से अलाहिदा हो जायें, मुझे यह फ़िक्र रहता है कि न मालूम मेरा शुमार किस फ़रीक़ में होगा। *(तंबीहुल ग़ाफ़िलीन)*

यानी जब इन चारों फ़िक्रों से अम्न नसीब हो जाये, उस वक़्त दोस्तों से बे फ़िक्री से बातें करने का वक़्त मिल सकता। अब तो मैं हर वक़्त इन फ़िक्रों में रहता हूँ, कहां इत्मीनान से बैठ सकता हूँ।

(١٥) عن ابی ہریرةؓ قال قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم لیس الغنیٰ عن کثرة العرض ولکن الغنیٰ غنی النفس متفق علیہ کذا فی المشکوٰة

15. हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि आदमी का ग़नी होना माल की कसरत से नहीं होता बल्कि हक़ीक़ी ग़िना तो दिल का ग़नी होना है।

फ़ायदाः- मतलब हदीसे पाक का बिल्कुल ज़ाहिर है कि अगर आदमी का दिल ग़नी नहीं है तो जितना माल भी उस के पास ज़्यादा हो, वह माल के ख़र्च करने में फ़क़ीरों से ज़्यादा कम ख़र्च होगा और जितना भी माल उसके पास हो, वह हर वक़्त उसके बढ़ाने की फ़िक्र में मुहताजों से ज़्यादा परेशान होगा, और अगर उसका दिल ग़नी है तो थोड़ा सा माल भी उस को बेफ़िक्र रखेगा और जितना होगा, उसको हर वक़्त बढ़ाने के फ़िक्र से आज़ाद होगा।

इमाम राग़िब रह॰ कहते हैं कि ग़िना कई मायने में बोला जाता है, एक तो ग़िना के मायने किसी क़िस्म की हाजत न होने के हैं, इस मायने के एतिबार से तो सिर्फ़ हक़ तआला शानुहू ग़नी है कि उसको किसी चीज़ की एहतियाज नहीं है, इस मायने के एतिबार से हक़ तआला शानुहू का इर्शाद है :-

اَنْتُمُ الْفُقَرَاءُ اِلَى اللّٰهِ وَاللّٰهُ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ○

"अन्तुमुल् फ़ुक़रा-उ इलल्लाहि वल्लाहु हुवल् ग़निय्युल हमीद॰"

तुम सब के सब अल्लाह तआला शानुहू के मुहताज हो, वह पाक ज़ात है बे एहतियाज है, हर क़िस्म की तारीफ़ वाला है।

दूसरे मायने हाजात की कमी के हैं, इस मायने के एतिबार से हक़ तआला शानुहू ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुताल्लिक़ सूरः वज़्ज़ुहा में इर्शाद फ़रमाया :

وَوَجَدَكَ عَائِلًا فَاَغْنٰى ○

"व व-ज-द-क आइलन् फ़ अग़्ना"

और हक़ तआला शानुहू ने आपको फ़क़ीर पाया फिर आपको ग़नी बना दिया।

और इसी मायने के एतिबार से हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाक इर्शाद हदीसे बाला में है कि असल ग़िना दिल का ग़नी होना है। तीसरे मायने माल की कसरत और सामान की फ़रावानी के हैं जिसको क़ुरआन

पाक में :-

يَحْسَبُهُمُ الْجَاهِلُ أَغْنِيَاءَ مِنَ التَّعَفُّفِ (بقره ع ٣٧)

"यह्स-बुहुमुल् जाहिलु अग्नियाअ मिनत् तअफ़्फ़ु-फ़ि"

(बक़र:, रूकूअ 37)

में ज़िक्र फ़रमाया, इस आयते शरीफ़ा का मतलब यह है कि सदकात असल हक़ ऐसे लोगों का है जो अल्लाह के रास्ते में घिर गये हों और नावाकिफ़ आदमी उन के सवाल न करने की वजह से उनको मालदार समझता है।

हज़रत अबूज़र गिफ़ारी रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझ से इर्शाद फ़रमाया, अबूज़र (रज़ि॰) क्या तुम्हारा ख़्याल है कि माल की कसरत ग़िना है। मैं ने अर्ज़ किया बेशक, फिर हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया क्या तुम्हारा ख़्याल है कि माल की क़िल्लत फ़क़्र है, मैं ने अर्ज़ किया, बेशक, हुज़ूर सल्ल॰ ने इर्शाद फ़रमाया कि ग़िना सिर्फ़ दिल का ग़िना है और फ़क़्र सिर्फ़ दिल का फ़क़्र है। *(तर्ग़ीब)*

हक़ीक़त यही है कि असल ग़िना दिल का ग़िना है, जिस खुश किस्मत को अल्लाह तआला शानुहू नसीब फ़रमा दे, और यही हक़ीक़ते ज़ुह्द है। जिस दिल के अंदर माल की मुहब्बत बिल्कुल न हो, वही ग़नी है, वही ज़ाहिद है, चाहे, ज़ाहिर में उसके पास माल न हो, और जिस दिल में दुनिया की मुहब्बत हो, वह फ़क़ीर है, वह दुनियादार है चाहे कितना ही माल उसके पास हो।

फ़क़ीह अबुल्लैस रह॰ एक हकीम का मक़ूला नक़ल करते हैं कि हम ने चार चीज़ें तलाश कीं और उनकी तलाश का ग़लत रास्ता इख़्तियार किया। हमने ग़िना को माल में तलाश किया, हालांकि वह माल में नहीं था बल्कि क़नाअत में था (हम उस को माल में तलाश करते रहे, वह जब वहां था ही नहीं तो कैसे मिलता) हम ने राहत को (जान व माल की) कसरत में तलाश किया, हालांकि राहत इनकी कमी में थी। हमने एज़ाज़ को मख़्लूक़ में तलाश किया (कि उनकी ख़ुशी के असबाब इख़्तियार करें ताकि उनके यहां एज़ाज़ हो) मगर वह तक़्वा में मिला (और बिल्कुल सही है, जिस क़दर आदमी में तक़्वा ज़्यादा होगा, उतना ही उसका एज़ाज़ ज़्यादा होगा) हम ने अल्लाह की नेमत को खाने और पहनने में तलाश किया (और यह समझा कि ये अल्लाह के बड़े इनआमात हैं) हालांकि अल्लाह तआला शानुहू का बड़ा इन्आम इस्लाम की दौलत और गुनाहों

की सत्तारी है (जिसको यह दो नेमतें हासिल हैं, उस पर अल्लाह का बड़ा इन्आम है।)

हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद नक़्ल किया गया कि जिस शख़्स का दुनिया मक़्सद बन जाये हक़ तआला शानुहू उसके दिल पर तीन चीज़ें मुसल्लत कर देते हैं, एक ऐसा ग़म जो कभी ख़त्म होने वाला न हो, और ऐसा मशग़ला जिस से फ़राग़त नसीब न हो, और ऐसा फ़क्र जिसका कभी ख़ात्मा न हो।

(तंबीहुल ग़ाफ़िलीन)

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जब तुम किसी ऐसे शख़्स को देखो जिस को हक़ तआला शानुहू ने दुनिया से बे रग़बती और कम बोलना अता फ़रमाया हो तो उसके पास रहा करो, उसको हिक्मत दी गयी है। *(मिश्कात)*

(١٦) عن ابی ہریرۃ قال قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم اذا نظر احدکم الی من فضل علیہ فی المال والخلق فلینظر الی من ھو اسفل منہ متفق علیہ کذا فی المشکوٰۃ

16. हुज़ूर सल्ल॰ का पाक इर्शाद है कि जब आदमी किसी ऐसे शख़्स की तरफ़ देखे जो माल में या सूरत में अपने से आला हो तो ऐसे शख़्स की तरफ़ भी ग़ौर कर ले जो इन चीज़ों में अपने से कम हो।

फ़ायदाः- यानी आदमी जब किसी लखपती को देखे और उसको देखकर ललचाए और अफ़सोस करे कि यह तो ऐसा मालदार है, मैं नहीं, तो किसी ऐसे आदमी को भी ग़ौर कर ले जिसको नादारी की वजह से फ़ाक़े करने पड़ रहे हों, ताकि पहले अफ़सोस के साथ हक़ तआला शानुहू का उस पर शुक्र अदा हो सके कि उस ने ऐसा नहीं कर रखा।

एक और हदीस में है कि अपने से ज़्यादा मालदारों की तरफ़ निगाहें न ले जाया करो, अपने से कम दरजे वालों को सोचा करो, इस से उस नेमत की हक़ारत तुम्हारे दिलों में नहीं होगी, जो अल्लाह जल्ल शानुहू ने तुम्हें अता कर रखी है। *(मिश्कात)*

हज़रत अबूज़र ग़िफ़ारी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मुझे मेरे महबूब (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने सात नसीहतें की हैं :-

1. मुझे इसका हुक्म फ़रमाया है कि मिस्कीनों से मुहब्बत किया करूं और उनके क़रीब रहा करूं।

2. मुझे इसका हुक्म फ़रमाया है कि मैं अपने से ऊँचे लोगों (ज़्यादा मालदारों) पर निगाह न रखा करूँ, अपने से कम दरजे वालों पर निगाह रखूँ, (इन पर ग़ौर किया करूँ)।

3. मुझे हुक्म फ़रमाया है कि मैं सिला-रहमी किया करूँ, अगरचे वह मुझ से मुंह फेरे (यानी जिसके साथ सिला-रहमी करूँ, वह मुझ से ग़ायब हो, दूर हो या यह कि मेरे साथ तवज्जोह से पेश न आये बल्कि मुझ से रूगर्दानी करे) तर्ग़ीब तर्हीब के अल्फ़ाज़ ये हैं कि अगरचे वह मुझ पर ज़ुल्म करे, इस से दूसरे मायने की ताईद होती है।

4. मुझे हुक्म फ़रमाया है कि मैं किसी शख़्स से कोई चीज़ न मांगू।

5. मुझे हुक्म फ़रमाया है कि मैं हक़ बात कहूँ, चाहे किसी को कड़वी ही लगे।

6. मुझे हुक्म फ़रमाया है कि मैं अल्लाह तआला शानुहू की रिज़ा के मुक़ाबले में किसी मलामत करने वाले की मालामत की परवाह न करूँ, (यानी जिस चीज़ से हक़ तआला शानुहू राज़ी हों, उसको इख़्तियार करूँ, उसके करने पर अहमक़ लोग मलामत करें तो किया करें।)

7. मुझे हुक्म फ़रमाया है कि मैं "ला हौ-ल वला क़ुव्व-त इल्ला बिल्लाहि" कसरत से पढ़ा करूँ, इसलिए कि ये कलिमात ऐसे ख़ज़ाने से उतरे हैं जो ख़ास अर्श के नीचे है। *(मिश्कात)*

लाहौ-ल को कसरत से पढ़ने की तर्ग़ीब बहुत कसरत से रिवायात में आयी है।

एक और हदीस में हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद वारिद हुआ है कि दो ख़सलतें ऐसी हैं कि जिस शख़्स में हों, हक़ तआला शानुहू उसको साबिरीन और शाकिरीन की जमाअत में शुमार करते हैं। जो शख़्स दीन के बारे में अपने से ऊँचे लोगों के अह्वाल को देखे और उनकी इत्तिबाअ् की कोशिश करे और दुनिया के बारे में अपने से कम दर्जे के लोगों को देखे और इस पर अल्लाह तआला शानुहू का शुक्र अदा करे कि उसने (महज़ अपने फ़ज़्ल से) इसको उससे बेहतर हालत में कर रखा है। हक़ तआला शानुहू उसको साबिर और शुक्र करने वालों में शुमार फ़रमायेंगे। और जो शख़्स दीन के बारे में अपने से कमतर लोगों को देखे (कि फ़लां तो इतना भी नहीं करता जितना मैं करता हूँ) और दुनिया के बारे में अपने

से ऊंचे लोगों को देखे और इस पर अफ़सोस करे कि मेरे पास इतना नहीं है कि जितना फ़लां के पास है, वह न सब्र करने वालों में शुमार है, न शुक्र गुज़ारों में। *(मिश्कात)*

औन बिन अबदुल्लाह रह॰ कहते हैं कि मैं अक्सर मालदारों के पास बैठा करता था, तो मेरी तबीअत ग़मगीन रहती, किसी का कपड़ा अपने कपड़े से बेहतर देखता (तो अपने कपड़े के अदना होने पर अपनी ज़िल्लत महसूस करता, जिस से रंज होता) किसी का घोड़ा अपने घोड़े से आला देखता, फिर मैं ने फ़ुक़रा के पास अपनी नशिस्त शुरू कर दी तो मुझे उस रंज से राहत मिल गयी (कि इन लोगों से अपनी चीज़ों को अफ़ज़ल देखता हूं।) *(एहया)*

उलमा ने लिखा है कि निकाह भी किसी ग़रीब से करे, मालदार औरत से न करे, इसलिए कि जो शख़्स मालदार औरत से निकाह करता है पांच आफ़तों में गिरफ़्तार होगा।

1. महर ज़्यादा देना पड़ेगा

2. रूख़्सती में देर और टाल मटोल होगी (कि उसके जहेज़ की तैयारी ही न ख़त्म होगी)

3. उस से ख़िदमत लेना मुश्किल होगा

4. ख़र्च ज़्यादा मांगेगी

5. तलाक़ देना चाहेगा तो उस के माल का लालच तलाक़ नहीं देने देगा।

कहते हैं कि औरत चार चीज़ों में ख़ाविंद से कमतर होनी चाहिए वर्ना ख़ाविन्द उसकी निगाह में ज़लील होगा, उम्र में, क़द की लम्बाई में, माल में, शराफ़त में, और चार चीज़ों में ख़ाविंद से बढ़ी हुई होनी चाहिए, ख़ूबसूरती में, अदब में, तक़्वा में, आदतों में। *(एहया)*

और माल से ज़्यादा अहम ख़िल्क़त और सेहत के एतिबार से अपने से कमतर लोगों को देखना है।

एक बुज़ुर्ग की ख़िदमत में किसी ने हाज़िर होकर अपने फ़क़्र की शिकायत की और बड़ी सख़्त परेशानी का इज़्हार किया कि उसके ग़म में मरने की तमन्ना ज़ाहिर की। उन बुज़ुर्ग ने दर्याफ़्त किया कि तुम इस पर राज़ी हो कि

तुम्हारी आंखें हमेशा के लिए ले ली जायें। और तुम्हें दस हज़ार दिरम मिल जायें, वह इस पर राज़ी न हुआ, फिर फ़रमाया अच्छा इस पर राज़ी हो कि तुम्हें दस हज़ार दिरम देकर तुम्हारी ज़बान ले ली जाये, वह इस पर भी राज़ी न हुआ, फिर उन्होंने फ़रमाया कि इस पर राज़ी हो कि तुम्हारे चारों हाथ पांव काट दिये जायें और तुमको बीस हज़ार दिरम दे दिये जायें, वह इस पर भी राज़ी न हुआ, फिर फ़रमाया, अच्छा इस पर राज़ी हो कि तुम्हें मजनूं बना दिया जाये और दस हज़ार दिरम दे दिये जायें? वह इस पर भी राज़ी न हुआ तो फ़रमाने लगे कि तुम्हें शर्म नहीं आती कि तुम्हारे इक़रार के मुवाफ़िक़ पचास हज़ार से ज़्यादा मालियत का सामान तो हक़ तआला शानुहू ने तुम्हें अता फ़रमा रखा है (और यह मिसाल के तौर पर चंद चीज़ें गिनवाई हैं) फिर भी तुम शिकवा कर रहे हो।

इब्ने सिमाक रह० एक बादशाह के पास गये बादशाह के हाथ में पानी का गिलास था, बादशाह ने उनसे दर्ख़्वास्त की कि मुझे कोई नसीहत कीजिये। इब्ने सिमाक रह० ने कहा कि अगर यह कहा जाये कि यह गिलास पानी का उसी सारी सल्तनत के बदले में मिल सकता है जो तुम्हारे पास है और न ख़रीदा जाये तो पानी मिलने की कोई सूरत नहीं, प्यासे ही रहना होगा, क्या तुम राज़ी हो जाओगे कि सारी सल्तनत देकर पानी ख़रीदो, वर्ना प्यासे मर जाओ। बादशाह ने कहा, यक़ीनन राज़ी हो जाऊँगा। इब्ने सिमाक रह० ने कहा कि ऐसी बादशाहत पर क्या खुश होना जिसकी सारी क़ीमत एक गिलास पानी हो।

इन मिसालों से यह अंदाज़ा होता है कि हक़ तआला शानुहु की एक एक नेमत हर शख़्स के पास ऐसी है कि लाखों करोड़ों उसकी क़ीमत नहीं हो सकती।

ये तो आम नेमतें हैं, जिन में हर शख़्स की शिर्कत है। अगर गहरी निगाह से ग़ौर किया जाये तो हर शख़्स के साथ ख़ुसूसी नेमतें हक़ तआला शानुहू की ऐसी हैं जिन में कोई दूसरा शरीक नहीं, और तीन चीज़ें तो ऐसी हैं कि उनमें हर शख़्स को एतिराफ़ है कि वह उस नेमत में मुम्ताज़ है, कोई दूसरा उसका शरीक नहीं।

इन में से एक तो अक़्ल है कि हर शख़्स चाहे कितना ही बेवक़ूफ़ हो, वह यह समझा करता है कि मैं सब से ज़्यादा अक़्लमंद हूँ, दूसरे उस बात को नहीं समझते जिस को मैं समझता हूँ। ऐसी हालत में चाहे वाक़िए के एतिबार से सही हो या ग़लत लेकिन इस के अपने एतिक़ाद और इक़रार के एतिबार से उस

पर हक़ तआला शानुहू का एक ऐसा इनआम है कि यह इनआम किसी दूसरे पर नहीं है। ऐसी हालत में क्या यह ज़रूरी नहीं कि अल्लाह तआला की इस नेमत में सबसे ज़्यादा शुक्रगुज़ार बने (और अगर किसी मामूली चीज़ रूपया, पैसा वग़ैरह में किसी दूसरे से कम हो तो यह सोचे कि सबसे अशरफ़ चीज़ अक़्ल में सबसे ज़्यादा बढ़ा हुआ हूँ।

दूसरी चीज़ आदात हैं कि हर शख़्स अपने सिवा दूसरे हर शख़्स में कोई न कोई ऐसी आदत समझा और पाया करता है जो उसके नज़दीक ऐब होती है, और गोया उसके नज़दीक उसके सिवा हर शख़्स के अंदर कोई न कोई अख़्लाक़ी ऐब ज़रूर है, और अपनी किसी आदत को भी (लफ़्ज़ों में चाहे मान ले, मगर दिल में) ऐबदार नहीं समझा करता, न उसके छोड़ने को तय्यार होता है। ऐसी हालत में क्या यह ज़रूरी नहीं कि आदमी यह सोचे कि हक़ तआला शानुहू ने अगर किसी एक आध चीज़ में दूसरे से कम दे रखा है तो आदात की नेमतों में उसको ख़ास तौर से सब से बढ़ा रखा है।

तीसरी चीज़ इल्म है कि हर शख़्स अपने ज़ाती हालात और अन्दरूनी अहवाल से इतना ज़्यादा वाक़िफ़ और उनका जानने वाला होता है कि कोई दूसरा शख़्स उसके अहवाल से इतना वाक़िफ़ नहीं होता और उनमें ऐसी बहुत सी चीज़ें होती हैं कि आदमी हरगिज़ यह गवारा नहीं करता कि उसके उन उयूब पर कोई दूसरा मुत्तला हो, तो हक़ तआला शानुहू का यह एहसान कि उसको अपने अहवाल का इल्म अता फ़रमाने के बावजूद दूसरों से उसकी सत्तारी फ़रमा रखी है और उसकी यह तमन्ना कि मेरे इस इल्म की किसी को ख़बर न हो, पूरी कर रखी है कि इन में दूसरा कोई भी इसका शरीक नहीं, क्या ऐसी चीज़ नहीं है जिसमें यह सबसे मुम्ताज़ है और इसका शुक्र इसके ज़िम्मे ज़रूरी है?

इनके अलावा हज़ारों चीज़ें हर शख़्स में ऐसी हैं जिनके मुताल्लिक़ वह कभी इसको गवारा नहीं कर सकता कि वह चीज़ उस से लेकर उसके बदले में उसकी ज़िद या कोई दूसरी चीज़ दे दी जाये, मसलन इंसान होना है, कोई नहीं गवारा करता कि उसको आदमी से बंदर बना दिया जाये, मर्द होना है, कोई पसंद नहीं करता कि उसको मर्द से औरत बना दिया जाये। इसी तरह मोमिन होना है, हाफ़िज़े क़ुरआन होना है, आलिम होना है, ख़ूबसूरत होना है, साहिबे औलाद होना है, ग़रज़ अख़्लाक़ में, सूरत में, सीरत में, अज़ीज़ व अक़ारिब में, अहल व अयाल में, इज़्ज़त व मर्तबे में, हर शख़्स के पास ऐसे ख़ुसूसी उमूर मिलेंगे जिन

के तबादले पर वह कभी भी राज़ी न होगा।

तो क्या फिर यह बात सही नहीं कि हर शख़्स पर अल्लाह तआला शानुहू के हज़ारों ऐसे ख़ुसूसी इनआमात हैं, जो दूसरे को नसीब नहीं, ऐसी हालत में इन सब से आंख बंद करके अगर कोई एक दो वे चीज़ें जो दूसरे के पास हैं और उसके पास नहीं है, उनमें ललचाये और नाशुक्री करे, यह इंतिहाई कमीना पन नहीं है? और अगर किसी के पास माल ही ज़्यादा देखता है तो इन उमूर में जो ऊपर ज़िक्र किये गये ग़ौर करे कि इन में से कितनी चीज़ें ऐसी हैं, जिनमें यह उस शख़्स से बढ़ा हुआ है, जिस पर रश्क या हसद कर रहा है, इस हाल में कि मजमूआ-ए-एहसानात में यह ख़ुद उससे बढ़ा हुआ है। *(एह्या)*

और इस सबके बाद जो माल उसके पास है, उसका हश्र मालूम नहीं, क्या होने वाला है वह उसके लिए राहत का सबब है या वबाले जान है। इसी लिए हुज़ूर सल्ल॰ का पाक इर्शाद है कि किसी फ़ाजिर शख़्स के पास कोई नेमत देख कर रश्क न करो, तुम्हें ख़बर नहीं कि मरने के बाद वह किस मुसीबत में गिरफ़्तार होने वाला है इसलिए कि फाजिर शख़्स के लिए अल्लाह के यहां ऐसी हलाकत है यानी जहन्नम जो कभी ख़त्म होने वाली नहीं है। *(मिश्कात)*

आइंदा हदीस में यह मज़्मून तफ़्सील से आ रहा है।

(١٧) عن عقبة بن عامر عن النبی صلی اللہ علیہ وسلم قال اذا رأیت اللہ عزوجل یعطی العبد من الدنیا علی معاصیہٖ مایحب فانما ھو استدراج ثم تلا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم فَلَمَّا نَسُوْا مَا ذُكِّرُوْا بِهٖ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ اَبْوَابَ كُلِّ شَيْءٍ حَتّٰٓى اِذَا فَرِحُوْا بِمَآ اُوْتُوْٓا اَخَذْنٰهُمْ بَغْتَةً فَاِذَا هُمْ مُّبْلِسُوْنَ ○ رواہ احمد کذا فی المشکوٰۃ

17. हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि जब तू यह देखे कि हक़ तआला शानुहू किसी गुनाहगार पर उसके गुनाहों के बावजूद दुनिया की वुस्अत फ़रमा रहा है तो यह अल्लाह तआला शानुहू की तरफ़ से ढील है, फिर हुज़ूर सल्ल॰ ने आयते शरीफ़ा "फ़लम्मा नसू" से "मुब्लिसून" तक तिलावत फ़रमायी जिसका तर्जुमा यह है कि पस जब वे लोग उन चीज़ों को भूले रहे, जिनकी उनको नसीहत की जाती थी, तो हम ने उन पर (राहत के) हर क़िस्म के दरवाज़े खोल दिये, यहां तक कि जब वे उन चीज़ों पर जो उनको मिली थीं, इतराने लगे, तो हम ने उनको दफ़्अतन पकड़ लिया, फिर तो वे हैरत में रह गये।

फ़ायदाः- यह आयते शरीफ़ा सूरः अन्आम के पांचवें रूकूअ् की है, ऊपर से हक् तआला शानुहू ने जो मामला पहली उम्मतों के साथ फ़रमाया है उसका इज्माली बयान है जिसका मुख़्तसर तर्जुमा यह है कि (हमने और उम्मतों की तरफ़ भी जो कि आप से पहले) ज़माने में थीं (पैग़म्बर भेजे थे) मगर उन्होंने उन पैग़म्बरों को न माना (सो हमने उनको तंगदस्ती और बीमारी) वग़ैरह मसाइब में मुब्तला किया और इन सख़्तियों के (साथ पकड़ा ताकि वे लोग ढीले पड़ जायें) कि आफ़तें आने पर अल्लाह तआला शानुहू को याद किया जाता है मगर वे इस पर भी अपनी हरकतों से बाज़ न आये (पस जब उनको हमारी तरफ़ से सज़ा पहुँची तो उन्होंने आजिज़ी क्यों न की) ताकि उनकी आह व ज़ारी और आजिज़ी और तौबा से उनका क़ुसूर माफ़ कर दिया जाता (लेकिन उनके दिल तो वैसे ही सख़्त रहे और शैतान उनके आमाले (बद को जिनमें वे मुब्तला थे और उनकी हरकतों (को उनकी निगाह में आरास्ता करके दिखाता रहा, पस जब वे लोग उन चीज़ों को भूले रहे जिनकी उनको) पैग़म्बरों की तरफ़ से (नसीहत की जाती थी तो हम ने उन पर) राहत व आराम और ऐश व इशरत की(हर चीज़ के दरवाज़े खोल दिये) जिस से वे ऐश परस्ती में खूब मस्त हो गये (यहां तक कि जब वे उन चीज़ों के साथ जो उनको दी गयी थीं, खूब इतराने) और अकड़ने (लगे, तो हम ने उनको दफ़्अतन पकड़ लिया) और ऐसा फ़ौरी अज़ाब एकदम उन पर मुसल्लत कर दिया कि उनको इसका वहम व गुमान भी न था (फिर तो वे हैरत में रह गये) कि यह क्या हो गया, यह मुसीबत कहां से नाज़िल हो गयी (फिर) तो हमारे फ़ौरी अज़ाब से (ज़ालिमों की बिल्कुल जड़ कट गयी और अल्लाह का शुक्र है, जो तमाम जहान का परवरदिगार है) कि ऐसे ज़ालिमों की जड़ कट गयी।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस आयते शरीफ़ा की तिलावत से हक् तआला शानुहू की आदते शरीफ़ा की तरफ़ इशारा करके तंबीह फ़रमायी है कि अल्लाह तआला की नाफ़रमानियों और गुनाहों के बावजूद ऐश व इशरत और राहत के असबाब का होना बसा औक़ात हक् तआला शानुहू की तरफ़ से ढील होती है, जिसको इस्तिदराज कहते हैं, जिसका क़ुरआन पाक की इस आयत में ज़िक्र है और इसके अलावा भी मुतअद्दद आयात में इस पर तंबीह फ़रमायी है, यह बड़ी ख़तरे की चीज़ है, इसलिए कि इस में अक्सर फ़ौरी अज़ाब आदमी पर ऐसा मुसल्लत हो जाता है कि वह हैरान खड़ा रह जाता है

और कोई रास्ता उसको इस आफ़त से बचने का नहीं मिलता, इसलिए इस से बहुत ज़्यादा डरते रहना चाहिए। हज़रत उबादा रज़ि॰ हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद नक़ल करते हैं कि जब हक़ तआला शानुहू किसी क़ौम को बढ़ाना चाहते हैं तो उन में मियाना रवी और इफ़्फ़त (पाकदामनी) पैदा फ़रमाते हैं, और जब किसी क़ौम को ख़त्म करना मक़्सूद होता है तो उस में ख़ियानत का दरवाज़ा खुल जाता है, फिर जब वे अपनी इस हरकत पर ख़ूब ख़ुश होने लगते हैं तो एकदम उन पर अज़ाब मुसल्लत हो जाता है और यह आयत पढ़ी।

हज़रत हसन रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि जिस पर वुस्अत की जाये और वह यह न समझे कि यह मेरी हलाकत का पेश ख़ेमा है, वह समझदार नहीं है, और जिस पर तंगी हो और वह यह न समझे कि यह मेरे लिए हक़ तलाआ शानुहू की तरफ़ रूजूअ् करने के लिए मुहलत है, वह समझदार नहीं। *(दुर्रे मंसूर)*

एक हदीस में है कि ख़ुद हुज़ूर सल्ल॰ ने भी यह दुआ की, या अल्लाह, जो मुझ पर ईमान लाये और उन अहकामात को सच्चा जाने, जो मैं लाया हूँ तू उसको माल कम अता कर, औलाद कम अता कर और अपनी मुलाक़ात का शौक़ उसको ज़्यादा दे, और जो मुझ पर ईमान न लाये और इन अहकामात को सच्चा न जाने, उसको माल भी ज़्यादा दे, औलाद भी ज़्यादा दे, और उसकी उम्र भी ज़्यादा कर। *(कंज़)*

बहरहाल मआसी (गुनाहों) की कसरत के साथ नेमतों का होना ज़्यादा ख़तरनाक है और ऐसे वक़्त में बहुत ज़्यादा तौबा इस्तिग़्फ़ार और हक़ तआला शानुहू की तरफ़ रूजूअ् करने की ज़रूरत है, इसी वजह से हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का वह इर्शाद है जो क़रीब ही इस से पहली हदीस के आख़िर में गुज़रा, कि किसी फ़ाजिर के पास कोई नेमत देख कर रश्क न करो, तुम्हें ख़बर नहीं कि वह मरने के बाद किस मुसीबत में गिरफ़्तार होने वाला है।

(١٨) عن شداد بن اوس قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم الكيس من دان نفسه وعمل لمابعد الموت والعاجز من اتبع نفسه هواها وتمنى على الله رواه الترمذى وابن ماجه كذا فى المشكوٰة وزادالسيوطى فى الجامع الصغير احمد والحاكم ورقم له بالصحة.

18. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है – कि समझदार शख़्स वह है जो अपने नफ़्स को (अल्लाह तआला की

रिज़ा के कामों का) मुतीअ् बनाये और मरने के बाद काम आने वाले आमाल करे और आजिज़ (बेवक़ूफ़ है) वह शख़्स जो नफ़्स की ख़्वाहिशों का इत्तिबाअ् करे और अल्लाह तआला से उम्मीदें बांधे।

फ़ायदाः- यानी हालत तो यह है कि नफ़्स की ख़्वाहिशात के मुक़ाबले में हराम व हलाल की भी परवाह नहीं और अल्लाह तआला शानुहू से बड़ी बड़ी उम्मीदें लगाये रखता है कि वह रहीम है, करीम है और इन उम्मीदों पर गुनाह की भी परवाह न करे।

एक और हदीस में है, समझदार वह है जो मौत के बाद के लिए अमल करे और नंगा वह है जो दीन से ख़ाली हो। या अल्लाह, ज़िन्दगी सिर्फ़ आख़िरत ही की ज़िन्दगी है। *(जामिउस्सग़ीर)*

यानी वही पायदार ज़िन्दगी है जो उसमें ख़ाली हाथ गया तो उसने उम्र भी खो दी। यहां यह समझ लेना चाहिए कि हक़ तआला शानुहू की रहमत और मग़्फ़िरत का उम्मीदवार होना और उसकी तमन्ना करना और उसको अल्लाह तआला शानुहू से मांगना दूसरी चीज़ है, और उसकी रहमत और मग़्फ़िरत के घमंड पर ग़ुरूर और यह गुमान कि मैं जो चाहे करता रहूँ, मेरी मग़्फ़िरत तो हो ही जायेगी, दूसरी चीज़ है :

इमाम राज़ी रह० फ़रमाते हैं कि हक़ तआला शानुहू का इर्शाद :-

فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَلَا يَغُرَّنَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ۝

"फ़ला तग़ुर्रन्न-कुमुल् हयातुद्दुन्या वला यग़ुर्रन्न-कुम् बिल्लाहिल् ग़रूर०"

और दूसरा इर्शाद :-

وَلٰكِنَّكُمْ فَتَنْتُمْ اَنْفُسَكُمْ وَتَرَبَّصْتُمْ وَارْتَبْتُمْ وَغَرَّتْكُمُ الْاَمَانِيُّ

व लाकिन्न-कुम् फ़तन्तुम् अन्फ़ुस-कुम् व त-रब्बस्तुम वर्तब्तुम् व ग़र्रत् कुमुल् अमानिय्यु०"

ये दोनों आयतें ग़ुरूर की मज़म्मत के लिए बहुत काफ़ी हैं। *(एह्या)*

पहली आयते शरीफ़ा सूरः लुक़्मान के आख़िर में है जिसका तर्जुमा यह है कि :-

"तुम लोगों को दुनिया की ज़िन्दगी धोखे में न डाल दे (कि तुम इस में

लग कर आख़िरत को भूल जाओ) और न तुमको धोखेबाज़ (शैतान) धोखे में डाल दे।

इस आयते शरीफ़ा की तफ़्सीर में हज़रत सओद बिन जुबैर रह० फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला से धोखे में डाल देने का मतलब यह है कि तू गुनाह करता रहे और मग़्फ़िरत की तमन्नायें करता रहे।

दूसरी आयते शरीफ़ा सूरः हदीद के दूसरे रूकूअ् की है, जिसमें ऊपर से क़ियामत के दिन के एक मंज़र का ज़िक्र है कि उस दिन मुसलमानों के सामने एक नूर दौड़ता हुआ होगा जो उनके आगे आगे चल रहा होगा (यह पुल सिरात पर से गुज़रने के लिए होगा) इसके बाद इर्शाद है :-

يَوْمَ يَقُولُ الْمُنٰفِقُوْنَ وَالْمُنٰفِقٰتُ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوا انْظُرُوْنَا نَقْتَبِسْ مِنْ نُّوْرِكُمْ قِيْلَ
ارْجِعُوْا وَرَآءَكُمْ فَالْتَمِسُوْا نُوْرًا ؕ فَضُرِبَ بَيْنَهُمْ بِسُوْرٍ لَّهٗ بَابٌ ؕ بَاطِنُهٗ فِيْهِ الرَّحْمَةُ
وَظَاهِرُهٗ مِنْ قِبَلِهِ الْعَذَابُ ۝ يُنَادُوْنَهُمْ اَلَمْ نَكُنْ مَّعَكُمْ ؕ قَالُوْا بَلٰى وَلٰكِنَّكُمْ فَتَنْتُمْ
اَنْفُسَكُمْ وَتَرَبَّصْتُمْ وَارْتَبْتُمْ وَغَرَّتْكُمُ الْاَمَانِيُّ حَتّٰى جَآءَ اَمْرُ اللّٰهِ وَغَرَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ۝

"यौ-म यक़ूलुल् मुनाफ़िक़ू-न वलमुनाफ़िक़ातु लिल्ल ज़ी-न आ म नुन् ज़ुरूना, नक़्तबिस मिन् नूरिकुम० क़ीलर्जिअू वरा-अकुम फ़ल्तमिसू नूरन्० फ़ज़ुरि-ब बै-न हुम बिसूरिल् लहू बाब० बातिनुहू फ़ीहिर्रह्मतु व ज़ाहिरू-हू मिन क़िब लिहिल् अज़ाब० युनादूनहुम् अलम् नकुम् म-अ-कुम्० क़ालू बला व लाकिन्न कुम फ़तन्तुम अन्फ़ु-स कुम व त-रब्बस्तुम वर्तब्तुम व ग़र्रत कुमुल अमानिय्यु हत्ता जा-अ अम्रूल्लाहि व ग़र्र-कुम् बिल्लाहिल् ग़रूर०"

तर्जुमाः- उस दिन मुनाफ़िक़ मर्द और मुनाफ़िक़ औरतें मोमिनों से कहेंगे कि ज़रा हमारा इंतिज़ार कर लो ताकि हम भी तुम्हारे नूर से कुछ रोशनी हासिल कर लें, तो उनको जवाब दिया जायेगा कि तुम अपने पीछे लौट जाओ वहां रोशनी तलाश करो, फिर क़ायम कर दी जायेगी उनके दर्मियान एक दीवार, जिसका एक दरवाज़ा होगा कि उसके अंदरूनी जानिब रहमत है और उसके बाहर की तरफ़ अज़ाब (फिर वे मुनाफ़िक़) आवाज़ देंगे, क्या दुनिया में हम तुम्हारे साथ न थे, वे (मुसलमान) कहेंगे कि हां साथ थे तो सही लेकिन तुमने अपने को गुमराही में फंसा रखा था और तुम (मुसलमानों पर मसाइब के मुतमन्नी और) मुन्तज़िर रहा

करते और (इस्लाम के हक़ होने में) तुम शक किया करते थे और तुमको तुम्हारी बेहूदा तमन्नाओं ने धोखे में डाल रखा था यहां तक कि ख़ुदा का हुक्म (मौत के मुताल्लिक़) आ पहुँचा और तुमको धोखा देने वाले (शैतान) ने अल्लाह तआला के साथ धोखे में डाल रखा था।

अबू सुफ़ियान रह० से इस आयते शरीफ़ा की तफ़्सीर में नक़ल किया गया है कि "फ़तन्तुम अन्फ़ु-स कुम" यानी तुम ने गुनाहों के साथ अपने आपको गुमराही में डाल रखा था और तुमको तमन्नाओं ने धोखे में डाल रखा था कि तुम यह कहते थे कि हमारी मग़्फ़िरत हो जायेगी। *(दुर्रे मंसूर)*

साहिब मज़ाहिर रह० लिखते हैं कि शैख़ इब्ने अिबाद शाज़ली रह० बीच शरहे हिकम के कहते हैं कि उलमा बिल्लाह ने कहा है कि रजा-ए-क़ाज़िब (झूठी उम्मीद) कि मग़रूर हो साहब उस का उस पर और बाज़ रहे अमल से और दिलेर करे उसको गुनाहों पर, हक़ीक़त में रजा नहीं है बल्कि वह आरज़ू और फ़रेब शैतान का है।

और हज़रत मारूफ़ करख़ी रह० फ़रमाते हैं कि तलब करना बहिश्त का बे अमल के एक गुनाह है गुनाहों से, और उम्मीदे शफ़ाअत बे सबब व बे इलाक़ा एक क़िस्म है फ़रेब से, और उम्मीद रखना रहमत की, इससे कि फ़रमांबरदारी न करे उसकी हमाक़त और जहालत है।

और हसन बसरी रह० कहते हैं कि एक क़ौम को बाज़ रखा बख़्शिश की आरज़ुओं ने, यहां तक कि बाहर निकली दुनिया से और हाल यह है कि नहीं उनके लिए नेकी। कहता है एक उनमें से कि अच्छा रखता हूँ मैं गुमान अपने परवरदिगार से कि बख़्शने वाला है। झूठ कहता है, अगर अच्छा होता गुमान उसका साथ परवरदिगार के, तो अच्छे अमल करता और हसन बसरी रह० फ़रमाते हैं कि दूर रहो ऐ बन्दगाने ख़ुदा उन बातिल आरज़ुओं से कि यह वादी अहमक़ों की है कि पड़े हैं लोग इनमें। क़सम है ख़ुदा-ए-तआला की, न दी ख़ुदा-ए-तआला ने किसी बंदे को उस की आरज़ुओं से ख़ैर दुनिया में और न आख़िरत में। *(मज़ाहिरे हक़)*

इमाम ग़ज़ाली रह० फ़रमाते हैं कि हर सआदत की कुंजी चौकन्ना रहना और समझ से काम करना है और हर क़िस्म की बदबख़्ती का चश्मा ग़ुरूर और ग़फ़लत है। हक़ तआला शानुहू का कोई एहसान ईमान और मअ्रिफ़त से बढ़

कर नहीं है और उनके लिए कोई ज़रिया इसके सिवा नहीं कि हक़ तआला शानुहू बसीरत के नूर के साथ दिल में इंशिराह पैदा कर दे, और हक़ तआला शानुहू का कोई अज़ाब कुफ़्र और मअ़सियत से बढ़ कर नहीं है और इसका मुहर्रिक सिर्फ़ यह है कि जहालत की ज़ुल्मत से दिल की आंख अंधी हो जाये, पस समझदार और बसीरत वाले लोगों के दिल ऐसे हैं जैसा कि किसी ताक़ में निहायत रौशन चिराग़ (बिजली का क़ुमक़ुमा) रखा हुआ हो, जिसकी मिसाल क़ुरआन पाक की आयत "क-मिश्कातिन फ़ीहा मिस्बाह" है (सूरः नूर, रूकूअ 5) और ग़ुरूर में पड़े हुए लोगों के दिल ऐसे हैं जैसा कि बहुत सी तारीकियों में कोई शख़्स हो कि कोई चीज़ उसको नज़र न आती होः-

كَظُلُمٰتٍ فِىْ بَحْرٍ لُّجِّيٍّ يَّغْشٰهُ (نور ع ٥)

"कज़ुलुमातिन् फ़ी बहरिल् लुज्जिय्यिं यं यग़शाहु॰"

(सूरः नूर, रूकूअ 5)

और जब यह मालूम हो गया कि ग़ुरूर ही असल सर चश्मा हर हलाकत का है तो इस की थोड़ी सी तफ़सील मालूम होने की ज़रूरत है, ताकि उस से एहतिमाम से बचा जा सके। ग़ुरूर की मज़म्मत क़ुरआन पाक और अहादीस में कसरत से वारिद हुई है।

और हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि समझदार शख़्स वह है जो अपने नफ़्स को क़ाबू में रखे और मरने के बाद के लिए अमल करता रहे और अहमक़ वह शख़्स है जो अपने नफ़्स की ख़्वाहिशात का इत्तिबाअ् करे और अल्लाह जल्ल शानुहू पर तमन्नायें करे और अहादीस में जह्ल के मुताल्लिक़ जितनी मज़म्मतें और वओदें आयी हैं। वे सारी ग़ुरूर पर भी सादिक़ आती हैं, इसलिए कि ग़ुरूर जह्ल से पैदा होता है, बल्कि जह्ल ही का जुज़्व है, अगरचे हर जह्ल ग़ुरूर नहीं, लेकिन हर ग़ुरूर जह्ल ज़रूर है और इनमें सबसे बढ़ा हुआ जह्ल व ग़ुरूर कुफ़्फ़ार और फ़ासिक़ फ़ाजिर लोगों का है जो कहते हैं कि दुनिया नक़द है, इस वक़्त मौजूद है और आख़िरत उधार है, बाद को आने वाली है और "नक़द रा बनसीह गुज़ाश्तन कारे ख़िरद मंदां नेस्त," नक़द को उधार पर छोड़ना समझदारों का काम नहीं है यह ख़्याल इंतिहाई बेवक़ूफ़ी और जहालत का है। यह क़ायदा वहां है जहां नक़द और उधार बराबर हों, लेकिन जहां कोई चीज़ नक़द एक रूपये में फ़रोख़्त होती हो और उधार सौ रूपये में जाती हो, वहां कोई

अहमक़ भी यह न कहेगा कि नक़द को उधार पर न छोड़ना चाहिये। हालांकि दुनिया की नक़द लज़्ज़तों को आख़िरत के मुक़ाबले में कोई निस्बत ही नहीं, दुनिया की ज़िन्दगी किसी शख़्स की अगर हो सकती है तो सौ डेढ़ सौ बरस, इस मुद्दत को आख़िरत की कभी ख़त्म न होने वाली मुद्दत के साथ क्या निस्बत हो सकती है।

इसी तरह कोई तबीब किसी बीमार को एक फल को मना करता है और मुह्लिक बताता है, लेकिन बीमार कभी यह नहीं कह सकता कि इस फल के खाने की लज़्ज़त नक़द है और सेहत उधार है, लिहाज़ा नक़द को उधार पर नहीं छोड़ना चाहिए। इसी तरह बाज़ बेवक़ूफ़ कहते हैं कि दुनिया की मज़र्रत और तकलीफ़ यक़ीनी है और आख़िरत में शक है। यक़ीन को शक पर न छोड़ना चाहिए। यह भी जहालत की बात है कि आदमी तिजारत में मशक़्क़तें बर्दाश्त करता है जो यक़ीनी हैं, महज़ नफ़े की उम्मीद पर, जिस में शक है कि तिजारत में नफ़ा होगा या नहीं।

बीमार कड़वी से कड़वी दवा पीता है, फ़स्द कराता है, जोंकें लगवाता है, शग़ाफ़ दिलवाता है, जिनकी तक्लीफ़ यक़ीनी है और यह सब कुछ सेहत की उम्मीद पर है, जिसका होना यक़ीनी नहीं। इसी तरह से यह ख़्याल भी धोखा है कि आख़िरत को हम ने देखा नहीं है, तजुर्बा नहीं किया, मालूम नहीं क्या हक़ीक़त है, यह ख़्याल भी इंतिहाई जहालत है। नावाक़िफ़ आदमी के लिए अगर ज़ाती इल्म न हो तो तजुर्बेकार वाक़िफ़ लोगों का क़ौल ही मोतबर होता है, कोई बीमार कभी यह नहीं कह सकता कि फ़लां दवा में यह तासीर मुझे मालूम नहीं कि है या नहीं, वह हमेशा इलाज में वाक़िफ़ तबीब और डाक्टरों के क़ौल पर एतिमाद करता है, कभी किसी डाक्टर से यह नहीं पूछता कि इस का असर होना मुझे दलील से समझाओ और अगर कोई ऐसा कहेगा तो वह बेवक़ूफ़ समझा जायेगा। इसी तरह आख़िरत के बारे में अंबिया, औलिया, हुकमा, और उलमा के अक़्वाल जिन पर सारी दुनिया ने हमेशा एतिमाद किया है, मोतबर होंगे और चंद जाहिलों के यह कह देने से कि हमें मालूम नहीं या हमें यक़ीन नहीं, कुछ असर नहीं पड़ता। इस क़िस्म के औहाम आख़िरत के बारे में काफ़िरों को पेश आते हैं और मुसलमान अपनी ज़बान से मुसलमान होने का इक़रार करने की वजह से ज़बान से तो ऐसी बातें नहीं कहते लेकिन वे अल्लाह तआला के अहकाम को पसे पुश्त डालकर उसके गुनाहों का इर्तिकाब करके शहवतों और दुनिया की

लज़्ज़तों में मुन्हमिक होकर अमली तौर पर और ज़बाने हाल से गोया वे भी यही कहते हैं, वर्ना कोई वजह नहीं कि वे दुनिया को आख़िरत पर तर्जीह दें।

ये लोग ज़बानी तौर पर धोखे में पड़े हुए हैं, कहते हैं कि हक़ तआला शानुहू करीम है, ग़फ़ूर है, रहीम है उसकी माफ़ी के हम उम्मीदवार हैं, हमको उसकी मग़्फ़िरत पर एतिमाद है और इसका उम्मीदवार रहना मतलूब है, महमूद है, पसंदीदा है, उसकी रहमत बड़ी वसीअ् है, उसकी मग़्फ़िरत के दरियाओं के मुक़ाबले में हमारे गुनाह क्या चीज़ हैं। ख़ुद हक़ तआला शानुहू का पाक इर्शाद है जो हदीसे क़ुदसी में आया है कि मैं बंदे के गुमान के साथ हूँ, उसको चाहिए कि मेरे साथ नेक गुमान करे।

यह इर्शाद यक़ीनन सही है और हक़ तआला शानुहू का यही पाक इर्शाद है लेकिन इसके साथ यह भी समझ लेना चाहिए कि शैतान आदमी को किसी सही कलाम के ग़लत मायने से गुमराह कर सकता है। अगर ऐसा न होता तो शैतान को धोखा देने में मुश्किल पेश आती।

इसी चीज़ को हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने इस इर्शाद में वाज़ेह फ़रमाया है कि समझदार वह शख़्स है जो अपने नफ़्स को मुतीअ् करे और मरने के बाद के लिए आमाल करे और अहमक़ वह शख़्स है जो नफ़्स की ख़्वाहिशात का इत्तिबाअ् करे और अल्लाह तआला पर उम्मीदें बांधे। यही वे उम्मीदें हैं हक़ तआला शानुहू पर, जिसको शैतान ने अल्लाह तआला शानुहू के साथ नेक उम्मीद का ग़िलाफ़ पहनाया है। हक़ तआला शानुहू ने अपने से उम्मीदें रखने की ख़ुद शरह फ़रमा दी। चुनांचे इर्शाद है :-

اِنَّ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِیْنَ هَاجَرُوْا وَجَاهَدُوْا فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ اُولٰٓئِكَ یَرْجُوْنَ رَحْمَتَ اللّٰهِ ط (بقرہ ع ۲۷)

"इन्नल्लज़ी-न आम नू वल्लज़ी-न हाज-रू व जाह-दू फ़ी सबीलिल्लाहि उलाइ-क यर्जू-न रह्म-तल्लाह॰" *(बक़रः रूकूअ 27)*

हक़ीक़त में जो लोग ईमान लाये हैं और जिन लोगों ने अल्लाह के वास्ते अपना वतन छोड़ दिया है और जिन लोगों ने अल्लाह के रास्ते में जिहाद किया है (जिस में दीन के लिए हर कोशिश दाख़िल है) यही लोग हैं जो अल्लाह तआला शानुहू की रहमत के उम्मीदवार हैं।

क़ुरआन पाक में जगह जगह जन्नत को और उसकी नेमतों को आमाल

का बदला बताया गया है। ऐसी हालत में ग़ौर करने की चीज़ है कि अगर कोई शख़्स किसी को बर्तन बनाने पर मज़दूर रखे और बहुत बड़ी उज्रत उसकी मुक़र्रर कर दे जिसकी कोई हद नहीं और वह शख़्स निहायत करीम हो, मज़दूरी देने में बहुत सख़ी हो और उज्रते मुक़र्ररः पर बहुत ज़्यादा इन्आम देने वाला हो, जो बर्तन ख़राब बन जायें उन पर भी उज्रतें दे देता हो जिन में मामूली नुक़्स रह जाये उन पर भी तसामोह कर लेता हो, और मज़दूर बजाये बर्तन बनाने के उन औज़ारों को भी तोड़ दे जिन से बर्तन बनाया जाता है और यह कहे कि बर्तन बनवाने वाला बड़ा करीम है, उजरत बहुत ज़्यादा देता है इसलिए उन सबको तोड़ फोड़ कर बहुत ज़्यादा उजरत मिलने के इंतिज़ार में बैठा रहे, क्या कोई अहमक़ भी उसको अक़्ल वाला कहेगा और यह हमाक़त इस वजह से होती है कि उम्मीद और तमन्ना में फ़र्क़ नहीं समझा जाता।

हज़रत हसन बसरी रह० से किसी ने पूछा कि बाज़ लोग नेक अमल तो करते नहीं और यह कहते हैं कि हम अल्लाह तआला शानुहू से नेक उम्मीद रखते हैं, वह फ़रमाने लगे (उम्मीद तुम से) बहुत दूर है, बहुत दूर है, ये उनकी आरज़ूयें हैं जिन में वे झुके जा रहे हैं। जो शख़्स किसी चीज़ की उम्मीद रखता है, वह उसको तलब किया करता है और जो शख़्स किसी चीज़ से (मसलन अज़ाबे इलाही से) डरा करता है, वह उस से भागा करता है (उस से बचने की कोशिश किया करता है)

मुस्लिम बिन यसार रह० ने एक दिन इतना लम्बा सज्दा किया कि (दांतों में खून उतर आया और) दो दांत गिर गये। एक शख़्स कहने लगे कि (मुझसे अमल तो होता नहीं, लेकिन) अल्लाह तआला से मग़्फ़िरत की उम्मीद ज़रूर रखता हूँ। मुस्लिम कहने लगे, बहुत बईद है और बहुत ही बईद है, जो शख़्स किसी चीज़ की उम्मीद करता है, उसको तलब किया करता है और जो शख़्स किसी चीज़ से डरा करता है, उस से भागा करता है। पस जब कोई शख़्स लड़का होने की उम्मीद करे और निकाह न करे या निकाह करे और सोहबत न करे, और लड़का होने की उम्मीद बांधे रहे, वह बेवक़ूफ़ कहलायेगा। इसी तरह जो शख़्स अल्लाह तआला की रहमत की उम्मीद करे और ईमान भी न लाये या ईमान लाये और नेक अमल ही न करे और गुनाहों को न छोड़े वह बेवक़ूफ़ है, अलबत्ता जो शख़्स निकाह करे और सोहबत करे फिर वह मुतरद्दिद रहे कि बच्चा होता है या नहीं होता और अल्लाह के फ़ज़्ल से उम्मीद रखे कि बच्चा

होगा और इस से डरता रहे कि रहम पर कोई आफ़त न आये, बच्चा ज़ाया न हो जाये, उसकी हिफ़ाज़त करता रहे, यहां तक कि बच्चा पैदा हो जाये तो वह अक़्लमंद है। इसी तरह जो शख़्स ईमान लाये, नेक अमल करे, बुरे आमाल से बचता रहे और अल्लाह तआला की रहमत की उम्मीद करे कि वह क़ुबूल फ़रमा लेगा और क़ुबूल न होने से डरता रहे हत्ताकि इसी हाल पर उसकी मौत आ जाये तो वह समझदार है, इसके अलावा सब बेवक़ूफ़ हैं यही लोग हैं जिनके मुताल्लिक़ क़ुरआन पाक में इर्शाद है:-

وَلَوْ تَرٰٓى اِذِ الْمُجْرِمُوْنَ نَاكِسُوْا رُءُوْسِهِمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ (سجده ع ٢)

"व लौ तरा इज़िल् मुज्रिमू-न नाकिसू रूऊसिहिम् अिन्द रब्बिहिम्॰"

(सज्दा, रूकूअ 1)

और अगर आप उन लोगों का हाल देखें तो अजब हाल देखें, जब कि ये मुज्रिम लोग अपने रब के सामने सर झुकाये खड़े होंगे और कहते होंगे, ऐ हमारे परवरदिगार! बस हमारी आंखें और कान खुल गये, पस हमको दुनिया में फिर भेज दीजिये ताकि हम अब नेक काम करें, अब हमको पूरा यक़ीन आ गया यानी अब हमको इसका पूरा यक़ीन आ गया कि जैसा बग़ैर निकाह के और सोहबत के बच्चा पैदा नहीं होता और बग़ैर ज़मीन को दुरूस्त करने और बीज डालने के खेती नहीं होती, उसी तरह बग़ैर नेक अमल के आख़िरत का सवाब नहीं मिलता, अलबत्ता ऐसे मौक़े पर अल्लाह तआला शानुहू की मग़्फ़िरत की उम्मीद बहुत पसंदीदा है जब कि कोई शख़्स गुनाहों में मुन्हमिक हो और तौबा करना चाहता हो और शैतान उसको धोखे में डाले कि तुझ जैसे गुनाहगार की तौबा कहां क़ुबूल हो सकती है, तूने इतने गुनाह किये हैं कि इनकी बख़्शिश तो मुम्किन ही नहीं तो उसके लिए अल्लाह जल्ल शानुहू का इर्शाद है :-

قُلْ يٰعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ
جَمِيْعًا ۭ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۝ وَاَنِيْبُوْٓا اِلٰى رَبِّكُمْ وَاَسْلِمُوْا لَهٗ مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ
الْعَذَابُ ثُمَّ لَا تُنْصَرُوْنَ ۝ وَاتَّبِعُوْٓا اَحْسَنَ مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ
الْعَذَابُ بَغْتَةً وَّاَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ ۝ اَنْ تَقُوْلَ نَفْسٌ يّٰحَسْرَتٰى عَلٰى مَا فَرَّطْتُّ فِيْ جَنْۢبِ
اللّٰهِ وَاِنْ كُنْتُ لَمِنَ السّٰخِرِيْنَ ۝ اَوْ تَقُوْلَ لَوْ اَنَّ اللّٰهَ هَدٰىنِيْ لَكُنْتُ مِنَ الْمُتَّقِيْنَ ۝
اَوْ تَقُوْلَ حِيْنَ تَرَى الْعَذَابَ لَوْ اَنَّ لِيْ كَرَّةً فَاَكُوْنَ مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ ۝ (زمر ع ٦)

"कुल या अिबादियल्लज़ी-न अस-फ़ू अला अन्फ़ुसिहिम् ला तक़्न-तू मिर्रह्म-तिल्लाहि॰ इन्नल्ला-ह यग़्फ़िरूज़्ज़ुनू-ब जमीअन् इन्नहू हुवल् ग़फ़ूरूर्रहीम॰ व अनीबू इला रब्बिकुम व अस्लिमू लहू मिन् क़ब्लि अंय्यअ्ति-य कुमुल् अज़ाबु सुम्-म ला तुन्सरून॰ वत्तबिअू अह्स-न मा उन्ज़ि-ल इलैकुम् मिर्रब्बिकुम् मिन् क़ब्लि अंय्यअ्ति-य कुमुल् अज़ाबु बग़्त-तवं व अन्तुम् ला तश्अुरून॰ अन् तक़ू-ल नफ़्सुंय्या हस्रता अला मा फ़र्रत्तु फ़ी जंबिल्लाहि व इन् कुन्तु लमिनस्साख़िरीन॰ औ तक़ू-ल लौ अन्नल्ला-ह हदानी लकुन्तु मिनल् मुत्तक़ीन॰ औ तक़ू-ल ही-न तरल् अज़ा-ब लौ अन्-न ली कर्र-तन् फ़-अकू-न मिनल् मुह्सिनीन॰"

(ज़ुमर, रूकूअ 6)

तर्जुमाः- "आप कह दीजिए ऐ मेरे बंदो, जिन्होंने अपने ऊपर ज़्यादतियां (और कुफ़्र व शिर्क और गुनाहों के ज़ुल्म) किये हैं, तुम ख़ुदा की रहमत से ना उम्मीद मत हो बिलयक़ीन अल्लाह तआला शानुहू तमाम गुनाहों को माफ़ कर देगा, वाक़ई वह बड़ा बख़्शने वाला है, बड़ी रहमत करने वाला है। तुम अपने रब की तरफ़ रूजूअ् कर लो और उसकी फ़रमांबरदारी कर लो, क़ब्ल इसके कि तुम पर अज़ाब होने लगे, फिर उस वक़्त तुम्हारी कोई मदद न की जायेगी और तुम अपने रब के पास से आये हुए अच्छे अच्छे हुक्मों पर चलो, क़ब्ल इसके कि तुम पर अचानक अज़ाब आ पड़े और तुम को ख़्याल भी न हो, (और तुम्हें अल्लाह तआला की तरफ़ रूजूअ् करने का हुक्म इसलिए दिया जाता है कि कल को क़ियामत के दिन) कभी कोई शख़्स कहने लगे, अफ़सोस मेरी इस कोताही पर, जो मैं ने ख़ुदा तआला की जनाब में की (यानी उसकी इताअत में मुझ से कोताही हुई) और मैं (ख़ुदा तआला के अह्काम पर) हंसता ही रहा, या कोई यों कहने लगे कि अल्लाह तआला मुझको हिदायत करता तो मैं भी परहेज़गारों में से होता या कोई अज़ाब को देख कर यों कहने लगे कि काश मेरा (दुनिया में) फिर जाना हो जाये तो मैं नेक बंदों में से हो जाऊं।

इन आयतों में हक़ तआला शानुहू ने सारे गुनाहों की बख़्शिश के वायदे के साथ उसकी तरफ़ रूजूअ् करने का हुक्म भी फ़रमाया है और दूसरी जगहः-

وَاِنِّیْ لَغَفَّارٌ لِّمَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ثُمَّ اهْتَدٰی (طٰهٰ ع ٤)

"व इन्नी ल-ग़फ़्फ़ारूल् लिमन् ता-ब व आ-म-न व अमि-ल सालिहन् सुम्मह्त-दा"

(ताहा, रूकूअ 4)

इर्शाद फ़रमाया है कि मैं बड़ी मग़्फ़िरत करने वाला हूँ, उस शख़्स के लिए जो तौबा करे और ईमान लाये और अच्छे आमाल करे, फ़िर इसी राह पर क़ायम रहे।

इस आयते शरीफ़ा में मग़्फ़िरत को इन चीज़ों पर मुरत्तब फ़रमाया है, पस जो शख़्स तौबा के साथ मग़्फ़िरत का उम्मीदवार है, वह तो हक़ीक़त में उम्मीदवार है, और जो गुनाहों पर इसरार के साथ मग़्फ़िरत की उम्मीद बांधे हुए है, वह अहमक़ है, धोखे में पड़ा हुआ है। पहले लोग इबादत पर मर मिटते थे, गुनाहों से निहायत एहतिमाम से बचते थे, तक़्वे में मुबालग़ा करते थे, शुब्हे की चीज़ों से भी दूर रहते थे, रात दिन इबादत में मशग़ूल रह कर हर वक़्त अल्लाह के ख़ौफ़ से रोते थे, और इस ज़माने में हर शख़्स खुश है, अल्लाह के अज़ाब से हर वक़्त मुत्मईन है, उसको किसी वक़्त भी अज़ाब का डर नहीं, दिन रात शहवतों और दुनिया की लज़्ज़तों में मुन्हमिक है, दुनिया के कमाने का हर वक़्त फ़िक्र है, और अल्लाह तआला शानुहू की तरफ़ ज़रा भी तवज्जोह नहीं है और गुमान यह है कि हम लोगों को अल्लाह के करम पर भरोसा है, उसकी मग़्फ़िरत की उम्मीद है, उसकी माफ़ी का यक़ीन है, गोया अंबिया-ए-किराम, सहाबा-ए-इज़ाम और औलिया-ए-मुख़्लिसीन में से तो किसी को उसकी रहमत की उम्मीद ही न थी, जो इस क़दर मशक़्क़तें बर्दाश्त करते रहे। *(एह्या)*

(۱۹) عن ابن عمرؓ قال اتیت النبی صلی اللہ علیہ وسلم عاشر عشرۃ فقام رجل من الانصار فقال یانبی اللہ من اکیس الناس واحزم الناس قال اکثرھم ذکرًا للموت واکثرھم استعدادًا للموت اولٰئک الاکیاس ذھبوا بشرف الدنیا وکرامۃ الاخرۃ رواہ ابن ابی الدنیا والطبرانی فی الصغیر باسناد حسن ورواہ ابن ماجۃ مختصرًا باسناد جید کذا فی الترغیب وذکرلہ الزبیدی طرقا عدیدۃ

19. हज़रत इब्ने उमर रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि हम दस आदमी, जिन में एक मैं भी था, हुज़ूर सल्ल॰ की ख़िदमत में हाज़िर हुए, एक अंसारी ने हुज़ूर सल्ल॰ से सवाल किया कि सब से ज़्यादा समझदार और सब से ज़्यादा मुहतात आदमी कौन है; हुज़ूर सल्ल॰ ने इर्शाद फ़रमाया कि जो लोग मौत को सब से ज़्यादा याद करने वाले हों और मौत के लिए सबसे ज़्यादा तैयारी करने वाले हों, यही लोग हैं जो दुनिया की शराफ़त और आख़िरत का एज़ाज़ ले उडे।

फ़ायदा:- हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मौत को

कसरत से याद करने और याद रखने के बारे में मुख़्तलिफ़ उन्वानात से बहुत सी अहादीस वारिद हुई हैं, जिन में से बाज़ रिवायात इस रिसाले में क़रीब ही उम्मीदों के मुख़्तसर करने की हदीस के ज़ैल में गुज़र चुकी हैं, उन में हुज़ूर सल्ल० का हुक्म भी मुख़्तलिफ़ रिवायात में गुज़र चुका है कि लज़्ज़तों को तोड़ देने वाली चीज़ यानी मौत को कसरत से याद किया करो। हुज़ूर सल्ल० के इस एहतिमाम ही की वजह से इस मज़्मून को मुस्तक़िल भी ज़िक्र कर रहा हूँ, इसलिए कि मौत को कसरत से याद रखना, उम्मीदों के मुख़्तसर होने का भी ज़रिया है, मौत की तैयारी का भी सबब है, दुनिया से बे रग़बती पैदा होने का भी सबब है जो असल मक़्सूद है। माल को जमा करके बेकार छोड़ जाने से भी रोकने वाला है, आख़िरत के लिए ज़ख़ीरा जमा कर लेने में भी मुईन (मददगार) है और गुनाहों से तौबा करते रहने पर भी उभारने वाला है, दूसरों पर ज़ुल्म व सितम और दूसरे के हक़ूक़ को ज़ाया करने से भी रोकने वाला है, ग़रज़ यह अमल बहुत से फ़वाइद अपने अंदर रखता है, इसी वजह से मशाइख़े सुलूक का भी मामूल है कि अपने मुरीदीन में से अक्सरों को जिनके मुनासिबे हाल हो, इसका मुराक़बा ख़ास तौर से तल्क़ीन करते हैं।

एक हदीस में है कि एक जवान मज्लिस में खड़े हुए और अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह सल्ल० मोमिनीन में सबसे ज़्यादा समझदार कौन है, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमया कि मौत का कसरत से ज़िक्र करने वाला और उसके आने से पहले पहले उसके लिए बेहतरीन तैयारी करने वाला। *(इत्तिहाफ़)*

एक मर्तबा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने क़ुरआन पाक की आयत :-

فَمَنْ يُّرِدِ اللّٰهُ اَنْ يَّهْدِيَهٗ يَشْرَحْ صَدْرَهٗ (زمر ع ۳)

"फ़मंय्युरिदिल्लाहु अंय्यहिद्द य-हू-यशरह सद्र-हू०"

(ज़ुमर, रुकूअ 3)

तिलावत फ़रमाई जिसका तर्जुमा यह है कि हक़ तआला शानुहू जिसको हिदायत फ़रमाने का इरादा फ़रमाते हैं, इस्लाम के लिए उसके सीने को खोल देते हैं (कि इस्लाम के मुताल्लिक़ उसको शरहे सद्र हो जाता है।)

इसके बाद हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि (इस्लाम का) नूर जब सीने में दाख़िल होता है, तो सीना उसके लिए खुल जाता है। किसी ने अर्ज़ किया, या

रसूलल्लाह! इसकी (कि इस्लाम का नूर सीने में दाख़िल हो गया) कोई अलामत है, हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि धोखे के घर (दुनिया) से बुअ्द पैदा होना, हमेशा रहने वाले घर (आख़िरत) की तरफ़ रूजूअ् और मौत आने से पहले उसके लिए तैयारी करना। *(मिश्कात)*

हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि मैं ने अपनी वालिदा की क़ब्र की ज़ियारत करने की इजाज़त मांगी थी, मुझे उसकी ज़ियारत की इजाज़त मिल गयी, तुम लोग क़ब्रस्तान जाया करो, इसलिए कि यह चीज़ मौत को याद दिलाती है।

एक और हदीस में है कि इस से इब्रत होती है। एक और हदीस में है कि क़ब्रस्तान जाने से दुनिया से बे रग्बती पैदा होती है और आख़िरत याद आती है।

हज़रत अबूज़र रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल॰ ने मुझ से इर्शाद फ़रमाया कि क़ब्रस्तान जाया करो, इस से तुमको आख़िरत याद आयेगी और मुर्दों को गुस्ल दिया करो कि यह (नेकियों से) ख़ाली बदन का इलाज है, और इससे बहुत बड़ी नसीहत हासिल होती है, और जनाज़े की नमाज़ में शिर्कत किया करो, शायद इससे कुछ रंज व ग़म तुम में पैदा हो जाए कि ग़मगीन आदमी (जिस को आख़िरत का ग़म हो) अल्लाह तआला के साये में रहता है और हर ख़ैर का तालिब रहता है। *(तर्ग़ीब)*

एक हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि बीमारों की इयादत किया करो और जनाज़ों के साथ जाया करो कि यह आख़िरत को याद दिलाता है।

एक हकीम किसी जनाज़े के साथ जा रहे थे, रास्ते में लोग उस मय्यित पर अफ़सोस और रंज कर रहे थे, वह साहब फ़रमाने लगे कि तुम अपने ऊपर रंज और अफ़सोस करो तो ज़्यादा मुफ़ीद है, यह तो चला गया और तीन आफ़तों से निजात पा गया, आइंदा मलकुल मौत को देखने का ख़ौफ़ इसको नहीं रहा, मौत की सख़्ती झेलने की इसको नौबत नहीं आयेगी, बुरे ख़ात्मे का ख़ौफ़ ख़त्म हो गया (अपनी फ़िक्र करो ये तीनों मरहले तुम्हारे लिए बाक़ी हैं।)

हज़रत अबूदर्दा रज़ि॰ एक जनाज़े के साथ जा रहे थे किसी रास्ता चलने वाले ने पूछा कि यह किसका जनाज़ा है? फ़रमाने लगे कि यह तेरा जनाज़ा है और अगर तुझे यह बात गरां गुज़रे तो मेरा जनाज़ा है (मतलब यह है कि यह वक़्त अपनी मौत के याद करने का है, इस वक़्त फ़ुज़ूल बात की तरफ़ मुतवज्जह होना बिल्कुल नामुनासिब है।)

हज़रत हसन बसरी रह० का इर्शाद है कि ताज्जुब और बहुत ज़्यादा ताज्जुब उन लोगों पर है जिनको (आख़िरत के) सफ़र के लिए तोशा तैयार कर लेने का हुक्म मिला हुआ है और रवानगी अंक़रीब होने का ऐलान हो चुका है, फिर भी ये लोग (दुनिया के) खेल में मशग़ूल हैं। इनके मुताल्लिक़ मशहूर है कि जब यह किसी जनाज़े को देखते तो इनका ऐसा हाल रंज व ग़म से होता, जैसा कि अभी अपनी मां को दफ़्न करके आये हों। *(तंबीहुल ग़ाफ़िलीन)*

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि एक यहूदी औरत उनके पास आयी और (किसी एहसान के बदले में) कहने लगी कि अल्लाह तआला शानुहू तुम्हें क़ब्र के अज़ाब से बचाये। हज़रत आइशा रज़ि० ने हुज़ूर सल्ल० से पूछा, क्या क़ब्रों में भी अज़ाब होता है? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया बेशक, क़ब्रों में भी अज़ाब होता है और इसके बाद से (लोगों की तालीम के लिए) हमेशा हुज़ूर सल्ल० हर नमाज़ के बाद क़ब्र के अज़ाब से पनाह मांगा करते थे।

एक हदीस में हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि मुर्दों पर क़ब्र में ऐसा सख़्त अज़ाब होता है कि उसकी आवाज़ चौपाये तक सुनते हैं। एक हदीस में हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद नक़ल किया गया कि मुझे यह डर है कि तुम (ख़ौफ़ की वजह से) मुर्दों को दफ़्न करना छोड़ दोगे वर्ना मैं अल्लाह तआला से इसकी दुआ करता कि तुम्हें क़ब्र के अज़ाब की आवाज़ सुना दे।

हज़रत उस्मान रज़ि० जब किसी क़ब्र पर खड़े होते तो इतना रोते कि दाढ़ी मुबारक तर हो जाती, किसी ने पूछा कि आप इतना ज़्यादा जन्नत और जहन्नम के ज़िक्र से भी नहीं रोते, जितना क़ब्र के तज़्किरे से रोते हैं? उन्होंने फ़रमाया कि मैं ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना है कि क़ब्र आख़िरत की मंज़िलों में से सबसे पहली मंज़िल है, जो इस से सहूलत से छूट गया, उसके लिए इसके बाद की मंज़िलें सब आसान हैं और जो इसमें (अज़ाब में) फंस गया, उसके लिए इसके बाद की मंज़िलें और भी ज़्यादा सख़्त हैं, और मैं ने हुज़ूर सल्ल० से यह भी सुना है कि मैं ने कोई मंज़र ऐसा नहीं देखा कि क़ब्र का मंज़र उस से ज़्यादा सख़्त न हो।

एक और हदीस में हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद नक़ल किया गया कि क़ब्र में रोज़ाना सुबह और शाम दो वक़्त मय्यित को उसका वह घर दिखाया जाता है जिस में वह क़ियामत के बाद जायेगा। अगर वह जन्नत वालों में है तो जन्नत का

मकान दिखाया जाता है (जिस से उसको क़ब्र ही में फ़रहत और सुरूर हासिल होता रहता है) और अगर वह जहन्नम वालों में होता है तो जहन्नम का मकान दिखाया जाता है, (जिससे उसके रंज व ग़म फ़िक्र व ख़ौफ़ में इज़ाफ़ा होता रहता है।)

हज़रत आइशा रज़ि॰ फ़रमाती हैं कि एक मर्तबा यहूदी औरत मेरे दरवाज़े पर आयी और भीख मांगने लगी कि मुझे कुछ खाने को दे दो, अल्लाह तुम्हें दज्जाल के फ़ित्ने से और क़ब्र के अज़ाब से बचाये। हज़रत आइशा रज़ि॰ फ़रमाती हैं कि मैं ने उस औरत को ठहरा लिया और इतने में हुज़ूर सल्ल॰ तशरीफ़ ले आये, मैं ने हुज़ूर सल्ल॰ से अर्ज़ किया कि इस यहूदी औरत ने दो बातें कहीं। हुज़ूर सल्ल॰ ने इर्शाद फ़रमाया कि दज्जाल का फ़ितना ऐसा है कि कोई नबी पहले अंबिया में से ऐसे नहीं गुज़रे जिन्होंने अपनी उम्मत को उसके फ़ित्ने से डराया न हो, लेकिन मैं उसके मुताल्लिक़ एक बात कहता हूँ जो अब तक किसी नबी ने नहीं कही, वह यह है कि वह काना है और उसकी पेशानी पर काफ़िर का लफ़्ज़ लिखा हुआ होगा, जिस को हर मोमिन पढ़ लेगा और क़ब्र के फ़ित्ने की बात यह है कि जब कोई नेक बंदा मरता है तो फ़रिश्ते उसको क़ब्र में बिठाते हैं। वह ऐसी हालत में बैठता है कि न उसको कोई घबराहट होती है न उस पर कोई ग़म मुसल्लत होता है, फिर उससे अव्वल तो इस्लाम के मुताल्लिक़ सवाल किया जाता है कि तू इस्लाम के बारे में क्या कहता था? इसके बाद फिर उससे पूछा जाता है कि तू इस शख़्स के (यानी हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के बारे में क्या कहता है? वह कहता है कि यह मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं जो अल्लाह तआला शानुहू के पास से हमारे पास वाज़ेह दलीलें लेकर आये, हमने उन सबको सच्चा माना जो हुज़ूर सल्ल॰ लेकर आये थे। इसके बाद उसको अव्वल दोज़ख़ का एक मक़ाम दिखाया जाता है जहां वह देखता है कि आदमी एक दूसरे पर टूटे पड़े हैं, फिर उस से कहा जाता है कि इस जगह को देख, हक़ तआला शानुहू ने तुझे इस आफ़त से निजात अता फ़रमा दी। इसके बाद उसको जन्नत का एक मक़ाम दिखाया जाता है, जहां वह निहायत ज़ेब व ज़ीनत देखता है और उसके लुत्फ़ के मनाज़िर देखता है, फिर उस से कहा जाता है कि इस में यह जगह तेरे रहने की है (क़ियामत के बाद तू यहां लाया जायेगा) तू दुनिया में आख़िरत का यक़ीन करने वाला था और इसी पर तेरी मौत हुई और इसी पर क़ियामत में तू क़ब्र से उठाया जायेगा। और जब कोई बुरा

आदमी मरता है तो उसको क़ब्र में बिठाया जाता है, वह निहायत घबराहट और ख़ौफ़ ज़दा होकर बैठता है, और उससे भी वही सवाल होता है जो पहले गुज़रा, वह जवाब देता है कि मुझे तो कुछ ख़बर नहीं लोगों को मैं ने जो कहते सुना था वही मैं भी कह देता था। उसके लिए अव्वल जन्नत का दरवाज़ा खोल कर उसको वहां की ज़ेब व ज़ीनत और जो नेमतें वहां हैं, दिखाई जाती हैं, फिर उस से कहा जाता है कि यहां तेरा असल मक़ाम था, मगर तुझे यहां से हटा दिया गया, फिर उसको जहन्नम दिखाई जाती है जहां एक पर दूसरा टूटा पड़ा है और उससे कहा जाता है कि अब तेरा ठिकाना यह है, तू दुनिया में शक ही में रहा, उसी पर मरा, उसी पर क़ियामत में उठाया जायेगा। *(तर्ग़ीब)*

हज़रत अबू क़तादा रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल॰ के पास को एक जनाज़ा गुज़रा, हुज़ूर सल्ल॰ ने उसको देखकर फ़रमाया कि यह शख़्स या तो राहत पाने वाला है या इससे राहत हो गयी। इसके बाद इर्शाद फ़रमाया कि मोमिन बंदा तो मर कर दुनिया की मशक़्क़तों और तक्लीफ़ों से राहत पा लेता है और अल्लाह तआला शानुहू की रहमत के अंदर चला जाता है (यह तो राहत पाने वाला हुआ) और फ़ाजिर आदमी जब मरता है तो दूसरे आदमी और आबादियाँ और दरख़्त और जानवर सब के सब उसकी मौत से राहत पाते हैं। *(मिश्कात)*

इसलिए कि उसके गुनाहों की नहूसत से दुनिया में आफ़ात नाज़िल होती हैं, बारिश बंद हो जाती है, जिसकी वजह से शहरों में फ़साद होता है और दरख़्त खुश्क होने लगते हैं, जानवरों को चारा मिलना मुश्किल हो जाता है, इस वजह से उसकी मौत से सबको राहत मिलती है कि उसकी नहूसत से सबको तक्लीफ़ पहुँच रही थी।

हज़रत इब्ने उमर रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल॰ ने एक मर्तबा मेरा मोंढ़ा पकड़ कर फ़रमाया कि दुनिया में ऐसे रहो जैसे कोई अजनबी बल्कि रास्ता चलता मुसाफ़िर होता है। हज़रत इब्ने उमर रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि जब तू सुबह करे तो शाम का इंतिज़ार न कर, और जब शाम करे तो सुबह का इंतिज़ार न कर, और अपनी सेहत के ज़माने में मर्ज़ के ज़माने के लिए तोशा ले ले (कि जो आमाल सेहत में करता होगा, मर्ज़ में उनका सवाब मिलता रहेगा) और अपनी ज़िन्दगी में मौत के लिए तोशा ले ले। *(मिश्कात)*

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि हम एक मर्तबा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मअिय्यत में एक जनाज़े के साथ चले,

क़ब्रस्तान पहुँच कर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक क़ब्र के पास तशरीफ़ रखी और इर्शाद फ़रमाया कि क़ब्र पर कोई दिन ऐसा नहीं गुज़रता जिसमें वह निहायत फ़सीह और साफ़ आवाज़ के साथ यह ऐलान नहीं करती कि ऐ आदम के बेटे! तू मुझे भूल गया, मैं तंहाई का घर हूँ, अजनबीयत का घर हूँ, मैं वहशत का घर हूँ, मैं कीड़ों का घर हूँ, मैं निहायत तंगी का घर हूँ, मगर उस शख़्स के लिए जिस पर अल्लाह तआला शानुहू मुझे वसीअ् बना दे। इसके बाद हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि क़ब्र जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ है या दोज़ख़ के गढ़ों में से एक गढ़ा है।

हज़रत सह्ल रज़ि० फ़रमाते हैं कि एक सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु का इंतिक़ाल हुआ, सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अज्मईन उन की तारीफ़ करने लगे और उनकी कसरत से इबादत का हाल बयान करने लगे। हुज़ूर सल्ल० सुकूत के साथ सुनते रहे, जब वे हज़रात चुप हुए तो हुज़ूर सल्ल० ने दर्याफ़्त किया कि यह मौत को कभी याद किया करते थे? सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, उसका ज़िक्र तो नहीं करते थे। फिर हुज़ूर सल्ल० ने दर्याफ़्त फ़रमाया कि अपने जी चाहने की चीज़ों को छोड़ देते थे? (कि किसी चीज़ के खाने को मसलन दिल चाहता हो और न खाते हों) सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐसा तो नहीं होता था। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि यह सहाबी (रज़ि०) उन दर्जों को न पहुँचेंगे जिनको तुम लोग (जो इन दोनों चीज़ों को करते हो) पहुँच जाओगे।

एक और हदीस में है कि हुज़ूर सल्ल० की मज्लिस में एक सहाबी रज़ि० की इबादत और मुजाहदे की कसरत का ज़िक्र हुआ, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि वह मौत को कितना याद करते थे, सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया कि उसका तज़्किरा तो हम ने नहीं सुना, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया तो फिर वह उस दर्जे के नहीं है (जैसा तुम समझ रहे हो)।

हज़रत बरा रज़ि० फ़रमाते हैं कि हम हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ एक जनाज़े के दफ़्न में शरीक हुए, हुज़ूर सल्ल० ने वहां जाकर एक क़ब्र के क़रीब तशरीफ़ रखी और इतना रोये कि ज़मीन तर हो गयी और इर्शाद फ़रमाया कि भाईयो, इस चीज़ के लिए (यानी क़ब्र में जाने के लिए) तैयारी कर लो। *(तर्ग़ीब)*

हज़रत शक़ीक़ बिन इब्राहीम रह० फ़रमाते हैं कि आदमी चार चीज़ों में

ज़बान से तो मेरी मुवाफ़क़त करते हैं और अमल से मुख़ालफ़त करते हैं:-

1. वे कहते हैं कि हम खुदा तआला के बंदे (और ग़ुलाम) हैं और काम आज़ाद लोगों के से करते हैं।

2. ये कहते हैं कि ख़ुदा तआला शानुहू हमारी रोज़ी का ज़िम्मेदार है लेकिन उनके दिलों को (उसकी ज़िम्मेदारी पर) उस वक़्त तक इत्मीनान नहीं होता जब तक दुनिया की कोई चीज़ उनके पास न हो।

3. ये कहते हैं कि आख़िरत दुनिया से अफ़ज़ल है, लेकिन दुनिया के लिए माल जमा करने की फ़िक्र में हर वक़्त लगे रहते हैं (आख़िरत का कुछ भी फ़िक्र नहीं)।

4. ये कहते हैं कि मौत यक़ीनी चीज़ है, आकर रहेगी लेकिन आमाल ऐसे लोगों के से करते हैं जिनको कभी मरना ही न हो।

अबू हामिद लफ़ाफ़ रह॰ कहते हैं कि जो शख़्स मौत को कसरत से याद करे, उसके ऊपर तीन चीज़ों का इक्राम होता है।

1. तौबा जल्द नसीब होती है,

2. माल में क़नाअत मयस्सर होती है और,

3. इबादत में निशात और दिल बस्तगी पैदा होती है।

और जो शख़्स मौत से ग़ाफ़िल रहता है, उस पर तीन अज़ाब मुसल्लत किये जाते हैं-:

1. गुनाह से तौबा में ताख़ीर होती रहती है,

2. आमदनी पर राज़ी नहीं होता (उस को कम ही समझता रहता है, चाहे कितनी ही हो जाये) और

3. इबादात में सुस्ती पैदा होती है। *(तंबीहुल ग़ाफ़िलीन)*

इमाम ग़ज़ाली रह॰ फ़रमाते हैं कि तमाम तारीफ़ें उसी पाक ज़ात के लिए हैं जिस ने बड़े बड़े ज़ालिम और जाबिर लोगों की गर्दनें मौत से मरोड़ दीं, और ऊँचे ऊँचे बादशाहों की कमरें मौत से तोड़ दीं और बड़े बड़े ख़ज़ानों के मालिकों की उम्मीदें मौत से ख़त्म कर दीं। ये सब लोग ऐसे थे जो मौत के ज़िक्र से भी नफ़रत करते थे, लेकिन अल्लाह का जब वायदा (मौत का वक़्त) आया तो

उनको गढ़े में डाल दिया गया और ऊँचे ऊँचे महलों से ज़मीन के नीचे पहुँचा दिया गया और बिजली और क़ुमक़ुमों की रोशनी में नर्म बिस्तरों से क़ब्र के अंधेरे में पहुंचा दिया गया। गुलामों और बांदियों से खेलने के बजाय ज़मीन के कीड़ों में फंस गये, और अच्छे अच्छे खाने पीने में लुत्फ़ उड़ाने के बजाय ख़ाक में लोटने लगे और दोस्तों की मज्लिसों के बजाय तंहाई की वहशत में गिरफ़्तार हो गये, पस क्या उन लोगों ने किसी मज़बूत क़िले के ज़रिये मौत से अपनी हिफ़ाज़त कर ली या उस से बचने के लिए कोई दूसरा ज़रिया इख़्तियार कर लिया, पस वह ज़ात पाक है जिसके क़हर और ग़लबे में कोई दूसरा शरीक नहीं और हमेशा रहने के लिए सिर्फ़ उसी की तंहा ज़ात है, कोई उसका मिस्ल नहीं।

पस जब मौत हर शख़्स को पेश आने वाली है और मिट्टी में जाकर मिलना है और क़ब्र के कीड़ों का साथी बनना है और मुन्किर नकीर से साबिक़ा पड़ना है और ज़मीन के नीचे मुद्दतों रहना है और वही बहुत तवील ज़माने तक ठिकाना है और क़ियामत का सख़्त मंज़र देखना है और उसके बाद मालूम नहीं कि जन्नत में जाना है या दोज़ख़ ठिकाना है, तो निहायत ज़रूरी है कि मौत का फ़िक्र हर वक़्त आदमी पर मुसल्लत रहे उसी के ज़िक्र का तज़्किरा, मशग़ला रहे, उसी की तैयारी में हर वक़्त मशग़ूल रहे, उसी का एहतिमाम हर चीज़ पर ग़ालिब रहे और उस की आमद का हर वक़्त इंतिज़ार रहे कि उसके आने का कोई वक़्त मुक़र्रर नहीं, न मालूम कब आ जाये।

इसलिए हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि समझदार वह शख़्स है जो अपने नफ़्स पर क़ाबू रखे और मौत के बाद काम आने वाली चीज़ों में मशग़ूल रहे और किसी काम के लिए तैयारी इसके बग़ैर नहीं होती कि हर वक़्त उसका एहतिमाम रहे, उसका ज़िक्र तज़्किरा रहे, इसलिए कि जो शख़्स दुनिया में मुन्हमिक और उसके धोखे की चीज़ों में फंसा हुआ है उस की शहवतों पर फ़रेफ़्ता है, उसका दिल मौत से बिल्कुल ग़ाफ़िल होता है और अगर मौत का ज़िक्र कभी किया जाये तो उसकी तबीअत को उससे तकद्दुर और कराहियत होती है, इसी को हक़ तआला शानुहू इर्शाद फ़रमाते हैं:-

قُلْ اِنَّ الْمَوْتَ الَّذِیْ تَفِرُّوْنَ مِنْهُ فَاِنَّهٗ مُلٰقِیْكُمْ ثُمَّ تُرَدُّوْنَ اِلٰی عٰلِمِ الْغَیْبِ وَالشَّهَادَةِ فَیُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝ (جمعه ع ١)

"क़ुल इन्नल् मौतल्लज़ी तफ़िर्रू-न मिन्हु फ़इन्न-हू मुलाक़ी-कुम्

सुम-म तुरद्दून इला आलि मिल् ग़ैबि वश्शहा दति फ़युनब्बि-उ कुम बिमा कुन्तुम् तअ्मलून॰" *(जुमा, रूकूअ 1)*

तर्जुमा:- आप उनसे कह दीजिये कि जिस मौत से तुम भागते हो, वह तुमको आ पकड़ेगी फिर तुम उस पाक ज़ात की तरफ़ ले जाये जाओगे, जो हर पोशीदा और ज़ाहिर बात को जानने वाली है, फिर वह तुमको तुम्हारे सब किये हुए काम जता देगी (और उनका बदला देगी)

उलमा ने लिखा है मौत के बारे में आदमी चार तरीक़े के होते हैं:-

1. एक तो वे लोग हैं जो दुनिया में मुन्हमिक हैं जिन को मौत का ज़िक्र भी इस वजह से अच्छा नहीं लगता कि उस से दुनिया की लज़्ज़तें छूट जायेंगी, ऐसा शख़्स मौत को कभी याद नहीं करता और अगर कभी करता भी है तो बुराई के साथ इसलिए कि दुनिया के छूटने का उसको क़लक़ और अफ़सोस होता है।

2. दूसरा वह शख़्स है जो अल्लाह तआला की तरफ़ रूजूअ् करने वाला तो है, मगर इब्तिदाई हालत में है, मौत के ज़िक्र से उसको अल्लाह तआला का ख़ौफ़ भी होता है और उस से तौबा में पुख़्तगी भी होती है। यह शख़्स भी मौत से डरता है मगर न इस वजह से कि दुनिया छूट जायेगी बल्कि इस वजह से कि उसकी तौबा ताम नहीं है। यह भी अभी मरना नहीं चाहता कि अपने हाल की इस्लाह कर ले और उसके फ़िक्र में लगा हुआ है, तो यह शख़्स मौत को नापसंद करने में मअ्ज़ूर है और यह हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के उस इर्शाद में दाख़िल न होगा जिसमें हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि जो शख़्स अल्लाह तआला के मिलने को नापसंद करता है, अल्लाह तआला शानुहू भी उसके मिलने को नापसंद फ़रमाते हैं, इसलिए कि यह शख़्स हक़ीक़त में हक़ तआला शानुहू की मुलाक़ात से कराहत नहीं करता बल्कि अपनी तक़्सीर और कोताही से डरता है।

इसकी मिसाल उस शख़्स की सी है जो महबूब की मुलाक़ात के लिए उस से पहले कुछ तैयारी करना चाहता हो ताकि महबूब का दिल ख़ुश हो, अलबत्ता यह ज़रूरी है कि यह शख़्स इसकी तैयारी में हर वक़्त मशग़ूल रहता हो, उसके सिवा कोई दूसरा मशग़ला उसको न हो और अगर यह बात नहीं है तो फिर यह भी पहले ही जैसा है, यह भी दुनिया में मुन्हमिक ही है।

3. तीसरा वह शख़्स है जो आरिफ़ है, उसकी तौबा कामिल है, ये लोग

मौत को महबूब रखते हैं, उसकी तमन्नायें करते हैं, इसलिए कि आशिक़ के लिए महबूब की मुलाक़ात से ज़्यादा बेहतर वक़्त कौन सा होगा, मौत का वक़्त मुलाक़ात का वक़्त है। आशिक़ को वस्ल के वायदे का वक़्त हर वक़्त ख़ुद ही याद रहा करता है, वह किसी वक़्त भी उसको नहीं भूलता। यही लोग हैं जिनको मौत के जल्दी आने की तमन्नायें रहती हैं, वे इसी क़लक़ में रहते हैं कि मौत आ ही नहीं चुकती कि इस मआसी के घर से जल्द ख़लासी हो।

एक रिवायत में है कि हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु के इंतिक़ाल का वक़्त जब क़रीब हुआ तो फ़रमाने लगे, महबूब (मौत) एहतियाज के वक़्त आया जो नादिम हो वह कामियाब नहीं होता, या अल्लाह! तुझे मालूम है कि हमेशा मुझे फ़क़्र ग़िना से ज़्यादा महबूब रहा और बीमारी सेहत से ज़्यादा पसंदीदा रही और मौत ज़िन्दगी से ज़्यादा मरग़ूब रही, मुझे जल्दी से मौत अता कर दे कि तुझ से मिलूं।

4. चौथी क़िस्म जो सब से ऊँचा दरजा है, उन लोगों का है, जो हक़ तआला शानुहू की रिज़ा के मुक़ाबले में तमन्ना भी नहीं रखते, वे अपनी ख़्वाहिश से अपने लिए न मौत को पसंद करते हैं, न ज़िन्दगी को, यह इश्क़ की इंतिहा में रिज़ा और तस्लीम के दरजे को पहुँचे हुए हैं, बहर हाल मौत का ज़िक्र हर हालत में मूजिबे अज्र व सवाब है कि जो शख़्स दुनिया में मुन्हमिक है, उसको भी मौत के ज़िक्र से उसकी लज़्ज़तों में कमी आयेगी, और कुछ न कुछ तो दुनिया से बुअद (दूरी) पैदा होगा ही, इसलिए हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि लज़्ज़तों को तोड़ने वाली चीज़ (मौत) को कसरत से याद किया करो यानी इसके ज़िक्र से अपनी लज़्ज़तों में कमी किया करो ताकि अल्लाह जल्ल शानुहू की तरफ़ रूजूअ् हो सके।

एक हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि अगर जानवरों को मौत के मुताल्लिक़ इतनी मालूमात हों जितनी तुम लोगों को हैं तो कभी कोई मोटा जानवर तुमको खाने को न मिले (मौत के ख़ौफ़ से सब दुबले हो जायें)

हज़रत आइशा रज़ि॰ ने हुज़ूर सल्ल॰ से दर्याफ़्त किया कि कोई शख़्स (बग़ैर शहादत के भी) शहीदों के साथ हो सकता है? हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि जो शख़्स दिन रात में बीस मर्तबा मौत को याद करे वह हो सकता है। (एक हदीस में है जो शख़्स पच्चीस मर्तबा:-

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لِیْ فِی الْمَوْتِ وَفِیْ مَابَعْدَ الْمَوْتِ

"अल्लाहुम्म्-म बारिक् ली फ़िल् मौति व फ़ी मा बअ्दल् मौत" पढ़े वह शहीदों के दर्जे में हो सकता है।) और इन सब फ़ज़ीलतों का सबब यही है कि मौत का कसरत से ज़िक्र करना इस धोखे के घर से बेरग्बती पैदा करता है और आख़िरत के लिये तैयारी पर आमादा करता है और मौत से ग़फ़लत दुनिया की शहवतों और लज़्ज़तों में इन्हिमाक पैदा करती है।

अता ख़ुरासानी रह० कहते हैं कि एक मर्तबा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का एक मज्लिस पर गुज़र हुआ, जहां ज़ोर से हंसने की आवाज़ आ रही थी, हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया कि अपनी मजालिस में लज़्ज़तों को मुकद्दर करने वाली चीज़ का तज़्किरा शामिल कर लिया करो, सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्ल० लज़्ज़तों को मुकद्दर करने वाली चीज़ क्या है? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि "मौत"।

एक हदीस में हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद आया है कि मौत को कसरत से याद किया करो, यह गुनाहों को ज़ायल करती है और दुनिया से बेरग्बती पैदा करती है। *(एह्या)*

एक हदीस में हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि अगर तुमको यह मालूम हो जाये कि मरने के बाद तुम पर क्या गुज़रेगी तो कभी रग्बत से खाना न खाओ, कभी लज़्ज़त से पानी न पियो।

एक सहाबी रज़ि० को हुज़ूर सल्ल० ने वसीयत फ़रमायी की मौत का ज़िक्र कसरत से किया करो, यह तुम्हें दूसरी चीज़ों में रग्बत से हटा देगा। एक हदीस में हैं कि मौत को कसरत से याद किया करो, जो शख़्स मौत का कसरत से ज़िक्र करता है, उसका दिल ज़िंदा हो जाता है और मौत उस पर आसान हो जाती है।

एक सहाबी रज़ि० ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्ल० मुझे मौत से मुहब्बत नहीं है, क्या इलाज करूं? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया तुम्हारे पास कुछ माल है? उन्होंने अर्ज़ किया है, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि उसको आगे चलता कर दो, आदमी का दिल माल से लगा रहता है, जब उसको आगे भेज देता है तो ख़ुद भी उसके पास जाने का दिल चाहता है और जब पीछे छोड़ जाता है तो ख़ुद भी उसके पास रहने को दिल चाहता है। *(इत्तिहाफ़)*

एक हदीस में है कि जब दो तिहाई रात गुज़र जाती तो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाते कि लोगो! अल्लाह को याद कर लो, अल्लाह को याद कर लो, अंक़रीब क़ियामत का ज़लज़ला फिर सूर फूँकने का वक़्त आ रहा है और (हर शख़्स की) मौत अपनी सारी सख़्तियों समेत आ रही है। *(मिश्कात)*

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० का मामूल था कि रोज़ाना रात को उलमा के मजमे को बुलाते, जो मौत का और क़ियामत का और आख़िरत का ज़िक्र करते और ऐसा रोते जैसा कि जनाज़ा सामने रखा हो।

इब्राहीम तैमी रह० कहते हैं कि दो चीज़ों ने मुझ से दुनिया की हर लज़्ज़त को मुन्क़तअ् कर दिया, एक मौत ने, दूसरे क़ियामत में हक़ तआला शानुहू के सामने खड़ा होने के फ़िक्र ने।

हज़रत कअ्ब रज़ि० फ़रमाते हैं कि जो शख़्स मौत को पहचान ले, उस पर दुनिया की सारी मुसीबतें आसान हैं। अश्अस रह० कहते हैं कि हम हज़रत हसन बसरी रह० के पास जब भी हाज़िर होते, जहन्नम का और आख़िरत का ज़िक्र होता।

एक औरत ने हज़रत आईशा रज़ि० से अपने दिल की क़सावत की शिकायत की, हज़रत आईशा रज़ि० ने फ़रमाया कि मौत का तज़्किरा कसरत से किया करो, दिल नर्म हो जायेगा। उन्होंने ऐसा ही किया, उसके बाद हज़रत आइशा रज़ि० के पास आयीं और उनका बहुत बहुत शुक्रिया अदा किया।

(एह्या)

इमाम ग़ज़ाली रह० फ़रमाते हैं कि मौत का मामला निहायत ख़तरनाक है और लोग उस से बहुत ग़ाफ़िल हैं। अव्वल तो अपने मशाग़िल की वजह से उसका ज़िक्र ही नहीं करते और अगर करते हैं तब भी चूँकि दिल दूसरी तरफ़ मशग़ूल होता है, इसलिए महज़ ज़बानी तज़्किरा मुफ़ीद नहीं है, बल्कि ज़रूरत इसकी है कि दिल को सब तरफ़ से फ़ारिग़ करके उस को इस तरह सोचे कि गोया वह सामने ही है जिसकी सूरत यह है कि अपने अज़ीज़ व अक़ारिब और जाने वाले अहबाब का हाल सोचे कि क्यों कर उनको चारपाई पर ले जाकर मिट्टी के नीचे दाब दिया।

उनकी सूरतों का, उनके आला मंसूबों का ख़्याल करे और यह ग़ौर करे

कि अब मिट्टी ने किस तरह उनकी अच्छी सूरतों को पलट दिया होगा, उनके बदन के टुकड़े टुकड़े अलग अलग हो गये होंगे। किस तरह बच्चों को यतीम, बीवी को बेवा और अज़ीज़ व अक़ारिब को रोता छोड़ कर चल दिये। उनके सामान, उनके माल, उनके कपड़े पड़े रह गये। यही हश्र एक दिन मेरा भी होगा।

किस तरह वे मज्लिसों में बैठ कर क़ह् क़हे लगाते थे। आज ख़ामोश पड़े हैं, किस तरह दुनिया की लज़्ज़तों में मशगूल थे, आज मिट्टी में मिले पड़े हैं, कैसा मौत को भुला रखा था, आज उसके शिकार हो गये, किस तरह जवानी के नशे में थे, आज कोई पूछने वाला भी नहीं है, कैसे दुनिया के धंधों में हर वक़्त मशगूल रहते थे, आज हाथ अलग पड़ा है, पांव अलग पड़ा है, ज़बान को कीड़े चिमट रहे हैं, बदन में कीड़े पड़ गये होंगे, कैसा खिलखिला कर हंसते थे, आज दांत गिरे पड़े होंगे, कैसी कैसी तदबीरें सोचते थे, बरसों के इंतिज़ाम सोचते थे, हालांकि मौत सर पर थी, मरने का दिन क़रीब था, मगर उन्हें मालूम नहीं था कि आज रात को मैं नहीं हूँगा। यही हाल मेरा है, आज मैं इतने इंतिज़ामात कर रहा हूँ, कल की ख़बर नहीं क्या होगा? *(एह्या)*

"आगाह अपनी मौत से कोई बशर नहीं
सामान सौ बरस का है पल की ख़बर नहीं"

आसमानों पर जो फ़रिश्ते मुख़्तलिफ़ कामों पर मुतअय्यन हैं, उन को साल भर के अह्कामात एक रात में मिल जाते हैं कि इस साल फ़लां फ़लां काम करना है। और फ़लां फ़लां शख़्स के मुताल्लिक़ यह अमल दर आमद होगा। इस में रिवायात मुख़्तलिफ़ हैं कि ये अह्काम लैलतुल क़द्र में मिलते हैं। या शबे बरात में, जौन सी भी रात हो। कसरत से रिवायात में यह मज़्मून वारिद हुआ है कि इस रात में उन सब की फ़हरिस्त फ़रिश्तों के हवाले कर दी जाती है जो इस साल में मरने वाले हैं। दुनिया में आदमी निहायत ग़फ़लत से अपने लह्व व लअिब में मशग़ूल होता है और आसमानों पर उसकी गिरफ़्तारी का वारंट जारी हो गया है, उसकी मौत का हुक्म सादिर हो चुका है, जिसमें न किसी सिफ़ारिश की गुंजाइश है न उस हुक्म की अपील है, न जो वक़्त उसकी मौत का तजवीज़ हुआ है, उसमें एक मिनट की ताख़ीर हो सकती है।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ सूरः दुख़ान की तफ़्सीर में इर्शाद फ़रमाते हैं कि लैलतुल क़द्र में लौहे महफ़ूज़ से उन सब चीज़ों को नक़ल किया जाता है जो

उस साल में होने वाली हैं कि इतना रिज़्क़ दिया जायेगा, फ़लां फ़लां मरेगा, फ़लां फ़लां पैदा होगा, इतनी बारिश होगी, हत्ताकि यह भी नक़ल किया जाता है कि इस साल फ़लां फ़लां हज को जायेगा।

एक हदीस में इब्ने अब्बास रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि तू आदमी को देखेगा कि वह बाज़ारों में चल फिर रहा है लेकिन उसका नाम इस साल के मुर्दों में लिखा जा चुका है।

अबूनज़र: रज़ि॰ कहते हैं कि इस रात में साल भर के सारे काम (फ़रिश्तों पर) मुन्क़सिम कर दिये जाते हैं, तमाम साल की भलाई, बुराई, रोज़ी और मौत, तक्लीफ़ें और नरखों की अरज़ानी और गरानी तमाम साल की दे दी जाती है।

हज़रत इकरमा रज़ि॰ कहते हैं कि शबे बरात में साल भर के अहकाम तै करके हवाले कर दिये जाते हैं, इस साल के मुर्दों की फ़ह्रिस्त और हज करने वालों की फ़ह्रिस्त दे दी जाती है, न उन में कमी हो सकती है, न ज़्यादती।

एक हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद वारिद हुआ है कि एक शअ्बान से दूसरे शअ्बान तक जितने मरने वाले हैं, उन सब के औक़ात लिख कर दे दिये जाते हैं। हत्ताकि आदमी दुनिया में निकाह करता है, उसके बच्चा पैदा होता है, लेकिन आसमान में उसका नाम मुर्दों की फ़ह्रिस्त में आ चुका है। हज़रत आइशा रज़ि॰ फ़रमाती हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम शअ्बान में बहुत कसरत से रोज़े रखा करते थे, इसलिए कि इस में तमाम साल में मरने वालों की फ़ह्रिस्त मुरत्तब होती है, हत्ताकि एक आदमी निकाह करने में मशग़ूल है और वहां उसका नाम मुर्दों में लिखा गया, एक आदमी हज को जा रहा है, और उसका नाम मुर्दों में है।

एक और हदीस में है कि हज़रत आइशा रज़ि॰ ने हुज़ूर सल्ल॰ से इसकी वजह दर्याफ़्त की कि हुज़ूर सल्ल॰ शअ्बान में रोज़े बहुत कसरत से रखते हैं, हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि इसमें साल भर के मुर्दों की फ़ह्रिस्त बनती है मेरा दिल चाहता है कि मेरा नाम जब मुर्दों की फ़ह्रिस्त में आये तो मैं रोज़ादार रहूँ।

एक हदीस में है कि निस्फ़ शअ्बान की रात को हक़ तआला शानुहू मलकुल मौत को उस साल में मरने वालों की इत्तिला फ़रमा देते हैं। एक हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि रोज़ाना हमेशा जब आफ़ताब निकलता है तो वह

ऐलान करता है कि जो नेक काम करना है, कर ले, आज का दिन तेरी उम्र में फिर कभी नहीं आयेगा (इसलिए इस दिन में तेरी जो नेकियां लिखी जा सकती हैं, लिखवा ले) और दो फ़रिश्ते आसमान से ऐलान करते हैं एक उनमें से कहता है कि ऐ नेकी के तलब करने वाले ख़ुशख़बरी ले (और आगे बढ़) और दूसरा कहता है, ऐ बुराई के करने वाले बस कर और रूक जा (अपनी हलाकत का सामान इकट्ठा न कर) और दो फ़रिश्ते ऐलान करते हैं जिनमें से एक कहता है, या अल्लाह, ख़र्च करने वाले को उसका बदला दे और दूसरा कहता है ऐ अल्लाह माल को रोक के रखने वालो के माल को बर्बाद कर।

अता बिन यसार रह० कहते हैं कि जब निस्फ़ शअ्बान की रात होती है तो मलकुल मौत को एक फ़ह्‌रिस्त दे दी जाती है कि इसमें जिनके नाम हैं, उन सब की इस साल में रूह क़ब्ज़ कर ली जाये। यहां एक आदमी फ़र्श फ़ुरूश में लगा हुआ है निकाह करने में मशग़ूल है, मकान की तामीर करा रहा है और वहां मुर्दों की फ़ह्‌रिस्त में आ गया। *(दुर्रे मंसूर)*

इमाम ग़ज़ाली रह० फ़रमाते हैं कि आदमी मिस्कीन पर अगर कोई आफ़त, कोई मुसीबत, कोई हादसा, कोई रंज, कोई तक्लीफ़, कोई मशक़्क़त, कोई ख़ौफ़ कभी भी न आये, तब भी मौत की सख़्ती नज़अ् की हालत और उस का अंदेशा ऐसी चीज़ है जो उसकी सारी लज़्ज़तों को मुकद्दर कर देने के लिए काफ़ी है, उसके सारे राहत व आराम को खो देने वाली चीज़ है उसकी ग़फ़्लत को ज़ायल कर देने के लिए इसी का फ़िक्र बहुत काफ़ी है, यही चीज़ ख़ुद इतनी सख़्त है कि उस के फ़िक्र और उसकी तैयारी में आदमी को हर वक़्त मशग़ूल रहना चाहिए। बिलखुसूस ऐसी हालत में कि उसका वक़्त मालूम नहीं कि कब आकर मुसल्लत हो जाये। एक हकीम का क़ौल है कि रस्सी दूसरे के हाथ में है, न मालूम कब खींच ले।

हज़रत लुक़्मान अलैहि० का इर्शाद अपने बेटे से है कि मौत ऐसी चीज़ है जिसका हाल मालूम नहीं कि कब आ पहुँचे, उसके लिए इस से पहले पहले तैयारी कर लें कि वह दफ़्अतन आ जाये और वाक़ई बड़े ताज्जुब की बात है कि अगर आदमी इंतिहाई लज़्ज़तों में मशग़ूल हो, लह्‌व व लअिब की ऊँची मज्लिस में शरीक हो और उसको यह मालूम हो जाये कि एक सिपाही उसकी तलाश में है जो (किसी जुर्म की सज़ा में) उस को पांच कोड़े मारेगा तो सारी लज़्ज़त सारा ऐश व आराम मुकद्दर हो जायेगा (बल्कि अगर सिर्फ़ इतना ही

मालूम हो जाये कि उसके पास उस की गिरफ़्तारी का वारंट है, वह आज कल में उसको गिरफ़्तार कर लेगा तब भी सारी लज़्ज़तें ख़त्म हो जायेंगी, रात को नींद उड़ जायेगी) हालांकि उसको मालूम है कि मलकुल मौत हर वक़्त उस पर मुसल्लत है और मौत की सख़्तियां (जो हज़ारों कोड़ों से बढ़ कर हैं) उस पर मुसल्लत करने वाला है, फिर भी हर वक़्त उस से ग़ाफ़िल रहता है। यह जहालत और गुरूर की इंतिहा नहीं तो और क्या है?

हक़ीक़त यह है कि मौत की सख़्ती का हाल वही जानता है जिस पर गुज़र चुकी है, दूसरे को उसकी सख़्ती का हाल मालूम नहीं होता, वह सिर्फ़ क़ियास कर सकता है, या मरने वालों की हालत देख कर कुछ अंदाज़ा लगा सकता है और क़ियास इस तरह पर हो सकता है कि यह तो ज़ाहिर चीज़ है कि बदन के जिस हिस्से में रूह नहीं होती, उसको काटने से तक्लीफ़ नहीं होती (बदन की जो खाल मुर्दा हो जाती है, उसको काटने से तक्लीफ़ नहीं होती) लेकिन जिस उज़्व में और जिस हिस्से में जान होती है, उसमें सुई चुभोने से या उसके काटने से सख़्त तक्लीफ़ होती है, पस बदन के जिस उज़्व पर कोई ज़ख़्म होता है या उसको काटा जाता है या वह जल जाता है तो उससे तक्लीफ़ इस वजह से पहुँचती है कि रूह को और ज़िन्दगी को उस हिस्सा-ए-बदन से ताल्लुक़ है, उस ताल्लुक़ की वजह से उस उज़्व के ज़रिये से रूह पर असर पहुँचता है और रूह सारे बदन में फैली हुई है तो हर हर उज़्व में उसका बहुत थोड़ा सा हिस्सा असर किये हुए है और जितना हिस्सा उस उज़्व में है, उसी के बक़द्र रूह को तक्लीफ़ पहुँचती है, जो बहुत थोड़ा सा हिस्सा है लेकिन जो तक्लीफ़ आज़ा के बजाये बराहे रास्त सारी रूह को पहुँचे, जो मौत के वक़्त होती है, उसका अंदाज़ा इसी से हो सकता है कि कितनी होगी इसलिए कि मौत बराहे रास्त सारी रूह को खींचती है जो बदन के सारे आज़ा में फैली हुई है, इसलिए बदन का कोई हिस्सा भी ऐसा नहीं होता जिस में उतनी ही तक्लीफ़ न हो, जितनी कि उसके काटने में होती है, इसलिए कि किसी उज़्व के काटने से इस वजह से तक्लीफ़ होती है कि रूह उस से जुदा होती है और अगर वह मुर्दा हो, उसमें रूह न हो तो उसके काटने से ज़रा भी तक्लीफ़ नहीं होती, पस जब रूह के ज़रा से हिस्से के जुदा होने से इतनी तक्लीफ़ होती है तो जब सारी रूह को बदन के तमाम हिस्सों से खींचा जायेगा तो ज़ाहिर है कि कितनी तक्लीफ़ होगी।

लेकिन बदन का अगर एक हिस्सा काटा जाता है तो रूह का बक़ीया

हिस्सा सारे बदन में मौजूद होता है वह उस वक़्त क़वी होता है इसलिए आदमी चिल्लाता है, तड़पता है, मगर जब सारी रूह खींची जाती है तो उस में ज़ोअफ़ की वजह से इतनी क़ुव्वत नहीं रहती कि वह कराहने से कुछ आराम पा ले, अलबत्ता अगर बदन क़वी होता है तो उसकी बक़द्र सांस के उखड़ने के वक़्त उसमें आवाज़ पैदा होती है, जो सुनाई दे जाती है, क़ुव्वत नहीं होती तो यह भी पैदा नहीं होती। इसके निकलने के बाद हर उज़्व आहिस्ता आहिस्ता ठंडा होना शुरू हो जाता है, सब से पहले पांव ठंडे होते हैं, इसलिए कि रूह पांव की तरफ़ से सबसे पहले खिंचती है और वहां से निकलकर मुंह के ज़रिये से जाती है, फिर पिण्डलियां ठंडी होती हैं, फिर रानें, इसी तरह हर हर उज़्व ठंडा होता रहता है और हर एक उज़्व को उतनी ही तक्लीफ़ होती है जितनी उसके काटने से होती है, यहां तक कि जब रूह हलक़ तक पहुँचती है तो आंखों से नूर जाता रहता है।

इसी वजह से हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दुआओं में यह भी दुआ है कि या अल्लाह, मुझ पर मौत की और नज़अ् की सख़्ती को आसान फ़रमा। लोग भी हुज़ूर सल्ल॰ के इत्तिबाअ् में इस दुआ को मांगते हैं मगर उसकी तक्लीफ़ से नावाक़िफ़ होने की वजह से सरसरी तौर पर मांग लेते हैं। यही वजह है कि अंबिया-ए-किराम और औलिया-ए-इज़ाम रह॰ मौत से बहुत ज़्यादा डरते थे।

हज़रत ईसा अला नबिय्यिना व अलैहिस्सलातु वस्सलाम का इर्शाद अपने हवारिय्यीन से है कि मेरे लिए हक़ तआला शानुहू से इसकी दुआ करो कि नज़अ् की तक्लीफ़ मुझ पर आसान हो जाये कि मौत के डर ने मुझे मौत के क़रीब पहुँचा दिया है।

कहते हैं कि बनी इस्राईल के आबिद लोगों की एक जमाअत एक क़ब्रस्तान में पहुँची और उन्होंने आपस में मश्वरा किया कि हक़ तआला शानुहू से इसकी दुआ की जाये कि इन में से कोई मुर्दा ज़ाहिर हो, जिससे हम पूछें कि क्या गुज़री? उन लोगों ने दुआ की, कि एक मुर्दा उन पर ज़ाहिर हुआ, जिसकी पेशानी पर कसरत से सज्दा करने का निशान भी पड़ा हुआ था, वह कहने लगा कि तुम मुझ से क्या चाहते हो? मुझे मरे हुए पचास साल हो गये, लेकिन मौत के वक़्त की तक्लीफ़ अब तक मेरे बदन से नहीं गयी।

एक हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि या अल्लाह, तू रूह को

पट्ठों से हड्डियों से और उगंलियों में से निकालता है, मुझ पर मौत की सख़्ती आसान कर दे।

हज़रत हसन रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल॰ ने एक मर्तबा मौत की सख़्ती का ज़िक्र फ़रमाया और यह इर्शाद फ़रमाया कि इतनी तक्लीफ़ होती है जितनी कि तीन सौ जगह तलवार की काट से होती है।

हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू जिहाद पर जब तर्ग़ीब देते तो फ़रमाते कि अगर तुम क़त्ल न किये गये तो बिस्तरों पर मरोगे, क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है कि हज़ार जगह तलवार की काट से मरने की तक्लीफ़ ज़्यादा सख़्त है।

औज़ाओ रह॰ कहते हैं कि हमें यह बात पहुँची है कि मुर्दों को क़ियामत में उठने तक मौत की तक्लीफ़ का असर महसूस होता रहता है। हज़रत शद्दाद बिन औस रह॰ कहते हैं कि मौत दुनिया और आख़िरत की सब तक्लीफ़ों से ज़्यादा सख़्त है, वह आरा चला देने से ज़्यादा सख़्त है, वह कैंचियों से कतर देने से ज़्यादा सख़्त है, वह देग में पका देने से ज़्यादा सख़्त है। अगर मुर्दे क़ब्र से उठ कर मरने की तक्लीफ़ बतायें तो कोई शख़्स भी दुनिया में लज़्ज़त से वक़्त नहीं गुज़ार सकता, मीठी नींद उसको नहीं आ सकती।

कहते हैं कि हज़रत मूसा अला नबिय्यिना व अलैहिस्सलातु वस्सलाम का जब विसाल हुआ तो हक़ तआला शानुहू ने दर्याफ़्त किया कि मौत को कैसा पाया, उन्होंने अर्ज़ किया कि मैं अपनी जान को ऐसे देख रहा था जैसे ज़िंदा चिड़िया को इस तरह आग पर भूना जा रहा हो कि न उसकी जान निकलती हो, न उड़ने की कोई सूरत हो। एक और रिवायत में है कि ऐसी हालत थी जैसा कि ज़िंदा बकरे की खाल उतारी जा रही हो।

हज़रत आइशा रज़ि॰ फ़रमाती हैं कि जब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का विसाल हो रहा था तो पानी से भरा हुआ प्याला हुज़ूर सल्ल॰ के क़रीब रखा हुआ था, हुज़ूर सल्ल॰ बार बार अपने मुबारक हाथ को पानी में डालते और फिर मुँह पर मलते थे और फ़रमाते थे कि या अल्लाह, नज़अ् की सख़्ती पर मेरी मदद फ़रमा।

हज़रत उमर रज़ि॰ ने हज़रत कअब रज़ि॰ से दर्याफ़्त किया कि मौत की कैफ़ियत बयान करो, उन्होंने अर्ज़ किया कि अमीरूल मोमिनीन! जिस तरह एक

कांटेदार टहनी को आदमी के अंदर दाख़िल कर दिया जाये, जिसके साथ बदन का हर उज़्व लिपट जाये, फिर एकदम उसको खींच लिया जाये, इसी तरह जान खींची जाती है।

यह सब तो नज़अ् की मुख़्तसर कैफ़ियत थी, इन सबके अलावा मलकुल मौत और उसके मददगार फ़रिश्तों की सूरतों का ख़ौफ़ एक मुस्तक़िल मरहला है, जिस सूरत पर वे गुनाहगारों की जान निकालते हैं वह ऐसी डरावनी सूरत होती है कि क़वी से क़वी आदमी भी उसके देखने की ताक़त नहीं रखता।

हज़रत इब्राहीम अला नबिय्यिना व अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने मलकुल मौत से फ़रमाया कि तुम जिस सूरत पर फ़ाजिर लोगों की जान निकालते हो, वह मुझे दिखाओ, उन्होंने अर्ज़ किया आप तहम्मुल न फ़रमा सकेंगे। हज़रत इब्राहीम अलैहि॰ ने फ़रमाया कि नहीं, मैं तहम्मुल कर लूंगा। हज़रत इज़्राईल अलैहि॰ ने अर्ज़ किया अच्छा दूसरी तरफ़ मुंह कर लीजिये। हज़रत इब्राहीम अलैहि॰ ने मुंह फेर लिया, इसके बाद हज़रत इज़्राईल अलैहि॰ ने अर्ज़ किया कि अब देख लीजिये। हज़रत इब्राहीम अलैहि॰ ने जब ऊपर देखा तो एक निहायत काला आदमी (देव की शक्ल) बाल बहुत बड़े बड़े, खड़े हुए, निहायत सख़्त बदबू, काले कपड़े, उसके मुंह से, नाक से आग की लपटें निकल रही हैं। हज़रत इब्राहीम अला नबिय्यिना व अलैहिस्सलाम को यह हालत देखकर ग़श आ गया, बड़ी देर में इफ़ाक़ा हुआ तो मलकुल मौत अपनी पहली सूरत पर थे। हज़रत इब्राहीम अलैहि॰ ने फ़रमाया कि अगर फ़ाजिर शख़्स के लिए कोई दूसरी आफ़त न हो तब भी यह सूरत ही उसकी आफ़त के लिए काफ़ी है।

यह फ़ाजिरों का हाल है लेकिन अल्लाह के मुतीअ् बंदों की रूह निकालने के वक़्त वे निहायत ही बेहतरीन सूरत में होते हैं। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ही से यह नक़ल किया गया कि उन्होंने मलकुल मौत से फ़रमाया कि मुझे उस हैअत (शक्ल) को भी दिखाओ, तो उन्होंने देखा कि एक निहायत ख़ूबसूरत जवान, निहायत नफ़ीस लिबास पहने हुए ख़ुशबूयें महकती हुईं, सामने हैं। हज़रत इब्राहीम अलैहि॰ ने फ़रमाया कि मोमिन के लिए अगर मरते वक़्त इस सूरत के अलावा कोई भी फ़रहत की चीज़ न हो तो यह भी काफ़ी है।

एक हदीस में है कि हक़ तआला शानुहू जब किसी बंदे से ख़ुश होते हैं तो मलकुल मौत से फ़रमाते हैं कि फ़लां बंदे की रूह ले आओ। मैं उसको राहत पहुंचाऊं, उसका इम्तिहान हो चुका है, मैं जैसा चाहता था, वैसा ही कामयाब

निकला। मलकुल मौत उसके पास आते हैं और पांच सौ फ़रिश्ते उनके साथ होते हैं, उनमें से हर फ़रिश्ता उस शख़्स को एक ऐसी ख़ुशख़बरी और बशारत देता है जो दूसरों ने न दी हो। उनके पास रैहान की टहनियां और ज़ाफ़रान की जड़ें होती हैं। वे सब फ़रिश्ते दो क़तारों में लाइन लगा कर खड़े होते हैं, जब इब्लीस यह मंज़र देखता है तो अपना सर पकड़ कर रोना चिल्लाना शुरू कर देता है। उसके हशम खदम दौड़े हुए आकर पूछते हैं, आक़ा क्या बात हो गयी? वह कहता है कि कमबख़्तो, देखते नहीं यह क्या हो रहा है, तुम कहां मर गये थे, वे यह कहते हैं, हमारे सरदार, हमने तो बहुत कोशिश की मगर यह गुनाहों से महफ़ूज़ रहा।

हज़रत जाबिर बिन ज़ियाद रह० के जब इंतिक़ाल का वक़्त क़रीब था, किसी ने पूछा, किसी चीज़ की रग़बत है? फ़रमाया कि हसन (रह०) से मुलाक़ात करना चाहता हूँ। हज़रत हसन बसरी रह० तशरीफ़ लाये तो लोगों ने कहा कि हसन (रह०) आ गये तो हज़रत जाबिर रह० फ़रमाने लगे, भाई यह रूख़्सत का वक़्त है, अब जा रहे हैं यह ख़बर नहीं कि जन्नत की तरफ़ या जहन्नम की तरफ़। *(एह्या)*

हज़रत तमीम दारी रह० कहते हैं कि हक़ तआला शानुहू मलकुल मौत से फ़रमाते हैं कि मेरे फ़लां वली के पास जाओ और उसकी रूह ले आओ; मैं ने उसका ख़ुशी में और ग़म में दोनों में इम्तिहान ले लिया, वह ऐसा ही निकला जैसा कि मैं चाहता था, उसको ले आओ ताकि दुनिया की मशक़्क़तों से उसको राहत मिल जाये। मलकुल मौत पांच सौ फ़रिश्तों की जमाअत के साथ उसके पास आते हैं, उन सबके पास जन्नत के कफ़न होते हैं, उनके हाथों में रैहान के गुलदस्ते होते हैं, जिन में हर एक में बीस रंग होते हैं और हर रंग में नई ख़ुशबू होती है और सफ़ेद रेशमी रूमाल में महकता हुआ मुश्क होता है, मलकुल मौत उसके सिरहाने बैठते हैं और फ़रिश्ते उसको चारों तरफ़ से घेर लेते हैं और उसके हर उज़्व पर अपना हाथ रखते हैं और यह मुश्क वाला रूमाल उसकी ठोड़ी के नीचे रखते हैं और जन्नत का दरवाज़ा उसकी निगाह के सामने खोल देते हैं। उसके दिल को जन्नत की नई नई चीज़ों से बहलाया जाता है जैसा कि बच्चे के रोने के वक़्त उसके घर वाले मुख़्तलिफ़ चीज़ों से उसका दिल बहलाते हैं कभी उसकी हूरें सामने कर दी जाती हैं, कभी वहां के फल, कभी उम्दा उम्दा लिबास, ग़रज़ मुख़्तलिफ़ चीज़ें उसके सामने की जाती हैं, उसकी हूरें (बीवियां) ख़ुशी में कूदने लगती हैं। इन सब मंज़रों को देख कर उसकी रूह बदन में फड़कने लगती

है (जैसा कि पिंजरे में जानवर निकलने को फड़कता है) और मलकुल मौत उस से कहता है, ऐ मुबारक रूह! चल ऐसी बेरियों की तरफ़ जिस में कांटा नहीं है और ऐसे केलों की तरफ़ जो तेह ब तेह लगे हुए हैं और ऐसे साए की तरफ़ जो निहायत गहरा वसीअ् है और पानी बह रहे हैं (यह चंद मंज़रों की तरफ़ इशारा है जो क़ुरआन पाक में सूरः वाक़िआ की इस आयते शरीफ़ा में ज़िक्र किए गए)।

فِیْ سِدْرٍ مَّخْضُوْدٍ ۙ وَّطَلْحٍ مَّنْضُوْدٍ ۙ وَّظِلٍّ مَّمْدُوْدٍ ۙ (واقعة ع ١)

"फ़ी सिद्रिम् मख़्ज़ूदिंव्व तल्हिम् मंज़ूदिंव् व ज़िल्लिम् मम्दूद॰"

(रूकूअ 1)

और मलकुल मौत ऐसी नरमी से बातें करता है जैसा कि मां अपने बच्चे से करती है। इस वजह से कि उसको यह बात मालूम है कि यह रूह हक़ तआला शानुहू के यहां मुक़र्रब है, वह इस रूह के साथ लुत्फ़ से पेश आता है ताकि हक़ तआला शानुहू उस फ़रिश्ते से ख़ुश हों, वह रूह बदन में से ऐसी तरह सहूलत से निकलती है जैसा कि आटे में से बाल निकल जाता है। जब रूह निकलती है तो सब फ़रिश्ते उसको सलाम करते हैं और जन्नत में दाख़िल होने की बशारत देते हैं, जिसको क़ुरआन पाक :-

اَلَّذِيْنَ تَتَوَفّٰهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ طَيِّبِيْنَ (نحل ع ٤)

"अल्ल ज़ी-न त तवफ़्फ़ा हुमुल् म-ला-इ कतु तय्यिबीन॰"

(सूरः नहल, रूकूअ 4)

में ज़िक्र फ़रमाया है, और अगर वह मुक़र्रब बन्दों में होता है तो सूरः वाक़िआ में उसके मुताल्लिक़ इर्शाद है :-

فَرَوْحٌ وَّرَيْحَانٌ ۙ وَّجَنَّتُ نَعِيْمٍ ۝ (واقعة ع ٣)

"फ़-रौ हुंव्-व रै-हा नुंव् व जन्न-तु नईम॰" (रूकूअ 3)

पस जिस वक़्त रूह बदन से जुदा होती है तो वह बदन से कहती है कि हक़ तआला शानुहू तुझ को जज़ाए ख़ैर दे, तू अल्लाह की बन्दगी और इताअत में जल्दी करने वाला था, उसकी नाफ़रमानी में सुस्ती करने वाला था, तुझे आज का दिन मुबारक हो तूने ख़ुद भी अज़ाब से निजात पायी और मुझे भी निजात दी और यही मज़्मून बदन रूख़्सत के वक़्त रूह से कहता है।

उसकी जुदाई पर ज़मीन के वे हिस्से रोते हैं जिन पर वह अक्सर इबादत

किया करता था। आसमान के वे दरवाज़े रोते हैं जिन से उसके आमाल ऊपर जाया करते थे, जिन से उस का रिज़्क़ उतरा करता था।

इसके बाद वे पांच सौ फ़रिश्ते मय्यित के पास जमा हो जाते हैं और जब नहलाने वाले उसको करवट देते हैं तो वे फ़रिश्ते फ़ौरन उसको करवट देने लगते हैं और जब वे कफ़न पहनाते हैं तो उस से पहले वे फ़ौरन अपना लाया हुआ कफ़न पहना देते हैं। जब वे ख़ुशबू मलते हैं तो वे फ़रिश्ते उस से पहले अपनी लाई हुई ख़ुशबू मलते हैं। इसके बाद वे उसके दरवाज़े से क़ब्र तक दोनों जानिब क़तार लगा कर खड़े हो जाते हैं। और उसके जनाज़े का दुआ और इस्तिग़फ़ार के साथ इस्तिक़बाल करते हैं।

ये सारे मंज़र शैतान देख कर इस क़दर रोता है कि उसकी हड्डियां टूटने लगती हैं और अपने लश्करों से कहता है, तुम्हारा नास हो जाये, यह तुम से किस तरह छूट गया, वे कहते हैं कि यह मासूम था।

इसके बाद जब हज़रत मलकुल मौत उसकी रूह लेकर ऊपर जाते हैं तो जिब्रील अलैहि॰ सत्तर हज़ार फ़रिश्तों के साथ उसका इस्तिक़बाल करते हैं। ये फ़रिश्ते उसको हक़ तआला शानुहू की तरफ़ से बशारतें देते हैं। इसके बाद जब मलकुल मौत अलैहिस्सलाम उसको अर्श तक ले जाते हैं तो वहां पहुँच कर वह रूह सज्दे में गिर जाती है। हक़ तआला शानुहू का इर्शाद होता है कि मेरे बंदे की रूह को "सिद्‌रिम् मख़्ज़ूदिंव्व तल्हिंम् मन्ज़ूद॰ (सूरः वाक़िआ, रूकूअ 1) में पहुँचा दो।

जब उसकी लाश क़ब्र में रखी जाती है तो उसकी नमाज़ उसके दायें तरफ़ आकर खड़ी जो जाती है, रोज़ा बायें तरफ़ आकर खड़ा हो जाता है, क़ुरआन पाक की तिलावत और अल्लाह का ज़िक्र सर की तरफ़ खड़ा हो जाता है और जमाअत की नमाज़ को जो क़दम चले हैं, वे पांव की तरफ़ खड़े हो जाते हैं और (मसाइब पर और गुनाहों से) सब्र क़ब्र के एक जानिब खड़े हो जाते हैं। इसके बाद अज़ाब उस क़ब्र में अपनी गर्दन निकालता है और मुर्दे तक पहुँचना चाहता है, लेकिन अगर दायीं जानिब से आता है तो नमाज़ उसको कहती है कि परे हट, यह शख़्स ख़ुदा की क़सम दुनिया में मशक़्क़त उठाता रहा, अभी ज़रा राहत से सोया है, फिर वह बायीं जानिब से आता है तो रोज़ा इसी तरह उसको हटा देता है, फिर वह सर की तरफ़ से आता है तो तिलावत और ज़िक्र उसको

रोक देते हैं कि इधर को तेरा रास्ता नहीं, ग़रज़ वह जिस जानिब से जाना चाहता है, उसको रास्ता नहीं मिलता, इसलिए कि अल्लाह के वली को हर जानिब से इबादतों ने घेर रखा है। वह अज़ाब आजिज़ होकर वापस चला जाता है। इसके बाद सब्र जो एक कोने में खड़ा था, इन इबादतों से कहता है कि मैं इस इंतिज़ार में था कि अगर किसी जानिब (इबादत की किसी क़िस्म की कमज़ोरी से) कुछ ज़ोअ्फ़ (कमज़ोरी) हो तो मैं उस जानिब मुज़ाहमत करूँगा। मगर अल्हम्दुलिल्लाह कि तुम ने मिलकर उसको दफ़ा कर दिया, अब मैं (आमाल तुलने की) तराज़ू के वक़्त इसके काम आऊंगा।

इसके बाद दो फ़रिश्ते उस मुर्दे के पास आते हैं, जिनकी आंखें बिजली की तरह चमकती हैं और आवाज़ बादलों की ज़ोरदार गरज की तरह होती है, उनके दांतों की कुचलियां गाय के सींगों की तरह होती हैं, उनके मुंह से सांस के साथ आग की लपटें निकलती हैं। बाल इतने बढ़े हुए कि पांव तक लटके हुए, उनके एक मोंढे से दूसरे मोंढे तक इतना फ़ासला कि कई दिन में चल कर पूरा हो, मेहरबानी और नर्मी गोया उनके पास को भी नहीं गुज़री (अलबत्ता सख़्ती का मामला मोमिनों के साथ नहीं करते, लेकिन हैयत ही क्या कम है,) इनको मुन्किर नकीर कहा जाता है। इन में से हर एक के हाथ में एक एक इतना बड़ा और भारी हथौड़ा होता है कि अगर सारी दुनिया के इंसान और जिन्नात मिलकर उठायें तो उनसे उठ न सके। वे आकर मुर्दे से कहते हैं कि बैठ जा, मुर्दा एकदम बैठ जाता है और कफ़न उसके सर से नीचे सुरीन तक आ जाता है। वे सवाल करते हैं, तेरा रब कौन है? तेरा मज़हब क्या है? तेरे नबी का क्या नाम है? मुर्दा कहता है कि मेरा रब अल्लाह जल्ल शानुहू है जो वह्दहू ला शरी-क लहू है (वह तने तंहा मालिक है कोई उसका शरीक नहीं) मेरा दीन इस्लाम, मेरे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं जो ख़ातिमुन्नबिय्यीन हैं।

वे दोनों कहते हैं तूने सही कहा है, इसके बाद वे क़ब्र की दीवारों को सब तरफ़ से हटा देते हैं जिस से वह ऊपर से और चारों जानिब, दायें बायें, सिरहाने पांयती से बहुत ज़्यादा वसीअ् हो जाती है। उसके बाद वे कहते हैं कि ऊपर सर उठाओ, मुर्दा जब सर उठाता है तो उसको एक दरवाज़ा नज़र आता है, जिसमें से जन्नत नज़र आती है। वे कहते हैं कि ऐ अल्लाह के वली, वह जगह तुम्हारे रहने की है, इस वजह से कि तुम ने अल्लाह तआला शानुहू की इताअत की है।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं कि क़सम है उस पाक ज़ात की जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है कि उसको उस वक़्त ऐसी ख़ुशी होती है कि जो कभी न लौटेगी। उसके बाद वे फ़रिश्ते कहते हैं कि अपने पांव की तरफ़ देखो, वह देखता है तो जहन्नम का एक दरवाज़ा नज़र आता है (जिस से उसकी हालत नज़र आती है) वे फ़रिश्ते कहते हैं कि ऐ अल्लाह के वली, तूने इस दरवाज़े से निजात पा ली, उस वक़्त भी मुर्दे को इस क़दर ख़ुशी होती है जो कभी न लौटेगी।

इसके बाद उस क़ब्र में सत्तर दरवाज़े जन्नत की तरफ़ खुल जाते हैं, जिन में से वहां की ठंडी हवायें और ख़ुशबूयें आती रहती हैं और क़ियामत तक यही मंज़र रहेगा। (इसके बाद दूसरे की हालत सुनो कि) :-

हक़ तआला शानुहू मलकुल मौत से फ़रमाते हैं कि मेरे दुश्मन के पास जाओ और उसकी जान निकाल लाओ, मैं ने उस पर हर क़िस्म की फ़राख़ी रखी, अपनी नेमतें (दुनिया में चारों तरफ़ से) उस पर लाद दीं, मगर वह मेरी नाफ़रमानी से बाज़ नहीं आया, लाओ आज उसको सज़ा दूँ।

मलकुल मौत निहायत तक्लीफ़देह सूरत में उसके पास आते हैं, इस सूरत से कि बारह आंखें उन में होती हैं। उनके पास एक गुर्ज़ (लोहे का मोटा सा डंडा) जहन्नम की आग का बना हुआ होता है, जिसमें कांटे होते हैं, उन के साथ पांच सौ फ़रिश्ते जिनके साथ तांबे का एक टुकड़ा होता है और हाथों में जहन्नम की आग के बड़े बड़े अंगारे और आग के कोड़े होते हैं, जो दहकते हुए होते हैं। मलकुल मौत आते ही वह गुर्ज़ उस पर मारते हैं जिसके कांटे उसके हर रग व पै में घुस जाते हैं, फिर वह उसको खींचते हैं और बाक़ी फ़रिश्ते उन कोड़ों से उसके मुंह को और सुरीन को मारना शुरू कर देते हैं। जिससे वह मुर्दा ग़श खाने लगता है। वह उसकी रूह को पांव की उंगलियों से निकाल कर एड़ी में रोक देते हैं और पिटाई करते रहते हैं। फिर ऐड़ी से निकाल कर घुटनों में रोक देते हैं फिर वहां से निकालकर (और जगह जगह इसलिए रोकते हैं ताकि देर तक तक्लीफ़ पहुँचायी जाये।) पेट में रोक देते हैं और वहां से खींच कर सीने में रोक देते है। फिर फ़रिश्ते उस तांबे को और जहन्नम के अंगारों को उसकी ठोढ़ी के नीचे रख देते हैं और मलकुल मौत अलैहिस्सलाम कहते हैं कि ऐ मल्ऊन रूह! निकल और उस जहन्नम की तरफ़ चल जिसकी सिफ़त (क़ुरआन पाक, सूरः वाक़िआ रूकूअ 2 में) "फ़ी समूमिंव्व हमीम" (आयत) है जिस का तर्जुमा यह

है कि :-

वे लोग आग में और खोलते हुए पानी में स्याह (काले) धुंए के साये में, जो न ठंडा होगा, न फ़रहत बख़्श होगा (बल्कि निहातय तक्लीफ़ देने वाला होगा।)

फिर जब उसकी रूह बदन से रूख़्सत होती है तो वह बदन से कहती है कि हक़ तआला शानुहू तुझे बुरा बदला दे, तू मुझे अल्लाह की नाफ़रमानी में जल्दी से ले जाता था और उसकी इताअत में सुस्ती करता था, तू खुद भी हलाक हुआ और मुझे भी हलाक किया और यही मज़्मून बदन रूह से क़हता है, और ज़मीन के वे हिस्से जिन पर वह अल्लाह के गुनाह किया करता था, उस पर लानत करते हैं और शैतान के लश्कर दौड़े हुए अपने सरदार इब्लीस के पास जाकर ख़ुशख़बरी सुनाते हैं कि एक आदमी को जहन्नम तक पहुँचा दिया गया।

फिर जब वह क़ब्र में रखा जाता है तो ज़मीन उस पर इतनी तंग हो जाती है कि उसकी पसलियां एक दूसरे में घुस जाती हैं, फिर उस पर काले सांप मुसल्लत हो जाते हैं जो उसकी नाक और पांव के अँगूठे काटना शुरू करते हैं, यहां तक कि दर्मियान में दोनों जानिब सांप आकर मिल जाते हैं, फिर उसके पास दो फ़रिश्ते (मुन्किर नकीर जिनकी हैयत अभी गुज़र चुकी है) आते हैं और उससे पूछते हैं कि तेरा रब कौन है? तेरा दीन क्या है ? तेरे नबी कौन हैं? वह हर सवाल के जवाब में ला इल्मी ज़ाहिर करता है, और उसके जवाब पर उसको गुर्ज़ से इस क़दर ज़ोर से मारते हैं कि उस गुर्ज़ की चिंगारियां क़ब्र में फ़ैल जाती हैं। इसके बाद उसको कहते हैं कि ऊपर देख, वह ऊपर की जानिब जन्नत का दरवाज़ा खुला हुआ देखता है (उसकी बाग़ व बहार वहां से नज़र आती है) वे फ़रिश्ते उससे कहते हैं कि अल्लाह के दुश्मन, अगर तू अल्लाह तआला शानुहू की इताअत करता तो यह तेरा ठिकाना होता।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं कि उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है कि उसको उस वक़्त ऐसी हसरत होती है कि ऐसी हसरत कभी न होगी, फिर दोज़ख़ का दरवाज़ा खोला जाता है और वे फ़रिश्ते कहते हैं कि अल्लाह के दुश्मन, अब तेरा यह ठिकाना है, इसलिये कि तूने हक़ तआला शानुहू की नाफ़रमानी की। इसके बाद सतत्तर (77) दरवाज़े जहन्नम के उस की क़ब्र में खोल दिये जाते हैं जिन में से क़ियामत तक गर्म

हवायें और धुआं वग़ैरह आता रहता है।

मुहद्दिसीन रहिमहुमुल्लाह इस हदीस पर सनद के एतिबार से कुछ कलाम करते हैं, लेकिन इसके मज़ामीन की ताईद बहुत सी रिवायात से होती है। *(इत्तिहाफ़)*

बिलखुसूस हज़रत बरा बिन आज़िब रज़ि० और हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० की रिवायतें जो मिश्कात शरीफ़ की किताबुल जनाइज़ में और बाब इसबाते अज़ाबुल क़ब्र में हैं, अगर कोई इनका तर्जुमा देखना चाहे तो मज़ाहिरे हक़ में देखा जा सकता है। यह मंज़र बहुत ज़्यादा निगाह में रखने के क़ाबिल है कि बहुत सख़्त मंज़र है, बहुत कसरत से अहादीस में इसके वाक़िआत ज़िक्र किये गये हैं, इख़्तिसार की वजह से एक ही हदीस का तर्जुमा लिखा गया –

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि गुनाहगारों के लिए अहले क़ुबूर से हलाकत है कि उन के ऊपर काले सांप मुसल्लत कर दिये जाते हैं, एक पांव की जानिब से, दूसरा सर की जानिब से और वे काटते हुए चले जाते हैं, यहां तक कि दर्मियान में आकर दोनों मिल जाते हैं। यही बर्ज़ख़ का अज़ाब है जिसको क़ुरआन पाक में:-

وَمِنْ وَّرَآئِهِمْ بَرْزَخٌ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ (مؤمنون ع ٦)

"व मिंव्वरा-इहिम बर्ज़-ख़ुन इला यौ-मि युब्अ़-सून"

(मुअ्मिनून, रूकूअ 6) से ताबीर फ़रमाया है।

यही वजह हैं कि जब हज़रत उस्मान रज़ि० क़ब्र का ज़िक्र करते तो इतना रोते कि दाढ़ी मुबारक तर हो जाती जैसा कि ऊपर गुज़र चुका है। इसी वजह से हुज़ूर सल्ल० की दुआओं में बहुत कसरत से अज़ाबे क़ब्र से पनाह मांगी गयी है, ताकि लोग कसरत से इसकी दुआ मांगें, वर्ना हुज़ूर सल्ल० ख़ुद तो मासूम हैं और इसी बिना पर हुज़ूर सल्ल० का वह इर्शाद है जो पहले गुज़रा कि तुम ख़ौफ़ की वजह से मुर्दों को दफ़्न करना छोड़ दोगे, वर्ना मैं अल्लाह तआला शानुहू से दुआ करता कि तुम्हें अज़ाबे क़ब्र सुना दे।

और यह जो कुछ है मुक़्तज़ाए अदल (इन्साफ़ का तक़ाज़ा) है इसलिए कि आदमी इस आलम में सिर्फ़ अल्लाह तआला शानुहू की इबादत के लिए भेजा गया था और हक़ तआला शानुहू ने अपने तमाम जानी और माली एहसानात के साथ क़ुरआन पाक में यह बात जता भी दी थी कि तुम्हें इस आलम में सिर्फ़

इबादत के लिए भेजा जाता है।

وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنْسَ إِلَّا لِيَعْبُدُوْنِ ٥(الذّريٰت ع ٣)

"व मा ख़-लक़्तुल् जिन्-न वल्इन्-स इल्ला लियअ्बुदून॰"

(अज़्ज़ारियात, रूकूअ 3)

और इस पर भी मुतनब्बह कर दिया था कि ज़िन्दगी सिर्फ़ इम्तिहान के लिए दी गयी है कि हमारे इन एहसानात में क्या कारगुज़ारी है और मौत उस इम्तिहान का नतीजा सुनाने के लिए है:-

تَبٰرَكَ الَّذِیْ بِيَدِهِ الْمُلْكُ ز وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرُ ٥ نِ الَّذِیْ خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيٰوةَ لِيَبْلُوَكُمْ اَيُّكُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ٥(ملك ع ١)

"तबा-रकल्ल-ज़ी बिय-दि हिल् मुल्कु व-हु-व अला कुल्लि शैइन् क़दीरू॰ नि ल्ल-ज़ी ख़-ल-क़ल् मौ-त वल् हया-त लियब्लु-व कुम् अय्यु कुम् अह्स-नु अ-म-ला॰" (अलमुल्क, रूकूअ 1)

तर्जुमाः- वह (खुदा अज़्ज़ व जल्ल) बड़ा आलीशान है जिसके क़ब्ज़े में तमाम सल्तनत है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है, जिस ने मौत और ज़िन्दगी को पैदा किया ताकि तुम्हारी आज़माइश करे कि तुम में कौन शख़्स ज़्यादा अच्छे अमल करने वाला है, और जब कि यह दुनिया इम्तिहान की जगह है और जिन्न और इन्स की पैदाइश की हिक्मत सिर्फ़ इबादत है और दुनिया की जितनी लज़्ज़तें, राहतें और सामान दिये गये हैं वे सिर्फ़ इस लिये दिये गये हैं कि अपनी ज़रूरत के बक़द्र उनसे नफ़ा उठायें, और कम से कम ज़रूरत पूरी करने के बाद जो कुछ बचे, वह अपने नफ़ा के लिए अपने काम आने के लिए अल्लाह तआला शानुहू के ख़ज़ाने में जमा कर दें, फिर कितनी ग़फ़लत और हसरत और ख़सारे की बात है कि हम उन में लगकर हक़ तआला शानुहू के अह्कामात को भी भूल जायें और इस से भी आंख बंद कर लें कि हम क्यों आये थे, और यह सब हमें क्यों दिया गया था, हम किस चीज़ में लग गये और असल हसरत उस वक़्त होती है जब यह हज़ारों की मिक़्दार बड़ी मेहनत और जाँफ़शानी से कमाई हुई, अपने ऊपर ख़र्च की तंगी करके जमा की हुई दूसरों के लिए छोड़ कर खुद ख़ाली हाथ दफ़्अतन इस आलम से चला जाना पड़े। अगर हमें कुछ भी अक़्ल का हिस्सा है तो थोड़ी देर बिल्कुल तंहा मकान में बैठकर यह मंज़र सोचने और ग़ौर करने का है कि अगर इसी वक़्त मौत आ जाये तो मेरा क्या बने, और सारे

साज़ व सामान का क्या बने, जो बरसों की मेहनत है, बरसों की कमाई है, बरसों का जोड़ा हुआ है।

हज़रत वह्ब बिन मुनब्बह रह० कहते हैं कि एक बादशाह था, जिस का इरादा अपनी हुकूमत की ज़मीन की सैर का और हाल देखने का हुआ। उसके लिए शाहाना जोड़ा मांगाया गया। एक जोड़ा लाया गया, वह पसंद न आया, दूसरा मंगाया, गरज़ बार बार रद्द के बाद निहायत पसंदीदा जोड़ा पहन कर सवारी मंगाई गयी। एक उम्दा घोड़ा लाया गया, पसंद न आया उसको वापस करके दूसरा, तीसरा मंगाया, जब वह भी पसंद न आया तो सब घोड़े सामने लाये गये उनमें से बेहतरीन घोड़ा पसंद करके सवार हुआ, शैतान मर्दूद ने उस वक़्त और भी नख़्वत नाक में फूँक दी, निहायत तकब्बुर से सवार हुआ, हशाम ख़दम फ़ौज, पैदल साथ चले, मगर बड़ाई और तकब्बुर से बादशाह उनकी तरफ़ देखना भी गवारा न करता था। रास्ते में चलते चलते एक शख़्स निहायत ख़स्ता हाल पुराने कपड़ों में मिला, उसने सलाम किया, बादशाह ने इल्तिफ़ात भी न किया। उस ख़स्ता हाल ने घोड़े की लगाम पकड़ ली, बादशाह ने उसको डांटा कि लगाम छोड़, इतनी जुर्रत करता है। उसने कहा मुझे तुझ से एक काम है। बादशाह ने कहा, अच्छा सब्र कर, जब मैं सवारी से उतरूँगा, उस वक़्त कह लेना, उसने कहा नहीं, अभी कहना है और यह कह कर ज़बर्दस्ती लगाम छीन लिया। बादशाह ने कहा, कह। उसने कहा बहुत राज़ की बात है कान में कहनी है। बादशाह ने कान उसके क़रीब कर दिया। उसने कहा, मैं मलकुल मौत हूँ, तेरी जान लेना है। यह सुनकर बादशाह का चेहरा फ़क़ हो गया, और ज़बान लड़खड़ा गयी। फिर कहने लगा अच्छा मुझे इतनी मुहलत दे दे कि मैं घर जाकर कुछ अपने सामान का नज़्म कर दूँ। घर वालों से मिल लूँ। फ़रिश्ते ने कहा कि बिल्कुल नहीं, अब तू अपने घर को और सामान को कभी नहीं देख सकेगा। यह कह कर उसकी रूह क़ब्ज़ कर ली। वह घोड़े से लकड़ी की तरह नीचे गिर गया।

इसके बाद वह फ़रिश्ता मलकुल मौत एक नेक मुसलमान के पास गया कि वह (नेक बंदा) भी कहीं सफ़र में जा रहा था। उसको जाकर सलाम किया, उसने "व अलै कुमुस्सलाम" कहा उसने कहा मुझे तेरे कान में एक बात कहनी है। उसने कहा, कहो, उसने कान में कहा कि मैं मलकुल मौत हूँ। उसने कहा बहुत अच्छा किया, क्या आये, बड़ा मुबारक है ऐसे शख़्स का आना जिसका

फ़िराक़ बहुत तवील हो गया था, मुझ से तो जितने आदमी दूर हैं, उन में किसी से भी मुलाक़ात का इतना इश्तियाक़ न था जितना तुम्हारी मुलाक़ात का था। फ़रिश्ते ने कहा कि तुम जिस काम के लिए घर से निकले हो, उसको जल्दी पूरा कर लो। उसने कहा मुझे हक़ तआला शानुहू से मिलने से ज़्यादा महबूब कोई भी काम नहीं। फ़रिश्ते ने कहा कि तुम जिस हालत में मरना अपने लिये पसंद करते हो, मैं उसी हालत में जान क़ब्ज़ करूँगा। उस शख़्स ने कहा कि तुम्हें इख़्तियार है। फ़रिश्ते ने कहा मुझे यही हुक्म दिया गया है (कि तुम्हारी ख़ुशी का इत्तिबाअ् करूँ) उस शख़्स ने कहा अच्छा तो मुझे वुज़ू करके नमाज़ पढ़ने दो और जब मैं सज्दे में जाऊं तो मेरी रूह क़ब्ज़ कर लेना, चुनांचे उसने नमाज़ शुरू की, और सज्दे में उसकी रूह क़ब्ज़ की गयी। *(एह्या)*

हक़ तआला शानुहू के बे निहायत एहसानात में से यह भी है कि इस नाकारा की सब से बड़ी लड़की अज़ीज़े मोहतरम मौलवी मुहम्मद यूसुफ़ साहब ज़ा-द फ़ज़्लुहू की अहलिया, जो अरसे से बीमार थीं और इशारे से नमाज़ पढ़ती थीं, इसी साल 29 शव्वाल 1366 हि॰ शब दो शंबा (पीर) में जब कि वह मग़्रिब की नमाज़ में इशारा करके सज्दे में गयीं, तो वहीं रूह को उसके पैदा करने वाले के सुपुर्द कर दिया और इसी हालते सुजूद में दुनिया को रूख़्सत कर दिया। हक़ तआला शानुहू के किस किस एहसान का शुक्र अदा हो सकता है।

अबू बक्र बिन अब्दुल्लाह मुज़नी रह॰ कहते हैं कि बनी इस्राईल के एक शख़्स ने बहुत ज़्यादा माल जमा किया था, जब मरने का वक़्त क़रीब हो गया तो अपने बेटों से कहा कि मेरा सारा माल मेरे सामने कर दो, वह सब जल्दी जल्दी जमा किया गया, बहुत से घोड़े ऊँट, ग़ुलाम वग़ैरह सब चीज़ें सामने लायी गयीं वह उनको देखकर (हसरत से) रो रहा था कि यह सब छूट रहा है। इतने में मलकुल मौत सामने आ गये और कहने लगे, रोने से क्या फ़ायदा है, उस ज़ात की क़सम, जिसने ये सब नेमतें तुझ को अता कीं, अब तेरी जान लेकर जाऊँगा। उसने दरख़्वास्त की कि थोड़ी सी मुहलत अगर दे दी जाये तो मैं इन चीज़ों को तक़्सीम कर दूँ। फ़रिश्ते ने कहा, अब मुहलत का वक़्त, अफ़सोस है कि जाता रहा। काश इस वक़्त से पहले तू तक़्सीम कर देता, यह कह कर उसकी जान निकाल ली।

एक और वाक़िआ नक़ल किया गया है कि एक शख़्स ने बहुत सा माल जमा किया था और कोई चीज़ भी ऐसी न छोड़ी जो अपने यहां मंगा न ली हो।

और एक बहुत बड़ा आलीशान महल तैयार किया जिसके दो दरवाज़े थे, उन पर गुलाम मुहाफ़िज़ मुक़र्रर किये और मकान की तैयारी की बहुत बड़ी दावत की, जिस में अपने सब अज़ीज़ व अहबाब को जमा किया और एक बड़े आलीशान तख़्त पर एक टांग खड़ी करके दूसरी टांग उस पर रखे बैठा था, लोग खाना खा रहे थे और वह अपने दिल में कह रहा था कि हर क़िस्म का ज़ख़ीरा इतना जमा हो गया कि कई साल तक तो अब ख़रीदना न पड़ेगा, यह ख़्याल दिल में गुज़र ही रहा था कि एक फ़क़ीर फटे कपड़े, गर्दन में (फ़क़ीरों जैसा) झोला पड़ा हुआ दरवाज़े पर आया और इस ज़ोर से किवाड़ों को पीटना शुरू किया कि उसके तख़्त तक आवाज़ पहुँची। गुलाम दौड़े हुए बाहर आये कि यह कौन नामाक़ूल है, उससे जाकर पूछा यह क्या बात है, उस फ़क़ीर ने कहा कि अपने सरदार को मेरे पास भेज दो। गुलामों ने कहा कि हमारे आक़ा तुझ जैसे फ़क़ीरों के पास आयेंगे? उसने कहा ज़रूर आयेंगे, उससे जाकर कह दो।

वह आक़ा के पास गये और उस से क़िस्सा सुनाया। उसने कहा तुम ने उसको इस कहने का मज़ा न चखाया, इतने में उस फ़क़ीर ने दोबारा पहले से भी ज़्यादा ज़ोर से किवाड़ों को पीटा, जिस पर दरबान दौड़े हुए फिर दरवाज़े पर आये तो उस फ़क़ीर ने कहा कि उस अपने आक़ा से कह दो कि मैं मलकुल मौत हूँ, यह सुनकर उनके होश उड़ गये। और आक़ा से जाकर कहा, उस पर भी मिट्टी छित गयी और बहुत आजिज़ी से कहने लगा कि उस से कह दो कि मेरे फ़िदये में किसी दूसरे को क़ुबूल कर ले। इतने में वह फ़क़ीर अंदर पहुँच गया और उसने उससे कहा कि तुझे जो कुछ करना है, कर ले, मैं तेरी रूह क़ब्ज़ किये बग़ैर वापस नहीं जा सकता।

उसने अपना सब माल जमा कराया और माल से कहने लगा कि अल्लाह की तुझ पर लानत हो कि तूने और तेरी मशग़ूली ने मुझे अपने मौला की इबादत से रोक दिया और इतना वक़्त न दिया कि मैं किसी वक़्त यक्सूई से अल्लाह तआला शानुहू को याद कर लेता। हक़ तआला शानुहू ने अपनी क़ुदरत से माल को गोयाई (बोलने की ताक़त) अता की। उसने कहा, मुझे लानत क्यों करता है, मेरी ही वजह से तू बड़े बड़े बादशाहों तक ऐसे वक़्त पहुँच जाता था, जब कि नेक लोग उनके दरवाज़ों से हटा दिये जाते थे। मेरी ही वजह से तू नाज़ुक नाज़ुक औरतों की लज़्ज़तें हासिल किया करता था, मेरी ही वजह से तू बादशाहों की तरह रहता था। तू मुझे बुराई के मौक़ों में ख़र्च करता था और मैं

इंकार नहीं कर सकता था, अगर तू मुझे ख़ैर के मवाक़े में ख़र्च करता तो मैं तेरे काम आता। इसके बाद मलकुल मौत ने एकदम उसकी रूह क़ब्ज़ कर ली।

वह्ब बिन मुनब्बह रह० कहते हैं कि एक मर्तबा मलकुल मौत एक बहुत बड़े ज़ालिम की रूह क़ब्ज़ करके ले गये कि दुनिया में उससे बड़ा ज़ालिम कोई न था। वह जा रहे थे, फ़रिश्तों ने पूछा कि तुम ने हमेशा जानें क़ब्ज़ कीं, तुम्हें कभी किसी पर रहम भी आया? उन्होंने कहा कि सबसे ज़्यादा तरस मुझे एक औरत पर आया जो तंहा जंगल में थी, जब ही उसके बच्चा पैदा हुआ था, मुझे हुक्म हुआ कि उस औरत की जान क़ब्ज़ कर लूँ। मुझे उस औरत की और उसके बच्चे की तंहाई पर बड़ा तरस आया कि इस बच्चे का इस जंगल में जहां कोई दूसरा नहां है क्या बनेगा? फ़रिश्तों ने कहा कि यह ज़ालिम जिसकी रूह तुम ले जा रहे हो वही बच्चा है। मलकुल मौत हैरत में रह गये, कहने लगे कि मौला तू पाक है, बड़ा मेहरबान है, जो चाहता है करता है।

हज़रत हसन बसरी रह० फ़रमाते हैं कि जब कोई शख़्स मर जाता है और उसके घर वाले रोना शुरू करते हैं। तो मलकुल मौत उस मकान के दरवाज़े पर खड़े होकर कहते हैं कि मैं ने इसकी रोज़ी नहीं खा ली (यह अपनी रोज़ी ख़त्म कर चुका है) मैं ने इसकी उम्र कम नहीं कर दी, मुझे तो इस घर में फिर आना है और बार बार आना है। इतने सब ख़त्म न हो जायें। हज़रत हसन बसरी रह० फ़रमाते हैं कि ख़ुदा की क़सम, अगर घर वाले उस वक़्त उस फ़रिश्ते को देखें और उसकी बात सुनें तो मुर्दे को भूल जायें और अपनी फ़िक्र में पड़ जायें।

यज़ीद रक़ाशी रह० कहते हैं कि बनी इस्राईल के ज़ालिमों में से एक ज़ालिम अपने घर में बैठा हुआ अपनी बीवी से तख़लिया कर रहा था, इतने में देखा कि घर में एक अजनबी आदमी दरवाज़े से चला आ रहा है, यह शख़्स निहायत गुस्से से उसकी तरफ़ लपका, उससे पूछा कि तू कौन है और घर में आने की तुझे किसने इजाज़त दी? उसने कहा कि मुझे इस घर के मालिक ने अंदर आने को कहा है और मैं वह शख़्स हूँ जिसको न कोई पर्दा रोक सकता है और न बादशाहों के पास जाने के लिए मुझे इजाज़त की ज़रूरत होती है, न किसी ज़ालिम के दबदबे से डरता हूँ, न किसी मग़रूर मुतकब्बिर के पास जाने से मुझे कोई चीज़ मानेअ् होती है। उस की यह गुफ़्तगू सुनकर वह ज़ालिम शख़्स ख़ौफ़ ज़दा हो गया, बदन में कपकपी आ गयी और औंधे मुंह गिर गया। उसके बाद निहायत आजिज़ी से कहने लगा फिर तो आप मलकुल मौत हैं। उसने कहा

हां मैं वही हूँ। साहबे मकान ने कहा कि आप मुझे इतनी मुहलत दें कि मैं वसीयत नामा लिख दूँ। फ़रिश्ते ने कहा कि अब इसका वक़्त दूर चला गया, अफ़सोस कि तेरी मुद्दत ख़त्म हो चुकी है, सांस पूरे हो चुके हैं और तेरा वक़्त ख़त्म हो गया। अब तेरे लिए ज़रा सी ताख़ीर की भी गुंजाईश नहीं।

साहबे मकान ने पूछा कि आप मुझे कहां ले जायेंगे? फ़रिश्ते ने कहा, तेरे आमाल जो आगे गये हुए हैं उनके पास ही ले जाऊँगा (जैसे अमल किये होंगे वैसा ही ठिकाना मिलेगा) और जिस क़िस्म का घर तूने उस जहान में बना रखा होगा, वही तुझे मिलेगा। उसने कहा कि मैं ने नेक आमाल कुछ भी नहीं किये और न ही कोई उम्दा घर अपने लिए अब तक बना रखा है। फ़रिश्ते ने कहा, फिर तो "लज़ा नज़्ज़ाअतल् लिश्श-वा" की तरफ़ ले जाऊँगा। यह सूरः मआरिज, रूकूअ 1 की आयत की तरफ़ इशारा है जिसका तर्जुमा यह है कि :-

बेशक वह आग ऐसी दहकती हुई है जो खाल तक खींच लेगी और उस शख़्स को जिसने (दुनिया में हक़ से) मुंह फेरा और बे-तवज्जही की वह आग ख़ुद ही बुला लेगी (अपनी तरफ़ खींच लेगी)

इसके बाद उस फ़रिश्ते ने उसकी जान निकाल ली। घर में कोहराम मच गया, कोई रो रहा था, कोई चिल्ला रहा था। यज़ीद रक़ाशी रह० कहते हैं कि अगर लोगों को यह मालूम हो जाये कि मुर्दे पर इस वक़्त क्या गुज़र रही है तो उसके मरने से ज़्यादा रोना धोना उस हालत पर होने लगे जो उस पर गुज़र रही है। *(एह्या)*

हज़रत सुफ़ियान सोरी रह० फ़रमाते हैं कि जिस वक़्त मलकुल मौत दिल की रग को छूते हैं। उस वक़्त आदमी का लोगों को पहचानना मौक़ूफ़ हो जाता है। ज़बान बंद हो जाती है और दुनिया की सब चीज़ों को भूल जाता है। अगर उस वक़्त आदमी पर मौत का नशा सवार न हो तो तक्लीफ़ की शिद्दत से पास वालों पर तलवार चलाने लगे। बाज़ रिवायात में आया है कि जिस वक़्त सांस हलक़ में होता है, उस वक़्त शैतान उसके गुमराह करने की इंतिहाई कोशिश करता है।

एक रिवायत में है कि मलकुल मौत नमाज़ों के औक़ात में आदमियों की जुस्तजू करते हैं। ख़बर रखते हैं, अगर किसी शख़्स को नमाज़ के औक़ात का एहतिमाम रखने वाला पाते हैं तो मरते वक़्त उसको ख़ुद ही कलिमा तय्यिबा की

तल्क़ीन करते हैं और शैतान को उसके पास से हटा देते हैं।

मुजाहिद रह० कहते हैं कि जब आदमी मरने के क़रीब होता है, उस वक़्त उसके हम मज्लिसों की सूरतें उसके सामने की जाती हैं, अगर उसका बैठना उठना नेक लोगों के पास होता है तो यह मज्मा सामने लाया जाता है और फ़ासिक़, फ़ाजिर लोगों के पास होता है तो वे लोग सामने लाए जाते हैं। हज़रत यज़ीद बिन शजरा सहाबी रज़ि० से भी यही बात नक़ल की गयी है।

रबीअ् बिन बज़्ज़: रह० एक इबादत गुज़ार आदमी बसरा में थे, वह कहते हैं कि एक शख़्स मरने लगा, लोग उसको ला इला-ह इल्लल्लाह की तल्क़ीन कर रहे थे और उस की ज़बान से निकल रहा था कि (शराब का गिलास) तू भी पी, मुझे भी पिला, तू भी पी, मुझे भी पिला। इसी तरह अहवाज़ में एक शख़्स का इंतिक़ाल हो रहा था, लोग उसको ला इला-ह इल्लल्लाह कहते थे और वह कह रहा था, दस-दस रूपया, ग्यारह-ग्यारह, बारह-बारह। *(इतिहाफ़)*

इसके बिल मुक़ाबिल जिन लोगों ने मरने की तैयारियां कर रखी थीं, वे दुनिया में मौत को याद रखते थे, उसके लिए कुछ कारनामे कर रखे थे, उनके लिए मौत ऐसी ही थी जिसको हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मोमिन का तोहफ़ा बताया है।

हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु की जब वफ़ात का वक़्त क़रीब था, उनकी बीवी कह रही थीं, कि "वा हुज़्ना-ह", हाय अफ़सोस तुम जा रहे हो और वह कह रहे थे, "वा त-रबाहु ग़दन् नल्क़िल् अहिब्ब-त मुहम्मदन् व हिज़्ब-हू", कैसे मज़े की बात है, कैसे लुत्फ़ की बात है, कल को दोस्तों से मिलेंगे, हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मिलेंगे, उनके साथियों से मिलेंगे।

हज़रत मआज़ रज़ि० के जब इंतिक़ाल का वक़्त क़रीब था, तो फ़रमाया, या अल्लाह, तुझे मालूम है कि मैं दुनिया में ज़्यादा दिन रहना चाहता था, मगर न इस वजह से कि मुझे दुनिया से मुहब्बत थी, न इस वजह से कि यहां नहरें और बाग़ लगाऊँ, बल्कि इस वजह से चाहता था कि गर्मियों की दोपहर से रोज़े की प्यास का लुत्फ़ उठाऊँ और (दीन के लिए) मशक़्क़त में औक़ात गुज़ारूँ और तेरे ज़िक्र के हलक़ों में शरीक हुआ करूँ।

हज़रत सलमान रज़ि० का जब इंतिक़ाल होने लगा तो वह रोने लगे, किसी ने कहा कि रोने की क्या बात है, तुम जाकर हुज़ूर सल्ल० से मिलोगे, हुज़ूर

सल्ल॰ का विसाल इस हाल में हुआ कि तुम से राज़ी थे, फ़रमाने लगे कि मैं न मौत के डर से रो रहा हूँ, न दुनिया के छूटने से, बल्कि मैं इस वजह से रो रहा हूँ कि हुज़ूर सल्ल॰ ने हमसे एक अहद लिया था कि दुनिया से इन्तिफ़ाअ् हमारा सिर्फ़ इतना हो कि जितना मुसाफ़िर का तोशे में, इस अह्द को पूरा न कर सका। लेकिन जब विसाल पर उनके घर का सामान देखा गया तो वह दस दिरम से कुछ ज़ायद था और एक दिरम 22 पैसे का होता है। यह थी कुल कायनात जिसकी ज़्यादती पर रो रहे थे।

इसके बाद उन्होंने थोड़ा सा मुश्क मंगवाया और बीवी से फ़रमाया कि इसको भिगो कर मेरे बिस्तरे पर छिड़क दो, मेरे पास ऐसी जमाअत आ रही है जो न इंसान है न जिन्न। *(इत्तिहाफ़)*

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह॰ की जब वफ़ात का वक़्त हुआ तो हंसे और फ़रमाया :-

لِمِثْلِ هٰذَا فَلْيَعْمَلِ الْعٰمِلُوْنَ

"लिमिस्लि हाज़ा फ़ल् यअ्-म लिल् आमिलून॰"

इसी जैसी चीज़ों के वास्ते लोगों को काम करना चाहिए। (वहां की कुछ लज़्ज़तें, फ़रहतें सामने आयी होंगी), नीज़ (तथा) जब उनकी वफ़ात का वक़्त क़रीब था तो उन्होंने अपने ग़ुलाम से, जिनका नाम नस्र था, फ़रमाया कि मेरा सर ज़मीन पर रख दो, वह रोने लगे। उन्होंने पूछा कि रोने की क्या बात है? नस्र ने कहा कि आप ऐसी राहतों में ज़िन्दगी गुज़ारते थे, अब इस तरह फ़क़ीरों की तरह ज़मीन पर सर रख कर मर रहे हैं। फ़रमाने लगे कि चुप रह, मैं ने हक़ तआला शानुहू से दुआ की थी कि मेरी ज़िन्दगी मालदारों की सी हो और मौत फ़क़ीरों की।

अता बिन यसार रह॰ कहते हैं कि एक शख़्स के इंतिक़ाल का वक़्त क़रीब था शैतान उनके पास आया और कहने लगा तू मुझसे छूट ही गया। (मेरे बस में न आया) वह फ़रमाने लगे मुझे तुझ से अब तक भी इत्मीनान नहीं है।

जरीरी रह॰ कहते हैं कि मैं हज़रत जुनैद रह॰ के पास उनके इंतिक़ाल के वक़्त मौजूद था, वह क़ुरआन शरीफ़ पढ़ रहे थे। किसी ने अर्ज़ किया कि यह वक़्त (ज़ोअफ़ का है) यह तिलावत का क्या वक़्त है, फ़रमाने लगे कि इस से ज़्यादा अच्छा वक़्त तिलावत का कौन सा होगा, मेरा आमाल नामा इस वक़्त बंद

हो रहा है।

हज़रत जुनैद रहि० से किसी ने पूछा कि हज़रत अबू सअीद ख़ज़्ज़ार रह० इंतिक़ाल के वक़्त बहुत ही मज़े पर आ रहे थे, क्या बात थी? फ़रमाने लगे कि अगर उस वक़्त उनकी रूह इश्तियाक़ में उड़ जाती तब भी बअीद न था। हज़रत ज़ुन्नून मिस्री रह० से किसी ने इंतिक़ाल के क़रीब पूछा कि कुछ फ़रमाना है, कोई ख़्वाहिश हो तो बता दें, फ़रमाया सिर्फ़ यह ख़्वाहिश है कि मरने से पहले उसकी मअ्रिफ़त हासिल हो जाये।

एक शख़्स कहते हैं कि मैं हज़रत मुम्शाद दैनूरी रह० के पास बैठा था, एक फ़क़ीर आया और कहने लगा, यहां कोई पाक साफ़ जगह ऐसी है जहां कोई मर जाये? उन्होंने एक जगह इशारा किया, जहां पानी का चश्मा भी था, वह उसके क़रीब गया, वुज़ू की और नमाज़ पढ़ी, उसके बाद पांव फैला कर लेट गया और मर गया।

अबू अली रह० रूदबारी की हम्शीरा फ़ातिमा रह० कहती हैं कि जब मेरे भाई का इंतिक़ाल होने लगा तो उनका सर मेरी गोद में था, उन्होंने आंख खोली और फ़रमाने लगे कि आसमान के दरवाज़े खुल गये और जन्नत मुज़य्यन कर दी गयी और कोई कहने वाला कह रहा था कि अबू अली अगरचे तुम इतने ऊँचे दर्जे की ख़्वाहिश नहीं कर रहे थे, मगर हमने तुम्हें ऊँचे दर्जे पर पहुँचा दिया, फिर उन्होंने दो शेर पढ़े जिनका तर्जुमा यह है :-

"तेरे हक़ की क़सम, मैं ने कभी तेरे सिवा किसी की तरफ़ (मुहब्बत की निगाह से) आंख उठा कर भी नहीं देखा, मैं देख रहा हूँ कि तू मुझे अपनी बीमार आंखों से बेचैन कर रहा है और इन रूख़्सारों से जो हया की वजह से सुर्ख़ हो गये।

हज़रत जुनैद रह० के इंतिक़ाल के वक़्त किसी ने ला इला-ह इल्लल्लाह कहा तो फ़रमाने लगे कि मैं इस लफ़्ज़ को कभी भूला ही नहीं जो अब याद करूँ।

हज़रत शिब्ली रह० के ख़ादिम बकरान दैनूरी रह० से जाफ़र बिन नसीर रह० ने पूछा कि तुम ने हज़रत शिब्ली रह० के इंतिक़ाल के वक़्त क्या मंज़र देखा? उन्होंने कहा कि वह फ़रमाते थे कि मुझ से एक दिरम (22 पैसे) का ज़ुल्म एक शख़्स पर हो गया था, मैं उसकी तरफ़ से कई हज़ार दिरम सदक़ा कर

चुका हूँ, मगर मेरे दिल पर अब तक उस दिरम का बोझ है कि क्यों रह गया, उसके बाद फ़रमाया कि मुझे वुज़ू करा दो मैं ने वुज़ू कराई और दाढ़ी में ख़िलाल करना भूल गया, वह ख़ुद ज़ोअफ़ की वजह से न कर सकते थे, ज़बान बंद हो चुकी थी, मेरा हाथ पकड़ कर अपनी दाढ़ी के अंदर कर दिया और इंतिक़ाल हो गया। यह सुनकर जाफ़र रह० रोने लगे कि जिस शख़्स का ऐसी हालत में भी शरीअत का अदब और एक मुस्तहब न छूटे, उसका क्या कहना।

एक बुज़ुर्ग का इंतिक़ाल होने लगा, उनकी बीवी रोने लगीं, वह फ़रमाने लगे क्यों रोती है, वह कहने लगीं कि तुम्हारी जुदाई से रो रही हूँ, वह फ़रमाने लगे कि अपने लिए रो, मैं तो आज के दिन के लिए (यानी उसके इश्तियाक़ और इंतिज़ार में) बयालीस बरस से रो रहा हूँ।

हज़रत कतानी रह० से किसी ने इंतिक़ाल के वक़्त पूछा कि आपके मामूलात क्या हैं? फ़रमाने लगे कि अगर मेरे इंतिक़ाल का वक़्त क़रीब न होता तो मैं न बताता, मैं चालीस बरस से अपने दिल के दरवाज़े की हिफ़ाज़त कर रहा हूँ, जब उसमें ग़ैर अल्लाह घुसने का इरादा करता है तो मैं दरवाज़ा बंद कर लेता हूँ।

हज़रत मोअतमर रह० कहते हैं कि मैं हकम (एक रईस) के इंतिक़ाल के वक़्त उनके पास था और दुआ कर रहा था कि हक़ तआला शानुहू इस पर मौत की सख़्ती को आसान कर दे, कि इस शख़्स में फ़लां फ़लां ख़ूबियां थीं। मैं उसकी अच्छी आदतें गिन गिन कर दुआ कर रहा था। हकम को ग़फ़लत हो रही थी, जब उनको अपनी ग़फ़लत से होश आया तो कहने लगे कि फ़लां फ़लां बात कौन शख़्स कर रहा था, मोअतमर रह० फ़रमाने लगे कि मैं कह रहा था, हकम ने कहा कि मलकुल मौत अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि मैं हर सख़ी शख़्स के साथ नर्मी का बर्ताव करता हूँ, यह कह कर हकम की रूह परवाज़ कर गयी।

हज़रत मुम्शाद दैनूरी रह० के इंतिक़ाल के वक़्त एक बुज़ुर्ग उनके पास बैठे थे, वह उनके लिए जन्नत के मिलने की दुआ करने लगे, हज़रत मुम्शाद रह० हंसे और फ़रमाया कि तीस बरस से जन्नत अपनी सारी ज़ीनतों समेत मेरे सामने आती रही, मैं ने एक मर्तबा भी उसको निगाह भर कर नहीं देखा (मैं तो जन्नत के मालिक का मुश्ताक़ हूँ)।

जब हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० की वफ़ात का वक़्त क़रीब

था तो एक तबीब ख़िदमत में हाज़िर थे, वह कहने लगे कि अमीरूल मोमिनीन को ज़हर दिया गया है, इसलिए मुझे इनकी ज़िन्दगी का इत्मीनान नहीं है। हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० ने फ़रमाया कि तुम को उस शख़्स की ज़िन्दगी का भी एतिबार न चाहिए जिसको ज़हर न दिया गया हो। तबीब ने पूछा कि क्या आपको खुद भी अंदाज़ा हो गया था कि मुझको ज़हर दिया गया, हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० ने फ़रमाया कि मुझे उसी वक़्त इल्म हो गया था जब यह ज़हर मेरे पेट में गया। तबीब ने कहा, आप इसका इलाज कर लीजिए वर्ना आपकी जान चली जायेगी, फ़रमाने लगे (जिसके पास जायेगी यानी मेरा रब) वह इन सब में बेहतरीन है, जिनके पास कोई जाये। ख़ुदा की क़सम! अगर मुझे यह मालूम हो कि मेरे कान के पास कोई चीज़ ऐसी रखी है जिसमें मेरी शिफ़ा है तो मैं वहां तक भी हाथ न बढाऊँ। फिर फ़रमाया, या अल्लाह! उमर को अपने से मिलने के लिए पसंद कर ले। इसके चंद ही रोज़ बाद इंतिक़ाल हो गया।

मैमून बिन मेहरान रह० कहते हैं कि हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० उस ज़माने में कसरत से मौत की दुआ किया करते थे, किसी ने अर्ज़ किया ऐसा न कीजिए, हक़ तआला शानुहू ने आपकी वजह से बहुत सी सुन्नतें (हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की) ज़िंदा कर रखी हैं, बहुत सी बिदअतें (जो शुरू हो गई थीं) दबा रखी हैं फ़रमाने लगे, क्या मैं सालेह बन्दा (हज़रत यूसुफ़ अला नबिय्यिना व अलैहिस्सलाम की तरह) न बनूँ, जिन्होंने यह दुआ की थी :-

تَوَفَّنِىْ مُسْلِمًا وَّاَلْحِقْنِىْ بِالصّٰلِحِيْنَ ٥(يوسف ع ١١)

"त-वफ़्फ़ नी मुस्लिमंव् व अल्हिक़्नी बिस्सालिहीन०"

(सूर: यूसुफ़, रूकूअ 11)

"ऐ अल्लाह, मुझे इस्लाम की हालत में मौत अता फ़रमा दे और सालिहीन के साथ मिला दे।

इंतिक़ाल के क़रीब मुस्लिमा रह० ने कहा कि आपने जो कफ़न के लिए दाम दिये हैं, उनका बहुत मामूली कपड़ा आया है, इस पर कुछ इज़ाफ़े की इजाज़त फ़रमा दें, इर्शाद फ़रमाया कि वह मेरे पास लाओ, थोड़ी देर उस कपड़े को देखा फिर फ़रमाया कि अगर मेरा रब मुझसे राज़ी है तब तो इससे बेहतर कफ़न मुझे फ़ौरन मिल जाएगा और अगर मेरा रब मुझसे नाराज़ है तो जो कफ़न

भी होगा, वह ज़ोर से हटा दिया जायेगा और उसके बदले में जहन्नम की आग का कफ़न होगा।

इसके बाद फ़रमाया, मुझे बिठाओ, बैठकर फ़रमाया, या अल्लाह तूने मुझे (जिन चीज़ों के करने का) हुक्म दिया, मुझसे तामील न हो सकी, तूने (जिन चीज़ों को) मना फ़रमाया, मुझसे उनमें नाफ़रमानी हुई, लेकिन "ला इला ह इल्लल्लाह" इसके बाद इंतिक़ाल फ़रमाया। इस दौरान में यह भी फ़रमाया कि मैं एक जमाअत को देख रहा हूँ ,न तो वह आदमी हैं न जिन्न हैं।

एक रिवायत में है कि इंतिक़ाल के क़रीब सबको अपने पास से हटा दिया और फ़रमाया, यहां कोई न रहे। सब बाहर चले गये और दरवाज़े में से देखने लगे तो फ़रमा रहे थे, बहुत मुबारक है ऐसे लोगों की आमद, जो न इंसान हैं न जिन्न। इसके बाद सूरः क़सस के आख़िरी रूकूअ् की यह आयते शरीफ़ा पढ़ी :-

"तिल्कद्दारूल् आख़िर-तु", जिसमें हक़ तआला शानुहू फ़रमाते हैं कि यह आख़िरत का घर हम उन लोगों के लिए करते हैं जो न तो दुनिया में बड़ाई चाहते हैं न फ़साद। *(इत्तिहाफ़)*

एक बुज़ुर्ग कहते हैं कि मैं ने हक़ तआला शानुहू से दुआ की कि मुझे क़ब्रस्तान वालों का हाल दिखा दे। मैं ने एक रात को देखा गोया क़ियामत क़ायम हो गयी और लोग अपनी क़ब्रों से निकलने लगे, उनको मैं ने देखा कि कोई तो सुन्दुस पर (जो एक ख़ास आला क़िस्म का रेशम है) सो रहा है, कोई रेशम पर है, कोई ऊँचे ऊँचे तख़्त पर है, कोई फूलों पर है, कोई हंस रहा है, कोई रो रहा है। मैं ने कहा, या अल्लाह अगर ये सब एक ही हाल में होते तो कैसा अच्छा था। एक शख़्स ने उन मुर्दों में से कहा कि ये आमाल के तफ़ावुत (फ़र्क़) की वजह से है। सुन्दुस वाले तो अच्छी आदतों वाले हैं और रेशम वाले शुहदा हैं और फूलों वाले कसरत से रोज़ा रखने वाले हैं और हंसने वाले तौबा करने वाले हैं और रोने वाले गुनाहगार हैं और आला मरातिब वाले (यह ग़ालिबन ऊँचे तख़्त वाले हैं) वे लोग हैं जो अल्लाह तआला शानुहू की वजह से आपस में मुहब्बत रखते थे। *(रौज़)*

एक कफ़न चोर था वह क़ब्रें खोद कर कफ़न चुराया करता था। उसने एक क़ब्र खोदी तो उसमें एक शख़्स ऊँचे तख़्त पर बैठे हुए देखे, क़ुरआन पाक

उनके सामने रखा हुआ था, वह क़ुरआन शरीफ़ पढ़ रहे थे और उनके तख़्त के नीचे एक नहर चल रही है। उस शख़्स पर ऐसी दहशत तारी हुई कि बेहोश होकर गिर पड़ा। लोगों ने उसको क़ब्र से निकाला तीन दिन बाद होश आया। लोगों ने क़िस्सा पूछा उसने सारा हाल सुनाया। बाज़ लोगों ने उस क़ब्र को देखने की तमन्ना की, उससे पूछा कि क़ब्र बता दे, उसने इरादा भी किया कि उनको ले जाकर क़ब्र दिखाऊं, रात को ख़्वाब में उन क़ब्र वाले बुज़ुर्ग को देखा, कह रहे हैं, अगर तूने मेरी क़ब्र बताई तो ऐसी आफ़तों में फंस जायेगा कि याद करेगा। उसने अह्द किया कि नहीं बताऊँगा। *(रौज़)*

शैख़ अबू याक़ूब सनूसी रह० कहते हैं कि मेरे पास एक मुरीद आया और कहने लगा कि मैं कल ज़ुहर के वक़्त मर जाऊँगा, चुनांचे दूसरे दिन ज़ुहर के वक़्त मस्जिदे हराम में आया, तवाफ़ किया और थोड़ी दूर जाकर मर गया। मैं ने उसको ग़ुस्ल दिया और दफ़्न किया। जब मैं ने उस को क़ब्र में रखा तो उसने आंखें खोल दीं, मैं ने कहा कि मरने के बाद भी ज़िन्दगी है, कहने लगा कि मैं ज़िन्दा हूँ और अल्लाह का आशिक़ ज़िन्दा ही रहता है। *(रौज़)*

एक बुज़ुर्ग कहते हैं कि मैं ने एक मुरीद को ग़ुस्ल दिया उसने मेरा अंगूठा पकड़ लिया, मैं ने कहा कि मेरा अंगूठा छोड़ दे, मुझे मालूम है कि तू मरा नहीं है, यह एक मकान से दूसरे मकान में इंतिक़ाल है। उसने मेरा अंगूठा छोड़ दिया।

शैख़ इब्नुल जला रह० मशहूर बुज़ुर्ग हैं, वह फ़रमाते हैं कि जब मेरे वालिद का इंतिक़ाल हुआ और उनको नहलाने के लिए तख़्ते पर रखा तो वह हंसने लगे, नहलाने वाले छोड़ कर चल दिये, किसी की हिम्मत उनको नहलाने की न पड़ती थी। एक और बुज़ुर्ग उनके रफ़ीक़ आये, उन्होंने ग़ुस्ल दिया। *(रौज़)*

ग़रज़ साहिबे रौज़ ने बहुत से वाक़िआत इन मर मिटों के मरने के ऐसे लिखे हैं जिनसे इनका मरने के वक़्त और मरने के बाद निहायत बश्शाश होना, हंसना, मज़ाक़ करना, लुत्फ़ उड़ाना मालूम होता है। मरने के बाद कलाम करने के बाज़ वाक़िआत हाफ़िज़ इब्ने अब्दुल बर्र रह० ने इस्तीआब में भी ज़िक्र किये हैं। हज़रत ज़ैद बिन ख़ारिजः रज़ि० के तर्जुमे में लिखते हैं कि इसमें इख़्तिलाफ़ नहीं है कि उन्होंने मरने के बाद कलाम किया और इसी तरह बाज़ दूसरे सहाबा-ए-किराम रज़ि० से भी नक़ल किया है।

ग़ज़्वा-ए-मौता में जब सहाबा-ए-किराम रज़ि॰ जाने लगे तो लोगों ने उन जाने वालों को ख़ैर व सलामती के साथ वापसी की दुआयें देनी शुरू कीं, इस पर हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि॰ ने उस वक़्त तीन शेर पढ़े, जिनका मतलब यह है कि :-

"मैं तो वापसी के बजाए यह तमन्ना करता हूं कि हक़ तआला शानुहू मेरी मग़्फ़िरत कर दे और इसके साथ ही एक तलवार सर पर ऐसी लगे जो सर के दो टुकड़े कर दे या कोई बरछा ऐसा मुझमें घुसे, जो अंतड़ियां और जिगर चीरता चला जाये।

जब मैदाने जंग पर ये हज़रात पहुँचे तो इन हज़रात की जमाअत तीन हज़ार की थी और वहां पहुँच कर मालूम हुआ कि दुश्मनों की जमाअत दो लाख है, इस बिना पर सहाबा रज़ि॰ में यह मश्वरा हुआ कि अव्वल हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इस हालत की इत्तिला दी जाये, उसके बाद भी अगर हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद हो तो लड़ाई शुरू की जाये।

जब अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि॰ को मालूम हुआ कि यह मश्वरा हो रहा है तो वह आये और कहने लगे, तुम लोग भी अजीब हो, जिस चीज़ की तमन्ना में निकले थे, उसके बारे में मश्वरा कर रहे हो, तुम तो महज़ शहादत की तलब में निकले हो, हम ने कभी भी सामान और क़ुव्वत और तायदाद के भरोसे पर जंग नहीं की, हमने हमेशा सिर्फ़ मज़हबे इस्लाम की क़ुव्वत पर जंग की है, उठो और मैदान में चलो, दो हाल से ख़ाली नहीं, या ग़लबा और फ़त्ह या शहादत और हमारे लिए दोनों चीज़ें एज़ाज़ ही हैं।

उनकी यह बात सुनकर सब के सब जंग के लिए तैयार हो गये और जंग शुरू हो गयी। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने रवानगी के वक़्त हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ि॰ को अमीर मुक़र्रर फ़रमाया था और इर्शाद फ़रमा दिया था कि अगर यह शहीद हो जायें तो हज़रत जाफ़र बिन अबी तालिब रज़ि॰ अमीर होंगे, वह भी शहीद हो जायें तो अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि॰ अमीर होंगे और अगर वह भी शहीद हो जायें तो उस वक़्त मुसलमान मश्वरे से जिसको चाहें अमीर बना लें।

चुनांचे मैदान में जब हज़रत ज़ैद रज़ि॰ और उनके बाद हज़रत जाफ़र रज़ि॰ शहीद हो गये तो लोगों ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि॰ को आवाज़

दी, यह लश्कर के किनारे पर थे, गोश्त का एक टुकड़ा उनके हाथ में था, तीन दिन से कुछ भी चखने की नौबत न आयी थी। किसी ने आकर कहा कि हज़रत जाफ़र रज़ि० शहीद हो गये, हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि० ने अपने नफ़्स को मलामत की, कि तू दुनिया ही में मश्गूल हो रहा है, (खाने में लग गया) यह कह कर उस टुकड़े को फेंक कर झंडा हाथ में लेकर आगे बढ़े, किसी ने वार किया तो हाथ की उंगली कट गयी, इस पर उन्होंने तीन शेर पढ़े जिनका मतलब यह है :-

"तू महज़ उंगली थी जो ख़ून आलूद हो गयी, इसके सिवा और क्या हुआ, और अल्लाह ही के रास्ते में हुआ जो खुद बहुत ऊंची दौलत है, ऐ नफ़्स! इस बात को समझ ले कि अगर तू शहीद न होगा तो वैसे मरेगा, मरना तो बहरहाल है ही, देख जिस चीज़ की तमन्ना तू कर रहा था यानी शहादत की, वह सामने आ गयी। अगर तू अपने पहले दो साथी ज़ैद रज़ि० व जाफ़र रज़ि० का सा कारनामा करेगा तो हिदायत याफ़्ता होगा और अगर तूने अपना क़दम पीछे हटाया तो बदबख़्त होगा।

इसके बाद अपने दिल से कहा कि तुझे इस वक़्त क्या ख़्याल हो सकता है? अगर बीवी का ख़्याल आ सकता है तो उसको तीन तलाक़, अगर गुलामों का ख़्याल आ सकता है तो वे सब आज़ाद, अगर अपना बाग़ याद आ सकता है तो वह अल्लाह के लिए सदक़ा है। ऐ नफ़्स! क्या तू जन्नत को पसंद नहीं करता, ख़ुदा की क़सम, तू उसकी तरफ़ चल कर रहेगा, ख़ुशी से चले या ज़बर्दस्ती। तूने बहुत ज़माना इत्मीनान का गुज़ार लिया है, अब क्या सोचता है, अपनी हक़ीक़त को तो सोच, तू नुत्फ़े का एक क़तरा था। ग़रज़ इस सोच के बाद हज़रत इब्ने रवाहा रज़ि० बढ़े और शहीद हो गये। हिकायाते सहाबा रज़ि० में यह क़िस्सा तफ़्सील से गुज़र चुका है और इस नौअ् (क़िस्म) के और भी क़िस्से गुज़रे हैं।

हज़रत अबू सुफ़ियान बिन हारिस रज़ि० हुज़ूर सल्ल० के चचाज़ाद भाई का इंतिक़ाल होने लगा तो घर वालों ने रोना शुरू किया तो फ़रमाने लगे, ऐसे शख़्स को मत रोओ जिसने इस्लाम लाने के बाद न ज़बान से कभी ख़ता का लफ़्ज़ निकाला, न बदन से कभी कोई ख़ता की हरकत की (यानी ऐसे शख़्स की मौत तो उसके लिए मसर्रत ही मसर्रत है।)

सनाबही रह० कहते हैं कि जब हज़रत उबादा रज़ि० का विसाल होने

लगा तो मैं पास था, मुझे रोना आ गया, फ़रमाने लगे तू क्यों रोता है, ख़ुदा की क़सम, अगर क़ियामत में मुझसे गवाही तलब की गयी तो मैं तेरे लिए बेहतर गवाही दूँगा और मुझे सिफ़ारिश की इजाज़त मिली तो तेरे लिये सिफ़ारिश करूँगा, और जहां तक मुझे कुदरत होगी तुझे नफ़ा पहुँचाऊंगा। इसके बाद फ़रमाया कि मैं ने जितनी हदीसें हुज़ूर सल्ल॰ से सुनी थीं और तुम्हारे नफ़े की थीं, वे सब तुम्हें पहुँचा चुका हूँ, एक हदीस के अलावा जो इस वक़्त सुनाता हूँ जबकि मैं इस जहान से जा रहा हूँ –

मैं ने हुज़ूर सल्ल॰ से सुना, जो शख़्स ला इला-ह इल्लल्लाह् मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह की गवाही दे, उस पर जहन्नम की आग हराम है।

हज़रत अबू बक्र रज़ि॰ का जब इंतिक़ाल होने लगा तो उनकी साहबज़ादी रोने लगीं, फ़रमाया बेटी रो नहीं, बेटी ने कहा अगर आपके इंतिक़ाल पर भी रोना न आये तो किसके इंतिक़ाल पर आयेगा। फ़रमाया कि इस वक़्त मुझे अपनी जान के निकलने से ज़्यादा महबूब किसी की जान निकलना भी नहीं है, हत्ताकि इस मक्खी की जान निकलना भी अपनी जान निकलने से ज़्यादा महबूब नहीं, (तो जब मौत मुझे इतनी महबूब हो रही है इस पर तू रोती है) इसके बाद हुमरान से कहा अलबत्ता इसका डर ज़रूर है कि कहीं मरते वक़्त इस्लाम न मेरे हाथ से छूट जाये।

हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास रज़ि॰ का जब इंतिक़ाल होने लगा तो फ़रमाया कि मेरा ऊनी जुब्बा लाओ, वह लाया गया, जो बहुत पुराना बोसीदा था, फ़रमाया मुझे इस में कफ़न दे देना, बद्र की लड़ाई में यही जुब्बा मेरे ऊपर था।

अब्दुल्लाह बिन आमिर बिन कुरैज़ रज़ि॰ का जब इंतिक़ाल होने लगा, नज़अ् की हालत थी; हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि॰ हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि॰ उनके पास गये हुए थे। अपने आदमियों से कहा कि देखो, मेरे ये दोनों भाई रोज़े से हैं, ऐसा न हो कि इनके खाने में मेरी मौत की वजह से देर लगे और रोज़ा इफ़्तार करने में ताख़ीर हो जाये। अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि॰ फ़रमाने लगे, अगर तुझे इकराम और सख़ावत से कोई चीज़ रोक सकती थी तो नज़अ् की तक्लीफ़ रोक सकती थी, मगर यह भी तेरे लिए मानेअ् न हुई। इस हाल में इनका इंतिक़ाल हुआ कि मेहमानों के सामने खाना रखा था।

अम्र बिन औस रज़ि॰ कहते हैं कि जब उत्बा बिन अबी सुफ़ियान रज़ि॰

का इंतिक़ाल हो रहा था, मैं उनके पास गया, वह नज़अ् की हालत में थे, फ़रमाने लगे कि मैं तुम्हें चलते चलते एक हदीस सुनाता जाऊं जो मुझे मेरी बहन उम्मे हबीबा रज़ि॰ ने सुनाई थी –

हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि जो शख़्स अल्लाह के वास्ते (यानी इख़्लास से) बारह रक्अत चाश्त की नमाज़ रोज़ाना पढ़ता रहे, हक़ तआला शानुहू उसके लिए जन्नत में एक महल बनाते हैं (यह हुज़ूर सल्ल॰ की अहादीस और दीन की इशाअत का जज़्बा था कि मौत भी मानेअ् (रोक) न हुई।)

मुहम्मद बिन मुन्कदिर रह॰ का जब इंतिक़ाल होने लगा तो वह रोने लगे, किसी ने पूछा कि रोने की क्या बात है, फ़रमाया कि मैं इस पर नहीं रोता कि मुझसे कभी कोई गुनाह हुआ हो, मेरे इल्म के मुवाफ़िक़ तो मैं ने उम्र भर में कोई गुनाह किया ही नहीं, अलबत्ता इस पर रो रहा हूँ कि कोई बात मुझ से ऐसी सरज़द हो गयी हो जिसको मैं अपने ख़्याल में सरसरी समझा हूँ और अल्लाह के नज़दीक बड़ी बात हो। इसके बाद क़ुरआन पाक की आयतः–

وَبَدَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مَا لَمْ يَكُوْنُوْا يَحْتَسِبُوْنَ ○ (زمر ع ٥)

'व बदा ल-हुम् मिनल्लाहि मालम् यकूनू यह्त-सिबून॰' (ज़ुमर, रुकूअ 5) पढ़ी, जिसका तर्जुमा यह है कि :–

"उनके लिए अल्लाह तआला शानुहू की तरफ़ से ऐसी बात ज़ाहिर हुई जिसका उनको गुमान भी न था। यह पढ़कर फ़रमाया कि मुझे बस इसका डर है कि कोई बात ऐसी हो जाये जिसका गुमान भी न हो।

आमिर बिन अब्दे क़ैस रह॰ का जब इंतिक़ाल होने लगा तो वह रोने लगे, किसी ने कहा कि आपने तो ऐसे मुजाहदे किये हैं, आप भी रोते हैं, फ़रमाने लगे, कि मैं न तो मौत के ख़ौफ़ से रो रहा हूँ, न दुनिया के लालच से, मुझे इसका रंज है कि आज गर्मियों की दोपहर का रोज़ा और सर्दियों की आख़िर रात का तहज्जुद छूट रहा है।

हज़रत हसन रज़ि॰ का जब इंतिक़ाल होने लगा तो कुछ लोग उन की ख़िदमत में हाज़िर थे, उन्होंने अर्ज़ किया कोई आख़िरी नसीहत फ़रमा दीजिए। इर्शाद फ़रमाया कि तीन बातें तुम से कहता हूँ कि उनको सुनकर मेरे पास से चले जाना और मैं जहां जा रहा हूँ, मुझे तंहाई में वहां जाने दीजिए। इसके बाद फ़रमाया:–

1. जिस काम का दूसरे को हुक्म करो, पहले ख़ुद उस पर अमल शुरू कर दो।

2. जिस बात से दूसरों को मना करो, पहले उससे ख़ुद रूक जाओ।

3. तुम्हारा हर क़दम या तुम्हारे लिए नाफ़े है (कि जन्नत की तरफ़ पड़ता है) या मुज़िर है (कि जहन्नम की तरफ़ चलता है) इसलिए हर क़दम को उठाते वक़्त यह सोच लो कि किधर जा रहा है।

हज़रत रबीअ् रज़ि॰ का जब इंतिक़ाल हो रहा था तो उनकी बेटी रोने लगीं, फ़रमाया कि बेटी रोने की बात नहीं है, यों कहो कि आज का दिन किस क़दर ख़ुशी का है कि मेरे बाप को आज बहुत कुछ मिला।

हज़रत मकहूल शामी रह॰ का जब इंतिक़ाल होने लगा तो वह हंस रहे थे, किसी ने पूछा कि यह हंसी का वक़्त है? फ़रमाने लगे क्यों न हंसू, जबकि वह वक़्त आ गया कि जिनसे मैं घबराता था, उनसे हमेशा को जुदा होता हूँ और जिस ज़ात से उम्मीद वाबस्ता थी उसके पास जल्दी जल्दी जा रहा हूँ।

हज़रत हस्सान बिन सिनान रज़ि॰ की जब नज़अ् की हालत थी तो किसी ने कहा कि आपको बहुत तक्लीफ़ हो रही है, फ़रमाने लगे, तक्लीफ़ तो ज़रूर है मगर मोमिन की तक्लीफ़ का ऐसे वक़्त क्या ज़िक्र है जब उस को हक़ तआला शानुहू से मिलने की उम्मीद हो रही हो और उस पर उस की ख़ुशी ग़ालिब हो रही हो।

जब इब्ने इदरीस रह॰ के इंतिक़ाल का वक़्त आया तो उनकी बेटी रोने लगीं, फ़रमाया, रोने की बात नहीं है, मैं ने इस घर में चार हज़ार क़ुरआन पाक ख़त्म किये हैं।

हसन बिन हई रह॰ कहते हैं कि मेरे भाई अली रह॰ का जिस रात में इंतिक़ाल हुआ, उन्होंने मुझे आवाज़ देकर पानी मांगा, मेरी नमाज़ की नीयत बंध ही थी, मैं सलाम फेर कर पानी लेकर गया, वह फ़रमाने लगे कि मैं तो पी चुका। मैं ने कहा, आपने कहां से पी लिया? घर में तो मेरे और आपके सिवा कोई और है नहीं? कहने लगे कि हज़रत जिबरील अलैहि॰ अभी पानी लाये थे, वह मुझे पानी पिला गये और यह फ़रमा गये कि तू और तेरा भाई उन लोगों में हैं जिन पर अल्लाह तआला शानुहू ने इन्आम फ़रमा रखा है (यह क़ुरआन पाक की एक आयते शरीफ़ा की तरफ़ इशारा है, जो सूरः निसा के नवें रूकूअ् में है

"व मंय्युति अिल्ला-ह वर्रसू-ल" (अल्आयत) जिसका तर्जुमा यह है कि जो लोग अल्लाह तआला शानुहू और उसके रसूल की इताअत करते हैं, यही लोग हैं जिन पर अल्लाह तआला शानुहू ने इन्आम फ़रमा रखा है, सिद्दीक़ीन शुहदा और सालिहीन से)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मूसा रह० कहते हैं कि जब हज़रत अली बिन सालेह रह० का इंतिक़ाल हुआ, मैं सफ़र में गया हुआ था, जब मैं सफ़र से वापस आया तो उनके भाई हसन सालेह रह० के पास ताज़ियत के लिये गया, मुझे वहां जाकर रोना आ गया, वह कहने लगे कि रोने से पहले उनके इंतिक़ाल की कैफ़ियत सुनो, कैसे लुत्फ़ की है:-

जब उन पर नज़अ् की तक्लीफ़ शुरू हुई तो मुझ से पानी मांगा, मैं पानी लेकर गया, कहने लगे, मैं ने तो पी लिया। मैं ने पूछा, किसने पिलाया, कहने लगे हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रिश्तों की बहुत सी सफ़ों के साथ तशरीफ़ लाये और मुझे पानी पिला दिया। मुझे ख़्याल हुआ कि कहीं ग़फ़लत में न कह रहे हों, इसलिए मैं ने पूछा कि फ़रिश्तों की सफ़ें किस तरह की थीं, कहने लगे, ऊपर नीचे इस तरह थीं, एक हाथ को दूसरे के ऊपर करके बताया।

जब अबू बक्र बिन अयाश रह० का इंतिक़ाल होने लगा तो उनकी हमशीरा (बहन) रोने लगीं, कहने लगे बहन रोने की बात नहीं, तेरे भाई ने मकान के इस कोने में बारह हज़ार क़ुरआन पाक ख़त्म किये हैं। अम्र बिन उबैद कहते हैं कि अबू शुऐब सालेह बिन ज़ियाद रज़ि० बीमार थे, मैं उनकी अयादत (मिज़ाज पुरसी) को गया तो उनकी नज़अ् की हालत थी, मुझसे कहने लगे कि मैं तुझे ख़ुशख़बरी सुनाऊं। मैं इस जगह एक अजनबी से आदमी को जो ओपरी सी सूरत है, देख रहा हूँ। मैं ने उनसे पूछा कि तुम कौन हो? वह कहने लगे कि मैं मलकुल मौत हूँ, मैं ने कहा, मेरे साथ नरमी का बर्ताव करना, वह कहने लगे, मुझे यही हुक्म मिला है, कि नरमी करूँ।

हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल रह० के साहब ज़ादे फ़रमाते हैं कि मेरे वालिद का जब इंतिक़ाल होने लगा तो मैं उनके पास बैठा था, कपड़ा मेरे हाथ में था, ताकि इंतिक़ाल के बाद जबड़ा बांध दूँ। उनको ग़शी हो जाती थी, जिस से यह ख़्याल होता था कि इंतिक़ाल हो गया, फिर इफ़ाक़ा हो जाता था और उस वक़्त वह कहते कि अभी नहीं, अभी नहीं, जब तीसरी मर्तबा यही सूरत पेश आयी तो मैंने उनसे दर्याफ़्त किया कि आप यह क्या फ़रमाते हैं? कहने लगे, बेटा

तुम्हें ख़बर नहीं, शैतान मल्ऊन मेरे पास खड़ा है और रंज व ग़ुस्से से अपनी उंगली मुंह में दबा रहा है और कहता है कि अहमद तू मेरे हाथ से निकल गया, जब वह कहता है तो मैं उससे कहता हूँ अभी नहीं छूटा, (इतने जान न निकल जाये, इतने तुझसे इत्मीनान नहीं है)

हज़रत आदम बिन अबी अयास रह० का जब आख़िरी वक़्त था तो वह चादर में लिपटे पड़े थे और क़ुरआन शरीफ़ पढ़ रहे थे, जब क़ुरआन पाक ख़त्म किया तो कहने लगे कि मुझे जो आपसे मुहब्बत है, उसका वास्ता देकर अर्ज़ है कि मेरे साथ नरमी का बर्ताव किया जाये, आज ही के दिन के लिए आपसे उम्मीदें वाबस्ता थीं, इसके बाद ला इला-ह इल्लल्लाह कहा और रूह परवाज़ कर गयीं।

जब मुस्लिमा बिन अब्दुल मलिक का इंतिक़ाल होने लगा तो वह रोने लगे, किसी ने रोने का सबब पूछा तो कहने लगे कि मैं मौत के डर से नहीं रो रहा हूँ, मुझे अल्लाह तआला के साथ कामिल वसूक़ (यक़ीन) है। मैं इस पर रो रहा हूँ कि मैं तीस मर्तबा जिहाद में शरीक हुआ, मगर शहादत नसीब न हुई और आज औरतों की तरह बिस्तर पर जान दे रहा हूँ।

अयास बिन क़तादा अबशमी रह० ने एक दिन आईना देखा तो सर पर सफ़ेद बाल नज़र आये, कहने लगे कि सफ़ेद बाल आ जाने के बाद फिर आख़िरत के सिवा कोई मशग़ला न रहना चाहिए कि अब दुनिया से रूख़्सत होने का वक़्त आ गया। इसके बाद बहुत ज़्यादा मुजाहिदे शुरू कर दिए। एक मर्तबा जुमे के दिन नमाज़ से फ़ारिग़ होकर मस्जिद से बाहर आ रहे थे, आसमान की तरफ़ देख कर कहने लगे, तेरा आना मुबारक है, मैं तो तेरा बहुत ही सख़्त इंतिज़ार कर रहा था, इसके बाद अपने साथ वालों से कहने लगे, जब मैं मर जाऊं तो मल्हूब (किसी जगह का नाम है) में ले जाकर मुझे दफ़न कर देना। उसके बाद रूह निकल गयी और गिर गये।

हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल रह० के शागिर्द इब्राहीम बिन हानी रह० का इंतिक़ाल होने लगा तो अपने लड़के इसहाक़ से दर्याफ़्त किया कि आफ़ताब ग़ुरूब हो गया? उन्होंने कहा अभी तो नहीं हुआ लेकिन अब्बा जान, ऐसी सख़्त बीमारी में तो फ़र्ज़ रोज़ा खोलने की भी इजाज़त है, आपका तो नफ़्ल रोज़ा है, इसको खोल दीजिए, फ़रमाने लगे, अरे ठहर जा, इसके बाद (न मालूम क्या

देखा) फ़रमाने लगे इसी जैसी चीज़ों के लिए आदमी को चाहिए कि नेक अमल करता रहे (यह क़ुरआन पाक की आयत वस्साफ़्फ़ात, रूकूअ् 2 की तरफ़ इशारा है, जिसमें हक़ तआला शानुहू का इर्शाद है कि बेशक यह बड़ी कामियाबी है, ऐसी ही कामियाबी हासिल करने के लिए अमल करने वालों को अमल करना चाहिए।) इसके बाद रूह परवाज़ कर गयी।

अबू हकीम हियरी रह॰ बैठे हुए, कुछ लिख रहे थे, लिखते लिखते क़लम हाथ में से रख कर कहने लगे, अगर इसी का नाम मौत है तो ख़ुदा की क़सम बड़ी अच्छी मौत है, यह कह कर मर गये।

अबुल वफ़ा बिन अक़ील रह॰ का जब इंतिक़ाल होने लगा तो घर वालों ने रोना शुरू कर दिया, कहने लगे कि पचास साल से तो इसको हटा रहा हूँ, अब कहां तक हटाऊँ, अब तुम मुझे छोड़ दो, अब मैं इस की आमद पर इसको मुबारकबाद देता हूँ।

इमाम ग़ज़ाली रह॰ ने जिनकी किताब एह्या उल उलूम मशहूर है, दो शंबा (पीर) की सुबह की नमाज़ वुज़ू करके पढ़ी फिर अपना कफ़न मंगाया, उसको चूमा, आंखों पर रखा और कहा कि बादशाह की ख़िदमत में हाज़िरी के लिए बड़ी खुशी से हाज़िर हूँ, यह कह कर क़िब्ला रूख़ पांव पसार कर लेट गये और फ़ौरन इंतिक़ाल कर गये।

इब्नुल जौज़ी रह॰ कहते हैं कि जब मेरे उस्ताद अबू बक्र बिन हबीब रह॰ का इतिक़ाल होने लगा तो शागिर्दों ने अर्ज़ किया कि कुछ वसीयत फ़रमा दीजिए, फ़रमाया कि तीन चीज़ें वसीयत करता हूँ :-

1. अल्लाह का ख़ौफ़ और

2. तंहाई में उसका मुराक़बा और

3. जो चीज़ मुझे पेश आ रही है (यानी मौत) इसका ख़ौफ़ रखा जाए। मुझे इकसठ बरस गुज़र गये हैं लेकिन गोया मैं ने दुनिया को देखा भी नहीं, (ऐसे जल्दी गुज़र गये) इसके बाद एक पास बैठने वाले से पूछा, देखो मेरी पेशानी पर पसीना आ गया या नहीं, उसने अर्ज़ किया आ गया, फ़रमाया अल्लाह का शुक्र है कि यह ईमान पर मौत की अलामत है (जैसा कि हदीस में वारिद है)।

इमाम बुख़ारी रह॰ के शागिर्द अबुल वक़्त अब्दुल अव्वल रह॰ के इंतिक़ाल का जब वक़्त आया तो आख़िर कलिमा, जो उनकी ज़बान से निकला,

यह था :-

يَالَيْتَ قَوْمِي يَعْلَمُوْنَ ٥ بِمَاغَفَرَلِي رَبِّي وَجَعَلَنِي مِنَ الْمُكْرَمِيْنَ ٥

"या लै-त क़ौमी यअ्ल मून॰ बिमा ग़-फ़-र-ली रब्बी व ज-अ़-ल नी मिनल् मुक्र-मीन॰"

(यह सूरः यासीन शरीफ़ के दूसरे रूकूअ की आयत है) जिसका तर्जुमा यह है "काश मेरी क़ौम को यह बात मालूम हो जाती कि मेरे रब ने मुझे बख़्श दिया और मुझे मोअ़ज़्ज़ज़ और मुकर्रम लोगों में शामिल कर दिया।"

मुहम्मद बिन हामिद रह॰ कहते हैं कि मैं अहमद बिन ख़िज़रविय: रह॰ के इंतिक़ाल के वक़्त उनके पास बैठा हुआ था, उनको नज़अ् शुरू हो गया था, पचानवे साल की उम्र थी, एक शख़्स ने उनसे कोई मसअला दर्याफ़्त किया, उनकी आंखों में आंसू भर आये और कहने लगे कि बेटा, पचानवे साल से एक दरवाज़े के खोलने की कोशिश में लगा हुआ हूँ, इस वक़्त वह खुलने को है, इसका फ़िक्र सवार है कि सआदत के साथ खुलता है या बदबख़्ती के साथ। इस वक़्त जवाब की मुहलत कहां, इसी में उनके क़र्ज़ख़्वाह उनके मरने की ख़बर सुनकर जमा हो गये, सात सौ दीनार (अशर्फ़ियां) उनके ज़िम्मे क़र्ज़ थीं, कहने लगे या अल्लाह, तूने रहन इसलिए मशरूअ् किया है कि क़र्ज़ख़्वाहों को इत्मीनान रहे, इस वक़्त तू इन लोगों के इत्मीनान को बुला रहा है यानी इनको मेरे वजूद से इत्मीनान था, अब मैं जा रहा हूँ, इनका क़र्ज़ अदा कर। उसी वक़्त किसी ने दरवाज़ा खटखटाया और कहने लगा कि अहमद के क़र्ज़ख़्वाह कहां हैं और सब क़र्ज़ा गिन कर अदा कर गया और उनकी रूह निकल गयी।

एक बुज़ुर्ग का इंतिक़ाल होने लगा तो अपने ख़ादिम से कहा कि मेरे दोनों हाथ बांध दे और मेरा मुंह ज़मीन पर रख दे। इसके बाद वह कहने लगे कि कूच का वक़्त आ गया, न तो मैं गुनाहों से बरी हूँ, न मेरे पास कोई उज़्र है जो मअ़ज़िरत में पेश कर दूँ, न कोई ताक़त है, जिससे मदद चाहूँ, बस मेरे लिये तो तू ही है, मेरे लिये तो तू ही है, यही कहते कहते एक चीख़ मारी और इंतिक़ाल हो गया, ग़ैब से आवाज़ आयी कि इस बंदे ने अपने मौला के सामने आजिज़ी की, उस ने क़ुबूल कर लिया।

एक शख़्स कहते हैं कि एक फ़क़ीर नज़अ् की हालत में सिसक रहा था, मक्खियां उसके मुंह पर कसरत से बैठ रही थीं, मुझे तरस आया, मैं उसके

पास बैठ कर मक्खियां उड़ाने लगा, उसने आंखें खोल दीं और कहने लगा कि बरसों से ख़ास वक़्त की कोशिश में लगा हुआ था, सारी उम्र में कोशिश पर भी नसीब न हुआ, अब मिला था तो तू आकर बीच में घुस गया, जा अपना काम कर, अल्लाह तेरा भला करे।

अबूबक्र रक़ी रह० कहते हैं कि मैं अबू बक्र ज़ुफ़्फ़ाक़ रह० के पास सुबह के बाद मौजूद था, वह कह रहे थे, या अल्लाह ! तू मुझे इस दुनिया में कब तक डाले रखेगा, ज़ुहर का वक़्त भी न आने पाया था कि उनका विसाल हो गया।

हज़रत मक्हूल शामी रह० बीमार थे, एक शख़्स उनके पास गये और कहने लगे, हक़ तआला शानुहू आपको सेहत अता फ़रमाये, कहने लगे, हरगिज़ नहीं, ऐसी ज़ात के पास जाना जिस से ख़ैर की उम्मीद है, ऐसे लोगों के पास रहने से बेहतर है जिनकी बुराई से किसी वक़्त भी इत्मीनान नहीं है।

अबू अली रूज़बारी रह० कहते हैं कि एक फ़क़ीर मेरे पास ईद के दिन आया, बहुत ख़स्ता हाल, पुराने कपड़े, कहने लगा, यहां कोई पाक साफ़ जगह ऐसी है जहां कोई ग़रीब फ़क़ीर मर जाये, मैं ने लापरवाही से लग्व समझ कर कह दिया कि अंदर आजा और जहां चाहे पड़ के मर जा। वह अंदर आया, वुज़ू की, चंद रक्आत नमाज़ पढ़ी और लेट कर मर गया। मैं ने उसकी तजहीज़ व तक्फ़ीन की और जब दफ़्न करने लगा तो मुझे यह ख़्याल आया कि उसके मुंह पर से कफ़न हटा कर उसका मुंह ज़मीन पर रख दूं, ताकि हक़ तआला शानुहू उसकी ग़ुरबत पर रहम फ़रमायें, मैं ने उसका मुंह खोला, उसने आंखें खोल दीं, मैं ने पूछा मेरे सरदार, क्या मौत के बाद भी ज़िन्दगी है? कहने लगा कि मैं ज़िन्दा हूं और अल्लाह तआला का हर आशिक़ ज़िंदा होता है, मैं कल क़ियामत में अपनी वजाहत से तेरी मदद करूंगा।

अली बिन सह्ल असबहानी रह० कहा करते थे, क्या तुम्हारा यह ख़्याल है कि मैं भी उसी तरह मरूंगा जिस तरह लोग मरते हैं, बीमारी, अयादत (सौ धंधे हो जाते हैं) मैं तो इस तरह मरूंगा कि मुझे कहा जायेगा, ऐ अली! और मैं चल दूंगा, चुनांचे ऐसा ही हुआ। एक दिन कहीं चले जा रहे थे चलते चलते कहने लगे, लब्बैक, (हाज़िर हूं) और मर गये।

अबुल हसन मुज़नी रह० कहते हैं कि अबू याक़ूब नहर जूरी रह० का

जब इंतिक़ाल होने लगा, नज़अ् के वक़्त मैं ने ला इला-ह इल्लल्लाह तल्क़ीन किया, तो मेरी तरफ़ देख कर हंसे और कहने लगे, मुझे तल्क़ीन करते हो, उस ज़ात की इज़्ज़त की क़सम, जिसको कभी मौत नहीं आयेगी, मेरे और उसके दर्मियान सिर्फ़ उसकी बड़ाई और इज़्ज़त का पर्दा है और बस, यह कहते ही रूह परवाज़ कर गयी। मुज़नी रह० अपनी दाढ़ी पकड़ कर कहते थे कि मुझ जैसा हज्जाम भला औलिया को तल्क़ीन करे, कैसी ग़ैरत की बात है और जब इस वाक़िए का ज़िक्र करते तो रोया करते।

अबुल हुसैन मालिकी रह० कहते हैं कि मैं हज़रत ख़ैर नूरबाफ़ रह० के साथ कई साल रहा, उन्होंने अपने इंतिक़ाल से आठ यौम पहले कहा कि मैं जुमेरात की शाम को मग़्रिब के वक़्त मरूँगा और जुमा की नमाज़ के बाद दफ़न किया जाऊँगा, भूल न जाना, लेकिन मैं बिल्कुल भूल गया। जुमा की सुबह को एक शख़्स ने मुझे उनके इंतिक़ाल की ख़बर सुनाई, मैं फ़ौरन गया कि जनाज़े में शिर्कत करूँ। रास्ते में लोग मिले जो उनके घर से वापस आ रहे थे और यह कह रहे थे कि जुमा के बाद दफ़न होंगे, मगर मैं उनके घर पहुँच गया, मैनें वहां जाकर उनके इंतिक़ाल की कैफ़ियत पूछी तो मुझसे एक शख़्स ने, जो इंतिक़ाल के वक़्त उनके पास मौजूद था, बताया कि रात मग़्रिब की नमाज़ के क़रीब इन को ग़शी सी हुई, उसके बाद ज़रा इफ़ाक़ा सा हुआ तो घर के एक कोने की तरफ़ मुंह करके कहने लगे कि थोड़ी देर ठहर जाओ, तुम्हें भी एक काम का हुक्म है और मुझे भी एक काम का हुक्म है, लेकिन तुम्हें जिस काम का हुक्म है वह तो फ़ौत नहीं होगा और मुझे जिस काम का हुक्म है वह रह जायेगा, इसलिए थोड़ी देर ठहर जाओ, मैं उसको पूरा कर लू, जिसका मुझे हुक्म है।

उसके बाद उन्होनें पानी मंगाया, ताज़ा वुज़ू किया, नमाज़ पढ़ी और उसके बाद आंखे बंद करके पांव पसार कर लेट गये और चल दिये। किसी ने उनको ख़्वाब में देखा, पूछा क्या हाल है? कहने लगे बस यही न पूछ तुम्हारी सड़ी हुई बूदार दुनिया से ख़लासी मिल गयी।

अबू सईद ख़ज़्ज़ार रह० कहते हैं कि मैं एक मर्तबा मक्का मुकर्रमा में था, बाबे बनी शैबा से निकल रहा था, दरवाज़े से बाहर मैं ने एक निहायत ख़ूबसूरत आदमी को मरे हुए पड़ा देखा, मैं जो उसको ग़ौर से देखने लगा तो वह मेरी तरफ़ देख कर हंसने लगा और कहने लगा, अबू सईद तुम्हें मालूम नहीं कि

(मुहब्बत वाले) दोस्त मरा नहीं करते, एक आलम से दूसरे आलम में मुन्तकिल हो जाते हैं।

हज़रत ज़ुन्नून मिस्री रह० का जब विसाल होने लगा तो किसी ने उनसे अर्ज़ किया कि कुछ वसीयत फ़रमा दीजिए, फ़रमाने लगे कि मैं उसकी मेहरबानी के करिश्मों में मुताज्जिब हो रहा हूँ, इस वक़्त मुझे मश्ग़ूल न करो।

अबू उस्मान हियरी रह० कहते हैं कि जब अबू हफ़्स का इंतिक़ाल होने लगा तो किसी ने पूछा कि कोई वसीयत फ़रमा दीजिए, फ़रमाने लगे कि मुझ में बोलने की ताक़त नहीं, उसके बाद ज़रा क़ुव्वत सी मालूम हुई तो मैं ने कहा, अब फ़रमा दीजिए, मैं लोगों तक पहुँचा दूँगा। फ़रमाने लगे कि अपनी कोताही पर पूरे दिल से इंकिसार और आजिज़ी हो (बस यही मेरी आख़िरी वसीयत है।)

हज़रत जुनैद बग़दादी रह० फ़रमाते हैं कि जब हज़रत सिर्री सक़ती रह० का विसाल होने लगा, नज्अ् की हालत थी, मैं सिरहाने बैठा था, मैं ने अपना मुंह उनके मुंह पर रख दिया, मेरी आंखों से आंसू जारी थे, मेरा आंसू उनके रूख़सार पर गिरा, फ़रमाने लगे कौन है, मैं ने अर्ज़ किया, आपका ख़ादिम जुनैद, फ़रमाने लगे मर्हबा (बहुत अच्छा किया आ गए) मैं ने अर्ज़ किया कोई आख़िरी वसीयत फ़रमा दीजिए, फ़रमाने लगे कि बुरों की सोहबत से अपने को बचाना और ऐसा न हो कि ग़ैरों की सोहबत अल्लाह तआला शानुहू से तुझे जुदा कर दे।

हज़रत हबीब अजमी रह० (जो मशहूर अकाबिर सूफ़िया में हैं) इंतिक़ाल के वक़्त बहुत ही घबरा रहे थे, किसी ने अर्ज़ किया कि आप जैसे बुज़ुर्ग से यह घबराहट बईद है, इससे पहले तो ऐसा हाल आपका न होता था (यानी इतनी घबराहट किसी बात से भी महसूस न होती थी) फ़रमाने लगे, सफ़र बहुत लम्बा है, तोशा पास नहीं है, कभी इससे पहले इस का रास्ता देखा नहीं, आक़ा और सरदार की ज़ियारत करनी है, कभी इस से पहले ज़ियारत नहीं की, ऐसे ख़ौफ़नाक मनाज़िर देखने हैं जो पहले कभी नहीं देखे, मिट्टी के नीचे तंहा क़ियामत तक पड़े रहना है, कोई मूनिस पास न होगा। इसके बाद अल्लाह तआला शानुहू के हुज़ूर में खड़ा होना है, मुझे यह डर है कि अगर वहां यह सवाल हो गया कि हबीब साठ बरस में एक तस्बीह ऐसी पेश कर दे, जिस में शैतान का कोई दख़ल न हो तो क्या जवाब दूँगा? और यह हाल इस पर था कि साठ बरस की ज़िन्दगी में दुनिया से ज़रा सा भी लगाव न था। फिर हम जैसों का

क्या हाल होगा जो किसी वक़्त भी दुनिया तो दरकिनार गुनाहों से ख़ाली नहीं होते, हर वक़्त शैतान ही की ख़ुशामद में लगे रहते हैं।

अब्दुल जब्बार रह० कहते हैं कि मैं हज़रत फ़त्ह बिन शख़रफ़ रह० की ख़िदमत में तीस बरस रहा, उन्होंने कभी आसमान की तरफ़ मुंह नहीं उठाया, इसके बाद एक मर्तबा आसमान की तरफ़ मुंह किया और कहने लगे, अब तो आपका इश्तियाक़ बहुत ही बढ़ गया, अब जल्दी ही बुला लीजिए। इसके बाद एक हफ़्ता भी न गुज़रा कि इंतिक़ाल फ़रमा गये।

अबू सईद मूसली रह० कहते हैं कि फ़त्ह बिन सईद रह० ईदुल अज़्हा की नमाज़ पढ़ कर ईदगाह से देर में वापस हुए, वापसी में देखा कि मकानों के अंदर से क़ुर्बानी का गोश्त पकने का धुआं हर तरफ़ से निकल रहा है, तो रोने लगे और कहने लगे कि लोगों ने क़ुर्बानियों से आपका तक़र्रुब हासिल किया, मेरे महबूब, काश मुझे मालूम हो जाता कि मैं क़ुर्बानी किस चीज़ की करूँ, यह कह कर बेहोश होकर गिर गये, मैं ने पानी छिड़का, देर में होश आया, फिर उठ कर चले जब शहर की गलियों में पहुँचे तो फिर आसमान की तरफ़ मुंह उठा कर कहने लगे कि मेरे मेहबूब, तुझे मेरे रंज व ग़म का तवील होना भी मालूम है और मेरा यह गली गली फिरना भी तुझे मालूम है, मेरे महबूब ! तू मुझे यहां कब तक क़ैद रखेगा, यह कह कर फिर बेहोश होकर गिर गये, मैं ने फिर पानी छिड़का, फिर इफ़ाक़ा हो गया और चंद रोज़ बाद इंतिक़ाल हो गया।

मुहम्मद बिन क़ासिम रह० कहते हैं कि मुझ से मेरे शैख़ मुहम्मद बिन अस्लम तूसी रह० ने इंतिक़ाल से चार दिन पहले फ़रमाया कि आओ, तुम्हें ख़ुशख़बरी सुनाऊँ कि तुम्हारे साथी के (यानी मेरे) साथ हक़ तआला शानुहू ने किस क़दर एहसान किया कि मेरी मौत का वक़्त आ गया और अल्लाह तआला शानुहू का मुझ पर यह एहसान है कि मेरे पास एक दिरम भी नहीं है, जिसका हिसाब देना पड़े, अब मकान के किवाड़ बंद कर दो और मेरे मरने तक किसी को मेरे पास आने की इजाज़त न देना और यह सुन लो कि मेरे पास कोई चीज़ नहीं है, जिस में मीरास तक्सीम हो, सिवाए इस चादर के और इस टाट के और इस वुज़ू के लोटे के और मेरी किताबों के और इस थैली में तीस दिरम हैं, यह मेरे नहीं हैं, बल्कि मेरे बेटे के हैं, उसके एक रिश्तेदार ने उसको दिये हैं और इससे ज़्यादा हलाल चीज़ मेरे लिये क्या होगी जबकि हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद यह है कि तू और तेरा माल तेरे बाप का है (लिहाज़ा यह बेटे का माल होने की वजह

से इस हदीस शरीफ़ की बिना पर मुझे हलाल है) इस में से मेरे कफ़न की इतनी मिक़्दार ख़रीद लेना जिससे मेरा सतर ढक जाये, इससे ज़यादा इसमें से न लेना यानी सिर्फ़ लुंगी इसमें से ख़रीद लेना और यह टाट और यह चादर कफ़न में शामिल कर लेना, कफ़न के तीन कपड़े पूरे हो जायेंगे, लुंगी, चादर और तीसरा टाट हो जायेगा, इन तीनों में मुझे लपेट देना और यह वुज़ू का लोटा किसी नमाज़ी फ़क़ीर को सदक़ा कर देना कि वह वुज़ू कर लिया करेगा, यह सब फ़रमा कर चौथे दिन इंतिक़ाल हो गया।

अबू अब्दुल ख़ालिक़ रह० कहते हैं कि मैं यूसुफ़ बिन हुसैन रह० के पास नज़अ् की हालत में था, वह कह रहे थे, ऐ अल्लाह, मैं हाज़िर हूँ, मैं लोगों को नसीहत करता रहा और बातिन में अपने नफ़्स के साथ खोटापन करता रहा, मैं ने अपने नफ़्स के साथ जो खोट किया, उसको इसके बदले में कि तेरी मख़्लूक़ को नसीहत करता रहा, माफ़ कर दे, यही कहते कहते जान निकल गयी, रहिम-हुमुल्लाहु तलाआ रह्म-तन् वासिअः। *(इत्तिहाफ़)*

किस क़दर ख़ुश क़िस्मत थे ये मरने वाले, हक़ तआला शानुहू इनको बरकात से इस नापाक को भी कोई हिस्सा अता फ़रमा दे कि वह बड़ा करीम है, उसके करम से कोई चीज़ भी बओद नहीं।

(۲۰) عن عائشةؓ قالت جاء رجل فقعد بين يدى رسول الله صلى الله عليه وسلم فقال يا رسول الله ان لى مملوكين يكذبوننى ويخوننى ويعصوننى واشتمهم واضربهم فكيف انامنهم فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم اذا كان يوم القيمة يحسب ماخانوك وعصوك وكذبوك وعقابك اياهم فان كان عقابك اياهم بقدر ذنوبهم كان ذالك كفافالا لك ولا عليك فان كان عقابك اياهم دون ذنبهم كان فضلا لك وان كان عقابك اياهم فوق ذنوبهم اقتص لهم منك الفضل فتنحىّ الرجل وجعل يهتف ويبكى فقال له رسول الله صلى الله عليه وسلم اما تقرأ قول الله تعالى وَنَضَعُ الْمَوَازِيْنَ الْقِسْطَ لِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ فَلَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْئًا وَّاِنْ كَانَ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ اَتَيْنَا بِهَا وَكَفٰى بِنَا حَاسِبِيْنَ o فقال الرّجل يا رسول الله ماأجدلى ولهؤلاء شيئا خيرا من مفارقتهم اشهدك انهم كلهم احرار رواه الترمذى كذا فى المشكوٰة

20. हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि एक शख़्स हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और

अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! (सल्ल०) मेरे कई ग़ुलाम हैं, जो मुझसे झूठ भी बोलते हैं, ख़ियानत भी करते हैं, कहना नहीं मानते मैं उनको बुरा भला भी कहता हूँ और मारता भी हूँ, मेरा उनका (क़ियामत में) क्या मामला रहेगा? हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया कि क़ियामत के दिन जितनी मिक़्दार की उन्होंने ख़ियानत की होगी और तेरी नाफ़रमानी की होगी और झूठ बोला होगा, उस सारी मिक़्दार का वज़न किया जायेगा (कि वहां हर चीज़ का वज़न होता है चाहे वह चीज़ जिस्म वाली जौहर हो या बे जिस्म की अर्ज़ हो) और तूने जो सज़ा इन चीज़ों पर दी है, वह भी सब तौली जायेगी, पस अगर तेरी सज़ा और उनका जुर्म बराबर रहा तब तो न लेना न देना, और अगर तेरी सज़ा उनके जुर्म के वज़न में कम होगी तो जितनी कम होगी, वह तुझे दी जायेगी, और अगर सज़ा उनके जुर्म से बढ़ी हुई होगी तो उस ज़्यादती का तुझ से बदला ले लिया जायेगा, वह शख़्स अफ़सोस करते हुए रोते हुए मज्लिस से हट गये।

फिर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुम ने क़ुरआन शरीफ़ की आयत (सूरः अंबिया, रूकूअ् 4) व न-ज़-अुल मवा ज़ीनल् क़िस्-त, (आयत) नहीं पढ़ी? जिसका तर्जुमा यह है कि क़ियामत के दिन हम मीज़ाने अदल क़ायम करेंगे (जिसमें आमाल का वज़न करेंगे) और किसी पर ज़रा सा भी ज़ुल्म न किया जायेगा और अगर किसी का कोई अमल राई के दाने के बराबर भी होगा तो हम उसको वहां हाज़िर करेंगे (और उस का वज़न करेंगे) और हम हिसाब लेने वाले काफ़ी हैं।

फ़ायदाः- क़ियामत के दिन हिसाब का मामला भी बड़ा सख़्त मामला है, क़ुरआन पाक और अहादीस में बहुत कसरत से उस पर तंबीहें हैं और उस की तफ़्सीलें ज़िक्र फ़रमायी गयी हैं। मिसाल और नमूने के तौर पर चंद आयात और चंद अहादीस इस जगह ज़िक्र की जाती हैं।

(١) وَاتَّقُوا يَوْمًا تُرْجَعُونَ فِيهِ إِلَى اللّٰهِ ثُمَّ تُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ط (بقرہ ع ٣٨)

1. और उस दिन से डरते रहो जिस दिन तुम हक़ तआला शानुहू की पेशी में लाये जाओगे, फिर हर शख़्स को उसका किया हुआ अमल (यानी उसका बदला) पूरा पूरा दिया जायेगा, और उन पर किसी क़िस्म का ज़ुल्म न किया जायेगा। *(बक़रः रूकूअ 38)*

(۲) يَوْمَ تَجِدُ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ مِنْ خَيْرٍ مُّحْضَرًا ۚ وَّمَا عَمِلَتْ مِنْ سُوْءٍ ۚ تَوَدُّ لَوْ اَنَّ بَيْنَهَا وَبَيْنَهٗٓ اَمَدًا ۢ بَعِيْدًا ۗ وَيُحَذِّرُكُمُ اللّٰهُ نَفْسَهٗ ۗ وَاللّٰهُ رَءُوْفٌ ۢ بِالْعِبَادِ ۝

2. जिस दिन पायेगा हर शख़्स अपने सामने उस चीज़ को जो उसने किसी क़िस्म की ख़ैर की हो, या किसी क़िस्म की बुराई की हो और तमन्ना करेगा कि काश इस दिन के और उसके दर्मियान बहुत दूर की मुसाफ़त होती, और अल्लाह तआला डराता है तुमको अपने आप से, और अल्लाह तआला बड़ा शफ़ीक़ है बंदों पर (इस शफ़क़त ही की वजह से डराता है कि तुम उसके अज़ाब में मुब्तला न हो जाओ)

(आले इम्रान, रूकूअ 3) (۳) وَمَنْ يَّغْلُلْ يَاْتِ بِمَا غَلَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ثُمَّ تُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ۝ (ال عمران ع۱۷)

3. और जो शख़्स ख़ियानत करेगा वह अपनी उस ख़ियानत की हुई चीज़ को क़ियामत के दिन (हश्र के मैदान में) लायेगा, फिर हर शख़्स को उसके किये हुए का पूरा पूरा बदला मिलेगा

(आले इम्रान, रूकूअ 17)

(٤) كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ وَاِنَّمَا تُوَفَّوْنَ اُجُوْرَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ (ال عمران ۱۹)

4. हर शख़्स को मौत का ज़ायक़ा ज़रूर चखना है और तुम्हारे (नेक और बद) आमाल का पूरा पूरा बदला क़ियामत के दिन मिलेगा।

(आले इम्रान, रूकूअ 19)

(٥) اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ۝

5. इन्नल्ला-ह सरीअुल् हिसाब॰

यह कलिमा बहुत जगह क़ुरआन पाक में वारिद हुआ है कि हक़ तआला शानुहू बहुत जल्दी हिसाब करने वाले हैं। (कि हर शख़्स का हिसाब किताब बहुत जल्दी ही पूरा कर दिया जायेगा और उसके मुवाफ़िक़ बदला दिया जायेगा) (٦) وَالْوَزْنُ يَوْمَئِذِ ِۨ الْحَقُّ ۚ فَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝ وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ بِمَا كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَظْلِمُوْنَ ۝ (اعراف ع۱)

6. और उस दिन (क़ियामत के दिन) आमाल का वज़न ज़रूरी है, पस जिस शख़्स का (नेक आमाल का) पल्ला भारी होगा तो ऐसे लोग कामियाब होंगे और जिस शख़्स का (नेक आमाल का) पल्ला हल्का होगा, यही लोग हैं जिन्होंने अपना नुक़्सान कर लिया, इस वजह से कि हमारी आयतों की हक़ तलफ़ी करते थे। *(आराफ़, रूकूअ 1)*

(۷) اِنَّ رُسُلَنَا يَكْتُبُوْنَ مَا تَمْكُرُوْنَ ٥(يونس ع ٣)

7. बेशक हमारे क़ासिद (फ़रिश्ते) तुम्हारी सब शरारतों को लिख रहे हैं (और इन सब का बदला तुमको क़ियामत में मिलेगा, जब यह लिखा हुआ सामने लाया जायेगा)। *(यूनुस, रूकूअ 3)*

(۸) وَالَّذِيْنَ كَسَبُوا السَّيِّاٰتِ جَزَاءُ سَيِّئَةٍ بِمِثْلِهَا ۙ وَتَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ؕ مَالَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ عَاصِمٍ (يونس ع ٣)

8. और जिन लोगों ने बुरे काम किये, उनकी बुराई की सज़ा उस के बराबर मिलेगी, और उनको ज़िल्लत छाएगी और उनको अल्लाह तआला (के अज़ाब) से कोई बचाने वाला न होगा (और उनके मुंह ऐसे काले होंगे) गोया उनके चेहरों पर अंधेरी रात के परत लपेट दिये गये। *(यूनुस, रूकूअ 3)*

(۹) هُنَالِكَ تَبْلُوْا كُلُّ نَفْسٍ مَّآ اَسْلَفَتْ (يونس ع ٣)

9. उस मक़ाम पर हर शख़्स अपने पहले किये कामों को (जो दुनिया में किये थे,) जांच लेगा, (कि वह किस क़िस्म के नेक या बद किये थे, फिर उसका हिसाब हो जायेगा) *(यूनुस, रूकूअ 3)*

(۱۰) لِلَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِرَبِّهِمُ الْحُسْنٰى ؕ وَالَّذِيْنَ لَمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهٗ لَوْ اَنَّ لَهُمْ مَّا فِى الْاَرْضِ جَمِيْعًا وَّمِثْلَهٗ مَعَهٗ لَافْتَدَوْا بِهٖ ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ سُوْٓءُ الْحِسَابِ ٥ (رعد ع ٢)

10. जिन लोगों ने अपने रब का कहना मान लिया, उनके वास्ते अच्छा बदला है, और जिन्होंने उसका कहना न माना, उनके पास अगर दुनिया की तमाम चीज़ें हों (बल्कि) और उसके साथ उसी के बराबर और चीज़ें हों तो सब की सब अपने फ़िदये में दे डालें (और) उनका सख़्त हिसाब होगा। *(रअ्द, रूकूअ 2)*

(١١) فَإِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلٰغُ وَعَلَيْنَا الْحِسَابُ ۔ (رعد ع٦)

11. पस आपके ज़िम्मे तो (ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) सिर्फ़ पहुँचा देना है (और उस पर अमल करने, न करने का) हिसाब हमारे ज़िम्मे है। (रअ्द, रूकूअ 6)

(١٢) رَبَّنَا اغْفِرْلِيْ وَلِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ يَوْمَ يَقُوْمُ الْحِسَابُ ۔ (ابراهيم ع٦)

12. ऐ हमारे रब! मेरी और मेरे वालिदैन की और सब मोमिनीन की हिसाब क़ायम होने के दिन मग़्फ़िरत कर दीजिए (यह हज़रत इब्राहीम की दुआ है) *(इब्राहीम, रूकूअ 6)*

(١٣) وَتَرَى الْمُجْرِمِيْنَ يَوْمَئِذٍ مُّقَرَّنِيْنَ فِي الْأَصْفَادِ ۝ سَرَابِيْلُهُمْ مِّنْ قَطِرَانٍ وَّتَغْشٰى وُجُوْهَهُمُ النَّارُ ۝ لِيَجْزِيَ كُلَّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ ۔ إِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ۝ (ابراهيم ع٧)

13. और तू उस दिन मुज्रिमों को ज़ंजीरों मे जकड़ा हुआ देखेगा और उनके कुरते क़तिरान (चीड़ के दरख़्त के तेल) के होंगे (कि उस तेल में पेट्रोल की तरह से आग जल्दी लगती है) और उनके चेहरों पर आग लिपटी हुई होगी (और यह सारी तक्लीफ़ें क्यों हैं) ताकि अल्लाह तआला शानुहू हर शख़्स को उसके किये हुए की सज़ा दे, बेशक अल्लाह तआला शानुहू बहुत जल्द हिसाब लेने वाला है। *(इब्राहीम, रूकूअ 7)*

(١٤) وَكُلَّ إِنْسَانٍ أَلْزَمْنٰهُ طٰٓئِرَهٗ فِيْ عُنُقِهٖ ۔ وَنُخْرِجُ لَهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ كِتٰبًا يَّلْقٰهُ مَنْشُوْرًا ۔ اِقْرَأْ كِتٰبَكَ ۔ كَفٰى بِنَفْسِكَ الْيَوْمَ عَلَيْكَ حَسِيْبًا ۝ (بنی اسرائیل ع٢)

14. और हमने हर इंसान का अमल (नेक हो या बद हो) उसके गले का हार बना रखा है और क़ियामत के दिन हम उसका आमाल नामा उसके सामने कर देंगे, जिसको वह खुला हुआ देखेगा (और उससे कहा जायेगा) कि अपना आमाल नामा ख़ुद ही पढ़ ले, आज तू ख़ुद ही अपना मुहासिब काफ़ी है (यानी ख़ुद ही हिसाब कर ले, किसी दूसरे की भी ज़रूरत नहीं) *(बनी इस्राईल, रूकूअ 2)*

(١٥) كَلَّا سَنَكْتُبُ مَا يَقُوْلُ (مريم ع٥)

15. (जो बात ये काफ़िर समझ रहे हैं वह) हरगिज़ नहीं है, हम

हर वह बात लिख देते हैं जो कोई ज़बान से कहता है (उसके बाद क़ियामत के दिन) वह लिखा हुआ आमाल नामा उसके सामने कर दिया जायेगा। *(मरयम, रूकूअ 1)*

(١٦) اِقْتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُهُمْ وَهُمْ فِىْ غَفْلَةٍ مُّعْرِضُوْنَ ۚ (انبياء ع ١)

16. लोगों के हिसाब का वक़्त तो क़रीब आ गया और ये अभी तक गफ़लत ही में पड़े हैं (और उसकी तैयारी से) ऐराज़ किये हुए हैं। *(अंबिया, रूकूअ 1)*

(١٧) فَاِذَا نُفِخَ فِى الصُّوْرِ فَلَآ اَنْسَابَ بَيْنَهُمْ يَوْمَئِذٍ وَّلَا يَتَسَآءَلُوْنَ ۝ فَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝ وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فِىْ جَهَنَّمَ خٰلِدُوْنَ ۝ تَلْفَحُ وُجُوْهَهُمُ النَّارُ وَهُمْ فِيْهَا كٰلِحُوْنَ ۝ (مؤمنون ع ٦)

17. फिर जब (क़ियामत के दिन) सूर फूँका जायेगा तो (इस क़दर ख़ौफ़ होगा कि) बाहमी रिश्ते भी उस दिन न रहेंगे (यानी सब अजनबी से बन जायेंगे) बाप बेटे से भागेगा वग़ैरह वग़ैरह जैसा सूरः अ-ब-स में है, यौ-म यफ़िर्रूल् मर्-उ मिन् अख़ी-हि (आयत) और न कोई किसी को पूछेगा (और आमाल की तराज़ू खड़ी कर दी जायेंगी) पस जिस शख़्स का पल्ला भारी होगा (यानी उसकी नेकियां झुक जायेंगी) पस ऐसे लोग तो कामियाब होंगे और जिस शख़्स का पल्ला हल्का होगा पस ये वे लोग होंगे जिन्होंने अपना नुक़्सान कर लिया और जहन्नम में हमेशा के लिए रहेंगे, उनके चेहरों को आग झुलसती होगी और उस में उनके मुंह बिगड़े हुए होंगे। *(मुअमिनून, रूकूअ 6)*

(١٨) وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَعْمَالُهُمْ كَسَرَابٍۭ بِقِيْعَةٍ يَّحْسَبُهُ الظَّمْاٰنُ مَآءً ۭ حَتّٰٓى اِذَا جَآءَهٗ لَمْ يَجِدْهُ شَيْـًٔا وَّوَجَدَ اللّٰهَ عِنْدَهٗ فَوَفّٰىهُ حِسَابَهٗ ۭ وَاللّٰهُ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ۝ (نور ع ٥)

18. और जो लोग काफ़िर हैं (और नूरे हिदायत से दूर हैं) उनके आमाल ऐसे हैं जैसा कि एक चटियल मैदान में चमकता हुआ रेत कि प्यासा आदमी उसको (दूर से) पानी समझता है, यहां तक कि जब (उस के पास आया) तो उसको कुछ भी न पाया और उसके पास अल्लाह तआला शानुहू को पाया, जिसने उसका पूरा पूरा हिसाब वहीं कर दिया, और अल्लाह तआला बहुत जल्दी हिसाब कर देने वाले हैं। *(नूर, रूकूअ 5)*

(١٩) إِنَّ الَّذِينَ يَضِلُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ بِمَا نَسُوا يَوْمَ الْحِسَابِ ٥ (ص ع ٢)

19. जो लोग खुदा के रास्ते से भटके हुए हैं, उनके लिए सख़्त अज़ाब है इसलिए कि वे रोज़े हिसाब को भूले हुए हैं।

(मुअ्मिन,रूकूअ 2)

(٢٠) اَلْيَوْمَ تُجْزٰى كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ لَا ظُلْمَ الْيَوْمَ ط إِنَّ اللهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ٥ (مؤمن ع ٢)

20. आज (क़ियामत) के दिन हर शख़्स को ठसके किए का बदला दिया जायेगा, आज ज़ुल्म नहीं है, बेशक अल्लाह तआला शानुहू बहुत जल्द हिसाब लेने वाला है। *(मुअ्मिन, रूकूअ 2)*

(٢١) وَتَرٰى كُلَّ أُمَّةٍ جَاثِيَةً قف كُلُّ أُمَّةٍ تُدْعٰى إِلٰى كِتٰبِهَا اَلْيَوْمَ تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ٥
هٰذَا كِتٰبُنَا يَنْطِقُ عَلَيْكُمْ بِالْحَقِّ ط إِنَّا كُنَّا نَسْتَنْسِخُ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ٥ (جاثيه ع ٤)

21. और आप (क़ियामत के दिन) हर फ़िरक़े को देखेंगे कि (वे लोग ख़ौफ़ की वजह से) घुटनों के बल गिर पड़ेंगे, हर फ़िरक़ा अपनी किताब (नामा-ए-आमाल) की तरफ़ लाया जायेगा (और उनसे कहा जायेगा) कि आज तुमको तुम्हारे किये का बदला दिया जायेगा (और यह कहा जायेगा) कि यह हमारी किताब, (जिस में तुम्हारे आमाल लिखे हुए हैं) तुम्हारे आमाल को ठीक ठीक बता रही है, हम दुनिया में (फ़रिश्तों से) तुम्हारे आमाल को लिखवाते रहते थे (जो इस वक़्त यह तुम्हारे सामने है।) *(जासियः, रूकूअ 4)*

(٢٢) إِذْ يَتَلَقَّى الْمُتَلَقِّيٰنِ عَنِ الْيَمِينِ وَعَنِ الشِّمَالِ قَعِيدٌ ٥ مَا يَلْفِظُ مِنْ قَوْلٍ إِلَّا
لَدَيْهِ رَقِيبٌ عَتِيدٌ ٥ (ق ع ٢)

22. जब दो अख़्ज़ करने वाले (बात को जल्दी से लेकर लिखने वाले फ़रिश्ते) लेते रहते हैं और दायीं जानिब और बायीं जानिब बैठे रहते हैं, वह (यानी आदमी) कोई लफ़्ज़ ज़बान से नहीं निकालता, मगर एक ताक लगाने वाला तैयार रहता है (और वह फ़ौरन) उसको लिख लेता है, यही आमाल नामा है। *(क़ाफ़, रूकूअ 2)*

(٢٣) يَوْمَئِذٍ تُعْرَضُوْنَ لَاتَخْفٰى مِنْكُمْ خَافِيَةٌ ٥ فَاَمَّا مَنْ اُوْتِىَ كِتٰبَهٗ بِيَمِيْنِهٖ فَيَقُوْلُ هَاؤُمُ اقْرَءُوْا كِتٰبِيَهْ ٥ اِنِّىْ ظَنَنْتُ اَنِّىْ مُلٰقٍ حِسَابِيَهْ ٥ فَهُوَ فِىْ عِيْشَةٍ رَّاضِيَةٍ ٥ فِىْ جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ٥ قُطُوْفُهَا دَانِيَةٌ ٥ كُلُوْا وَاشْرَبُوْا هَنِيْٓئًا بِمَآ اَسْلَفْتُمْ فِى الْاَيَّامِ الْخَالِيَةِ ٥ وَاَمَّا مَنْ اُوْتِىَ كِتٰبَهٗ بِشِمَالِهٖ ٥ فَيَقُوْلُ يٰلَيْتَنِىْ لَمْ اُوْتَ كِتٰبِيَهْ ٥ وَلَمْ اَدْرِ مَا حِسَابِيَهْ ٥ يٰلَيْتَهَا كَانَتِ الْقَاضِيَةَ ٥ مَآاَغْنٰى عَنِّىْ مَالِيَهْ ٥ هَلَكَ عَنِّىْ سُلْطٰنِيَهْ ٥ خُذُوْهُ فَغُلُّوْهُ ٥ ثُمَّ الْجَحِيْمَ صَلُّوْهُ ٥ ثُمَّ فِىْ سِلْسِلَةٍ ذَرْعُهَا سَبْعُوْنَ ذِرَاعًا فَاسْلُكُوْهُ ٥ (الحاقّه ع ١)

23. जिस दिन तुम (ख़ुदा तआला के सामने हिसाब के लिए) पेश किये जाओगे, तुम्हारी कोई बात पोशीदा न होगी, फिर (नामा-ए-आमाल हाथों में दे दिये जायेंगे, पस) जिस शख़्स का नामा-ए-आमाल उस के दाहिने हाथ में दिया जायेगा, वह तो (ख़ुशी के मारे आपस में) कहेगा कि लो, मेरा नामा-ए-आमाल पढ़ लो, मेरा तो (पहले ही से) एतिक़ाद था कि मुझको मेरा हिसाब पेश आने वाला है (मैं तो दुनिया ही में उसके लिए तैयारी कर रहा था) पस यह शख़्स तो पसंदीदा ज़िन्दगी यानी बहिश्ते बरीं में होगा जिसके मेवे झुके हुए होंगे (और उनसे कहा जायेगा) कि खाओ और पियो मज़े के साथ उन आमाल के बदले में जो तुमने गुज़रे हुए ज़माने में किये हैं, और जिस शख़्स का नामा-ए-आमाल उस के बाऐं हाथ में दिया जायेगा पस वह (निहायत हसरत और ग़म से) कहेगा, क्या अच्छा होता कि मुझको मेरा नामा-ए-आमाल न मिलता, और मुझको यह ख़बर ही न होती कि मेरा हिसाब क्या है, काश मौत (जो आ चुकी थी, वही) सब काम का ख़ात्मा कर देती (अफ़सोस) मेरा माल मेरे कुछ काम न आया, मेरी वजाहत भी मेरे से जाती रही। (उस शख़्स के लिए हुक्म होगा कि) इसको पकड़ो और इसके गले में तौक़ पहना दो, फिर जहन्नम में इसको दाख़िल कर दो, फिर ऐसी ज़ंजीर में जिसकी लम्बाई सत्तर गज़ हो, इसको जकड़ दो (इस आयते शरीफ़ा का कुछ हिस्सा बुख़्ल के बयान में नं० 12 पर गुज़र चुका है)। *(अलहाक़्क़ः, रुकूअ 1)*

(٢٤) وَاِنَّ عَلَيْكُمْ لَحٰفِظِيْنَ ٥ كِرَامًا كَاتِبِيْنَ ٥ يَعْلَمُوْنَ مَاتَفْعَلُوْنَ ٥ (انفطار)

24. और तुम पर (ऐसे फ़रिश्ते जो तुम्हारे कामों को) याद रखने वाले हैं, जो मोअज़्ज़ज़ हैं (और हर काम को) लिखने वाले हैं, मुक़र्रर हैं

जो तुम्हारे सारे अफ़्आल को जानते हैं और लिखते हैं, क़ियामत के दिन, यह सब मजमूआ पेश होगा। *(इन्फ़ितार)*

(٢٥) فَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتٰبَهٗ بِيَمِيْنِهٖ ۙ فَسَوْفَ يُحَاسَبُ حِسَابًا يَّسِيْرًا ۙ وَّيَنْقَلِبُ إِلٰٓى أَهْلِهٖ مَسْرُوْرًا ؕ وَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتٰبَهٗ وَرَآءَ ظَهْرِهٖ ۙ فَسَوْفَ يَدْعُوْا ثُبُوْرًا ۙ وَّيَصْلٰى سَعِيْرًا ؕ إِنَّهٗ كَانَ فِيٓ أَهْلِهٖ مَسْرُوْرًا ؕ إِنَّهٗ ظَنَّ أَنْ لَّنْ يَّحُوْرَ ۚ (انشقاق)

25. पस जिस शख़्स का नामा-ए-आमाल उसके दाहिने हाथ में मिलेगा, उस से अंक़रीब सहल हिसाब लिया जायेगा, और वह (उससे फ़ारिग़ होकर) अपने मुताल्लिक़ीन के पास ख़ुश ख़ुश आयेगा, और जिस शख़्स का नामा-ए-आमाल उसके बायें हाथ में पीठ के पीछे से दिया जायेगा सो वह मौत को पुकारेगा (जैसा कि मुसीबत के वक़्त पुकारा जाता है) और जहन्नम में दाख़िल होगा, यह शख़्स (दुनिया में) अपने घर बहुत ख़ुश ख़ुश रहता था उसने गुमान कर रखा था कि उसको ख़ुदा के यहां जाना ही नहीं है। *(इन्शिक़ाक़)*

(٢٦) إِنَّ إِلَيْنَآ إِيَابَهُمْ ۙ ثُمَّ إِنَّ عَلَيْنَا حِسَابَهُمْ ○ (غاشيه)

26. बेशक हमारे ही पास इन सब को लौट कर आना है फिर हमारा ही काम है इनसे हिसाब लेना। *(ग़ाशिय:)*

(٢٧) بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○ إِذَا زُلْزِلَتِ الْأَرْضُ زِلْزَالَهَا ۙ وَأَخْرَجَتِ الْأَرْضُ أَثْقَالَهَا ۙ وَقَالَ الْإِنْسَانُ مَا لَهَا ۚ يَوْمَئِذٍ تُحَدِّثُ أَخْبَارَهَا ۙ بِأَنَّ رَبَّكَ أَوْحٰى لَهَا ؕ يَوْمَئِذٍ يَّصْدُرُ النَّاسُ أَشْتَاتًا ۙ لِّيُرَوْا أَعْمَالَهُمْ ؕ فَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَّرَهٗ ؕ وَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَّرَهٗ ○

27. जब ज़मीन (ज़लज़ले की वजह से) अपनी पूरी हरकत से हिला दी जायेगी (और जब सारी दुनिया में ज़लज़ला आये तो ज़ाहिर है कि कितना बड़ा ज़लज़ला होगा) और ज़मीन अपने अंदर के सारे बोझ (ख़्वाह दफ़ीने हों या मुर्दे) बाहर निकाल कर फेंक देगी और आदमी हक्का बक्का होकर कहेगा इसको क्या हो गया और उस दिन ज़मीन जो कुछ (उसके ऊपर अच्छे या बुरे काम किये गये हैं) सबकी ख़बरें देगी, इस वजह से कि आपके रब का उसको यही हुक्म होगा (जैसा कि

आइंदा रिवायात के ज़ैल में आ रहा है) उस दिन लोग मुख़्तलिफ़ जमाअतें (कोई मुकर्रबीन की, कोई नेक लोगों की, कोई जहन्नमियों की जमाअत होगी और फिर हर जमाअत में मुख़्तलिफ़ गिरोह होंगे, इसी तरह से कोई जमाअत सवारों कोई पैदल चलने वालों की, कोई उन लोगों की, जिनको मुंह के बल घसीटा जायेगा, ग़रज़ हर किस्म की मुख़्तलिफ़ जमाअतें) होकर लौटेंगी ताकि अपने आमाल को (जो दुनिया में किये थे) देख लें, पस जो शख़्स (दुनिया में) ज़र्रे के बराबर नेकी करेगा, वह उसको वहां देख लेगा और जो शख़्स ज़र्रे के बराबर बुराई करेगा, वह उसको देख लेगा।

यह नमूने के तौर पर सत्ताईस आयात हिसाब किताब और आमाल के बदले की ज़िक्र की गयी हैं। इनके अलावा सैंकड़ों आयात में मुख़्तलिफ़ उन्वानात से यह और इसी किस्म के मज़ामीन वारिद हैं, इसी तरह अहादीस में भी हज़ारों रिवायात में उस हिसाब के दिन के सख़्त हालात ज़िक्र किये गये हैं, जिनका एहाता भी दुशवार है, लेकिन ज़रूरी है कि अपने उन औक़ात को जो महज़ दुनिया कमाने में ज़ाया किये जाते हैं, थोड़ा बहुत इन काम आने वाली चीज़ों में भी ख़र्च किया जाये, अभी वक़्त है, कुछ किया जा सकता है, बहुत जल्द वह वक़्त आने वाला है कि अफ़सोस के सिवा कुछ भी न रहेगा, नमूने के तौर पर चंद अहादीस का तर्जुमा भी इस जगह लिखा जाता है।

हज़रत आइशा रज़ि० एक मर्तबा जहन्नम को याद करके रोने लगीं, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, क्या बात हुई, क्यों रो रही हो? हज़रत आइशा रज़ि० ने फ़रमाया, मुझे जहन्नम याद आ गयी, इस पर रो रही हूँ, आप हज़रात उस दिन अपने अह्ल व अयाल को भी याद कर लेंगे या नहीं, हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया कि तीन वक़्त तो ऐसे हैं जिनमें कोई किसी को याद नहीं करेगा -

1. एक तो तराज़ू के वक़्त (जब आमाल तौलने का वक़्त होगा, यहां तक कि उसको मालूम न हो जाये कि उसकी (नेकियों का) पलड़ा झुक रहा है या नहीं,

2. दूसरे जब यह ऐलान होगा कि आओ अपने अपने हिसाब की किताब ले लो, उस वक़्त कोई किसी को याद न करेगा, जब तक कि यह मालूम न हो जाये कि उसका आमाल नामा दायें हाथ में मिलता है या पुश्त के पीछे से बायें हाथ में मिलता है।

3. तीसरे पुल सिरात के वक़्त जब कि वह जहन्नम पर बिछाई जायेगी (और उस पर से चलना पड़ेगा)। *(मिश्कात)*

जब तक कि आदमी उस पर से ख़ैरियत से गुज़र न जाये।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि क़ियामत के दिन हिसाब किया जायेगा, जिसकी नेकियों में एक का भी इज़ाफ़ा हो जायेगा, वह जन्नत में चला जायेगा और जिसकी बुराईयों में एक का भी इज़ाफ़ा हो जायेगा, वह जहन्नम में जायेगा। इसके बाद उन्होंने "फ़-मन स-क़ुलत् मवाज़ीनुहू" वाली आयत पढ़ी जो नं॰ 6 पर गुज़री और फ़रमाया कि तराज़ू का पल्ला एक दाने से भी झुक जायेगा और जिनकी नेकियां और बुराईयां बराबर होगीं, वे आराफ़ में होंगे (जो जन्नत और दोज़ख़ के दर्मियान है।)

हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्ह-हू फ़रमाते हैं कि जिसका ज़ाहिर उसके बातिन से ज़्यादा अच्छा होगा, उसका वज़न हल्का होगा और जिसका बातिन ज़ाहिर से ज़्यादा बेहतर होगा उसका वज़न भारी होगा।

हज़रत अनस रज़ि॰ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल करते हैं कि एक फ़रिश्ता तराज़ू के क़रीब मुक़र्रर होगा, पस जिसका पल्ला भारी हो जायेगा, वह ऐसे ज़ोर से ऐलान करेगा जिसको सारी मख़्लूक़ सुनेगी कि फ़लां शख़्स का फ़लां बेटा सईद हो गया और ऐसी सआदत मिली कि उसके बाद बदबख़्ती नहीं है। और अगर उसका पलड़ा हल्का हो गया तो वह इसी तरह उसके बदबख़्त होने का ऐलान करेगा, जिसको सारी मख़्लूक़ सुनेगी।

मुतअद्दद रिवायात में आया है कि वह तराज़ू इतनी बड़ी होगी कि आसमान ज़मीन और जो कुछ उनके दर्मियान हैं, सब उसके एक पलड़े में आ जायेगा। हज़रत जाबिर रज़ि॰ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल करते हैं कि तराज़ू में सबसे अव्वल वह नफ़क़ा रखा जाता है जो आदमी अपने अह्ल व अयाल पर ख़र्च करता है।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अबू ज़र रज़ि॰ से इर्शाद फ़रमाया कि दो ख़सलतें तुम्हें ऐसी बताऊँ जो अमल में बहुत हल्की वज़न में बहुत भारी, एक तो अच्छी आदत, दूसरे चुप रहना। (यानी बेकार बातों से एहतिराज़ क़रना)।

एक और हदीस में है कि दो कलिमे ऐसे हैं। जो अल्लाह तआला शानुहू को बहुत महबूब हैं, ज़बान पर बहुत हल्के और तराज़ू में बहुत वज़नी हैं वे :-

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ سُبْحَانَ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ

"सुब्हा नल्लाहि व बिहम्दिही सुब्हा नल्लाहिल् अज़ीम" हैं।

एक हदीस में हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद वारिद है कि जो शख़्स अपने भाई की हाजत को पूरी करे मैं उसकी तराज़ू के पास खड़ा रहूँगा, अगर उसकी नेकियां बढ़ गयीं तो बहुत ही अच्छा, नहीं तो मैं उसकी सिफ़ारिश करूँगा।

एक हदीस में है कि क़ियामत के दिन उलमा के लिखने की स्याही और शहीदों का ख़ून भी तौला जायेगा और उलमा के लिखने की स्याही का वज़न शहीदों के ख़ून से ज़्यादा वज़नी होगा।

हज़रत ईसा अला नबिय्यिना व अलैहिस्सलातु वस्सलाम का इर्शाद है कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्मत के आमाल नामे का वज़न और उम्मतों से बहुत बढ़ जायेगा, इसलिए कि उनकी ज़बानें कलिमा-ए-ला इला-ह इल्लल्लाहु के साथ बहुत मानूस होंगी।

हज़रत अबूदर्दा रज़ि० फ़रमाते हैं कि जिस शख़्स को हर वक़्त पेट और शर्मगाह की फ़िक्र रहे उसका वज़न हल्का होगा। *(दुर्रे मंसूर)*

एक हदीस में हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि जो फ़रिश्ता दायीं जानिब होता है और नेकियों का लिखने वाला होता है, वह बायीं जानिब वाले पर अमीर होता है। जब बंदा कोई नेकी करता है तो दायीं जानिब वाला दस गुना उसका सवाब लिख देता है और जब कोई बुराई करता है तो बायीं जानिब वाला उसके लिखने का इरादा करता है तो वह मातहत होने की वजह से अमीर से लिखने की इजाज़त लेता है तो अमीर यानी दायीं जानिब का फ़रिश्ता कहता है कि अभी छः सात घंटे इंतिज़ार कर ले, अगर बंदा इस दर्मियान में उस गुनाह से तौबा कर लेता है तो वह लिखने की इजाज़त नहीं देता और अगर तौबा नहीं करता है तो वह लिख लेता है। *(दुर्रे मंसूर)*

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद मुतअद्दद अहादीस में है कि क़ियामत के दिन तीन पेशियां होंगी, पहली दो पेशियों में तो मुतालबात, सवाल जवाब, उज़्र माज़िरत वग़ैरह सब कुछ होगा और तीसरी पेशी

में आमाल नामे हाथों में दे दिये जायेंगे, किसी के दाहिने हाथ में, किसी के बायें हाथ में। (दुर्रे मंसूर)

एक हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जिस शख़्स में तीन बातें हों, हक़ तआला शानुहू उसका बहुत आसान हिसाब लेते हैं और अपनी रहमत से जन्नत में दाख़िल कर देते हैं।

1. एक यह कि जो तुझे अपने एहसान से महरूम रखे तू उस पर एहसान करे,

2. दूसरे जो शख़्स तुझ से क़ता-ए-रहमी करे तू उसके साथ सिला रहमी करे,

3. तीसरे जो तुझ पर ज़ुल्म करे तू उसको माफ़ कर दे। (दुर्रे मंसूर)

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि अगर (आख़िरत के अहवाल से) जो कुछ मुझे मालूम है, तुम लोगों को मालूम हो जाये तो (ख़ौफ़ की वजह से) हंसना कम कर दो और रोना बहुत ज़्यादा कर दो और बिस्तरों पर औरतों के साथ लज़्ज़त हासिल करना छोड़ दो और चिल्लाते हुए जंगल को निकल जाओ। हज़रत अबूज़र रज़ि॰ हुज़ूर सल्ल॰ का यह इर्शाद सुनकर फ़रमाने लगे, काश, मैं तो एक दरख़्त होता जो काट दिया जाता, (आदमी होता ही नहीं जो इतने मसाइब बर्दाश्त करने पड़ें।)

एक और हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि आदमी जिस हालत में मरता है, उसी हालत में क़ियामत को उठाया जायेगा, यानी जिस नेकी या बदी में मशग़ूल है और उसी हालत में मौत आ गयी, उसी हालत पर हश्र भी होगा।

(मिश्कात)

एक मर्तबा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वअ्ज़ फ़रमाया, जिसमें इर्शाद फ़रमाया, ग़ौर से सुन लो कि दुनिया एक वक़्ती मनफ़अत है जिस से हर शख़्स नफ़ा उठाता है, चाहे नेक हो या फ़ाजिर (लिहाज़ा इससे ज़्यादा नफ़ा उठाना कोई नेकी की अलामत नहीं है) और आख़िरत एक मुक़र्ररा चीज़ है जो बहरहाल वक़्ते मुक़र्रर पर आने वाली है और उसमें एक ऐसा बादशाह फ़ैसला फ़रमायेगा जो हर चीज़ पर क़ादिर है (उसके इख़्तियारात बहुत ज़्यादा वसीअ् हैं) ख़ैर सारी की सारी जन्नत में है (लिहाज़ा जो ख़ैर भी आदमी कर सके, उसमें कोताही न करे कि वह जन्नत की तरफ़ ले जाने वाली है) और

शर सारा का सारा जहन्नम में है (इसलिए ज़रा से शर से भी बचने की कोशिश करना चाहिए, उसको मामूली न समझना चाहिए कि ज़रा से शर भी जहन्नम की तरफ़ ले जाने वाला है) एहतिमाम से नेक अमल करते रहो, तुम अल्लाह तआला शानुहू की तरफ़ से निहायत ख़तरे की हालत में हो (उस से बे ख़ौफ़ और बेफ़िक्र किसी वक़्त न होना चाहिए) और इस बात को अच्छी तरह जान लो कि तुम अपने आमाल पर पेश किये जाओगे(और इनका हिसाब होगा) जो शख़्स एक ज़र्रा के बराबर भी नेकी करेगा, वह उसको देखेगा और जो शख़्स एक ज़र्रा के बराबर भी बुराई करेगा वह उसको भी देखेगा। *(मिश्कात)*

हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू का इर्शाद है दुनिया दिन ब दिन मुंह फेरती जा रही है यानी दूर होती जा रही है, और आख़िरत रोज़ ब रोज़ क़रीब आती जा रही है और (दुनिया और आख़िरत में से) हर एक की मुस्तक़िल औलाद है, पस तुम दुनिया की औलाद न बनो, आख़िरत की औलाद बनो। आज अमल का दिन है, हिसाब का नहीं और कल को हिसाब का दिन है अमल न होगा। *(मिश्कात)*

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि क़ियामत के दिन तीन कचहरियां होंगीः–

1. एक कचहरी में तो माफ़ी है ही नहीं, यह तो अल्लाह तआला शानुहू के साथ किसी को शरीक बनाने की है (यानी इस अदालत में तो सिर्फ़ ईमान और कुफ़्र का मुक़दमा पेश होगा और जुर्म की माफ़ी का इस अदालत में ज़िक्र ही नहीं)

2. दूसरी कचहरी में हक़ तआला शानुहू साहबे हक़ को उसका हक़ ज़रूर दिलायेंगे, ख़्वाह अपने पास से अता फ़रमायें या जिसके ज़िम्मे हक़ है, उससे वसूल करके मरहमत फ़रमायें, और यह कचहरी बंदों के आपस में एक दूसरे पर ज़ुल्म की है कि इसमें मज़लूम को ज़ालिम से बदला दिलवाया जायेगा।

3. तीसरी कचहरी हक़ तआला शानुहू के अपने हुक़ूक़ की है (फ़राइज़ वग़ैरह में कोताही की है) इसमें हक़ तआला शानुहू ज़्यादा परवाह नहीं फ़रमायेंगे, ये उस करीम के अपने हुक़ूक़ हैं, वह चाहे मुतालबा फ़रमाये या माफ़ कर दे। *(मिश्कात)*

एक और हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि जिस शख़्स के ज़िम्मे

उसके भाई का कोई हक़ हो कि उस पर आबरू की या माल की कोई ज़्यादती और ज़ुल्म कर रखा हो, उसको आज माफ़ करा लो, उस वक़्त से पहले पहले निबट लो, जिस दिन न दीनार होगा और न दिरम (न रूपया, न अशर्फ़ी, उस दिन सारा हिसाब नेक आमाल और गुनाहों से होगा), पस अगर उस ज़ुल्म करने वाले के पास कुछ नेक अमल है। तो उस के ज़ुल्म के बक़द्र नेकियां लेकर मज़्लूम को दे दी जायेंगी और अगर उसके पास नेकियां नहीं हैं तो मज़्लूम के उतने ही गुनाह उस पर डाल दिये जायेंगे (कि अपने गुनाहों के साथ दूसरों के गुनाहों की सज़ा में जहन्नम में कुछ ज़्यादा ज़माना पड़े रहना होगा।) *(मिश्कात)*

एक और हदीस में है कि क़ियामत के दिन हक़ वालों को उनका हक़ ज़रूर दिलवाया जायेगा, हत्ता कि बे सींग वाली बकरी के लिए सींग वाली बकरी से बदला लिया जायेगा। *(मिश्कात)*

यानी अगर दुनिया में एक बकरी के सींग थे, उसने दूसरी बकरी के मारा जिसके सींग न थे, जिसकी वजह से वह बदला न ले सकी तो उस बकरी का बदला भी वहां दिलवाया जायेगा।

एक मर्तबा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जानते हो कि मुफ़्लिस कौन है? सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया हमारे नज़दीक तो मुफ़्लिस वह शख़्स समझा जाता है जिसके पास न दिरम (नक़द) हो, न माल। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मेरी उम्मत का मुफ़्लिस वह है जो क़ियामत के दिन बहुत सी नमाज़, रोज़ा, ज़कात लेकर आये, लेकिन किसी को गाली दी थी, किसी को तोहमत लगाई थी, किसी का माल खा लिया था, किसी को मारा था, पस कुछ नेकियां इसने ले लीं, कुछ उसने ले लीं, और जब उसकी नेकियां ख़त्म हो गयीं और दूसरों के मुतालबे बाक़ी रह गये तो उनके मुतालबों के बक़द्र उनके गुनाह उस पर डाल दिये जायेंगे और इसके बाद उस (ज़ालिम और कसरत से इबादतों के मालिक) को जहन्नम में डाल दिया जायेगा। *(मिश्कात)*

फ़क़ीह अबुल्लैस रह० फ़रमाते हैं कि क़ियामत के दिन जब लोग अपनी क़ब्रों से उठाये जायेंगे, उस वक़्त सत्तर बरस तो ऐसी हालत में खड़े रहेंगे कि उनकी तरफ़ इलतिफ़ात भी न होगा, वे इस परेशानी में इतना रोयेंगे कि आंसू ख़त्म हो जायेंगे और आंसुओं की जगह ख़ून निकलने लगेगा। इसके बाद मैदाने हश्र की तरफ़ बुलाये जायेंगे और फ़रिश्ते आसमानों से उतरने शुरू होंगे, हर

आसमान के फ़रिश्ते एक एक हलका बना कर, एक आसमान वाले दूसरे आमसान वालों के पीछे खड़े होंगे, जिसको क़ुरआन पाक में :-

وَيَوْمَ تَشَقَّقُ السَّمَاۤءُ بِالْغَمَامِ وَنُزِّلَ الْمَلٰۤئِكَةُ تَنْزِيْلًا ۝ اَلْمُلْكُ يَوْمَئِذِ نِ الْحَقُّ لِلرَّحْمٰنِ ؕ وَكَانَ يَوْمًا عَلَى الْكٰفِرِيْنَ عَسِيْرًا ۝ وَيَوْمَ يَعَضُّ الظَّالِمُ عَلٰى يَدَيْهِ يَقُوْلُ يٰلَيْتَنِى اتَّخَذْتُ مَعَ الرَّسُوْلِ سَبِيْلًا ۝ يٰوَيْلَتٰى لَيْتَنِىْ لَمْ اَتَّخِذْ فُلَانًا خَلِيْلًا ۝ لَقَدْ اَضَلَّنِىْ عَنِ الذِّكْرِ بَعْدَ اِذْ جَاۤءَنِىْ وَكَانَ الشَّيْطٰنُ لِلْاِنْسَانِ خَذُوْلًا ۝

"व यौ-म तशक़्क़-क़ुस्समा-उ बिल्ग़मा-मि व नुज़्ज़िलल् मलाइ-कतु तन्ज़ीला॰ अल् मुल्कु यौम-इज़ि निल्हक़्क़ु लिर्रह्मानि व का-न यौमन् अलल् काफ़िरी-न असीरा॰ व यौ-म य-अज़्ज़ु ज़्ज़ालिमु अला यदै-हि यक़ूलु या लै-त नित् त-ख़ज़्तु मअर्रसूलि सबीला॰ या वै ल-ता लै-तनी लम् अत्ताख़िज़ फ़ु ला नन् ख़लीला॰ ल-क़द् अज़ल्ल-नी अनि ज़्ज़िक्रि बअ्-द इज़् जा-अनी व कानश्शैतानु लिल्इंसानि ख़ज़ूला॰" (फ़ुर्क़ान, रूकूअ-3) में ज़िक्र किया गया है जिसका तर्जुमा यह है कि:

तर्जुमाः- "जिस दिन आसमान बदली पर से फट जायेगा और फ़रिश्ते कसरत से उतारे जायेंगे, उस दिन हुकूमत रहमान ही की होगी (यानी हिसाब किताब, जज़ा सज़ा में किसी का दख़ल न होगा) और वह दिन काफ़िरों पर बड़ा सख़्त होगा, जिस दिन ज़ालिम आदमी अपने हाथ काट काट खाएगा और कहेगा क्या ही अच्छा होता अगर मैं रसूल (अलैहिस्सलाम) के साथ रास्ते पर लग लेता, हाय मेरी शामत (कि मैं ने ऐसा न किया और) क्या ही अच्छा होता कि मैं फ़लां शख़्स को (जिसने नेक काम से रोका) दोस्त न बनाता, उसने मुझको नसीहत आने के बावजूद उससे बहका दिया और शैतान तो इंसान को (ऐन वक़्त पर सबको कुल्ली तौर पर) इम्दाद करने से जवाब दे ही देता है। (जिसका मुफ़स्सल क़िस्सा सूरः इब्राहीम में है।)

एक और हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि उस वक़्त हक़ तआला शानुहू की तरफ़ से इर्शाद होगा, ऐ जिन्न व इंस, मैं ने दुनिया में तुम्हें नसीहत कर दी थी, आज तुम्हारे ये आमाल तुम्हारे सामने हैं जो शख़्स अपने आमाल नामे में भलाई पाये वह अल्लाह तआला शानुहू का शुक्र अदा करे और जो नेकी न पाये वह अपने आप ही को मलामत करे (कि नसीहत की बात न मानी), उसके बाद

हक़ तआला शानुहू जहन्नम को हुक्म फ़रमावेंगे, उसका अज़ाब सामने आ जायेगा, जिसको देख कर हर शख़्स घुटनों के बल गिर जायेगा जिसको (सूरः जासियः, रूकूअ 4) में इर्शाद फ़रमाया है, कि तू हर जमाअत को देखेगा कि घुटनों के बल गिरी हुई है, और हर जमाअत अपने आमाल नामे की तरफ़ बुलाई जायेगी, उसके बाद लोगों के दर्मियान में फ़ैसले शुरु हो जायेंगे, हत्ताकि जानवरों तक के दर्मियान में भी इंसाफ़ किया जायेगा और बे सींग वाली बकरी के लिए सींग वाली बकरी से बदला लिया जायेगा, उसके बाद जानवरों को हुक्म हो जायेगा कि तुम मिट्टी बन जाओ, (तुम्हारा मामला ख़त्म हो गया) उस वक़्त काफ़िर लोग यह तमन्ना करेंगे, और काफ़िर कहेगा:-

"या लै त-नी कुन्तु तुराबा॰"

काश मैं मिट्टी हो जाता। *(अम्म रुकूअ 2)*

एक हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि लोग जैसा कि अपनी मां के पेट से पैदा होते हैं, ऐसे ही नंगे मैदाने हश्र में होंगे। हज़रत आइशा रज़ि॰ ने अर्ज़ किया या रसूलल्लहा सल्ल॰ सबके सामने नंगा होने से कैसी शर्म आयेगी, एक दूसरे को देखेंगे। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि उस वक़्त लोग अपनी मुसीबत में इस क़दर गिरफ़्तार होंगे कि एक दूसरे के देखने की मुहलत न होगी, सब की आंखें ऊपर की तरफ़ लगी हुई होंगी, हर शख़्स अपने आमाले बद के बक़द्र पसीने में ग़र्क़ होगा, किसी का पसीना पांव तक चढ़ा हुआ होगा, किसी का पिण्डली तक, किसी का पेट तक, किसी का मुंह तक आया हुआ होगा।

फ़रिश्ते अर्श के चारों तरफ़ हलक़ा बनाये हुए होंगे, उस वक़्त एक एक शख़्स का नाम लेकर पुकारा जायेगा, जिसको पुकारा जायेगा, वह मज्मे से निकल कर वहां हाज़िर होगा, जब वह हक़ तआला शानुहू के सामने खड़ा किया जायेगा तो ऐलान किया जायेगा कि इसके ज़िम्मे जिस जिस का मुतालबा हो, वह आये, उसके ज़िम्मे जिस जिस का कोई हक़ होगा या उसकी तरफ़ से उस पर किसी क़िस्म का ज़ुल्म होगा, वह एक एक करके पुकारा जायेगा और उसकी नेकियों में से उनके हुक़ूक़ अदा किये जायेंगे और अगर नेकियां नहीं होंगी या नहीं रहेंगी, तो उन लोगों के गुनाह उस पर डाल दिये जायेंगे और जब वह अपने गुनाहों के साथ दूसरे गुनाहों को भी सर ले लेगा तो उससे कहा जायेगा कि जा, अपनी मैया हाविया में चला जा (अल्क़ारिअः में इसका बयान है यानी दहकते हुए जहन्नम में)

हिसाब और किताब की इस शिद्दत को देखते हुए कोई मुक़र्रब फ़रिश्ता या नबी ऐसा न होगा जिसको अपना ख़ौफ़ न हो, मगर वे लोग जिनको हक़ तआला शानुहू महफ़ूज़ फ़रमा दे। उस वक़्त हर शख़्स से चार चीज़ों का सवाल होगा (जैसा कि पहले मुफ़स्सल हदीस में इसी फ़स्ल में नं॰ 6 पर गुज़र चुका) कि उम्र किस काम में ख़त्म की, बदन किस क़ाम में लगाया गया, अपने इल्म पर क्या अमल किया और माल कहां से कमाया और कहां ख़र्च किया?

इक्रिमा रज़ि॰ कहते हैं कि उस दिन बाप अपने बेटे से कहेगा कि मैं तेरा बाप था, मैं तेरा वालिद था, वह बेटा उसके एहसानात का इक़रार करेगा, इसके बाद बाप कहेगा कि मुझको सिर्फ़ एक नेकी की ज़रूरत है जो एक ज़र्रा के बराबर हो, शायद उसकी वजह से मेरा पल्ला झुक जाये, बेटा कहेगा कि मुझे ख़ुद ही मुसीबत पेश आ रही है, मुझे अपना हाल मालूम नहीं है कि मुझ पर क्या गुज़रेगी, मैं तो कोई नेकी नहीं दे सकता। उसके बाद वह शख़्स अपनी बीवी से इसी तरह अपने एहसान और ताल्लक़ुात जता कर मांगेगा, वह भी इसी तरह इंकार कर देगी, (ग़रज़ इसी तरह से हर शख़्स से मांगता फिरेगा) यही वह चीज़ है जिसको हक़ तआला शानुहू नेः-

وَاِنْ تَدْعُ مُثْقَلَةٌ اِلٰى حِمْلِهَا لَا يُحْمَلْ مِنْهُ شَيْءٌ وَّلَوْ كَانَ ذَا قُرْبٰى ط (فاطر ع ۳)

"व इन् तद्अु मुस्क़-लतुन् इला हिम्लिहा ला युह्म-लु मिन्हु शैअंव् व लौ का-न ज़ा क़ुर्बा॰" *(फ़ातिर, रूकूअ 3)*

में ज़िक्र फ़रमाया है जिसका तर्जुमा यह है :-

"और (उस दिन) कोई दूसरे का बोझ (गुनाह का) न उठावेगा (और ख़ुद तो कोई किसी की क्या मदद करता) अगर कोई बोझ का लदा हुआ (यानी गुनाहगार) किसी को अपना बोझ उठाने के लिए बुलावेगा तब भी उस में से कुछ बोझ न उठाया जायेगा। (यानी किसी क़िस्म की उसकी मंदद न करेगा) अगरचे वह शख़्स क़राबतदार ही क्यों न हो। *(तंबीहुल ग़ाफ़िलीन)*

इक्रिमा रज़ि॰ की यह रिवायत दुर्रे मंसूर में ज़्यादा वाज़ेह अल्फ़ाज़ में है, जिसका तर्जुमा यह है कि :-

बाप बेटे से अव्वल पूछेगा कि मैंने दुनिया में तेरे साथ कैसा बर्ताव किया था, वह बहुत तारीफ़ बाप के बर्ताव की करेगा, उसके बाद बाप कहेगा कि मैं

आज तुझसे सिर्फ़ एक नेकी मांगता हूँ, शायद उसी से मेरा काम चल जाये, बेटा कहेगा कि अब्बा जान, तुमने बहुत ही मुख़्तसर चीज़ कही है, लेकिन इसके बावजूद मजबूर हूँ, मुझे ख़ुद यही ख़ौफ़ है जो तुम्हें है, उसके बाद यही सारा सवाल जवाब बीवी से होगा जैसा कि इर्शाद है

يَوْمًا لَّا يَجْزِىْ وَالِدٌ عَنْ وَّلَدِهٖ ۡ (الاية)

"यौमल् ला यज्ज़ी वालिदुन् अव् व-ल दिही॰"

और इर्शाद है:-

يَوْمَ يَفِرُّ الْمَرْءُ مِنْ اَخِيْهِ ۡ (الاية)

"यौ-म यफ़ि र्रुल मर्-उ मिन् अख़ीहि॰" *(अलआयत)*

इनमें से पहली आयते शरीफ़ा सूरः लुक़्मान के आख़िरी रूकूअ् की है:-

"या अय्यु हन्ना-सुत्तक़ू रब्ब-कुम्" अल आयत। हक़ तआला शानुहू का इर्शाद है :-

"ऐ लोगो! अपने रब से डरो और उस दिन से डरो, जिस में न कोई बाप अपने बेटे की तरफ़ से कुछ मुतालबा अदा कर सकेगा और न कोई बेटा ही ऐसा है कि वह अपने बाप की तरफ़ से ज़रा सा भी मुतालबा अदा कर दे, और बेशक अल्लाह तआला का वायदा सच्चा है (कि यह दिन ज़रूर आने वाला है) सो तुमको दुन्यवी ज़िन्दगी धोखे में न डाल दे (कि तुम उस में मुन्हमिक होकर उस दिन को भूल जाओ) और न तुमको धोखा देने वाला (शैतान) धोखे में डाल दे (कि उसके बहकावे में आकर तुम उस दिन से ग़ाफ़िल हो जाओ।)

दूसरी आयते शरीफ़ा सूरः अ-ब-स में है :-

فَاِذَا جَآءَتِ الصَّآخَّةُ يَوْمَ يَفِرُّ الْمَرْءُ (الاية)

"फ़ इज़ा जा-अ-तिस्सा-ख़्ख़-तु यौ-म यफ़िर्रुल्मर्-उ"

(अल आयत)

'पस जिस दिन कानों को बहरा कर देने वाला शोर बरपा होगा (यानी क़ियामत का दिन आ जायेगा, वह ऐसा दिन होगा) जिस दिन आदमी अपने भाई से, अपनी मां से, अपने बाप से और अपनी बीवी से और अपनी औलाद से भागेगा (कोई किसी के काम न आयेगा) उस दिन हर शख़्स को अपना ही ऐसा मशग़ला होगा जो उसको दूसरे की तरफ़ मुतवज्जह न होने देगा।

इस आयते शरीफ़ा की तफ़्सीर में क़तादा रह० फ़रमाते हैं कि क़ियामत के दिन हर शख़्स को यह बात बहुत शाक़ होगी कि कोई उसकी जान पहचान वाला क़रीबी रिश्तेदार नज़र पड़ जाये इस डर से कि कहीं वह अपना कोई मुतालबा पेश न कर दे। *(दुर्रे मंसूर)*

क़ुरआन पाक में बहुत कसरत से यह मज़्मून मुख़्तलिफ़ उन्वानात से ज़िक्र फ़रमाया गया है, सूरः बक़रः के रूकूअ 6 में है :-

وَاتَّقُوا يَوْمًا لَّا تَجْزِي نَفْسٌ عَنْ نَّفْسٍ (الآية)

"व त्त-क़ू यौ मल्ला तज़्ज़ी नफ़्सुन् अन्नफ़्सिन्" *(अलआयत)*

"और डरो तुम ऐसे दिन से जिसमें कोई शख़्स किसी की तरफ़ से न (जानी) बदला दे सकेगा (मसलन एक की नमाज़ के बदले में दूसरे की नमाज़ क़ुबूल कर ली जाये) और न किसी की तरफ़ से कोई सिफ़ारिश क़ुबूल हो सकती है और न किसी की तरफ़ से कोई फ़िदया (माली मुआवज़ा) लिया जा सकता है और न उनकी कोई मदद की जायेगी (कि कोई अपने ज़ोर से उनके अज़ाब को रोक दे, यह ना मुम्किन है।)

इस आयते शरीफ़ा में इआनत (मदद) के जितने ज़रिये हो सकते थे, सब की नफ़ी फ़रमा दी, इसलिए कि किसी की मदद के चार ही तरीक़े हो सकते हैं:-

1. एक यह कि कोई ज़ोरदार शख़्स बीच में हाइल हो जाये और अपने ज़ोर से रोक दे, यह नुसरत है, इसकी भी नफ़ी फ़रमा दी।

2. दूसरे बग़ैर ज़ोर के कोई शख़्स अज़ाब को रोक दे, इसकी दो सूरतें हैं:-

बग़ैर किसी क़िस्म का मुआवज़ा दिये रोके, यह सिफ़ारिश है या कोई किसी क़िस्म का बदला देकर रोके।

इसकी दो क़िस्में हैं कि जानी बदला दे या माली बदला दे, इनकी भी दोनों की नफ़ी फ़रमा दी गयी।

इसी तरह और भी बहुत से मवाक़ेअ् में यह मज़्मून मुख़्तलिफ़ उनवानात से आया है। इसके मुताल्लिक़ यह बात ज़ेहन में रखना चाहिए कि एक तो कुफ़्फ़ार का मामला है इनमें तो बिल इत्तिफ़ाक़ यही सब चीज़ें हैं, जो ऊपर

ज़िक्र की गयी हैं कि कोई नबी या वली या फ़रिश्ता कितना ही मुक़र्रब क्यों न हो, कुफ़्फ़ार के अज़ाब को नहीं हटा सकता।

दूसरा मामला गुनहगार मुसलमानों का है, इनके बारे में भी इस क़िस्म की आयात और अहादीस वारिद हुई हैं, ये सब एक ख़ास वक़्त के एतिबार से हैं इसके बाद सिफ़ारिश की इजाज़त हो जायेगी, चुनांचे क़ुरआन पाक में मुतअद्दद जगह यह मज़्मून वारिद है जिनमें से एक जगह इर्शाद है

يَوْمَئِذٍ لَّا تَنفَعُ الشَّفَاعَةُ إِلَّا مَنْ أَذِنَ لَهُ (طٰهٰ ع ٦)

"यौ-म इज़िल्ला तन्फ़-अुश्श फ़ा-अ़तु इल्ला मन् अज़ि-न ल-हू"

(ताहा, रूकूअ 6)

"उस दिन किसी को सिफ़ारिश नफ़ा न देगी मगर ऐसे शख़्स को (अंबिया और औलिया की सिफ़ारिश नफ़ा देगी) जिसके वास्ते अल्लाह तआला शानुहू ने सिफ़ारिश की इजाज़त दे दी हो और उसके वास्ते (किसी का बोलना) पसंद कर लिया हो।"

इस क़िस्म के मज़ामीन भी कसरत से वारिद हैं, लेकिन यह बात कि किसके लिए सिफ़ारिश की इजाज़त होती है, किसी को मालूम नहीं है। गो हक़ तआला शानुहू के फ़ज़्ल से उम्मीदवार हर शख़्स को रहना ही चाहिए, लेकिन यक़ीन किसी का भी नहीं है, इस वजह से यह सख़्त तरीन दिन निहायत ही ख़ौफ़ व ख़तरे का दिन है। इसकी सख़्ती के वास्ते जो कुछ बचाव किया जा सकता है वह आज ही किया जा सकता है। सदक़े की कसरत को उस दिन की शिद्दत और सख़्ती से बचाने में ख़ास दख़्ल है। पहली फ़सल में कसरत से आयात और रिवायात में यह मज़्मून गुज़र चुका है।

हुज़ूर सल्ल० का मशहूर इर्शाद है (जहन्नम की) आग से बचो चाहे आधी खजूर ही से क्यों न हो।

हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि सदक़ा ख़ताओं को ऐसा बुझा देता है जैसा कि पानी आग को बुझा देता है। *(इत्तिहाफ़)*

हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि क़ियामत के दिन हर शख़्स अपने सदक़े के साये में होगा। *(इत्तिहाफ़)*

यानी जिस क़दर आदमी के सदक़े की मिक़्दार बढ़ी हुई होगी, उतना ही

गहरा साया उस सख़्त दिन में होगा, जिस में गर्मी की शिद्दत से मुंह तक पसीना आया हुआ होगा। हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि सदक़ा हक़ तआला शानुहू के गुस्से को भी रोकता है और सू-ए-ख़ात्मा (बुरी मौत) से भी हिफ़ाज़त का सबब है। *(मिश्कात)*

हज़रत लुक़्मान अलैहि॰ की अपने बेटे को वसीयत है कि जब तुझसे कोई ख़ता सादिर हो, सदक़ा किया कर। *(एह्या)*

पहली फ़स्ल की हदीस नं॰ 10 में यह क़िस्सा मुफ़स्सल गुज़र चुका है कि एक बदकार फ़ाहिशा औरत की कुत्ते को पानी पिलाने से मग़्फ़िरत हो गयी।

उबैद बिन उमैर रज़ि॰ कहते हैं कि मैदाने हश्र में लोग इंतिहाई भूखे होंगे, इंतिहाई प्यासे और बिल्कुल नंगे होंगे, लेकिन जिस शख़्स ने अल्लाह के वास्ते किसी को खाना खिलाया होगा, उसको हक़ तआला शानुहू खाना खिलायेंगे और जिसने अल्लाह के वास्ते किसी को पानी पिलाया होगा, उसको सैराब करेंगे और जिसने अल्लाह तआला शानुहू के वास्ते किसी को कपड़ा दिया होगा, उसको लिबास पहनायेंगे। *(एह्या)*

पहली फ़स्ल में हदीस नं॰ 11 के ज़ैल में गुज़रा है कि क़ियामत के दिन जहन्नमी एक सफ़ में खड़े किये जायेंगे, उन पर एक (कामिल वली) मुलसमान का गुज़र होगा, उस सफ़ में से एक शख़्स कहेगा कि तू मेरे लिए हक़ तआला शानुहू के यहां सिफ़ारिश कर दे। वह पूछेगा कि तू कौन है? वह जहन्नमी कहेगा, तू मुझे नहीं जानता मैं ने फ़लां वक़्त दुनिया में तुझे पानी पिलाया था।

दूसरी हदीस में गुज़रा है कि क़ियामत के दिन जब जन्नती और जहन्नमी लोगों की सफ़ें लग जायेंगी तो जहन्नमी सफ़ों में से एक शख़्स की नज़र जन्नती सफ़ों में से एक शख़्स पर पड़ेगी तो वह याद दिलायेगा कि मैं ने दुनिया में तेरे साथ फ़लां एहसान किया था, इस पर वह शख़्स उसका हाथ पकड़ कर हक़ तआला शानुहू की बारगाह में ले जायेगा और अर्ज़ करेगा कि या अल्लाह, इसका मुझ पर फ़लां एहसान है, हक़ तआला शानुहू की रहमत से उसको बख़्श दिया जायेगा।

एक और हदीस में गुज़रा है कि क़ियामत के दिन ऐलान होगा कि उम्मते मुहम्मदिया के फ़क़ीर लोग कहां हैं? उठो और लोगों को मैदाने क़ियामत में तलाश कर लो, जिस शख़्स ने मेरे लिए तुम में से किसी को एक लुक़्मा दिया

हो या मेरे लिए एक घूँट पानी पिलाया हो, या नया या पुराना कपड़ा दिया हो, उसका हाथ पकड़ कर जन्नत में दाख़िल कर दो। इस पर फ़ुक़रा-ए-उम्मत उठेंगे और उनको चुन चुन कर जन्नत में दाख़िल कर देंगे।

एक और हदीस में गुज़रा कि क़ियामत के दिन एक ऐलान करने वाला ऐलान करेगा, कहां हैं वे लोग, जिन्होंने फ़क़ीरों का और मिस्कीनों का इक्राम किया, आज तुम जन्नत में ऐसी तरह दाख़िल हो जाओ कि न तुम पर किसी क़िस्म का ख़ौफ़ है और न तुम ग़मगीन होगे।

इस क़िस्म के मज़ामीन की कई रिवायतें उस जगह गुज़र चुकी हैं। उसी फ़स्ल की हदीस नं॰ 13 के ज़ैल में गुज़रा है कि जो शख़्स किसी मुसलमान से किसी मुसीबत को ज़ायल करता है, हक़ तआला शानुहू क़ियामत की मसाइब में से उसकी कोई मुसीबत ज़ायल फ़रमा देंगे, और जो शख़्स किसी मुसलमान की पर्दापोशी करता है, हक़ तआला शानुहू क़ियामत के दिन उसकी पर्दापोशी फ़रमावेंगे।

हदीस 14 के ज़ैल में गुज़रा कि जो शख़्स अपने मुज़्तर भाई की मदद करे, हक़ तआला शानुहू उसको उस दिन साबित क़दम रखेंगे, जिस दिन पहाड़ भी अपनी जगह क़ायम न रह सकेंगे (यानी क़ियामत के दिन)।

पहली फ़स्ल की आयात में नं॰ 34 पर क़ुरआन पाक की तवील आयत गुज़र चुकी है कि वे लोग हक़ तआला शानुहू की मुहब्बत में खाना खिलाते हैं, यतीम को और मिस्कीन को और (काफ़िर) क़ैदियों को, और कहते हैं कि हम तुमको महज़ अल्लाह के वास्ते खिलाते हैं, न तो हम तुमसे इसका बदला चाहते हैं न शुक्रिया, बल्कि हमको अपने रब की तरफ़ से एक निहायत तल्ख़ और सख़्त (क़ियामत के) दिन का ख़ौफ़ है, पस अल्लाह जल्ल शानुहू उनको उस दिन की सख़्ती से महफ़ूज़ रखेगा और उनको सुरूर और ताज़गी अता फ़रमायेगा।

ग़रज़ उस फ़स्ल में कसरत से इस क़िस्म के मज़ामीन गुज़र चुके हैं। कि क़ियामत के दिन की सख़्ती के बचाव के लिए सदक़े की कसरत निहातय मुफ़ीद है और इस आयते शरीफ़ा में तो गोया ख़ुद हक़ तआला शानुहू की तरफ़ से इसका वायदा भी हो गया, फिर इससे बढ़ कर और क्या बात हो सकती है।

सातवीं फ़स्ल

ज़ाहिदों और अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करने वालों के वाक़िआत

इस फ़स्ल में ज़ाहिदों और अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करने वालों के कुछ वाक़िअता भी नमूने के तौर पर पेश करने हैं कि जिन लोगों ने दुनिया और आख़िरत की हक़ीक़त को समझ लिया, उन्होंने इस धोखे के घर से कैसी बे रग़बती बरती और आख़िरत के लिये क्या कुछ जमा कर लिया। ज़ुह्द और सख़ावत मफ़्हूम और सूरते अमल के लिहाज़ से दो अलाहिदा अलाहिदा चीज़ें हैं, लेकिन माल के एतिबार से क़रीब क़रीब हैं, इसलिए कि ज़ुह्द यानी दुनिया से बे रग़बती जिस शख़्स में होगी, सख़ावत उसके लिए लाज़िम है, जब उसको इसके रखने की रग़बत ही नहीं, तो मौजूद होने की सूरत में वह ला मुहाला सख़ावत ही करेगा। इसी तरह से सख़ावत वही शख़्स कर सकता है जिसको माल की मुहब्बत न हो और जितनी ज़्यादा मुहब्बत माल की होगी, उतना ही बुख़्ल उसमें करेगा, इसलिए इस फ़स्ल में दोनों क़िस्म के वाक़िआत को एक ही जगह जमा कर दिया और इसीलिए इस रिसाले में जो फ़ज़ाइले सदक़ात में था, ज़ुह्द की रिवायात और आयात भी ज़िक्र की गयीं कि दुनिया से बे रग़बती पैदा करना अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करने का ज़ीना है और जब तक इस गन्दगी से तबीअत को मुहब्बत और उन्स रहेगा, कभी भी ख़र्च करने को तबीअत न उभरेगी, अगर अपना दिल भी किसी वक़्त चाहेगा तो तबीअत ख़र्च पर अमादा न होगी। इसी को हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक बेहतरीन मिसाल से ज़ाहिर फ़रमाया।

इर्शादे आली है कि बख़ील की और सदक़ा करने वाले की (जिसकी

आदत कसरत से सदक़े की हो) ऐसी मिसाल है जैसा कि दो आदमी हों, उनके ऊपर लोहे की ज़िरहें इस तरह लिपटी हुई हों कि उन दोनों के हाथ भी ज़िरहों के अंदर ही सीने पर चिमटे हुए हों, ज़िरह से बाहर निकले हुए न हों, पस सदक़ा वाला यानी सख़ी शख़्स जो सदक़ा करने का आदी है, जब सदक़ा करने का इरादा करता है तो वह ज़िरह खुद ब खुद खुलती चली जाती है (और हाथ बे तकल्लुफ़ फ़ौरन ज़िरह से बाहर आ जाता है) और बख़ील जब इरादा किसी सदक़े का करता है तो वह ज़िरह और ज़्यादा सुकड़ जाती है जिससे हाथ अपनी जगह से जुंबिश ही नहीं कर सकता। *(मिश्कात)*

मलतब यह है कि सख़ी जब ख़र्च का इरादा करता है तो उसका दिल उसके लिए फ़राख़ हो जाता है जिस से वह बे तकल्लुफ़ ख़र्च करता है, और बख़ील अगर कहे सुने या किसी और वजह से किसी वक़्त इरादा भी कर लेता है तो अंदर से कोई चीज़ इस तरह उसको पकड़ लेती है जैसा कि लोहे की ज़िरह ने उसके हाथ बांध दिये हों, कि हाथों के ज़ोर से ज़िरह के अंदर से निकालना भी चाहता है यानी दिल को बार बार समझाता है मगर वह मानता ही नहीं, हाथ उठता ही नहीं, बहुत ही सही और सच्ची मिसाल है, रोज़मर्रा का मुशाहदा है कि बख़ील आदमी ख़र्च करना भी चाहता है तो हाथ नहीं उठता। कहीं दस रूपये ख़र्च करने का मौक़ा होगा तो वह दस पैसे भी मुश्किल से निकालेगा।

1. हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ की पूरी ज़िन्दगी के वाक़िअता इस कसरत से इस चीज़ की मिसालें हैं कि उनका एहाता भी दुशवार है:-

ग़ज़वा-ए-तबूक के वक़्त जब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने चंदे की तहरीक फ़रमाई और हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ का उस वक़्त जो कुछ घर में रखा था, सब कुछ जमा करके हुज़ूर सल्ल॰ की ख़िदमत में पेश कर देना मशहूर वाक़िआ है, और जब हुज़ूर सल्ल॰ ने दर्याफ़्त फ़रमाया कि अबू बक्र, घर में क्या छोड़ा? तो आपने फ़रमाया अल्लाह और उसका रसूल सल्ल॰ (यानी उनकी ख़ुशनूदी का ज़ख़ीरा) घर में मौजूद है।

हिकायाते सहाबा में यह क़िस्सा मुफ़स्सल ज़िक्र किया गया है और

1. हिकायाते सहाबा अक्सी, पता: जव्वाद बुक डिपो, 422, मटिया महल, जामा मस्जिद, दिल्ली-6

इसके दूसरे हज़रात के मुतअद्द वाक़िआत हिकायाते सहाबा रज़ि॰ में भी लिख चुका हूँ, वहां देखा जाये तो मालूम हो कि ईसार, हमदर्दी और अल्लाह की राह में ख़र्च करना इन्हीं हज़रात का हिस्सा था कि इसका कुछ भी शाइबा हम लोगों को मिल जाये तो न मालूम हम इसको क्या समझें, लेकिन इन हज़रात के यहां यह रोज़मर्रा के मामूली वाक़िअता थे बिलखुसूस हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ के मुताल्लिक़ इससे बढ़ कर क्या वज़ाहत हो सकती है कि ख़ुद हक़ तआला शानुहू ने क़ुरआन पाक में तारीफ़ के मौक़े पर फ़रमाया:-

وَسَيُجَنَّبُهَا الْأَتْقَى (والليل)

"व-स-युजन्न-बुहल् अतक़ा" *(आयत वल्लैल)*

"और उस (आग से) वह शख़्स दूर रखा जायेगा जो बड़ा परहेज़गार है, जो अपना माल इस ग़रज़ से (अल्लाह के रास्ते में) देता है कि पाक हो जाये और बजुज़ अपने आलीशान परवरदिगार की रिज़ाजोई के (कोई और उसकी ग़र्ज़ नहीं है और) किसी का उसके ज़िम्मे कोई एहसान न था कि उसका बदला उतारना मक़सूद हो (इस में निहायत ही मुबालग़ा इख़्लास का है, क्योंकि किसी के एहसान का बदला उतारना भी मतलूब और मन्दूब है, मगर फ़ज़ीलत में एहसान इब्तिदाई के बराबर नहीं)। *(बयानुल क़ुरआन)*

इब्ने जौज़ी रह॰ कहते हैं कि इस बात पर इत्तिफ़ाक़ है कि यह आयते शरीफ़ा हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ की शान में नाज़िल हुई।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि॰ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल करते हैं कि मुझे किसी के माल ने इतना नफ़ा नहीं दिया जितना अबूबक्र के माल ने दिया। हुज़ूर सल्ल॰ का यह इर्शाद सुन कर हज़रत अबू बक्र रज़ि॰ रोने लगे और अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह सल्ल॰ क्या मैं और मेरा माल आपके सिवा किसी और का है? हुज़ूर सल्ल॰ का यह इर्शाद बहुत से सहाबा-ए-किराम रज़ि॰ से बहुत सी रिवायात में नक़ल किया गया।

सईद बिन मुसैयिब रह॰ की रिवायत में इसके बाद यह भी है कि हुज़ूर सल्ल॰ हज़रत अबू बक्र रज़ि॰ के माल में इसी तरह तसर्रूफ़ फ़रमाते थे जिस तरह अपने माल में फरमाते थे।

हज़रत उर्वः रज़ि॰ कहते हैं कि जब हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ मुसलमान हुए तो उनके पास चालीस हज़ार दिरम थे, जो सब हुज़ूर सल्ल॰ के

ऊपर ख़र्च कर दिये (यानी हुज़ूर सल्ल॰ की खुशनूदी में)

एक और हदीस में है कि इस्लाम लाने के वक़्त चालीस हज़ार दिरम थे और हिजरत के वक़्त पांच हज़ार रह गये थे। यह सारी रक़म गुलामों के आज़ाद करने में (जिनको इस्लाम लाने के जुर्म में अज़ाब दिया जाता था) और इस्लाम के दूसरे कामों में ख़र्च किये गये। *(तारीख़ुल ख़ुलफ़ा)*

हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि॰ कहते हैं कि हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ ज़ओफ़ ज़ओफ़ गुलामों को ख़रीद कर आज़ाद किया करते थे। इनके वालिद अबू क़ुहाफ़ा ने फ़रमाया कि अगर तुम्हें गुलाम ही आज़ाद करने हैं तो क़वी क़वी गुलामों को ख़रीद कर आज़ाद किया करो कि वे तुम्हारी मदद भी कर सकें, वक़्त पर काम भी आ सकें। हज़रत अबू बक्र रज़ि॰ ने फ़रमाया कि (मैं अपने लिए आज़ाद नहीं करता) मैं तो महज़ अल्लाह तआला की खुशनूदी के लिए आज़ाद करता हूँ। *(दुर्रे मंसूर)*

और हक़ तआला शानुहू के यहां ज़ओफ़ कमज़ोर की मदद का जितना अज्र है, वह क़वी की मदद से बहुत ज़्यादा है।

एक और हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि कोई शख़्स ऐसा नहीं जिसका मुझ पर एहसान हो और मैं ने उसके एहसान का बदला न दे दिया हो, मगर अबूबक्र रज़ि॰ का एहसान मेरे ज़िम्मे है (जिसका बदला मैं नहीं दे सका) हक़ तआला शानुहू ख़ुद ही क़ियामत के दिन उसके एहसान का बदला अता फ़रमायेंगे। मुझे किसी के माल ने इतना नफ़ा नहीं दिया, जितना अबू बक्र रज़ि॰ के माल ने नफ़ा दिया। *(तारीख़ुल ख़ुलफ़ा)*

2. हज़रत इमाम हसन रज़ि॰ की ख़िदमत में एक शख़्स हाज़िर हुए और अपनी हाजत पेश करके कुछ मदद चाही और सवाल किया, आपने फ़रमाया, तेरे सवाल की वजह से जो मुझ पर हक़ क़ायम हो गया है, वह मेरी निगाह में बहुत ऊँचा है, और तेरी जो मदद मुझे करना चाहिए वह मेरे नज़दीक बहुत ज़्यादा मिक़्दार है, और मेरी माली हालत उस मिक़्दार के पेश करने से आजिज़ है जो तेरी शान के मुनासिब हो, और अल्लाह के रास्ते में आदमी जितना भी ज़्यादा से ज़्यादा ख़र्च करे वह कम ही है, लेकिन मैं क्या करूँ? मेरे पास इतनी मिक़्दार नहीं है जो तेरे सवाल के शुक्र के मुनासिब हो। अगर तू इसके लिए तैयार हो जो मेरे पास मौजूद है, उसको तू ख़ुशी से क़ुबूल कर ले और मुझे इस पर मजबूर न

कर कि मैं उस मिक़्दार को कहीं से हासिल करूँ जो तेरे मर्तबा के मुनासिब हो और तेरा जो हक़ मुझ पर वाजिब हो गया है, उसको पूरा कर सकें, तो मैं ब-ख़ुशी हाज़िर हूँ।

उस साइल ने कहा, ऐ रसूलुल्लाह सल्ल॰ के बेटे, मैं जो कुछ आप देंगे, उसी को क़ुबूल कर लूँगा और इस पर शुक्र गुज़ार हूँगा और इससे ज़्यादा न करने में आपको माज़ूर समझूँगा। इस पर हज़रत हसन रज़ि॰ ने अपने ख़ज़ांची से फ़रमाया कि उन तीन लाख दिरहमों में से (जो तुम्हारे पास रखवाये थे) जो बचे हों, ले आओ। वह पचास हज़ार दिरहम लाये (कि इसके अलावा वे सब ख़र्च कर चुके थे)

हज़रत हसन रज़ि॰ ने फ़रमाया कि पांच सौ दीनार(अशर्फ़ियां) और भी तो कहीं थे, ख़ज़ांची ने अर्ज़ किया कि वे भी मौजूद हैं। आपने फ़रमाया कि वे भी ले आओ। जब यह सब कुछ आ गया तो उस साइल से कहा कि कोई मज़दूर ले आओ, जो इनको तुम्हारे घर तक पहुँचा दे, वह दो मज़दूर लेकर आये, हज़रत हसन रज़ि॰ ने वह सब कुछ उनके हवाले कर दिया और अपने बदने मुबारक से चादर उतार कर मरहमत फ़रमाई कि इन मज़दूरों की मज़दूरी भी तुम्हारे घर तक पहुँचाने की मेरे ही ज़िम्मे है, लिहाज़ा यह चादर फ़रोख़्त करके इनकी मज़दूरी में दे देना।

हज़रत हसन रज़ि॰ के ग़ुलामों ने अर्ज़ किया कि हमारे पास तो अब खाने के लिए एक दिरम भी बाक़ी नहीं रहा, आपने सब का सब ही दे दिया, हज़रत हसन रज़ि॰ ने फ़रमाया कि मुझे अल्लाह तआला शानुहू की ज़ात से इसकी क़वी उम्मीद है कि वह अपने फ़ज़्ल से मुझे इसका बहुत सवाब देगा। *(एह्या)*

सब कुछ दे देने के बाद जब कि अपने पास कुछ भी न रहा और मिक़्दार भी इतनी ज़्यादा थी, फिर भी इसका क़लक़ और इसकी नदामत थी कि साइल का हक़ अदा न हो सका।

3. बसरा के चंद क़ारी हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि॰ की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि हमारा एक पड़ोसी है जो बहुत कसरत से रोज़े रखने वाला है, बहुत ज़्यादा तहज्जुद पढ़ने वाला है, उस की इबादत को देख कर हम में से हर शख़्स रश्क करता है और इसकी तमन्ना करता है कि उसकी सी इबादत हम भी किया करें, उसने अपनी लड़की का

निकाह अपने भतीजे से कर दिया है लेकिन ग़रीब के पास जहेज़ के लिऐ कोई चीज़ नहीं है।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ उन हज़रात को लेकर अपने घर तशरीफ़ ले गये और सन्दूक़ खोला जिस में से छः तोड़े (रूपया या अशर्फ़ी की थैली तोड़ा कहलाती है) निकाले और उन हज़रात के हवाले कर दिये कि उसको दे दें, ये लेकर चलने लगे तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि॰ ने उनसे फ़रमाया कि हम लोगों ने उसके साथ इंसाफ़ का बर्ताव नहीं किया, यह माल उसके हवाले कर दिया जायेगा तो ग़रीब को बड़ी दिक़्क़त होगी, वह इस जहेज़ के इंतिज़ाम के झगड़े में लग जायेगा जिससे उसकी मश्ग़ूली बढ़ जायेगी, उसकी इबादत में हर्ज होगा। इस दुनिया कमबख़्त का ऐसा दर्जा नहीं है कि इसकी वजह से एक इबादत गुज़ार मोमिन का हर्ज किया जाये। हमारी इस में क्या शान घट जायेगी कि एक दीनदार की ख़िदमत हम ही कर दें। लिहाज़ा इस माल से शादी का सारा इंतिज़ाम हम सब मिलकर कर दें और सामान तैयार करके उसके हवाले कर दें। वे हज़रात भी इस पर राज़ी हो गये और सारा सामान उस रक़म से मुकम्मल तैयार करके उस फ़क़ीर के हवाले कर दिया। *(एहया)*

4. अबुल हसन मदाइनी रह॰ कहते हैं कि हज़रत इमाम हसन रज़ि॰, इमाम हुसैन रज़ि॰ और हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ि॰ हज के लिऐ तशरीफ़ ले जा रहे थे, रास्ते में उनके सामान के ऊँट उनसे जुदा हो गये। ये भूखे प्यासे चल रहे थे, एक ख़ेमे पर उनका गुज़र हुआ, उसमें एक बूढ़ी औरत थी, इन हज़रात ने उससे पूछा कि हमारे पीने को कोई चीज़ (पानी या दूध, लस्सी वग़ैरह) तुम्हारे पास मौजूद है? उसने कहा, है। ये लोग अपनी ऊँटनियों पर से उतरे, उस बुढ़िया के पास एक बहुत मामूली सी बकरी थी, उसकी तरफ़ इशारा करके उसने कहा कि इसका दूध निकाल लो और उसको थोड़ा थोड़ा पी लो।

उन हज़रात ने उस का दूध निकाला और पी लिया, फिर उन्होनें पूछा कि कोई खाने की चीज़ भी है? उस बुढ़िया ने कहा कि यही बकरी है, इसको तुममें से कोई ज़िब्ह कर ले तो मैं पका दूँगी। उन्होनें उसको ज़िब्ह किया, उसने पकाया। ये हज़रात खा पी कर जब शाम को चलने लगे तो उन्होनें उस बुढ़िया से कहा कि हम हाश्मी लोग हैं, इस वक़्त हज के इरादे से जा रहे हैं, अगर ज़िंदा सलामत वापस मदीना पहुँच जायें तो तू हमारे पास आना, तेरे इस एहसान का बदला देंगे।

ये हज़रात तो फ़रमा कर चले गये, शाम को जब उसका ख़ाविंद (कहीं जंगल वग़ैरह से) आया तो उस बुढ़िया ने हाश्मी लोगों का क़िस्सा सुनाया, वह बहुत ख़फ़ा हुआ कि तूने अजनबी लोगों के वास्ते बकरी ज़िब्ह कर डाली, मालूम नहीं कौन थे, कौन नहीं थे, फिर कहती है कि हाश्मी थे।

ग़रज़ वह ख़फ़ा होकर चुप हो गया, कुछ ज़माने के बाद इन दोनों मियां बीवी को ग़ुरबत ने जब बहुत सताया तो ये मेहनत, मज़दूरी की नीयत से मदीना मुनव्वरा गये। दिन भर मेंगनियां चुगा करते और उन को बेच कर गुज़र किया करते। एक दिन वह बुढ़िया मेंगनियां चुग रही थी, हज़रत हसन रज़ि॰ ने उसको पहचान लिया और अपने ग़ुलाम को भेजकर उसको अपने पास बुलवाया और फ़रमाया कि अल्लाह की बंदी, तू मुझे भी पहचानती है? उसने कहा, मैं ने तो नहीं पहचाना, आपने फ़रमाया कि मैं तेरा वही मेहमान हूँ, दूध और बकरी वाला।

बुढ़िया ने फिर भी न पहचाना और कहा, क्या ख़ुदा की क़सम तुम वही हो? हज़रत हसन रज़ि॰ ने फ़रमाया मैं वही हूँ और यह फ़रमा कर आपने अपने ग़ुलामों को हुक्म दिया कि इसके लिए एक हज़ार बकरियां ख़रीद दी जायें, चुनांचे फ़ौरन ख़रीदी गयीं और उन बकरियों के अलावा एक हज़ार दीनार (अशर्फ़ियां) नक़द भी अता फ़रमाये और अपने ग़ुलाम के साथ उस बुढ़िया को छोटे भाई हज़रत हुसैन रज़ि॰ के पास भेज दिया।

हज़रत हुसैन रज़ि॰ ने दर्याफ़्त फ़रमाया कि भाई ने क्या बदला अता फ़रमाया? उसने कहा कि एक हज़ार बकरियां और एक हज़ार दीनार, यह सुनकर उतनी ही मिक़्दार दोनों चीज़ों की हज़रत हुसैन रज़ि॰ ने अता फ़रमायी, इसके बाद उसको हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ि॰ के पास भेज दिया। उन्होंने तहक़ीक़ फ़रमाया कि इन दोनों हज़रात ने क्या क्या मरहमत फ़रमाया, और जब मालूम हुआ कि यह मिक़्दार है तो उन्होंने दो हज़ार बकरियां और दो हज़ार दीनार अता फ़रमाये और फ़रमाया कि अगर तू मुझसे मिल लेती तो मैं इससे बहुत ज़्यादा देता। यह बुढ़िया चार हज़ार बकरियां और चार हज़ार दीनार (अशर्फ़ियां) लेकर ख़ाविंद के पास पहुँची कि यह उस ज़ईफ़ और कमज़ोर बकरी का बदला है।

(एह्या)

5. अब्दुल्लाह बिन आमिर बिन कुरेज़ रज़ि॰, हज़रत उस्मान रज़ि॰ के चचाज़ाद भाई, एक मर्तबा (ग़ालिबन रात का वक़्त होगा) मस्जिद से बाहर आये,

अपने मकान तंहा जा रहे थे। रास्ते में एक नौजवान लड़का नज़र पड़ा, वह उनके साथ हो लिया। उन्होंने फ़रमाया कि तुम्हें कुछ कहना है? उसने अर्ज़ किया, जनाब की सलाह व फ़लाह का मुतमन्नी हूँ, कुछ अर्ज़ करना नहीं है, मैं ने जनाब को तंहा इस वक़्त जाते देखा, मुझे अंदेशा हुआ कि तंहाई में कोई तक्लीफ़ न पहुँचे, इसलिए जनाब की हिफ़ाज़त के ख़्याल से साथ हो लिया। ख़ुदा न करे कि रास्ते में कोई नागवार बात पेश आ जाये।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन आमिर रज़ि॰ उस नौजवान का हाथ पकड़ कर अपने घर तक साथ ले गये और वहां पहुँच कर एक हज़ार दीनार (अशर्फ़ियां) उसको मरहमत फ़रमाये कि इसको अपने काम में ले आना, तुम्हारे बड़ों ने तुम्हें बहुत अच्छी तर्बियत दी है। *(एह्या)*

6. हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि एक शख़्स के मकान में खजूर का एक दरख़्त खड़ा था, जिसकी शाख़ पड़ोसी के मकान पर भी लटक रही थी। वह पड़ोसी ग़रीब आदमी था, जब यह शख़्स अपने दरख़्त पर खजूरें तोड़ने के लिऐ चढ़ता तो हरकत से कुछ खजूरें पड़ोसी के मकान में भी गिर जाया करतीं, जिनको उसके ग़रीब बच्चे उठा लिया करते। यह शख़्स दरख़्त पर से उतरता और पड़ोसी के मकान पर जाकर उन बच्चों के हाथ में से खजूरें छीन लेता, हत्ताकि उनके मुंह में से भी उंगली डाल कर निकाल लिया करता था, उस फ़क़ीर ने हुज़ूर सल्ल॰ से इसकी शिकायत की, हुज़ूर सल्ल॰ ने सुनकर कहा अच्छा जाओ।

इसके बाद खजूर के मालिक से हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि तुम्हारा फ़लां खजूर का दरख़्त जो फ़लां शख़्स के घर में झुक रहा है, वह तुम मुझे इस वायदे पर देते हो कि तुम्हें उसके बदले में जन्नत में खजूर का दरख़्त मिल जाये? उसने अर्ज़ किया कि हुज़ूर सल्ल॰ इसके और लोग भी ख़रीदार हुए, और मेरे पास और भी दरख़्त हैं, मगर उसकी खजूरें मुझे बहुत पसंद हैं, इसलिए मैं ने फ़रोख़्त नहीं किया और यह कह कर उसके देने से उज़्र कर दिया (मालिक तो बहरहाल वही था, हुज़ूर सल्ल॰ ने यह सुनकर सुकूत फ़रमाया)

एक तीसरे साहब भी इस गुफ़्तगू को सुन रहे थे, उन्होंने उसके जाने के बाद हुज़ूर सल्ल॰ से अर्ज़ किया कि अगर वह दरख़्त मैं लेकर पेश कर दूँ तो मेरे लिये भी वही वायदा जन्नत में खजूर के दरख़्त का है जो हुज़ूर सल्ल॰ ने उससे

फ़रमाया था, हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया, तुमसे भी वही वायदा है।

यह साहब उठे और उस मालिके दरख़्त के पास जाकर कहा कि मेरे पास भी खजूर का बाग़ है, तुम अपने उस दरख़्त को किसी क़ीमत पर बेच सकते हो? उसने कहा कि हुज़ूर सल्ल॰ ने मुझ से जन्नत में दरख़्त का वायदा किया था, मैं ने उस पर भी नहीं दिया। यह दरख़्त मुझे बहुत पसंद है, मैं उसको बेच तो सकता हूँ, मगर जितनी क़ीमत मैं चाहता हूँ, उतनी कोई देगा नहीं।

उसने पूछा कि कितनी क़ीमत चाहिए? उसने कहा कि चालीस दरख़्तों के बदले में बेच सकता हूँ। उस शख़्स ने कहा, एक टेढ़े दरख़्त की क़ीमत चालीस दरख़्त बहुत ज़्यादा है। अच्छा, अगर मैं चालीस दरख़्त उसके बदले में दूँ तो तू बेच देगा। साहबे दरख़्त ने कहा कि अगर तू अपनी बात में सच्चा है तो क़सम खा कि मैं ने चालीस दरख़्त एक दरख़्त के बदले में दे दिये। उन साहब ने क़सम खा ली कि मैं ने चालीस दरख़्त उस टेढ़े दरख़्त के बदले में दे दिये।

इसके बाद वह साहबे दरख़्त फिर गया कि मैं फ़रोख़्त नहीं करता। उन साहब ने कहा कि अब तू हरगिज़ इंकार नहीं कर सकता, तेरे कहने पर मैं ने क़सम खाई है, उसने कहा कि अच्छा इस शर्त पर कि सब के सब दरख़्त एक ही जगह हों। उन्होंने थोड़ी देर सोच कर इसका भी वायदा कर लिया कि सब एक ही जगह होंगे।

बात पुख़्ता करके यह हुज़ूर सल्ल॰ की ख़िदमत में हाज़िर हुए कि हुज़ूर सल्ल॰ वह दरख़्त मैं ने ख़रीद लिया, वह हुज़ूर सल्ल॰ की नज़्र है। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उस फ़क़ीर के मकान पर तशरीफ़ ले गये और दरख़्त उस फ़क़ीर को मरहमत फ़रमा दिया। इसके बाद सूरः वल्लैल नाज़िल हुई। *(एह्या)*

7. एक शख़्स ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ि॰ की ख़िदमत में हाज़िर होकर दो शेअ्र पढ़े, जिनका मतलब यह है कि एहसान और हुस्ने सुलूक उस वक़्त एहसान है जबकि वह उसके अहल और क़ाबिल लोगों पर किया जाये। नालायक़ों पर एहसान करना ना मुनासिब है, पस अगर तू किसी पर एहसान किया करे तो या तो ख़ालिस अल्लाह के वास्ते सदक़ा हो, (कि इस में अहलियत की शर्त नहीं है, काफ़िरों और जानवरों पर भी किया जाता है) या फिर अहले क़राबत पर किया कर कि उन का हक़्क़े क़राबत उनकी अहलियत

पर ग़ालिब है। और अगर यह दोनों बातें किसी जगह न हों तो नालायक़ पर एहसान नहीं करना चाहिए। (इन शेअ्रों में हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ि॰ ही की तरफ़ इशारा था कि इनकी सख़ावत और बख़्शिश ऐसी आम थी कि हर कस व नाकस पर बारिश की तरह बरसती थी।)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ि॰ ने यह शेअ्र सुनकर फ़रमाया कि ये शेअ्र आदमी को बख़ील बनाते हैं, मैं तो अपने एहसान को बारिश की तरह बरसाऊँगा, अगर वह करीम और क़ाबिल लोगों तक पहुँच जाये तो वे यक़ीनन इसी के मुस्तहिक़ हैं कि उन पर एहसान किया जाये और अगर ना अहलों तक पहुँचे तो मैं इसी क़ाबिल हूँ कि मेरा माल ना अहलों के पास ही जाये। *(एह्या)*

यह तवाज़ो के तौर पर फ़रमाया कि मैं भी ना अहल इसलिए मेरा माल भी नाकारा है, इसलिए नाकारों ही के पास जाना चाहिए।

8. हज़रत मुन्कदिर रह॰ एक मर्तबा हज़रत आइशा रज़ि॰ की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अपनी सख़्त हाजत का इज़्हार किया, उन्होंने फ़रमाया कि मेरे पास इस वक़्त बिल्कुल कुछ नहीं है, अगर मेरे पास दस हज़ार भी होते तो सब के सब तुम्हें दे देती, मगर इस वक़्त मेरे पास कुछ भी नहीं है। वह वापस चले गये। थोड़ी देर बाद ख़ालिद बिन असद रज़ि॰ के पास से दस हज़ार का हदया हज़रत आइशा रज़ि॰ की ख़िदमत में पहुँचा, फ़रमाने लगीं कि मेरी बात का बहुत जल्द इम्तिहान लिया गया, जब ही हज़रत मुन्कदिर रह॰ के पास आदमी भेजा और उनको बुला कर वह सारी रक़म उनके हवाले कर दी, जिस में से एक हज़ार में उन्होंने एक बांदी ख़रीदी, जिसके पेट से तीन लड़के पैदा हुए, मुहम्मद, अबू बक्र, उमर तीनों के तीनों मदीना मुनव्वरा के आबिद लोगों में शुमार होते थे।

(तहज़ीबुत तहज़ीब)

क्या इन तीनों की इबादत में हज़रत आइशा रज़ि॰ का हिस्सा न होगा कि वही उनके वजूद का सबब हुईं। हज़रत आइशा रज़ि॰ की सख़ावत के वाक़िआत उन के अब्बा जान रज़ियल्लाहु अन्हु की तरह से एहाते से बाहर हैं।

एक क़िस्सा हिकायाते सहाबा रज़ि॰ में भी लिख चुका हूँ कि दो गोनें दराहिम की बांटीं और यह भी याद न आया कि मेरा रोज़ा है और इफ़्तार के लिए एक दिरम का गोश्त ही मंगा लूँ। इन दोनों गोनों में एक लाख से ज़्यादा दिरम थे और इसी क़िस्म का एक और क़िस्सा भी रिवायात में है, जिस में एक लाख

अस्सी हज़ार दिरम बताये जाते हैं।

तमीम बिन उरव: रज़ि॰ कहते हैं कि मैं ने एक मर्तबा (अपने वालिद की ख़ाला) हज़रत आइशा रज़ि॰ को देखा कि उन्होंने सत्तर हज़ार दिरम तक़्सीम किये और वह खुद पेवंद लगा हुआ कुर्ता पहन रही थीं। *(इत्तिहाफ़)*

9. अबान बिन उस्मान रह॰ कहते हैं कि एक शख़्स ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि॰ को परेशान और ज़लील करने के लिए यह हरकत की कि क़ुरैश के सरदारों के पास जाकर यह कहा कि इब्ने अब्बास (रज़ि॰) ने कल सुबह आपकी खाने की दावत की है। सब जगह पयाम पहुँचाता हुआ फिर गया। जब सुबह का खाने का वक़्त हुआ तो हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ के घर इतना मज्मा इक्टठा हो गया कि घर भर गया। तहक़ीक़ से मालूम हुआ कि यह सूरत पेश आयी।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ ने उन सब को बिठाया और बाज़ार से फलों के टोकरे मंगा कर उनके सामने रखे कि इससे शुग़ल करें और बात चीत शुरू कर दी और बहुत से बावर्चियों को हुक्म दे दिया कि खाना तैयार किया जाये। इतने वे हज़रात फलों के खाने से फ़ारिग़ भी न हुए थे कि खाना तैयार हो गया। सबने शिकम सेर होकर खाना खाया। इसके बाद हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ ने अपने ख़ज़ानचियों से पूछा कि क्या इतनी गुंजाइश है कि हम इस दावत के सिलसिले को रोज़ाना जारी रख सकें? उन्होंने अर्ज़ किया कि है। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ ने फ़रमा दिया कि इस मजमे की रोज़ाना सुबह को हमारे यहां दावत है। रोज़ाना आ जाया करें। *(इत्तिहाफ़)*

यह ज़माना हज़रात सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम के ऊपर फ़ुतूहात की कसरत का था, मगर इन हज़रात की सख़ावत के ज़ोर से माल इस तरह जल्द ख़त्म हो जाता था जैसा कि पानी छलनी में भरा और ख़त्म हुआ, इसलिए जब होता था तो ख़ूब होता था और जब वह ख़त्म हो जाता था तो अपने पास खाने को एक दिरम भी न रहता था, न जमा करने का उनका दस्तूर था, न अपने लिए अलाहिदा करके रखना ये जानते थे कि किस जानवर का नाम है। लाखों की मिक़्दार आती थी और मिनटों में तक़्सीम हो जाती थी।

10. वाक़दी रह॰ कहते हैं कि मेरे दो दोस्त थे, एक हाशमी और एक ग़ैर हाशमी, हम तीनों में ऐसे गहरे ताल्लुक़ात थे कि एक जान, तीन क़ालिब थे, मेरे

ऊपर सख़्त तंगी थी, ईद का दिन आ गया, बीवी ने कहा कि हम तो हर हाल में सब्र कर लेंगे मगर ईद क़रीब आ गयी, बच्चों के रोने और ज़िद करने ने मेरे दिल के टुकड़े कर दिये ये मौहल्ले के बच्चों को देखते हैं कि वे उम्दा उम्दा लिबास और सामान ईद के लिये ख़रीद रहे हैं और ये फटे पुराने कपड़ों में फिर रहे हैं, अगर कहीं से तुम कुछ ला सकते हो तो ला दो, इन बच्चों के हाल पर मुझे बहुत तरस आता है, मैं इन के भी कपड़े बना दूँ। मैं ने बीवी की यह बात सुन कर अपने हाशमी दोस्त को पर्चा लिखा, उसमें सूरते हाल ज़ाहिर की, इसके जवाब में उसने सर ब मुहर एक थैली मेरे पास भेजी और कहा कि इस में एक हज़ार दिरम हैं तुम इनको ख़र्च कर लो।

मेरा दिल इस थैली से ठंडा भी न होने पाया था कि मेरे दूसरे दोस्त का परचा मेरे पास इसी क़िस्म के मज़्मून का; जो मैं ने अपने हाशमी दोस्त को लिखा था, आ गया, मैं ने वह थैली सर ब मुहर उसके पास भेज दी और बीवी की शर्म से घर में जाने की हिम्मत न हुई। मस्जिद में चला गया और दो दिन रात मस्जिद ही में रहा, शर्म की वजह से घर न जा सका। तीसरे दिन मैं घर गया और बीवी से सारा क़िस्सा सुना दिया, उसको ज़रा भी नागवार न हुआ, न उसने कोई हरफ़ शिकायत का मुझसे कहा बल्कि मेरे इस फ़ेअ्ल को पसंद किया और कहा कि तुमने बहुत अच्छा किया।

मैं बात ही कर रहा था कि मेरा वह हाशमी दोस्त वही सर ब मुहर थैली हाथ में लिये आया और मुझसे पूछने लगा कि सच सच बताओ, इस थैली का क्या क़िस्सा हुआ। मैं ने उस वाक़िए को सुना दिया। इसके बाद उस हाशमी ने कहा कि जब तेरा परचा पहुँचा तो मेरे पास इस थैली के सिवा कोई चीज़ बिल्कुल नहीं थी, मैं ने यह थैली तेरे पास भेज दी। इसके बाद मैं ने तीसरे दोस्त को परचा लिखा, तो उसने जवाब में यही थैली मेरे पास भेजी, इस पर मुझे बहुत ताज्जुब हुआ कि यह तो मैं तेरे पास भेज चुका था, यह तीसरे दोस्त के पास कैसे पहुँच गयी। इसलिये मैं तहक़ीक़ के वास्ते आया था।

वाक़दी रह॰ कहते हैं कि हमने उस थैली में से सौ दिरम तो उस औरत को दे दिये और नौ सो दिरम हम तीनों ने आपस में बांट लिये।

इस वाक़िए की किसी तरह मामून रशीद को ख़बर हो गयी, उसने मुझे बुलाया और मुझ से सारा क़िस्सा सुना, उसके बाद मामून रशीद ने सात हज़ार दिरम दिये। दो दो हज़ार हम तीनों को और एक हज़ार औरत को। (इत्तिहाफ़)

11. हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ि॰ एक मर्तबा मदीना मुनव्वरा के एक बाग़ पर गुज़रे, उस बाग़ में हब्शी गुलाम बाग़ का रखवाली था, वह रोटी खा रहा था और एक कुत्ता उसके सामने बैठा हुआ था। जब वह एक लुक़्मा बना कर अपने मुंह में रखता तो वैसा ही एक लुक़्मा बना कर उस कुत्ते के सामने डालता। हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ि॰ इस मंज़र को देखते रहे।

जब वह ग़ुलाम खाने से फ़ारिग़ हो चुका तो उसके पास तशरीफ़ ले गये, इस बात को दर्याफ़्त किया, तुम किसके ग़ुलाम हो? उसने कहा मैं हज़रत उस्मान रज़ि॰ के वारिसों का ग़ुलाम हूँ। उन्होंने फ़रमाया कि मैं ने तुम्हारी एक अजीब बात देखी, उसने अर्ज़ किया आक़ा तुमने क्या देखा? फ़रमाने लगे कि तुम जब एक लुक्मा खाते थे, साथ ही एक लुक़्मा इस कुत्ते को देते थे। उसने अर्ज़ किया यह कुत्ता कई साल से मेरा साथी है, इसलिए ज़रूरी है कि मैं खाने में भी इसको अपना साथी रखूँ। उन्हों ने फ़रमाया कि इस कुत्ते के लिऐ तो इससे कम दर्जे की चीज़ भी बहुत काफ़ी थी। ग़ुलाम ने अर्ज़ किया मुझे अल्लाह जल्ल शानुहू से इसकी ग़ैरत आती है कि मैं खाता रहूँ और एक जानदार आंख मुझे देखती रहे।

हज़रत इब्ने जाफ़र रज़ि॰ उससे बात करके वापस तशरीफ़ लाये और हज़रत उस्मान रज़ि॰ के वारिसों के पास तशरीफ़ ले गये और फ़रमाया कि अपनी एक ग़रज़ लेकर आप लोगों के पास आया हूँ। उन्हों ने कहा क्या इर्शाद है? ज़रूर फ़रमा दें। आपने फ़रमाया कि फ़लां बाग़ मेरे हाथ फ़रोख़्त कर दो। उन्हों ने अर्ज़ किया कि जनाब की ख़िदमत में वह हदया है, उसको बिला क़ीमत क़ुबूल फ़रमा लें। फ़रमाने लगे कि मैं बग़ैर क़ीमत लेना नहीं चाहता क़ीमत तै होकर मामला हो गया।

फिर हज़रत इब्ने जाफ़र रज़ि॰ ने फ़रमाया कि उस में जो ग़ुलाम काम करता है उसको भी लेना चाहता हूँ। उन्हों ने उज़्र किया कि वह बचपन से हमारे ही पास पला है, उसकी जुदाई शाक़ है, मगर हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ि॰ के इसरार पर उन्हों ने उसको भी उनके हाथ फ़रोख़्त कर दिया।

ये दोनों चीज़ें ख़रीद कर उस बाग़ में तशरीफ़ ले गये और उस ग़ुलाम से फ़रमाया कि मैं ने इस बाग़ को और तुमको ख़रीद लिया है। ग़ुलाम ने अर्ज़ किया कि अल्लाह तआला शानुहू आपको यह ख़रीदारी मुबारक फ़रमाये और बरकत अता फ़रमाये, अलबत्ता मुझे अपने आक़ाओं से जुदाई का रंज हुआ कि उन्हों ने

बचपन से मुझे पाला था। हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ि॰ ने फ़रमाया कि मैं तुमको आज़ाद करता हूँ और यह बाग़ तुम्हारी नज़्र है। उस ग़ुलाम ने अर्ज़ किया कि फिर आप गवाह रहें कि यह बाग़ मैं ने हज़रत उस्मान रज़ि॰ के वारिसों को वक़्फ़ कर दिया।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि मुझे उसकी इस बात पर और भी ताज्जुब हुआ और उसको बरकत की दुआयें देकर वापस आ गया। *(मुसामरात)*

यह तो मुसलमानों के असलाफ़ के ग़ुलामों के कारनामे थे।

12. नाफ़ेअ् रज़ि॰ कहते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि॰ एक दफ़ा मदीना मुनव्वरा से बाहर तशरीफ़ ले जा रहे थे, ख़ुद्दाम साथ थे, खाने का वक़्त हो गया। ख़ुद्दाम ने दस्तरख़्वान बिछाया। सब खाने के लिए बैठे। एक चरवाहा बकरियां चराता हुआ गुज़रा, उसने सलाम किया। हज़रत इब्ने उमर रज़ि॰ ने उसको खाने की तवाज़ोअ् की, उसने कहा, मेरा रोज़ा है। हज़रत इब्ने उमर रज़ि॰ ने फ़रमाया कि इस क़दर सख़्त गर्मी के ज़माने में कैसी लू चल रही है, जंगल में तू रोज़ा रख रहा है, उस ने अर्ज़ किया कि मैं अपने अय्यामे ख़ालिया: को वसूल कर रहा हूँ।

यह क़ुरआन पाक की एक आयते शरीफ़ा की तरफ़ इशारा था जो सूर: अल हाक़्क़: में है कि हक़ तआला शानुहू जन्नती लोगों को फ़रमा देंगे :-

كُلُوا وَاشْرَبُوا هَنِيْئًا بِمَا أَسْلَفْتُمْ فِي الْأَيَّامِ الْخَالِيَةِ (الآية)

"कुलू वश्र-बू हनीअम् बिमा अस्लफ़्तुम् फ़िल् अय्या मिल् ख़ालिय:॰"

"खाओ और पियो मज़े के साथ उन आमाल के बदले में जो तुमने गुज़रे हुए ज़माने में (दुनिया में) किये।"

इसके बाद हज़रत उमर रज़ि॰ ने इम्तिहान के तौर पर उससे कहा कि हम एक बकरी ख़रीदना चाहते हैं, इसकी क़ीमत बता दो और ले लो, हम इसको काटेंगे और तुम्हें गोश्त भी देंगे कि इफ़्तार में काम देगा। उसने कहा ये बकरियां मेरी नहीं हैं। मैं तो ग़ुलाम हूँ, ये मेरे सरदार की बकरियां है। हज़रत इब्ने उमर रज़ि॰ ने फ़रमाया कि सरदार को क्या ख़बर होगी? उस से कह देना कि भेड़िया खा गया। उसने आसमान की तरफ़ इशारा किया और कहा' "फ़-ऐनल्लाह" और अल्लाह तआला कहां चले जायेंगे। (यानी वह पाक परवर दिगार तो देख रहा है,

जब वह मालिकुल्मुल्क देख रहा है तो मैं कैसे कह सकता हूँ कि भेड़िया खा गया।)

हज़रत इब्ने उमर रज़ि॰ ताज्जुब और मज़े से बार बार फ़रमाते थे, एक चरवाहा कहता है ऐनल्लाह (अल्लाह तआल कहां चले जायेगें, अल्लाह तआला कहां चले जायेंगे) इसके बाद हज़रत इब्ने उमर रज़ि॰ शहर में वापस तशरीफ़ लाये तो उस ग़ुलाम के आक़ा से उस ग़ुलाम को और बकरियों को ख़रीद कर ग़ुलाम को आज़ाद कर दिया, और वे बकरियां उस को हिबा कर दीं।

(दुर्रे मंसूर)

यह उस वक़्त चरवाहों का हाल था कि जिनको जंगल में भी यह फ़िक्र था कि अल्लाह तआला शानुहू देख रहे हैं।

13. हज़रत सईद बिन आमिर रह॰ हज़रत उमर रज़ि॰ की जानिब से हमस के हाकिम (गवर्नर) थे। अहले हमस ने हज़रत उमर रज़ि॰ से इनकी मुतअद्द शिकायतें कीं और इनके माज़ूल करने की दरख़्वास्त की, हज़रत उमर रज़ि॰ को हक़ तआला शानुहू ने फ़िरासत का ख़ास हिस्सा अता फ़रमाया था जिसकी वजह से मर्दुम शनासी में ख़ास दख़ल था, और उसका हज़ारों मर्तबा तजुर्बा भी हो चुका था। इस पर ताज्जुब फ़रमाया कि मैं ने तो बहुत बेहतर समझ कर तजवीज़ किया था और इसकी दुआ की थी कि या अल्लाह, मेरी फ़िरासत को लोगों के बारे में ज़ायल न फ़रमा कि इससे तो सारे ही महकमे के आदमियों में ना अहलों के घुस आने का अंदेशा है। इसके बाद हज़रत उमर रज़ि॰ ने हज़रत सईद रज़ि॰ को तलब किया और शिकायत करने वालों को भी बुलाया और उनसे दर्याफ़्त फ़रमाया कि तुम लोगों को इनसे क्या क्या शिकायतें हैं।

उन्होनें तीन शिकायतें की थीं, एक यह कि दिन में बहुत देर से घर से निकलते हैं (अदालत में देर से पहुँचते हैं) दूसरे रात को अगर कोई इनके पास जाये तो उस वक़्त उसकी शिकायत नहीं सुनते, तीसरे हर महीने में एक दिन की तातील (छुट्टी) करते हैं।

हज़रत उमर रज़ि॰ ने दोनों फ़रीक़ को सामने खड़ा किया और फ़रमाया कि नम्बरवार मुतालबात करो ताकि हर शिकायत का अलाहिदा अलाहिदा जवाब लिया जाये। उन लोगों ने कहा कि सुबह को देर में घर से निकलते हैं।

हज़रत उमर रज़ि॰ ने उनसे जवाब तलब किया, उन्होंने अर्ज़ किया कि

मेरी बीवी तंहा काम करने वाली है, मैं आटा गूधंता हूँ रोटी पकाता हूँ, जब रोटी तैयार हो जाती है तो खाने से फ़ारिग़ होकर वुज़ू करके बाहर चला जाता हूँ।

हज़रत उमर रज़ि॰ ने फ़रमाया, दूसरा मुतालबा क्या है? उन्होंने अर्ज़ किया कि रात को काम नहीं करते, कोई जाता है तो उसकी हाजत पूरी नहीं करते।

हज़रत उमर रज़ि॰ ने फ़रमाया इसका क्या जवाब तुम्हारे पास है? हज़रत सईद रज़ि॰ ने अर्ज़ किया, मेरा दिल नहीं चाहता था कि इसका इज़्हार करूँ। मैं ने दिन और रात को तक़्सीम कर रखा है, दिन मख़्लूक़ का और रात ख़ालिक़ की। मैं ने रात सारी की सारी अपने मौला को दे रखी है।

हज़रत उमर रज़ि॰ ने फ़रमाया कि तीसरा मुतालबा क्या है? उन्हों ने अर्ज़ किया कि महीने में एक दिन तातील (छुट्टी) करते हैं।

हज़रत उमर रज़ि॰ ने फ़रमाया इसका क्या जवाब है? हज़रत सईद रज़ि॰ ने अर्ज़ किया कि मेरे पास कोई ख़ादिम नहीं है, मैं महीने में एक दिन कपड़े खुद ही धोता हूँ, उनको खुश्क करके पहनने में शाम हो जाती है।

हज़रत उमर रज़ि॰ ने हक़ तआला शानुहू का शुक्र अदा किया कि मेरी फ़िरासत ग़लत न हुई। इसके बाद उन लोगों से फ़रमाया कि तुम अपने अमीर की क़द्र करो।

उन सबके जाने के बाद हज़रत उमर रज़ि॰ ने हज़रत सईद रज़ि॰ के पास एक हज़ार दीनार (अशर्फ़ियां) भेजीं कि इनको अपनी ज़रूरियात में ख़र्च करें। उनकी बीवी ने कहा, अल्लाह का शुक्र है कि उसने बहुत सी ज़रूरियात का इंतिज़ाम फ़रमा दिया। अब तुम्हें खुद घर के कारोबार करने की एहतियाज न रहेगी, एक ख़ादिम भी इसमें ख़रीदा जा सकता है और दूसरी ज़रूरियात भी पूरी की जा सकती हैं।

हज़रत सईद रज़ि॰ ने फ़रमाया कि यहां हमसे भी ज़्यादा मुहताज और ज़रूरत मंद लोग मौजूद हैं, इनको उन लोगों पर ख़र्च न कर दें। बीवी ने इसको खुशी खुशी से क़ुबूल फ़रमा लिया। उन्हों ने उसमें से छोटी छोटी थैलियां बनाकर एक फ़लां यतीम को, एक फ़लां को, ग़रज़ बहुत सा हिस्सा तो उसी वक़्त तक़्सीम कर दिया, कुछ बचा था, उसको बीवी के हवाले कर दिया कि थोड़ा थोड़ा ख़र्च करती रहेगी। बीवी ने कहा कि बची हुई रक़म से ग़ुलाम ख़रीद लेंगे,

घर के कारोबार में तुम्हें सहूलत हो जायेगी, (फ़रमाने लगे) अंक़रीब तुझसे ज़्यादा हाजत वाले तेरे पास आयेंगे।

(अशहुर)

14. एक मर्तबा मिस्र में क़हत पड़ा। अब्दुल हमीद बिन सअद मिस्र के हाकिम थे, कहने लगे, मैं शैतान को बताऊँगा कि मैं उसका दुश्मन हूँ (वह ऐसे वक़्त में बहुत एहतियात से ख़र्च करने की तर्ग़ीब देता है) मिस्र में जितने फ़ुक़रा नादार थे, सबका खाना मेरे ज़िम्मे रहेगा। चुनांचे ऐसा होता रहा, यहां तक कि क़हत दूर हो गया। बाज़ार का नर्ख़ (भाव) अर्ज़ां (सस्ता) हो गया। इसके बाद यह माज़ूल कर दिये गये। जब यह मिस्र से रूख़्सत होने लगे तो जिन ताजिरों से क़हत के ज़माने में क़र्ज़ लेकर खिलाते रहे उनके दस लाख दिरम उनके ज़िम्मे क़र्ज़ था, चूंकि वहां से रूख़्सत होकर जा रहे थे, इसलिए अपने अहल व आयाल के ज़ेवर वग़ैरह मांग कर उन ताज़िरों के पास रहन रख गये, जो चीज़ें रहन रखीं थीं, उनकी क़ीमत पचास करोड़ दिरम थी। कुछ दिन इरादा करते रहे कि उनका क़र्ज़ा अदा होकर ज़ेवरात के रहन को खलास कर लें, मगर इतनी रक़म मुहैया न हो सकी। उन ताजिरों को लिख दिया कि उन ज़ेवरों को फ़रोख़्त करके अपना क़र्ज़ा वसूल कर लें और जितनी रक़म बाक़ी बचे, वह मिस्र के उन अहले ज़रूरत पर तक़्सीम कर दें जिनकी उस वक़्त मैं ने मदद नहीं की। *(इत्तिहाफ़)*

ज़ेवर वालियां भी तो उसी दौर की पैदावार थीं, उनको इसमें क्या ताम्मुल हो सकता था, कि उनका ज़ेवर फ़रोख़्त करके फ़ुक़रा पर तक़्सीम कर दिया जाये।

15. अबू मुर्सद रह० एक मशहूर सख़ी हैं, उनके पास एक शख़्स आया और कुछ अश्आर उनकी तारीफ़ में पढ़े (करीम की मदह हमेशा सूरते सवाल होती ही है) उन्हों ने फ़रमाया कि मेरे पास इस वक़्त तेरे देने के लिए बिल्कुल कुछ नहीं है। एक सूरत हो सकती है कि तू क़ाज़ी के यहां जाकर मुझ पर दस हज़ार का दावा कर दे मैं क़ाज़ी के सामने इसका इक़रार कर लूँगा (और आदमी का किसी से वायदा कर लेना भी क़र्ज़ ही जैसा है, हुज़ूर सल्ल० का पाक इर्शाद है कि अल्अिद-तु दैनुन्, (वायदा क़र्ज़ है,) क़ाज़ी तेरे क़र्ज़े में मुझे क़ैद कर देगा तो फिर मेरे घर वाले मुझे क़ैद में तो रहने नहीं देंगे, इतनी मिक्दार जमा कर देगें। उसने ऐसा ही किया, यह क़ैद हो गये और शाम तक दस हज़ार क़ाज़ी साहब के हवाले होकर यह क़ैद से छूट आये और वह रक़म उस शख़्स को मिल गई।

(इत्तिहाफ़)

16. अरब की एक जमाअत एक मशहूर सख़ी करीम की क़ब्र की ज़ियारत को गयी। दूर का सफ़र था, रात को वहां ठहरे, उनमें से एक शख़्स ने उस क़ब्र वाले को ख़्वाब में देखा, वह उससे कह रहा है कि तू अपने ऊँट को मेरे बख़्ती ऊँट के बदले में फ़रोख़्त करता है (बख़्ती ऊँट आला क़िस्म के ऊँटों में शुमार होता है, जो उस मैय्यित ने तरके में छोड़ा था) ख़्वाब में देखने वाले ने ख़्वाब ही में मामला कर लिया।

वह साहिबे क़ब्र उठा और उसके ऊँट को ज़िब्ह कर दिया। जब यह ऊँट वाला नींद से उठा तो उसके ऊँट के ख़ून जारी था। उसने उठ कर उसको ज़िब्ह कर दिया। (कि उसकी ज़िन्दगी की उम्मीद न रही थी) और गोश्त तक़सीम कर दिया। सबने पकाया खाया, ये लोग वहां से वापस हो गये। जब अगली मंज़िल पर पहुँचे तो एक शख़्स बख़्ती ऊँट पर सवार मिला तो यह तहक़ीक़ कर रहा था कि फ़लां नाम का शख़्स तुम में से कोई है, उस ख़्वाब वाले शख़्स ने कहा कि यह मेरा नाम है। उसने पूछा कि तूने फ़लां क़ब्र वाले के हाथ कोई चीज़ फ़रोख़्त की है? ख़्वाब देखने वाले ने अपने ख़्वाब का क़िस्सा सुनाया। जो शख़्स बख़्ती ऊँट पर सवार था, उसने कहा कि वह मेरे बाप की क़ब्र थी, यह उसका बख़्ती ऊँट है। उसने मुझे ख़्वाब में कहा कि अगर तू मेरी औलाद है तो मेरा बख़्ती ऊँट फ़ला शख़्स को दे दे। तेरा नाम लिया था, यह बख़्ती ऊँट तेरे हवाले है, यह कह कर वह ऊँट देकर चला गया। *(इत्तिहाफ़)*

यह सख़ावत की हद है कि मरने के बाद भी अपनी क़ब्र पर आने वालों की मेहमानी की। बाक़ी यह बात कि मरने के बाद इस क़िस्म का वाक़िआ क्यों कर हो गया, इसमें कोई मुहाल चीज़ नहीं है। आलमे अर्वाह में इस क़िस्म के वाक़िआत मुमकिन हैं।

17. एक क़ुरैशी सफ़र में जा रहे थे, रास्ते में एक बीमार फ़क़ीर मिला, जिसको मसाइब ने बिल्कुल ही आजिज़ कर रखा था। उसने दर्ख़्वास्त की कि कुछ मदद मेरी करते जाओ, उन क़ुरैशी साहब ने अपने गुलाम से कहा कि जो कुछ तुम्हारे पास ख़र्च है, वह सब ले आओ। उस गुलाम ने जो कुछ था, जिसकी मिक़्दार चार हज़ार दिरम थी वह उस फ़क़ीर की गोद में डाल दिया। वह फ़क़ीर उनको लेकर ज़ोअफ़ की वजह से उठ भी ना सका। इस बड़ी मिक़्दार के मिलने पर ख़ुशी में उसके आंसू निकल आये। क़ुरैशी को यह ख़्याल हुआ कि शायद इसने इस मिक़्दार को कम समझा, इस पर रो रहा है। उससे पूछा, क्या इस वजह

से रो रहे हो कि यह बहुत कम मिक़्दार है। (मगर मेरे पास इसके सिवा और कुछ इस वक़्त है नहीं) फ़क़ीर ने कहा, नहीं इस पर नहीं रो रहा हूँ, इस पर रो रहा हूँ कि तेरे करम से कितनी ज़मीन खा रही है। *(इत्तिहाफ़)*

जब एक नावाक़िफ़ साइल के सवाल पर तेरे करम का यह हाल है कि सफ़र की हालत में भी जो मौजूद था, सब दे दिया तो इससे हज़रत के करम का अंदाज़ा हो गया।

18. अब्दुल्लाह बिन आमिर बिन कुरैज़ रज़ि॰ ने हज़रत ख़ालिद बिन उक़्बा रज़ि॰ उमवी से उनका मकान अपनी ज़रूरत से नव्वे हज़ार दिरम में ख़रीदा। जब वह फ़रोख़्त हो गया और ख़ालिद रज़ि॰ के घर वालों को इसकी ख़बर हुई तो उनको रंज और सदमा बहुत हुआ। रात को कुछ रोने की आवाज़ इब्ने आमिर रज़ि॰ के कान में पड़ी, अपने घर की मस्तूरात से पूछा कि यह रोने की आवाज़ कहां से आ रही है? उन्हों ने कहा कि ख़ालिद रज़ि॰ के घर वालों को अपने मकान के फ़रोख़्त होने का सदमा हो रहा है। उसी वक़्त इब्ने आमिर रज़ि॰ ने अपने गुलाम को उन के पास भेजा और यह कहलवाया कि मकान तुम्हारी नज़्र है और क़ीमत जो मैं दे चुका हूँ, वह भी अब वापस न होगी, यह मकान मेरी तरफ़ से तुम्हारी नज़्र है। *(इत्तिहाफ़)*

19. हारून रशीद ने पांच सौ दीनार (अशर्फ़ियां) एक मर्तबा हज़रत इमाम मालिक रह॰ की नज़्र किये। हज़रत लैस बिन सअद रह॰ को इसका इल्म हुआ तो उन्होंने एक हज़ार दीनार हज़रत इमाम मालिक रह॰ के पास भेजे, बादशाह को इसका इल्म हुआ तो वह नाराज़ हुआ कि तुम रिआया होकर बादशाह से बढ़ना चाहते हो (गोया मेरी तौहीन मक़्सूद है) लैस रह॰ ने कहा, अमीरूल मोमिनीन ! यह बात नहीं है बल्कि आज कल मेरी रोज़ाना की आमदनी एक हज़ार दीनार है। मुझे ग़ैरत आई कि इतने बड़े जलीलुल क़द्र को मैं नज़्राना पेश करूँ और अपनी एक दिन से भी कम की आमदनी दूँ।

हज़रत लैस रह॰ का मुस्तक़िल मामूल भी था कि हज़रत इमाम मालिक रह॰ की ख़िदमत में सौ अशर्फ़ी सालाना नज़्र पेश किया करते थे, इनके अलावा भी नज़राने आते रहते थे लेकिन इसके बावजूद अल्लाह के फ़ज़्ल से हज़रत इमाम मालिक रह॰ बसा औक़ात मक़रूज़ रहते थे और ख़ुद यह हज़रत लैस बिन साद रह॰ मशहूर मुहद्दिसीन और उलमा में हैं जिनकी रोज़ाना की उस वक़्त

की आमदनी एक हज़ार दीनार (अशर्फ़ियां) थीं, मगर उम्र भर में कभी उनके ज़िम्मे ज़कात वाजिब नहीं हुई।

मुख़्तलिफ़ ज़मानों में उनकी आमदनी मुख़्तलिफ़ रही थी और ऐसा हुआ ही करता है कि आमदनी कम व बेश होती रहा करती है, लेकिन ज़कात किसी ज़माने में भी वाजिब न हुई कि ज़कात तो जब वाजिब हो जब कोई जमा करके रखे भी। मुहम्मद बिन रमह रज़ि॰ कहते हैं कि हज़रत लैस रह॰ की सालाना आमदनी हर साल अस्सी हज़ार दीनार थी, मगर अल्लाह तआला ने कभी उन पर एक दिरम की ज़कात भी वाजिब नहीं की।

ख़ुद उनके बेटे शुऐब रह॰ कहते हैं कि मेरे वालिद की आमदनी बीस पचीस हज़ार दीनार (अशर्फ़ियां) सालाना थी, मगर वह हमेशा कर्ज़दार ही रहते थे। *(इत्तिहाफ़)*

इब्तिदा में बीस पचीस हज़ार होगी जिस पर क़र्ज़ा होता रहता था, इसके बावजूद वह सब कुछ अल्लाह के रास्ते में ख़र्च कर देते थे, इस वजह से इसका बढ़ना ज़रूरी था, इसलिए किसी वक़्त में एक हज़ार रोज़ाना भी हो गया।

एक औरत हज़रत लैस रह॰ के पास एक प्याली लेकर आयी कि मुझे थोड़े से शहद की ज़रूरत है, अगर आपके पास हो तो मरहमत फ़रमा दीजिए। उन्हों ने एक मशक शहद की उसके हवाले कर दी। किसी ने कहा कि वह थोड़ा सा मांगती थी, आपने फ़रमाया कि यह उसका फ़ेअ्ल था कि उसने अपनी हाजत के बक़द्र मांगा, मुझे उसके मुवाफ़िक़ देना चाहिए था, जितना मेरे अल्लाह ने मुझ पर एहसान फ़रमा रखा है।

एक मर्तबा कुछ लोगों ने उनके एक बाग़ का फल ख़रीदा, उसमें ख़रीदारों को नुक़सान हुआ, उनको इत्तिला हुई। उन्हों ने बाग़ की बैअ् का मामला फ़स्ख़ कर दिया, उनकी क़ीमत वापस कर दी और उनको अपने पास से पचास हज़ार दीनार (अशर्फ़ियां) नज़्र किये, किसी ने पूछा कि यह किस चीज़ का तावान दिया? फ़रमाने लगे कि उन लोगों ने मेरे बाग़ से नफ़े की उम्मीद बांधी थी, मेरा दिल चाहा कि उनकी उम्मीद पूरी कर दूँ। *(इत्तिहाफ़)*

20. हज़रत आमश सुलैमान बिन महरान रह॰ मशहूर मुहद्दिस हैं, फ़रमाते हैं कि मेरे पास एक बकरी थी, वह बीमार हो गयी। हज़रत ख़ैसमा बिन अब्दुर्रहमान रह॰ रोज़ाना सुबह को और शाम को दो वक़्त उस बकरी की इयादत

करने मेरे पास तशरीफ़ लाते, बकरी का हाल पूछते और यह भी दर्याफ़्त करते कि बच्चों को दूध तो मिलता नहीं होगा, वे ज़िद तो नहीं करते, बकरी ने कुछ खाया या नहीं, वग़ैरह वग़ैरह और हमेशा चलते हुए जिस टाट पर मैं बैठा करता था, उसके नीचे कुछ डाल जाते कि यह बच्चों के लिए उठा लेना।

बकरी की बीमारी के ज़माने में तीन सौ दीनार (अशर्फ़ियों) से ज़्यादा मुझे उनके एहसान से मिला, मुझे यह ख़्वाहिश होने लगी कि यह बकरी बीमार ही रहे तो अच्छा है। *(इत्तिहाफ़)*

21. अब्दुल मलिक बिन मरवान ने हज़रत असमा बिन ख़ारिजा रह० से पूछा कि मुझे तुम्हारी बाज़ आदतें बहुत अच्छी पहुँची हैं, तुम अपने मामूलात मुझे बताओ, उन्होंने उज़्र कर दिया कि मेरी क्या आदत अच्छी हो सकती है, दूसरों की आदतें बहुत बहुत अच्छी हैं, उन से दर्याफ़्त करें, मगर जब उन्हों ने इसरार से क़सम देकर पूछा तो उन्होंने बताया कि मुझे तीन चीज़ का हमेशा एहतिमाम रहा :-

(अ) यह कि किसी बैठने वाले की तरफ़ मैं ने पांव नहीं फैलाया,

(ब) जब मैं ने खाना पकाया और उस पर लोगों को बुलाया तो उन खाने वालों का मैं ने अपने ऊपर एहसान इससे बहुत ज़्यादा समझा जितना मेरा उन पर हो।

(स) जब मुझसे किसी ज़रूरत मंद ने कोई सवाल किया, मैं ने उसके देने में किसी मिक्दार को भी ज़ायद नहीं समझा जो कुछ दिया, उसको हमेशा कम ही समझता रहा। *(इत्तिहाफ़)*

22. हज़रत सईद बिन ख़ालिद उमवी रह० बहुत ज़्यादा मालदार थे, अरब में उनकी सरवत ज़रबुल मसल थी, उनका दस्तूर था कि जब कोई हाजतमंद उनके पास आता तो जो मौजूद होता उस में बुख़्ल न करते, लेकिन अगर किसी वक़्त कुछ न होता तो उसको एक इक़रार नामा लिख कर दे देते कि जब मेरे पास कहीं से कुछ आयेगा (या मैं मर जाऊँ) तो इस रूक़्क़े के ज़रिये से वसूल कर लेना। *(इत्तिहाफ़)*

23. हज़रत क़ैस बिन सअद ख़ज़रजी रज़ि० एक मर्तबा बीमार हुए और अहबाब में से कोई इयादत को न आया, जिस पर उनको ताज्जुब हुआ, बिल ख़ुसूस जिनकी आमद व रफ़्त (आना जाना) ज़्यादा थी, सेहत के ज़माने में

अक्सर आया करते थे, घर के लोगों से पूछा कि यह क्या बात है? उन्हों ने बताया कि हर शख़्स तुम्हारा मक़रूज़ है, ऐसी हालत में बग़ैर क़र्ज़ा लिये हुए आने से लोगों को शर्म आती है। फ़रमाने लगे कि इस कमबख़्त माल का नास हो, यह दोस्तों की मुलाक़ात भी छुड़ा देता है, यह कह कर एक शख़्स को बुलाया और उसके ज़रिये से शहर में मुनादी कराई कि क़ैस का जिसके ज़िम्मे क़र्ज़ है, वह क़ैस ने सबको माफ़ कर दिया। इसके बाद जो इयादत करने वालों का हुजूम हुआ तो दरवाज़े की दहलीज़ भी टूट गयी। *(इत्तिहाफ़)*

24. मिस्र में एक साहिबे ख़ैर शख़्स थे जो अहले ज़रूरत और फ़ुक़रा के लिये चंदा दिया करते थे, जब किसी को कोई हाजत पेश आती, वह उनसे कहता, वह अहले सरवत लोगों से कुछ मांग कर उसको दे दिया करते। एक फ़क़ीर उनके पास गया और कहा कि मेरे लड़का पैदा हुआ है और मेरे पास उसकी इस्लाह के इंतिज़ाम के लिये कोई चीज़ नहीं है। यह साहब उठे और लोगों से उसके लिऐ मांगा, लेकिन कहीं से कुछ न मिला। (कि जो आदमी कसरत से मांगता रहता हो, उसको मिलना भी मुश्किल हो जाता है) यह सबसे मायूस होकर एक सख़ी की क़ब्र पर गये और उसकी क़ब्र पर बैठ कर यह सारा क़िस्सा बयान किया और वहां से उठकर चले आये और वापस आकर अपने पास से एक दीनार निकाला, उसको तोड़ कर दो टुकड़े किये और एक टुकड़ा अपने पास रख लिया, दूसरा उस फ़क़ीर को दे दिया कि मैं क़र्ज़ देता हूं, इस वक़्त तुम इससे अपना काम चला लो, जब तुम्हारे पास कहीं से कुछ आ जाये तो मेरा क़र्ज़ अदा कर देना। वह लेकर चला गया और अपनी ज़रूरत पूरी कर ली।

रात को उन साहिबे दीनार ने उस क़ब्र वाले को ख़्वाब में देखा, वह कह रहा है कि मैं ने तुम्हारी बात तो सारी सुन ली थी मगर मुझे जवाब देने की इजाज़त न हुई, तुम मेरे घर वालों के पास जाओ और उनसे कहो कि मकान के फ़लां हिस्से में जो चूल्हा बन रहा है, उसके नीचे एक चीनी का मर्तबान गड़ रहा है, उसमें पांच सौ अशर्फ़ियां हैं, वे उस फ़क़ीर को दे दें। यह सुबह को उठकर उसके मकान पर गये और घर वालों से सारा क़िस्सा और अपना ख़्वाब ब्यान किया। उन्होंने उस जगह को खोदा और वह मर्तबान पांच सौ अशर्फ़ियों का निकाल कर उसके हवाले कर दिया।

उस शख़्स ने कहा कि ख़्वाब कोई शरअी चीज़ नहीं है, तुम लोग इस

माल के वारिस और मालिक हो, इसलिए मैं महज़ अपने ख़्वाब की वजह से इसको नहीं लेता, मगर उन वारिसों ने इसरार किया कि जब वह मर कर सख़ावत करता है तो बड़ी बेग़ैरती है कि हम ज़िन्दा सख़ावत न करें। उनके इसरार पर उसने वे अशर्फ़ियां लेकर उस फ़क़ीर को दे दीं और सारा क़िस्सा सुनाया। उसने उनमें से एक दीनार लेकर उसके दो टुकड़े कर दिये, एक उन साहब को अपने क़र्ज़ की अदायगी में दिया और दूसरा टुकड़ा अपने पास रख कर कहा कि मेरी ज़रूरत को तो यह काफ़ी है, बाक़ी यह सब रक़म मेरी ज़रूरत से ज़ायद है, मैं इसको लेकर क्या करूँगा?

वह सब फ़ुक़रा पर तक़्सीम कर दी। साहिबे इत्तिहाफ़ कहते हैं कि इस क़िस्से में ग़ौर करने की चीज़ यह है कि सबसे ज़्यादा सख़ी कौन है? मय्यित या उसके घर वाले या वह फ़क़ीर, और हमारे नज़दीक तो यह फ़क़ीर सबसे ज़्यादा सख़ी है कि अपनी इस शिद्दते हाजत के बावजूद निस्फ़ (आधे) दीनार से ज़्यादा लेना पसंद न किया।

(इत्तिहाफ़)

25. अबू इस्हाक़ इब्राहीम बिन अबी हिलाल रह० मीर मुन्शी कहते हैं कि मैं एक मर्तबा वज़ीर अबू मुहम्मद महलबी के पास बैठा था, दरबान ने आकर इत्तिला दी कि सैय्यद शरीफ़ मुर्तज़ा रह० हाज़िरी की इजाज़त चाहते हैं। वज़ीर साहब ने इजाज़त दे दी और जब शरीफ़ मुर्तज़ा रह० अंदर आ गये तो वज़ीर साहब खड़े हुए और बड़े एज़ाज़ व इकराम से उनको अपनी मसनद पर बिठाया, उनसे बातें कीं और जब वह जाने लगे तो खड़े होकर उनको रूख़्सत किया, वह चले गये।

थोड़ी ही देर गुज़री थी कि दरबान ने आकर इत्तिला दी कि उनके छोटे भाई सैय्यद शरीफ़ रज़ी हाज़िरी की इजाज़त चाहते हैं। वज़ीर साहब उस वक़्त कुछ लिखने में मशग़ूल हो गये थे, उस पर्चे को जल्दी से डाल कर उठे और दरवाज़े तक हैरत ज़दा होकर गये और उनका हाथ बड़ी ताज़ीम, तकरीम से पकड़ा। उनको अपने साथ लाकर अपनी मसनद पर बिठाया और ख़ुद तवाज़ोअ् से उनके सामने बैठे और बातचीत बड़ी तवज्जोह से करते रहे और जब वह उठ कर जाने लगे तो दरवाज़े तक उन को पहुँचाने गये और वापस आकर अपनी जगह बैठ गये।

उस वक़्त तो वज़ीर साहब के पास मजमा था, मेरी कुछ पूछने की हिम्मत न हुई। जब मजमा कम हो गया तो मैं ने वज़ीर साहब से अर्ज़ किया कि

मैं एक बात दर्याफ़्त करना चाहता हूँ, अगर इजाज़त हो तो अर्ज़ करूँ। वज़ीर ने कहा, ज़रूर इजाज़त है और ग़ालिबन तुम यह पूछोगे कि मैं ने छोटे भाई का जितना इकराम किया उतना बड़े का नहीं किया? हालांकि वह इल्म और उम्र दोनों में उनसे बढ़े हुए थे, मैं ने कहा हां, यही सवाल है।

वज़ीर ने कहा सुनो, हमने एक नहर खोदने का हुक्म दिया था, उसके क़रीब शरीफ़ मुर्तज़ा की ज़मीन भी थी जिसकी वजह से उस नहर के मसारिफ़ में से सोलह दिरम के क़रीब हिस्सा रसद उनके ज़िम्मे भी पड़े थे, उन्होंने मुझे कई मर्तबा पर्चा लिखा कि इसमें से कुछ कम कर दूँ इतनी ज़रा सी रक़म के लिए बार बार वह मुझ से सवाल करते रहे, और सैय्यद रज़ी के मुताल्लिक़ मुझे एक दफ़ा मालूम हुआ कि उनके घर लड़का पैदा हुआ। मैं ने उसकी ख़ुशी में और उनकी ज़रूरत का ख़्याल करके एक ख़्वांची में सौ दीनार (अशर्फ़ियां) उनकी ख़िदमत में भेजे, उन्हों ने वापस कर दिये और यह कह कर भेजा कि वज़ीर साहब से (शुक्रिये के बाद) कह दें कि मैं लोगों की अतायें क़ुबूल नहीं करता (अल्लाह का शुक्र है मेरी ज़रूरत के बक़द्र मेरे पास मौजूद है) मैं ने फिर दोबारा वह ख़्वान भेजा कि यह दाया वग़ैरह काम करने वाली औरतों के लिये भेजा है। उन्हों ने फिर वापस कर दिया और यह फ़रमाया कि मेरे घर की औरतें भी दूसरों से कुछ लेने की आदी नहीं हैं। मैं ने तीसरी मर्तबा फिर भेजा और यह अर्ज़ किया कि जनाब के पास जो तलबा रहते हैं, ये उनके लिए हैं, फ़रमाया बड़ी ख़ुशी है और वह ख़्वान उन तलबा के दर्मियान रखवा दिया कि जिसको जितनी ज़रूरत हो ले ले।

शरीफ़ रज़ी रह० के यहां तलबा का बड़ा मजमा रहता था, एक मकान उन्हों ने तलबा के रहने के लिए बना रखा था, जिसका नाम दारूल उलूम रखा था, उसमें ये तलबा रहते थे और उनकी ज़रूरियात का शरीफ़ रज़ी रह० की तरफ़ से इंतिज़ाम था।

यह ख़्वान दारूल उलूम में रखने के बाद तलबा में से कोई भी न उठा। बजुज़ एक तालिब इल्म के कि उसने उठ कर ख़्वान में से एक दीनार निकाला और उसको वहीं तोड़ कर ज़रा सा कोना उसका अपने पास रख लिया और बाक़ी हिस्सा उसी ख़्वान में डाल दिया। शरीफ़ रज़ी रह० ने उस तालिब इल्म से दर्याफ़्त किया कि तुम्हें यह ज़रा सी मिक़्दार किस काम के वास्ते दरकार थी? उसने अर्ज़ किया कि एक रात मेरे पास चिराग़ में जलाने को तेल नहीं था,

ख़ज़ांची साहब मिले नहीं, मैं फ़लां दुकानदार से तेल क़र्ज़ लाया था, यह उसका क़र्ज़ अदा करना है।

शरीफ़ रज़ी रह॰ ने यह ख़बर सुन कर तलबा की तायदाद के मुवाफ़िक़ अपने ख़ज़ाने की कुंजियां बनवायीं और हर तालिब इल्म को एक एक कुंजी ख़ज़ाने की दे दी कि जिसको जब जितनी ज़रूरत हो ले ले, ख़ज़ांची साहब से पूछने की ज़रूरत नहीं, और उस ख़्वान को उसी हाल में कि एक दीनार उसमें से ज़रा सा टूटा हुआ था, वापस कर दिया। यह क़िस्सा सुन कर वज़ीर साहब ने कहा कि तुम ही बताओ कि मैं ऐसे शख़्स का इकराम क्यों न करूं। *(इत्तिहाफ़)*

26. हज़रत इमाम शाफ़ई साहब रह॰ का जब इंतिक़ाल होने लगा तो आपने वसीयत फ़रमायी कि मेरा ग़ुस्ले मय्यित मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन अब्दुल हकीम देंगे। जब आपका इंतिक़ाल हो गया तो मुहम्मद रह॰ को इत्तिला दी गयी, वह तशरीफ़ लाये और फ़रमाया कि उनके हिसाब का रजिस्टर पहले मुझे दिखाओ। रजिस्टर लाया गया, उसमें हज़रत इमाम के ज़िम्मे जो क़र्ज़ा लोगों का था, वह सब हिसाब करके जमा किया, उसकी मिक़्दार सत्तर हज़ार दिरम थी। मुहम्मद रह॰ ने फ़रमाया कि यह सब क़र्ज़ा मेरे ज़िम्मे है। अपनी ज़िम्मेदारी का काग़ज़ लिख दिया और फ़रमाया कि मेरे ग़ुस्ल देने से यही मुराद थी और इसके बाद उस सारे क़र्ज़े को अदा कर दिया। *(इत्तिहाफ़)*

27. हज़रत इमाम शाफ़ई रह॰ फ़रमाते हैं कि हम्माद बिन अबी सुलैमान रह॰ से (जो हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा रह॰ के मशहूर उस्ताद हैं,) हमेशा मुहब्बत रही, इस वजह से कि मुझे उनका एक वाक़िआ मालूम हुआ था और वह यह था कि वह एक दिन गधे पर सवार जा रहे थे, उसके एड़ मारी, वह ज़ोर से दौड़ा तो उसके झटके से हज़रत हम्माद रह॰ के कुर्ते की घुन्डी टूट गयी। रास्ते में एक दर्ज़ी की दुकान नज़र पड़ी, उसको सिलवाने के लिए उतरने लगे। दर्ज़ी ने कहा, उतरने की ज़रूरत नहीं, मामूली सा काम है, मैं अभी लगाये देता हूं। दर्ज़ी ने खड़े होकर वह घुंडी कुर्ते में सी दी। हम्माद रह॰ ने उसकी उज्रत में एक थैली दी, जिसमें दस अशर्फ़ियां थीं और मुआवज़े की कमी की माज़िरत की। *(इत्तिहाफ़)*

28. रबीअ् बिन सुलैमान रह॰ कहते हैं कि हज़रत इमाम शाफ़ई रह॰ एक मर्तबा सवारी पर सवार हो रहे थे, एक शख़्स ने जल्दी से रकाब पकड़ ली (ताकि चढ़ने में सहूलत हो) हज़रत इमाम ने मुझसे फ़रमाया कि मेरी तरफ़ से

इस शख़्स को चार अशर्फ़ियां दे दो और कमी की माज़िरत भी कर देना।

और अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर हमीदी रह० कहते हैं कि एक मर्तबा हज़रत इमाम शाफ़ई रह० हज के लिए तशरीफ़ ले गये। दस हज़ार अशर्फ़ियां आपके पास थीं। मक्का मुकर्रमा से बाहर आपका ख़ेमा लगा हुआ था। सुबह की नमाज़ के बाद आपने वहीं ख़ेमे में एक कपड़ा बिछा कर वे अशर्फ़ियां उस पर डाल दीं और (अहले मक्का में से) जो जो मिलने के लिए आता रहा, एक एक मुट्ठी उसको देते रहे। ज़ुहर के वक़्त तक वे सब ख़त्म हो गयीं। *(इत्तिहाफ़)*

29. मुहम्मद बिन इबाद महलबी रह० कहते हैं कि मेरे वालिद एक मर्तबा मामून रशीद के पास गये। उसने एक लाख दिरम नज़राना पेश किया, वहां से जब उठकर आये तो वह सब उसी वक़्त फ़ुक़रा पर तक़्सीम कर दिया। इसके बाद फिर जब मामून के पास जाने की नौबत आयी तो उसने सब तक़्सीम कर देने पर नागवारी का इज़्हार किया तो वालिद साहब ने फ़रमाया कि अमीरूल मोमिनीन मौजूद के साथ बुख़्ल करना माबूद के साथ बदगुमानी है (कि उसने एक मर्तबा तो दे दिया, फिर कहां से देगा?) *(इत्तिहाफ़)*

30. हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह अलफ़य्याज़ सहाबी रज़ि० मशहूर सख़ी लोगों में से हैं। उनके ज़िम्मे एक मर्तबा हज़रत उस्मान रज़ि० के पचास हज़ार दिरम क़र्ज़ हो गये थे। हज़रत उस्मान रज़ि० मस्जिद में तशरीफ़ ले जा रहे थे। रास्ते में मिले। उन्हों ने अर्ज़ किया कि मेरे पास दाम इस वक़्त आ गये हैं, आपका क़र्ज़ा अदा करना चाहता हूँ। हज़रत उस्मान रज़ि० ने फ़रमा दिया कि बस वह तुम्हारी ही नज़्र है। तुम्हारे ज़िम्मे लोगों के बहुत इख़राजात रहते हैं।

जाबिर बिन क़बीसा रह० कहते हैं कि मैं बहुत दिन तक हज़रत तलहा रज़ि० के साथ रहा, बिला तलब अता करने वाला मैं ने उनसे ज़्यादा नहीं देखा। हज़रत हसन रज़ि० कहते हैं कि एक मर्तबा उन्होंने एक ज़मीन सात लाख में फ़रोख़्त की। क़ीमत जब वसूल हुई तो शाम का वक़्त हो गया था, वह रक़म रात को उनके पास रही, रात भर सख़्त बेचैनी में जागते गुज़र गयी, इस ख़ौफ़ से कि यह माल मेरे पास है (कहीं मौत न आ जाये) सुबह को उठ कर सबसे पहले उसको तक़्सीम किया।

उनकी बीवी हज़रत सअदी बिन्त औफ़ रज़ि० कहती हैं कि मैं ने एक मर्तबा उनको देखा कि बहुत गरानी सी हो रही है। मैं ने पूछा, ख़ैरियत तो है,

कैसी तबीअत हो रही है? कहने लगे मेरे पास कुछ माल जमा हो गया, उसकी वजह से बड़ी घुटन हो रही है? मैं ने कहा यह तो कुछ ऐसी बात नहीं है, ग़ुलाम को भेज कर अपने रिश्तेदारों को बुला लीजिए और (सिला रहमी में) उन पर तक़्सीम कर दीजिए। चुनांचे उन्होंने उसी वक़्त ग़ुलाम को भेज कर आदमियों को बुलाया और उसको तक़्सीम कर दिया। रावी कहते हैं कि मैं ने उनके ख़ादिम से पूछा, यह कितना माल था? उसने बताया चार लाख था।

उनकी बीवी एक और वाक़िआ यह बयान करती हैं कि एक दफ़ा वह घर में आये, चेहरा बहुत ही उतरा हुआ, रंज की वजह से स्याही चेहरे पर आ रही थी। मैं ने पूछा क्या बात है? कुछ मेरी तरफ़ से कोई नागवारी की बात पेश आयी हो तो मैं माफ़ी की दर्ख़्वास्त पेश करूँगी। कहने लगे नहीं तू तो मुसलमान के लिए बहुत बेहतरीन बीवी है। (कि नेक काम में मदद करती है) मैं ने पूछा फिर आख़िर क्या बात पेश आ गयी? कहने लगे, कुछ माल जमा हो गया, मुझे उसकी बड़ी बेचैनी हो रही है। मैनें कहा, इसमें तो कोई ऐसी बात नहीं, उसे उठाकर बांट दो। इसमें क्या हो गया। बाज़ मर्तबा कोई लेने वाला नहीं आता था, तो वह रह जाता था।

उनकी बीवी सअ्दी यह भी कहती हैं कि एक मर्तबा उन्हों ने एक लाख तक़्सीम किया और अपना यह हाल था कि उस दिन मस्जिद में इस वजह से जाने में देर हो गयी कि उनके पास जो कपड़ा था (चादर) उसके दोनों किनारे सीने में मुझे देर लगी (यानी वही एक कपड़ा था, उसके सिलने के इंतिज़ार में बैठे रहे, दूसरा कपड़ा न था जिसको पहन कर मस्जिद में चले जाते।)

एक गांव के रहने वाले हज़रत तलहा रज़ि॰ के पास आये और अपनी क़राबत का वास्ता देकर (सिला रहमी के तौर पर) कुछ मांगा। फ़रमाने लगे क़राबत का वास्ता देकर आज तक मुझसे किसी ने नहीं मांगा था। मेरे पास एक ज़मीन है, हज़रत उस्मान रज़ि॰ उसको ख़रीदना चाहते थे और वह उसकी क़ीमत तीन लाख लगा चुके हैं, तेरा दिल चाहे तो वह ज़मीन ले ले, और अगर नक़्द चाहिए तो मैं उसको उनके हाथ फ़रोख़्त करके उसकी क़ीमत दे दूं। उसने क़ीमत लेना पसंद किया। उन्होंनें हज़रत उस्मान रज़ि॰ के हाथ उसको फ़रोख़्त करके उसकी क़ीमत उसको दे दी। *(इत्तिहाफ़)*

इन हज़रात के पास ज़मीनों की बहुत कसरत थी, इसलिए कि जहां जहां

जिहाद में जाते, वे मुल्क फ़तह होते तो अक्सर ग़नीमत के साथ ज़मीनें भी उन मुजाहिदीन पर तक़सीम कर दी जाती थीं।

31. एक मर्तबा हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू बैठे रो रहे थे, किसी ने रोने का सबब पूछा तो फ़रमाया कि सात दिन से कोई मेहमान नहीं आया, मुझे यह डर है कि कहीं हक़ तआला शानुहू ने (किसी बात से नाराज़ होकर) मेरे ज़लील करने का तो इरादा नहीं फ़रमा लिया। *(इत्तिहाफ़)*

32. एक मर्तबा एक शख़्स अपने एक दोस्त के पास गया और जाकर कहा कि मेरे ज़िम्मे चार सौ दिरम क़र्ज़ हो गया, तुझसे मदद चाहने आया हूँ। उसने फ़ौरन चार सौ दिरम वज़न करके दिये। जब वह चला गया तो उसने रोना शुरू कर दिया। बीवी को यह ख़्याल हुआ कि शायद इसको माल के जाने का सदमा हुआ, वह कहने लगी कि अगर इतनी गरानी थी तो देने ही की क्या ज़रूरत थी, वह कहने लगा कि मैं इस पर रो रहा हूँ कि मैं ने उसके साथ ताल्लुक़ात के बावजूद उसके हाल की ख़बर ख़ुद क्यों न रखी? उसको मुझ से मांगने की नौबत क्यों आयी? *(इत्तिहाफ़)*

33. हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ि॰ एक मर्तबा जंगल में तशरीफ़ ले जा रहे थे, रास्ते में एक बाग़ पर गुज़र हुआ, वहां एक हब्शी ग़ुलाम बाग़ में काम कर रहा था, उसकी रोटी आयी और उसके साथ ही एक कुत्ता भी बाग़ में चला आया और उस ग़ुलाम के पास आकर खड़ा हो गया। उस ग़ुलाम ने काम करते करते एक रोटी उस कुत्ते के सामने डाल दी। उस कुत्ते ने उसको खा लिया और फिर खड़ा रहा, उसने दूसरी फिर तीसरी रोटी भी डाल दी। कुल तीन ही रोटियां थीं, वे तीनों कुत्ते को खिला दीं।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ि॰ ग़ौर से खड़े देखते रहे, जब वे तीनों ख़त्म हो गयीं तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ि॰ ने उस ग़ुलाम से पूछा कि तुम्हारी कितनी रोटियां रोज़ाना आती हैं? उसने अर्ज़ किया आपने तो मुलाहज़ा फ़रमा लिया, तीन ही आया करती हैं। हज़रत ने फ़रमाया कि फिर तीनों का ईसार क्यों कर दिया? ग़ुलाम ने कहा, हज़रत यहां कुत्ते रहते नहीं हैं, यह ग़रीब भूखा कहीं दूर से मुसाफ़त तै करके आया है इसलिए मुझे अच्छा न लगा कि इस को वैसे ही वापस कर दूँ। हज़रत ने फ़रमाया कि तुम आज क्या खाओगे? ग़ुलाम ने कहा, एक दिन का फ़ाक़ा कर लूँगा, यह तो कोई ऐसी बड़ी बात नहीं।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ि॰ ने अपने दिल में सोचा कि लोग मुझे मलामत करते हैं कि तू बहुत सख़ावत करता है, यह ग़ुलाम तो मुझ से बहुत ज़्यादा सख़ी है। यह सोच कर शहर में वापस तशरीफ़ ले गये और उस बाग़ को और ग़ुलाम को और जो कुछ सामान बाग़ में था, सब को उसके मालिक से ख़रीदा और ख़रीद कर ग़ुलाम को आज़ाद किया और वह बाग़ उस ग़ुलाम की नज़्र कर दिया। (इत्तिहाफ़)

34. अबुल हसन अन्ताकी रह॰ ख़ुरासान के शहरों में एक जगह रै है, वहां रहते थे। एक दिन तीस आदमियों से ज़्यादा मेहमान आ गये और रोटी थोड़ी थी, तैयारी का मौक़ा न था, रात का वक़्त था। उन्हों ने जितनी रोटियां मौजूद थीं, सब के टुकड़े किये और दस्तरख़्वान पर उन को फैला कर सबको बिठाया और चिराग़ गुल कर दिया और सब के सब ने खाना शुरू कर दिया। सबके मुंह चलाने की आवाज़ आती थी, जब देर हो गयी और गोया सब बिल्कुल फ़ारिग़ हो गये तो चिराग़ लाया गया और दस्तरख़्वान उठाया गया, उसमें वे सारे टुकड़े बदस्तूर रखे थे सब ही ख़ाली मुंह चलते रहे, किसी ने भी इस ख़्याल से न खाया कि अच्छा है, दूसरे ही का काम चल जायेगा। (इत्तिहाफ़)

35. हज़रत शौअ्बा रह॰ मशहूर मुहद्दिस हैं, अमीरूल मोमिनीन फ़िल हदीस (हदीस में मोमिनों के बादशाह) उनका लक़ब है, बड़े आबिद ज़ाहिद लोगों में थे। एक मर्तबा एक साइल उनके पास हाज़िर हुआ, देने के लिए कोई चीज़ मयस्सर न हुई, अपने मकान की छत में से एक कड़ी निकाल कर उसके हवाले की (कि इसको फ़रोख़्त कर लेना) और उससे बहुत माज़िरत की कि इस वक़्त मेरे पास देने को कुछ है नहीं। (इत्तिहाफ़)

36. हज़रत अबू सहल सालूकी रह॰ एक मर्तबा वुज़ू कर रहे थे, एक शख़्स आया और कुछ ज़रूरत का इज़्हार किया। देने के वास्ते कोई चीज़ मौजूद नहीं थी, फ़रमाने लगे, थोड़ी देर इंतिज़ार कर लो, मैं वुज़ू से फ़ारिग़ हो जाऊं। जब वुज़ू कर चुके तो फ़रमाया कि यह लकड़ी का लोटा जिससे वुज़ू कर रहे थे, ले जाओ और कोई चीज़ इस वक़्त है नहीं। (इत्तिहाफ़)

37. यर्मूक की लड़ाई में सहाबा-ए-किराम रज़ि॰ की एक बड़ी जमाअत ने पानी के मौजूद होते हुए इस वजह से प्यासे जान दे दी कि जब उनके क़रीब पानी पहुँचा तो किसी दूसरे ने आह कर दी और उसने बजाए अपने पीने के दूसरे

की तरफ़ पानी ले जाने का इशारा कर दिया। एक वाक़िआ इसका हिकायाते सहाबा रज़ि० में लिखा जा चुका है मगर असहाबे मग़ाज़ी ने लिखा है कि हज़रत इकरमा रज़ि० बिन अबी जहल, सुहैल बिन अमर रज़ि०, सहल बिन हारिस रज़ि०, हारिस बिन हिशाम रज़ि० और क़बीला मुग़ीरा की एक जमाअत ने इसी तरह प्यासे दम तोड़ा कि उनके पास पानी लाया जाता था और ये दूसरे की तरफ़ इशारा कर देते थे।

हज़रत इकरमा रज़ि० के पास पानी लाया गया तो उन्हों ने देखा कि हज़रत सुहैल बिन अम्र रज़ि० पानी की तरफ़ देख रहे हैं, उन्हों ने फ़रमा दिया पहले सुहेल (रज़ि०) को पिला दो, जब उनके पास ले गये तो, उन्हों ने देखा कि हज़रत सहल बिन हारिस रज़ि० पानी की तरफ़ देख रहे हैं, उन्हों ने फ़रमा दिया कि पहले सहल को पिला दो, ग़रज़ इन सब हज़रात ने प्यासे ही जान दे दी।

हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि० जब इनकी लाशों पर गुज़रे तो फ़रमाने लगे कि तुम पर मेरी जान क़ुर्बान हो जाये (तुमसे इस वक़्त भी ईसार न छुटा)

(इत्तिहाफ़)

38. अब्बास बिन दहक़ान रह० कहते हैं कि बिश्र बिन हारिस हाफ़ी रह० के अलावा कोई शख़्स ऐसा न होगा जो कि जिस हाल में दुनिया में आया था यानी ख़ाली हाथ, नंगा बदन ऐसा ही दुनिया से गया हो। बिश्र बिन हाफ़ी रह० अलबत्ता इसी तरह गये कि वह बीमार थे, विसाल का वक़्त क़रीब था, एक साइल आ गया और अपनी ज़रूरत का हाल ज़ाहिर किया जो कुर्ता बदन पर था, वह निकाल कर उसको बख़्श दिया और खुद थोड़ी देर के लिए दूसरे से कुर्ता मुस्तआर मांगा और उसी में विसाल फ़रमाया। *(इत्तिहाफ़)*

39. कौन कहता है कि ये वाक़िआत पिछले ही बुज़ुर्गों के साथ ख़ास थे। हज़रत अक़्दस मौलाना अलहाज्ज शाह अब्दुर्रहीम साहब रायपूरी क़द्दस सिर्रहू के विसाल को ज़्यादा ज़माना नहीं गुज़रा, हज़रत रह० का मामूल था कि जो कुछ कहीं से आता, वह फ़ौरन ही तक़्सीम फ़रमा देते और कभी कभी तकिये के नीचे कुछ रखा हुआ देख कर फ़रमाते कि यह और आ गया, और विसाल से कुछ ज़माना पहले अपने सब कपड़ों को ख़ुद्दाम पर तक़्सीम फ़रमा दिये थे और अपने मुख़्लिस ख़ादिम (ख़लीफ़ा-ए-ख़ास) हज़रत मौलाना अलहाज्ज शाह अब्दुल क़ादिर साहब दाम मज्दुहम व ज़ाद फ़ज़्लु हुम से इर्शाद फ़रमाया कि बस अब

ज़िन्दगी के जितने दिन बाक़ी हैं, तुमसे कपड़े मुस्तआर लेकर पहन लिया करेंगे, चुनांचे हज़रत मौलाना ही के कपड़े आख़िर में इस्तेमाल फ़रमाते थे।

40. एक बुज़ुर्ग कहते हैं कि हम चंद आदमी तर्तूस में, जो मुल्क शाम का एक शहर है, जमा होकर बाहर जा रहे थे, चलते हुए एक कुत्ता भी हमारे साथ हो गया, जब हम शहर से बाहर निकले तो एक मरा हुआ जानवर पड़ा था, हम लोग उससे बच कर ज़रा फ़ासले से एक ऊँची जगह पर बैठ गये। वह कुत्ता जो हमारे साथ हो गया था, उसने जब उस मुर्दार को देखा तो शहर की तरफ़ वापस हो गया और थोड़ी ही देर गुज़री थी कि वह अपने साथ तक़रीबन बीस कुत्ते और लाया और उस मुर्दार के पास आकर वह ख़ुद तो अलाहिदा को बैठ गया और सब कुत्ते उसको खाते रहे। जब वे सब खाकर शहर की तरफ़ चले गये तो यह कुत्ता जो बुलाने गया था, अपनी जगह से उठा और उसके पास आकर जो हड्डियां वग़ैरह वे सब खाकर छोड़ गये थे, उनको उसने खाया और फिर शहर की तरफ़ चला गया। *(इत्तिहाफ़)*

41. अबुल हसन बूशन्जी एक बुज़ुर्ग थे। एक मर्तबा पाख़ाने में जा चुके थे, वहीं से एक शागिर्द को आवाज़ दी और अपना कुर्ता निकाल कर कहा कि यह फ़लां फ़क़ीर को दे आओ। शागिर्द ने कहा कि आप इस्तिंजे से फ़राग़त का इंतिज़ार कर लेते। कहने लगे कि मुझे उसकी ज़रूरत का ख़्याल आकर यह इरादा हुआ कि कुर्ता उसको दे दूँ, और अपने नफ़्स पर इसका ऐतिमाद नहीं था कि वह इस्तिंजे से फ़राग़त तक बदल न जाये। *(इत्तिहाफ़)*

पाख़ाने में बोलना मक्रूह है लेकिन सदक़ा करने के जज़्बे और अपने नफ़्स पर बदगुमानी ने इस पर मजबूर कर दिया या उस वक़्त तक कश्फ़े औरत ही न हुआ हो (यानी सतर नहीं खोला था)।

42. अमीरूल मोमिनीन मेहदी ने मूसा बिन जाफ़र रह० को बग़ावत के अंदेशे से क़ैद कर रखा था। एक मर्तबा रात को वह तहज्जुद की नमाज़ पढ़ रहे थे, उसमें सूर: मुहम्मद की आयत-

فَهَلْ عَسَيْتُمْ إِنْ تَوَلَّيْتُمْ أَنْ تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ وَتُقَطِّعُوا أَرْحَامَكُمْ ○ (الآية)

"फ़-हल् अ-सै तुम् इन्-त-व ल्लै तुम् अन् तुफ़्सिदू फ़िल् अर्ज़ि व तु क़त्तिअू अर्हाम-कुम०"

पर पहुँचे और यहां पहुँच कर रोने लगे। इस आयते शरीफ़ा को बार बार

पढ़ते और रोते थे। सलाम फेर कर रबीअ रह० से कहा कि मूसा को बुला कर लाओ। रबीअ् रह० कहते हैं कि मैं उनको बुला कर लाया और जब वापस आया तो तब भी वह इसी आयत को बार बार पढ़ रहे थे और रो रहे थे।

जब मूसा आये तो मेहदी ने कहा कि मैं यह आयत पढ़ रहा था, मुझे यह अंदेशा हुआ कि मैं ने क़तअ-ए-रहमी कर रखी है, अगर तू इसका वायदा करे कि मेरी औलाद के ख़िलाफ़ बग़ावत नहीं करेगा तो मैं छोड़ दूँ। मूसा ने कहा, मेरी तो ऐसी हैसियत भी नहीं है और न इसका ख़्याल है। मेहदी ने रबीअ् रह० से कहा कि इसको इसी वक़्त तीन हज़ार अशर्फ़ियां देकर इसी वक़्त रात ही को चलता कर दो, ऐसा न हो कि फिर कहीं मेरी राय बदल जाये। *(इत्तिहाफ़)*

43. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० से नक़ल किया गया कि हज़रत हसन, हज़रत हुसैन रज़ि० एक मर्तबा बहुत बीमार हो गये तो हज़रत अली और हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने नज़्र (मन्नत) मानी की अगर ये तन्दुरूस्त हो जायें तो शुक्राने के तौर पर तीन तीन रोज़े दोनों हज़रात रखेंगे। अल्लाह तआला शानुहू के फ़ज़्ल से साहब ज़ादों को सेहत हो गयी। उन हज़रात ने शुक्राने के रोज़े रखना शुरू फ़रमा दिये, मगर घर में न सहर के लिए कुछ था, न इफ़्तार के लिए। फ़ाक़े पर रोज़ा शुरू कर दिया।

सुबह को हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू एक यहूदी के पास तशरीफ़ ले गये, जिसका नाम शमऊन था कि अगर तू कुछ ऊन धागा बनाने के लिए उज्रत पर दे दे तो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बेटी इस काम को कर देगी। उसने ऊन का एक गटठर तीन साअ् जौ की उज्रत तै करके दे दिया। हज़रत फ़ातिमा रज़ि० ने उसमें से एक तिहाई काता और एक साअ् जौ उज्रत के लेकर उनको पीसा और पांच नान उसके तैयार किये। एक एक अपना मियां बीवी का, दो दोनों साहबज़ादों के और एक बांदी का, जिसका नाम फ़िज़्ज़ा था। रोज़े में दिन भर की मज़दूरी और मेहनत के बाद जब हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू हुज़ूर सल्ल०. के साथ मग़रिब की नमाज़ पढ़ कर लौटे और खाना खाने के लिए दस्तर ख़्वान बिछाया गया, हज़रत अली रज़ि० ने टुकड़ा तोड़ा ही था कि एक फ़क़ीर ने दरवाज़े से आवाज़ दी कि ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के घर वालो, मैं एक फ़क़ीर मिस्कीन हूँ मुझे खाना दे दो, अल्लाह जल्ल शानुहू तुम्हें जन्नत के दस्तरख़्वान में खाना खिलाये। हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू ने हाथ रोक लिया, हज़रत फ़ातिमा रज़ि० से मशवरा किया, उन्हों ने

फ़रमाया ज़रूर दे दीजिये। वे सब रोटियां उसको दे दीं और घर वाले सब के सब फ़ाक़े से रहे। इसी हाल में दूसरे दिन का रोज़ा शुरू कर दिया।

दूसरे दिन में फिर हज़रत फ़ातिमा रज़ि॰ ने दूसरी तिहाई ऊन काती और एक साअ् जौ की उजूरत लेकर उसको पीसा, रोटियां पकाईं और जब हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू हुज़ूर सल्ल॰ के साथ मग़िरब की नमाज़ पढ़कर तशरीफ़ लाये और सब के सब खाने के लिए बैठे तो एक यतीम ने दरवाज़े से सवाल किया और अपनी तंहाई और फ़क़्र का इज़्हार किया, उन हज़रात ने उस दिन की रोटियां उसके हवाले कर दीं और खुद पानी पीकर तीसरे दिन का रोज़ा शुरू कर दिया और सुबह को हज़रत फ़ातिमा रज़ि॰ ने ऊन का बाक़ी हिस्सा काता और एक साअ जौ का जो रह गया था, वह लेकर पीसा, रोटियां पकाईं और मग़िरब की नमाज़ के बाद जब खाने बैठे तो एक क़ैदी ने आकर आवाज़ दे दी और अपनी सख़्त हाजत और परेशानी का इज़्हार किया। उन हज़रात ने उस दिन की रोटियां उसको दे दीं और ख़ुद फ़ाक़े से रहे।

चौथे दिन सुबह को रोज़ा तो था नहीं, लेकिन खाने को भी कुछ नहीं था। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु दोनों साहबज़ादों को लेकर हुज़ूर सल्ल॰ की ख़िदमत में हाज़िर हुए, भूख और ज़ोअफ़ की वजह से चलना भी मुश्किल हो रहा था। हुज़ूर सल्ल॰ ने हज़रत अली रज़ि॰ से फ़रमाया कि तुम्हारी तक्लीफ़ और तंगी को देखकर मुझे बहुत तक्लीफ़ होती है, चलो फ़ातिमा के पास चलें।

हुज़ूर सल्ल॰ हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास तशरीफ़ लाये, वह नमाज़ पढ़ रहीं थीं, भूख की शिद्दत से आंखे गड़ गयी थीं, पेट कमर से लग रहा था। हुज़ूर सल्ल॰ ने उनको अपने सीने से लगाया और हक़ तआला शानुहू से फ़रियाद की, इस पर हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम सूरः दहर की आयातः-

وَيُطْعِمُوْنَ الطَّعَامَ عَلٰى حُبِّهٖ مِسْكِيْنًا وَّيَتِيْمًا وَّاَسِيْرًا ۔ (الآية)

"व युत्अिमूनत्त आ-म अला हुब्बिही मिस्कीनंव्-व यतीमंव्-व असीरा॰"

लेकर आये और इस परवाना-ए-ख़ुश्नूदी की मुबारक बाद दी।

(मुसामरात अव्वल)

ये आयात पहली फ़स्ल की आयात के सिलसिले में नं॰ 34 पर गुज़र चुकी हैं, अल्लामा सुयूती रह॰ ने दुर्रे मंसूर में बरिवायत इब्ने मर्दूवियः हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ से मुख़्तसरन यह मज़्मून नक़ल किया है कि ये आयतें हज़रत

अली रज़ि॰ की और हज़रत फ़ातिमा रज़ि॰ की शान में नाज़िल हुई हैं।

44. एक शराबी था, जिसके यहां हर वक्त शराब का दौर रहता था, एक मर्तबा उसके यार अहबाब जमा थे, शराब तैयार थी, उसने अपने एक ग़ुलाम को चार दिरम दिये कि शराब पीने से पहले दोस्तों को खिलाने के लिए कुछ फल ख़रीद कर लाये।

वह ग़ुलाम बाज़ार जा रहा था, रास्ते में हज़रत मंसूर बिन अम्मार बसरी रह॰ की मज्लिस पर गुज़र हुआ, वह किसी फ़क़ीर के वास्ते लोगों से कुछ मांग रहे थे और यह फ़रमा रहे थे कि जो शख़्स इस फ़क़ीर को चार दिरम दे, मैं उसके लिए चार दुआयें करूँगा। उस ग़ुलाम ने वे चारों दिरम उस फ़क़ीर को दे दिये।

हज़रत मंसूर रह॰ ने फ़रमाया कि बता क्या दुआ चाहता है? ग़ुलाम ने कहा कि मेरा एक आक़ा है, मैं उससे ख़लासी यानी आज़ादी चाहता हूँ। हज़रत मंसूर रह॰ ने उसकी दुआ की, फिर पूछा कि दूसरी दुआ क्या चाहता है? ग़ुलाम ने कहा कि मुझे इन दराहिम का बदला मिल जाये। मंसूर रह॰ ने इसकी भी दुआ की, फिर पूछा कि तीसरी क्या दुआ है? ग़ुलाम ने कहा कि हक़ तआला शानुहू मेरे सरदार (को तौबा की तौफ़ीक़ दे और उस) की तौबा को क़ुबूल कर ले। मंसूर रह॰ ने इसकी भी दुआ की, और पूछा कि चौथी क्या है? ग़ुलाम ने कहा कि हक़ तआला शानुहू मेरी और मेरे सरदार की और तुम्हारी और इस मज्मे की, जो यहां हाज़िर है, सब की मग़्फ़िरत फ़रमा दे। हज़रत मंसूर रह॰ ने इसकी भी दुआ की।

इसके बाद वह ग़ुलाम (ख़ाली हाथ) अपने सरदार के पास वापस चला गया (और ख़्याल कर लिया कि बहुत से बहुत इतना ही होगा कि आक़ा मारेगा और क्या होगा) सरदार इंतिज़ार में था ही देख कर कहने लगा कि इतनी देर लगा दी? ग़ुलाम ने क़िस्सा सुनाया। सरदार ने (उनकी दुआओं की बरकत से बजाए ख़फ़ा होने और मारने के) यह पूछा कि क्या क्या दुआयें करायीं? ग़ुलाम ने कहा कि पहली तो यह कि मैं ग़ुलामी से आज़ाद हो जाऊँ, सरदार ने कहा कि मैं ने तुझे आज़ाद कर दिया। दूसरी क्या थी? ग़ुलाम ने कहा कि मुझे इन दिरहमों का बदला मिल जाये, सरदार ने कहा कि मेरी तरफ़ से तुझे चार हज़ार दिरम नज़्र हैं। तीसरी क्या थी? ग़ुलाम ने कहा, हक़ तआला शानुहू तुम्हें (शराब वग़ैरह

फ़िस्क़ व फ़ुजूर) से तौबा की तौफ़ीक़ दे, सरदार ने कहा कि मैं ने (अपने गुनाहों से तौबा कर ली) चौथी क्या थी? गुलाम ने कहा कि हक़ तआला शानुहू मेरी और आपकी और उन बुज़ुर्ग की और सारे मज्मे की मग़्फ़िरत फ़रमा दे, सरदार ने कहा कि यह मेरे इख़्तियार में नहीं है।

रात को सरदार ने ख़्वाब में देखा, कि कोई शख़्स कह रहा है कि जब तूने वे तीनों काम कर दिये जो तेरे इख़्तियार में थे तो क्या तेरा यह ख़्याल है कि मैं वह काम नहीं करूँगा, जो मेरे इख़्तियार में है। मैंनें तेरी और उस गुलाम की और मंसूर (रह०) की और उस सारे मज्मे की मग़्फ़िरत कर दी। *(इत्तिहाफ़)*

45. अब्दुल वह्हाब बिन अब्दुल हमीद सक़फ़ी रह० कहते हैं कि मैं ने एक जनाज़ा देखा, जिसको तीन मर्द और एक औरत लिये जा रहे हैं और कोई आदमी जनाज़े के साथ नहीं था, मैं साथ हो लिया और औरत की जानिब का हिस्सा मैं ने ले लिया। क़ब्रस्तान ले गये, वहां उसके जनाज़े की नमाज़ पढ़ी और उसको दफ़्न करके मैं ने पूछा, यह किसका जनाज़ा था? औरत ने कहा यह मेरा बेटा था। मैं ने पूछा, तेरे मुहल्ले में और कोई मर्द न था जो तेरी जगह जनाज़े का चौथ पाया पकड़ लेता। उसने कहा, आदमी तो बहुत थे लेकिन इसको ज़लील समझ कर कोई साथ न आया, मैं ने पूछा क्या बात थी जिससे ज़लील समझते थे? कहने लगी, यह मुख़न्नस था (हिजड़ा या औरतों जैसी हरकात करने वाला)।

मुझे उस औरत पर तरस आया, मैं उसको अपने साथ अपने घर ले गया और उसको कुछ दिरम और कपड़े और गेहूँ दिये, मैं ने रात को ख़्वाब में देखा कि एक शख़्स इस क़दर हसीन गोया चौदहवीं रात का चांद, निहायत सफ़ेद, उम्दा लिबास पहने हुए आया और मेरा शुक्रिया अदा करने लगा। मैंनें पूछा कि तुम कौन हो? कहने लगा कि मैं वही मुख़न्नस हूँ जिसको तुमने आज दफ़्न किया, मुझ पर हक़ तआला शानुहू ने इस वजह से रहमत फ़रमा दी कि लोग मुझे ज़लील समझते थे। *(इत्तिहाफ़)*

46. मुहम्मद बिन सह्ल बुख़ारी रह० कहते हैं कि मैं मक्का मुकर्रमा के रास्ते में जा रहा था, मैं ने देखा कि एक मग़रिबी शख़्स एक ख़च्चर पर सवार है और उसके आगे एक शख़्स यह ऐलान करता जाता है कि (एक हिमयानी खोई गयी) जो शख़्स हिमयानी का पता बता दे उसको सौ अशर्फ़ियां मैं अपने पास से दूँगा, इसलिए कि उस हिमयानी में अमानतें थीं (हिमयानी, रूपया, अशर्फ़ियां

रखने की लम्बी थैली होती है जो कमर से बांधी जाती है) इस ऐलान पर एक लंगड़ा शख़्स जिसके ऊपर बहुत फटे पुराने कपड़े थे, उस मग़रिबी के पास आया और उससे उस हिमयानी की अलामतें पूछीं कि कैसी थी? मग़रिबी ने उसकी अलामतें बताईं और कहा कि उसमें बहुत से आदमियों की आमनतें रखी हुई हैं।

लंगड़े ने पूछा कि कोई शख़्स यहां ऐसा है कि लिखना पढ़ना जानता हो। मुहम्मद बिन सह्ल ने कहा, मैं जानता हूं। वह लंगड़ा हम तीनों को अपने साथ अलग एक तरफ़ ले गया और एक हिमयानी निकाल कर दिखाई। वह मग़रिबी उसके अंदर की चीज़ें बताता रहा कि दो दाने फ़लां औरत, फ़लां की बेटी के पांच सौ अशर्फ़ियों के बदले में रखे हैं और एक दाना (अदद), फ़लां शख़्स का सौ अशर्फ़ी में रखा है। इसी तरह एक एक चीज़ गिनवाता रहा और मैं उसके अंदर रखी हुई चीज़ों को पढ़ कर बताता रहा कि वह यह है, वह यह है। उस मग़रिबी ने उस हिमयानी की सब चीज़ें शुमार करा दीं और वे सब की सब उसमें से पूरी निकलीं।

जब सब सही सही निकल आया तो उस लंगड़े ने वह हिमयानी मग़रिबी के हवाले कर दी। उसने अपने वायदे के मुवाफ़िक़ अपने पास से सौ दीनार अशर्फ़ियां निकाल कर उस लंगड़े को दिये। उसने लेने से इंकार कर दिया। और यह कहा कि अगर इस हिमयानी की क़द्र मेरी निगाह में दो मेंगनियों के बराबर भी होती तो शायद तुम इसको न पा सकते, ऐसी चीज़ पर क्या मुआवज़ा लूं जिसकी क़ीमत मेरे नज़दीक दो मेंगनियां भी नहीं हैं, और यह कह वह लगंड़ा चल दिया और उन अशर्फ़ियों की तरफ़ निगाह भर कर भी न देखा।

(मुसामरात)

47. बुख़ारा का एक हाकिम बड़ा सख़्त ज़ालिम था, एक दिन वह अपनी सवारी पर चला जा रहा था, रास्ते में एक कुत्ता नज़र पड़ा, जिसको ख़ारिश हो रही थी और सर्दी ने उसको बहुत सता रखा था। बस ज़ालिम की उस पर निगाह पड़ते ही आंखों में आंसू भर आये और अपने एक नौकर से कहा कि इस कुत्ते को मेरे घर ले जाकर मेरे आने तक इसका ख़्याल रखियो, यह कह कर वह अपने काम जहां जा रहा था चला गया। जब वापस आया तो उस कुत्ते को मंगाया और घर के एक कोने में उसको बंधवा दिया, उसके सामने टुकड़ा डाला, पानी रखवाया और उसके बदन पर तेल मलवा कर एक कपड़े की झूल उसके ऊपर डलवाई। उसके क़रीब आग रखवायी ताकि उसकी गर्मी से उस पर

सर्दी का असर ज़ायल हो जाये और इस क़िस्से को दो ही दिन गुज़रे थे कि उस ज़ालिम का इंतिक़ाल हो गया।

एक बुज़ुर्ग ने, जो उसके मज़ालिम और उसकी हालत से ख़ूब वाक़िफ़ थे, उसको ख़्वाब में देखा, उससे पूछा कि क्या गुज़री? उसने कहा कि हक़ तआला शानुहू ने मुझे अपने सामने खड़ा किया और फ़रमाया कि तू कुत्ता था (यानी कुत्तों जैसा काम करता था) इंसानों जैसा काम नहीं करता था इसलिए हमने भी एक कुत्ते ही को तुझको दे दिया (यानी उस ख़ारिशी कुत्ते के तुफ़ैल में तेरी बख़्शिश कर दी) और मेरे ज़िम्मे जो हुक़ूक़ थे, उनका ख़ुद अदा फ़रमाने का इरादा फ़रमा लिया। *(मुसामरात)*

हक़ तआला शानुहू की ज़ात बड़ी करीम है, वह सारे करीमों का मालिक है, बादशाह है, उसके करम तक कोई कहां पहुंच सकता है, किसी शख़्स की कोई अदना सी चीज़ भी उसको पसंद आ जाये तो उस शख़्स का बेड़ा पार है। आदमी उसकी ख़ुशनूदी की तलाश में रहे, न मालूम किस की क्या बात आक़ा को पसंद आ जाये।

48. अबू उमर दमिश्क़ी रह० कहते हैं कि हम चंद आदमी हज़रत अबू अब्दुल्लाह बिन जला रह० के साथ मक्का मुकर्रमा जा रहे थे कई दिन ऐसे गुज़र गये कि खाने की कोई चीज़ मयस्सर न हुई। जंगल में एक औरत मिली, एक बकरी उसके साथ थी, हमने (ख़्याल किया कि इसको ख़रीद कर पका लेंगे इसलिए) उस औरत से पूछा कि इसकी क्या क़ीमत है? उसने कहा पचास दिरम क़ीमत है। हमने कहा, हम पर एहसान कर, कुछ कम कर दे। उसने कहा, पांच दिरम क़ीमत है। हमने कहा कि मज़ाक़ न कर, सही सही क़ीमत बता दे, अभी पचास दिरम कहती थी, अभी पांच दिरम कह दिये। उस औरत ने कहा, वल्लाह मज़ाक़ नहीं करती, तुम ने कहा एहसान कर, काश मुझे इस पर क़ुदरत होती कि मैं कुछ भी क़ीमत इसकी न लेती (लेकिन मैं भी मजबूर हूं, इसलिए पांच भी बमजबूरी कह दिये।)

हज़रत इब्ने जला रह० ने साथियों से पूछा कि तुम सबके पास कितने दिरम हैं, सबका मजमूआ छः सौ दिरम हुए। इब्ने जला रह० ने फ़रमाया कि ये सब इसको दे दो और बकरी भी इसी के पास रहने दो। हमने सब दिरम उसको दे दिये और हमारा सारा सफ़र अल्लाह के फ़ज़्ल से ऐसी राहत से गुज़रा कि हद

नहीं:-

سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ اَسْتَغْفِرُكَ وَاَتُوْبُ اِلَيْكَ

"सुब्हा-न कल्लाहुम्-म व बिहम्दि-क ला इला-ह इल्ला अन्-त अस्तग़्फ़िरू-क व अतूबु इलै क॰"

(मुसामरात)

49. हज़रत इब्राहीम बिन अधम रह॰ ने एक मर्तबा एक शख़्स से दर्याफ़्त किया कि तू अल्लाह का वली बनना चाहता है? उसने कहा कि ज़रूर चाहता हूँ आपने फ़रमाया कि दुनिया और आख़िरत की किसी चीज़ में भी रग़बत न कर और अपने आपको सिर्फ़ हक़ तआला शानुहू के लिए ख़ास कर ले और तू हमातन (पूरी तरह) उसकी तरफ़ मुतवज्जह हो जा, ताकि वह भी हमातन तेरी तरफ़ मुतवज्जह हो जाये और तुझे अपना वली बना ले। *(रौज़)*

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सही अहादीस में हक़ तआला शानुहू का यह इर्शाद वारिद हुआ है कि जो शख़्स मेरी तरफ़ चल कर आता है, मैं उसकी तरफ़ दौड़ कर चलता हूँ, और जो मेरी तरफ़ एक बालिश्त क़रीब होता है, मैं उसकी तरफ़ एक बाअ् (यानी दो हाथ क़रीब होता हूँ)

50. हज़रत जुनैद बग़दादी रह॰ की ख़िदमत में एक शख़्स ने पांच सौ दिरम पेश किये और अर्ज़ किया कि ये अपने ख़ुद्दाम पर तक़्सीम फ़रमा दें। हज़रत ने दर्याफ़्त फ़रमाया कि तुम्हारे पास इनके अलावा और भी कुछ हैं, उसने अर्ज़ किया हज़रत, मेरे पास बहुत से दीनार (अशर्फ़ियां) हैं। हज़रत रह॰ ने दर्याफ़्त फ़रमाया कि तुम यह चाहते हो कि इन में और इज़ाफ़ा हो जाये या नहीं चाहते, उसने अर्ज़ किया कि यह ख़्वाहिश तो ज़रूर है। हज़रत रह॰ ने फ़रमाया कि फिर तो तुम हमसे ज़्यादा मुहताज हो (इसलिए कि हमारे पास जो कुछ है, हम उस पर इज़ाफ़ा नहीं चाहते) इसलिये ये तुम अपने ही पास रखो, यह कह कर वे दराहिम वापस कर दिये, क़ुबूल न फ़रमाये। *(रौज़)*

51. हज़रत अबूदर्दा रज़ि॰ एक मर्तबा (शागिर्दों के मज्मे में) तशरीफ़ रखते थे, उनकी बीवी आयीं और कहने लगीं कि तुम तो इनको लिऐ बैठे हो और घर में आटे की एक चुटकी भी नहीं है।, वह फ़रमाने लगे कि अरी अल्लाह की बंदी, हमारे सामने एक निहायत सख़्त घाटी बड़ी दुश्वार गुज़ार आ रही है, उससे सिर्फ़ वही लोग निजात पा सकेंगे जो बहुत हल्के फुल्के होंगे। बीवी यह बात सुनकर राज़ी ख़ुशी वापस चली गयीं।

एक दफ़ा आपने फ़रमाया कि दुनियादार भी खाते हैं और हम भी खाते हैं, वे भी कपड़ा पहनते हैं और हम भी पहनते हैं और उनके पास जो ज़रूरत से ज़ायद माल है, वे उसको काम में तो लाते नहीं सिर्फ़ देखते हैं कि हां यह माल है, माल को देख हम भी लेते हैं (जो दूसरों के पास होता है, लिहाज़ा देखने में तो हम और वे बराबर हैं, काम में वे भी नहीं लाते हम भी नहीं लाते) लेकिन उनको अपने माल का हिसाब देना पड़ेगा और हम हिसाब से बरी हैं कि हमारे पास है नहीं।

एक मर्तबा फ़रमाने लगे कि हमारे भाई हमारे साथ इंसाफ़ का बर्ताव नहीं करते, हमसे मुहब्बत तो अल्लाह के वास्ते करते हैं और दुनिया में हमसे अलग रहते हैं। अंक़रीब वह दिन आने वाला है कि वे तो इसकी तमन्ना करेंगे कि काश वे हम जैसे होते और हम इसकी तमन्ना नहीं करेंगे कि हम उन जैसे होते। *(रौज़)*

52. एक बुज़ुर्ग की ख़िदमत में एक शख़्स हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया कि मेरे लिये दुआ कर दीजिए, मुझे अह्लो आयाल की कसरत (और आमदनी की क़िल्लत) ने बहुत मजबूर कर रखा है। उन्हों ने फ़रमाया कि जब तेरे घर वाले तुझसे कहें कि हमारे पास न आटा है, न रोटी है, उस वक़्त की तेरी दुआ हक़ तआला शानुहू के यहां मेरी इस वक़्त की दुआ से ज़्यादा क़ाबिले क़ुबूल है।

हज़रत शैख़ रह० ने बिल्कुल सही फ़रमाया कि लोगों को आक़ा से मांगने की क़द्र नहीं है, न उसकी वक़अत क़ुलूब में है, उस करीम के यहां तड़प कर मांगने की बड़ी क़द्र है। और मुज़्तर की दुआ ख़ुसूसियत से क़ुबूल होती है। हक़ तआला शानुहू का इर्शाद है।

اَمَّنْ يُّجِيْبُ الْمُضْطَرَّ اِذَادَعَاهُ (نمل ع٥)

"अम्मंय् युजीबुल् मुज़् तर्-र इज़ा दआहु"

क्या वह ज़ात, जो बेक़रार आदमी की सुनता है, जब वह उसको पुकारता है और उसकी मुसीबत को दूर करता है (भी ऐसी ज़ात है जिसके साथ किसी को शरीक किया जाये)

एक हदीस में है एक शख़्स ने हुज़ूर सल्ल० से पूछा कि आप किस की तरफ़ लोगों को दावत देते हैं? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, उस अल्लाह वह्दहू की तरफ़ कि अगर तुझे कोई मज़र्रत पहुँचे फिर तू उसको पुकारे तो वह तेरी मुसीबत

को ज़ायल कर दे और वह अल्लाह वह्दहू कि अगर तू कहीं रास्ते में सवारी को गुम कर दे फिर उसको पुकारे तो वह तेरी सवारी को तुझ पर लौटा दे और अगर तुझे क़हत से साबिक़ा पड़े फिर तू उस को पुकारे तो वह तेरे लिये रोज़ी उतार दे।

सहीम रह० कहते हैं कि हम हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० के पस बैठे हुए थे, एक लड़की आयी और उसने अपने सरदार से कहा कि आप यहां बैठे हैं, आपके घोड़े को नज़र ने खा लिया, वह घोड़ा हैरान, सरगर्दां घूमता फिर रहा है, किसी झाड़ फूंक करने वाले को ढूँढ कर लाइये। हज़रत अब्दुल्लाह ने फ़रमाया कि किसी झाड़ने वाले की ज़रूरत नहीं, उसके नाक के दाहिने सूराख़ में चार मर्तबा, बायें में तीन मर्तबा यह दुआ पढ़ कर फूंक मारो:-

لَابَاسَ اَذْهِبِ الْبَاسَ رَبَّ النَّاسِ اِشْفِ اَنْتَ الشَّافِیْ لَایَکْشِفُ الضُّرَّ اِلَّا اَنْتَ

"ला बअ्-स अज़्ह-बिल् बअ्-स रब्बन्नासि इश्फ़ि अन्तश्शाफ़ी ला यक्शिफ़ुज़्ज़ुर्-र इल्ला अन्-त०"

तर्जुमा:- कोई ख़ौफ़ की बात नहीं है, ऐ आदमियों के रब, तू इसकी तक्लीफ़ को ज़ायल कर दे और इसको शिफ़ा अता कर दे, तू ही शिफ़ा देने वाला है, तेरे सिवा कोई शख़्स नुक़्सान को हटाने वाला नहीं है।

वह शख़्स गया और थोड़ी देर में वापस आ गया और कहने लगा कि मैं ने आपके कहने के मुवाफ़िक़ किया, वह बिल्कुल अच्छा हो गया, वह खाने भी लगा और पेशाब पाख़ाना भी किया। *(दुर्रे मंसूर)*

यह बात ख़ूब अच्छी तरह दिल में जमा लेना चाहिए और जितनी ज़्यादा दिल में यह बात पुख़्ता हो जायेगी, उतनी ही दीन और दुनिया में काम आने वाली बात है कि नफ़ा और नुक़्सान सिर्फ़ उसी पाक ज़ात वह्दहू ला शरी-क लहू के क़ब्ज़े में है, उसी से अपनी हाजात तलब करना चाहिए, उसी की तरफ़ हर मुसीबत में मुतवज्जह होना चाहिए, सारी दुनिया के क़ुलूब उसी के ताबे हैं।

53. हज़रब इब्राहीम बिन अधम रह० की ख़िदमत में एक शख़्स ने दस हज़ार दिरहम नज़राना पेश किया, उन्हों ने उसके क़ुबूल करने से साफ़ इंकार कर दिया और फ़रमाया कि तुम यह चाहते हो कि दस हज़ार दिरम की वजह से मेरा नाम फ़ुक़रा के दफ़्तर से कट जाये, ख़ुदा की क़सम मैं इसको हरगिज़ गवारा नहीं करता।

इनका यह भी इर्शाद है कि दुनियादार दुनिया में राहत तलाश करते हैं, इस वजह से धोखे में पड़ जाते हैं (भला दुनिया में राहत कहां) अगर इन लोगों को यह मालूम हो जाये कि बादशाहत हमारे पास है तो ये लोग तलवारों से हम से लड़ने लगें।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह० से किसी ने पूछा कि आदमी कौन लोग हैं? फरमाया, उलमा। उसने पूछा कि बादशाह कौन लोग हैं? फ़रमाया कि ज़ाहिद लोग (दुनिया से बेरग़बती करने वाले) उसने पूछा बेवक़ूफ़ अहमक़ कौन लोग हैं? फ़रमाया कि जो दीन के ज़रिये से दुनिया कमाते हों।

हज़रत ज़ुन्नून मिस्री रह० फ़रमाते हैं कि ज़ाहिद लोग आख़िरत के बादशाह हैं और वे फ़ुक़रा-ए-आरिफ़ीन हैं। हज़रत शेख़ अबू मदयन रह० फ़रमाते हैं कि बादशाहत दो तरह की होती है, एक शहरों की, दूसरी दिलों की, हक़ीक़ी बादशाह ज़ाहिद ही होते हैं। (जो दिलों के बादशाह होते हैं।)

एक जमाअत का मज़हब जिनमें हज़रत इमाम शाफ़ई रह० भी हैं, यह है कि अगर कोई शख़्स यह वसीयत करके मर जाये कि मेरे माल से इतना माल ऐसे लोगों को दे दिया जाये जो सबसे ज़्यादा समझदार हों तो वह माल वसीयत का ज़ाहिदों को दिया जायेगा। (इसलिए कि हक़ीक़ी समझदार वही हैं।) *(रौज़)*

54. इमामे कबीर आरिफ़े शहीर शैख़ अब्दुल्लाह हारिस बिन असद मुहासबी रह० ने एक मर्तबा उन उलमा का जो दुनिया की तरफ़ माइल रहते है। ज़िक्र करते हुए फ़रमाया कि ये लोग गुमान करते हैं कि सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाह अन्हुम अज्मअीन के पास भी तो बहुत माल था, ये बेवक़ूफ़ सहाबा-ए-किराम रज़ि० का ज़िक्र इसलिए करते हैं कि लोग उनको माल जमा करने में माज़ूर समझने लगें। शैतान उनके साथ मक्र करता है और उनको ज़रा भी पता नहीं चलता, अरे अहमक़, तेरा नास हो जाये, तेरा हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० के माल से इस्तिदलाल करना, यह शैतान का मक्र है, वह यह अल्फ़ाज़ तेरी ज़बान से निकलवाता है ताकि तू हलाक और बर्बाद हो जाये।

जब तूने यह कहा कि हज़रात सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अज्मअीन ने भी माल शराफ़त और ज़ीनत के लिए जमा किया तो तूने उन सरदारों की ग़ीबत की और तूने उनकी तरफ़ बड़ी सख़्त चीज़ मंसूब कर दी, और जब तूने यह समझा कि हलाल तरीक़े से माल का जमा करना उसके तर्क

से अफ़ज़ल है तो तूने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शान में गुस्ताख़ी की, तूने सारे रसूलों अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम की शान में गुस्ताख़ी की, और तूने नऊज़ु बिल्लाह उनको अनजान बताया जबकि उन्हों ने तेरी तरह से माल जमा न किया, और जब तूने यह ख़्याल किया कि हलाल तरीक़े से माल जमा करना उसके तर्क से अफ़ज़ल है तो तूने यह दावा कर दिया कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी उम्मत के साथ ख़ैरख़्वाही नहीं फ़रमायी। आसमान के रब की क़सम, तूने अपने इस दावे में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर झूठ बोला। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपनी उम्मत के हाल पर निहायत शफ़ीक़ थे, उनके ख़ैरख़्वाह थे, उन पर बड़े मेहरबान थे, उन पर रहम करने वाले थे।

अरे अहमक़, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अपने फ़ज़्ल व कमाल के बावजूद अपने तक़्वे के बावजूद, अपने एहसानात के बावजूद, अल्लाह तआला शानुहू के रास्ते में अपने मालों को ख़र्च करने के बावजूद और हुज़ूरे सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबी रज़ि॰ होने के बावजूद और उन हज़रात में होने के बावजूद जिनको हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दुनिया ही में जन्नत की बशारत दे दी थी (और अशरः मुबश्शरः के नाम से मशहूर थे, इन सब ही कमालता के बावजूद) सिर्फ़ अपने माल की वजह से क़ियामत के मैदान में रूके रहे और फ़ुक़रा-ए-मुहाजिरीन के साथ जन्नत में तशरीफ़ न ले जा सके। फिर तेरा हम लोगों के मुताल्लिक क्या ख़्याल है, जो दुनिया के धंधों में फंसे रहे और ताज्जुब और सख़्त ताज्जुब, उस फ़ित्ने में पड़े हुए से हैं जो हराम और मुश्तबह माल की गड़बड़ में आलूदा हो, और लोगों के मैल (सदक़ात का माल) खाता हो, शहवतों और ज़ीनत और तफ़ाख़ुर में वक़्त गुज़ारता हो फिर वह हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि॰ के हाल से इस्तिदलाल करे।

इसके बाद अल्लामा मुहासबी रह॰ ने सहाबा-ए-किराम रज़ि॰ के बेहतरीन हालात ज़िक्र करने के बाद कहा कि ये हज़रात मस्कनत को पसंद करने वाले थे, फ़क़्र के ख़ौफ़ से बे फ़िक्र थे, अपनी रोज़ी में अल्लाह जल्ल शानुहू पर पूरा एतिमाद करने वाले थे और तक़्दीर पर राज़ी रहने वाले थे, मसाइब पर ख़ुश होने वाले थे, सरवत में शुक्रगुज़ार, ग़ुरबत में सब्र करने वाले थे, अच्छे हालात में अल्लाह जल्ल शानुहू की हम्द करने वाले थे, तवाज़ोअ् करने वाले थे, अपने

आप पर दूसरों को तर्जीह देने वाले थे। जब उनके पास फ़क्र आ जाता तो उसको मरहबा (बहुत अच्छा किया, आया) कहने वाले थे, उसको सुलहा का शिआर कहते थे, तू ख़ुदा की क़सम खाकर बता क्या तेरा भी यही हाल है, तू उनकी मुशाबहत से बहुत दूर है, तेरा हाल उनके हाल के बिल्कुल ज़िद है, तू ग़िना के वक़्त सरकश हो जाता है, सरवत के वक़्त अकड़ने लगता है, तू माल के वक़्त ख़ुशी में ऐसा महव होता है कि अल्लाह की नेमत का शुक्र भी भूल जाता है, तक्लीफ़ के वक़्त अल्लाह की मदद से ना उम्मीद हो जाता है, मुसीबत के वक़्त नाक मुंह चिढाने लगता है और तक़्दीर पर ज़रा भी राज़ी नहीं होता। तू फ़क़ीरों से बुग़्ज़ रखता है, मस्कनत से नाक चढ़ाता है, तू माल इसलिए जमा करता है ताकि दुनिया का ऐश व आराम इख़्तियार करे, उसकी रौनक़ से दिल बहलाए, उसकी लज़्ज़तों, शहवतों में मज़े उड़ाये।

वे हज़रात दुनिया की हलाल चीज़ों से इतना अलग रहते थे जितना तू हराम चीज़ों से भी अलाहिदा नहीं रहता। वे मामूली लग़्ज़िश को इतना सख़्त समझते थे जितना तू हराम और गुनाहे कबीरा को भी सख़्त नहीं समझता। काश तेरा उम्दा से उम्दा और हलाल से हलाल माल भी उनके मुश्तबह माल के बराबर होता और काश तू अपने गुनाहों से ऐसा डरता जैसा वे अपनी नेकियों के क़ुबूल न होने से डरते थे, काश तेरा रोज़ा उनके इफ़्तार के बराबर हो जाता (कि उनका इफ़्तार करना भी अल्लाह के वास्ते था, जिस पर सवाब था) और काश तेरा रात को जागना भी उनके सोने के बराबर हो जाता और काश तेरी उम्र भर की नेकियां उनकी किसी एक नेकी के बराबर हो जातीं।

अरे कमबख़्त, तेरे लिये यही मुनासिब था कि तू दुनिया से सिर्फ़ इतना हासिल करता जितना मुसाफ़िरों का तोशा होता है। काश तू दुनियादारों के हाल से इबरत पकड़ता कि वे मैदाने हश्र में हिसाब में पकड़े हुए होंगे और तू पहले ही ज़ुमरे में हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ जन्नत में चला जाता कि न तू मैदाने हश्र में रोका जाता, न तुझ पर लम्बा चौड़ा हिसाब होता, इसलिए कि हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि मेरी उम्मत के फ़ुक़रा उनके मालदारों से पांच सौ बरस पहले जन्नत में जायेंगे। *(रौज़)*

55. हज़रत अब्दुल वाहिद बिन ज़ैद रह० (जो मशाइख़े चिश्तिय: के सिलसिले में मशहूर बुज़ुर्ग हैं) फ़रमाते हैं कि हम लोग एक मर्तबा कश्ती में सवार जा रहे थे, हवा की गर्दिश ने हमारी कश्ती को एक जज़ीरे में पहुँचा दिया,

हमने वहां एक आदमी को देखा कि एक बुत को पूज रहा है। हमने उससे पूछा कि तू किसकी परस्तिश करता है? उसने उस बुत की तरफ़ इशारा किया। हमने कहा, तेरा माबूद ख़ुद तेरा बनाया हुआ है और हमारा माबूद ऐसी चीज़ें बना देता है, जो अपने हाथ से बनाया हुआ हो, वह पूजने के लायक़ नहीं हैं।

उसने कहा तुम किसकी परस्तिश (अिबादत) करते हो? हमने कहा, उस पाक ज़ात की जिसका अर्श आसमान के ऊपर है, उसकी गिरफ़्त ज़मीन पर है, उसकी अज़मत और बड़ाई सबसे बालातर है। कहने लगा, तुम्हें उस पाक ज़ात का इल्म किस तरह हुआ? हमने कहा, उसने एक रसूल सल्ल॰ (क़ासिद) हमारे पास भेजा जो बहुत करीम और शरीफ़ था। उस रसूल सल्ल॰ ने हमें ये सब बातें बतायीं। उसने कहा, वह रसूल (सल्ल॰) कहां है? हमने कहा कि उसने जब पयाम पहुँचा दिया और अपना हक़ पूरा कर दिया तो उस मालिक ने उसको अपने पास बुला लिया ताकि उसके पयाम पहुँचाने और उसको अच्छी तरह पूरा कर देने का सिला व इन्आम अता फ़रमाये। उसने कहा कि उस रसूल (सल्ल॰) ने तुम्हारे पास कोई अलाम्त छोड़ी है? हमने कहा, उस मालिक का पाक कलाम हमारे पास छोड़ा है। उसने कहा, मुझे वह किताब दिखाओ। हमने क़ुरआन पाक लाकर उसके सामने रखा। उसने कहा, मैं तो पढ़ा हुआ नहीं हूँ, तुम इसमें से मुझे कुछ सुनाओ। हमने एक सूरत सुनाई, वह सुनते हुए रोता रहा। यहां तक कि वह सूरत पूरी हो गयी। उसने कहा, इस पाक कलाम वाले का हक़ यही है कि उसकी नाफ़रमानी न की जाये।

इसके बाद वह मुसलमान होगया। हमने उसको इस्लाम के अर्कान और अहकाम बताये और चंद सूरतें क़ुरआन पाक की सिखाईं। जब रात हुई, इशा की नमाज़ पढ़ कर हम सोने लगे तो उसने पूछा कि तुम्हारा माबूद भी रात को सोता है। हमने कहा कि वह पाक ज़ात हय्युन् क़य्यूम है, वह न सोता है न उस को ऊंघ आती है (आयतुल कुर्सी) वह कहने लगा, तुम किस क़दर नालायक़ बंदे हो कि आक़ा जागता रहे और तुम सो जाओ। हमें उसकी बात से बड़ी हैरानी हुई।

जब हम उस जज़ीरे से वापस होने लगे तो वह कहने लगा कि मुझे भी अपने साथ ही ले चलो, ताकि मैं दीन की बातें सीखूँ। हमने अपने साथ ले लिया। जब हम शहर अबादान में पहुँचें तो मैं ने अपने साथियों से कहा कि यह शख़्स नौ मुस्लिम है, इसके लिऐ कुछ मआश का फ़िक्र भी चाहिए। हमने कुछ दिरम

चंदा किया और उसको देने लगे। उसने पूछा, यह क्या है? हमने कहा कुछ दिरम हैं इनको तुम अपने ख़र्चे में ले आना। कहने लगा, ला इला-ह इल्लल्लाह, तुम लोगों ने मुझे ऐसा रास्ता दिखाया जिस पर ख़ुद भी नहीं चलते। मैं एक जज़ीरे में था, एक बुत की परस्तिश करता था, ख़ुदा पाक की परस्तिश भी न करता था, उसने उस हालत में भी मुझे ज़ाया और हलाक नहीं किया हालांकि मैं उसको जानता भी न था, पस वह इस वक़्त मुझे क्यों कर ज़ाया कर देगा जबकि मैं उसको पहचानता भी हूँ (उसकी इबादत भी करता हूँ) तीन दिन के बाद हमें मालूम हुआ कि उसका आख़िरी वक़्त है, मौत के क़रीब है, हम उसके पास गये उससे पूछा कि तेरी कोई हाजत हो तो बता? कहने लगा कि मेरी तमाम हाजतें उस पाक ज़ात ने पूरी कर दीं (जिसने तुम लोगों को जज़ीरे में मेरी हिदायत के लिए भेजा था।)

शैख़ अब्दुल वाहिद रह॰ फ़रमाते हैं कि मुझ पर दफ़्अतन (अचानक) नींद का ग़लबा हुआ, मैं वहीं सो गया तो मैं ने ख़्वाब में देखा, एक निहायत सरसब्ज़ शादाब बाग़ है, उसमें एक निहायत नफ़ीस क़ुब्बा बना हुआ है, उस में एक तख़्त बिछा हुआ है, उस तख़्त पर एक निहायत हसीन लड़की कि उस जैसी ख़ूबसूरत औरत कभी किसी ने न देखी होगी, यह कह रही है, ख़ुदा के वास्ते उसको जल्दी भेज दो, उसके इश्तियाक़ में मेरी बेक़रारी हद से बढ़ गयी है। मेरी आंख खुली तो उस नौ मुस्लिम की रूह प्रवाज़ कर चुकी थी, हमने उसकी तजहीज़ व तक्फ़ीन की और दफ़्न कर दिया। जब रात हुई तो मैं ने वही बाग़ और क़ुब्बा और तख़्त पर वह लड़की उस के पास देखी और वह यह आयते शरीफ़ा पढ़ रहा था:-

وَالْمَلٰٓئِكَةُ يَدْخُلُوْنَ عَلَيْهِمْ مِّنْ كُلِّ بَابٍ (رعد ع ۳)

"वल्-मला इ-कतु यद्ख़ुलू-न अलैहिम् मिन् कुल्लि बाब॰'

(रअद, रूकूअ 3)

जिसका तर्जुमा यह है, और फ़रिश्ते उनके पास हर दरवाज़े से आते होंगे और उनको सलाम करते होंगे (जो हर क़िस्म की आफ़त से सलामती का मुज़्दा (ख़ुशख़बरी) है और यह) इस वजह से कि तुमने सब्र किया था (और दीन पर मज़बूत जमे रहे) पस इस जहान में तुम्हारा अंजाम बहुत बेहतर है। *(रौज़)*

हक़ तआला शानुहू की अता बख़्शिश के करिश्मे हैं कि सारी उम्र बुत

परस्ती की और उसने अपने लुत्फ़ व करम से मौत के क़रीब उन लोगों को ज़बदस्तीं करती के बेक़ाबू हो जाने से वहां भेजा और उसको आख़िरत की दौलत से मालामाल कर दिया:-

اَللّٰهُمَّ لَامَانِعَ لِمَا اَعْطَيْتَ وَلَامُعْطِيَ لِمَامَنَعْتَ

"अल्ला हुम्-म ला मानि-अ़ लिमा आतै-त वला मुअ़् ती-य लिमा म-न अ्-त०"

"मालिकुल मुल्म, जिसको तू देना चाहे, उसको कोई रोकने वाला नहीं है और जिसको तू न चाहे उसको कोई देने वाला नहीं है।

56. हज़रत मालिक बिन दीनार रह० एक मर्तबा बसरा की गलियों में जा रहे थे, रास्ते में एक बांदी ऐसे जाह व जलाल, हशाम व ख़ुदम के साथ जा रही थी जैसा कि बादशाहों की बांदियां होती हैं। हज़रत मालिक रह० ने उसको देखा तो आवाज़ देकर फ़रमाया कि ऐ बांदी, तुझे तेरा मालिक फ़रोख़्त करता है या नहीं, वह बांदी इस फ़िक़रे को सुनकर (हैरान रह गयी) कहने लगी, क्या कहा, फिर कहो। उन्हों ने फिर इर्शाद फ़रमाया, उसने कहा, अगर वह फ़रोख़्त भी करे तो क्या तुझ सा फ़क़ीर ख़रीद सकता है? फ़रमाने लगे हां, और तुझ से बेहतर को ख़रीद सकता है। वह बांदी यह सुनकर हंस पड़ी और अपने ख़ुद्दाम को हुक्म दिया कि इस फ़क़ीर को पकड़ कर हमारे साथ ले चलो (ज़रा मज़ाक़ ही रहेगा) ख़ुद्दाम ने पकड़ कर साथ ले लिया, वह जब घर वापस पहुँची तो उसने अपने आक़ा से यह क़िस्सा सुनाया, वह भी सुनकर हंसा और उनको अपने सामने लाने का हुक्म दिया।

जब यह सामने पेश किये गये तो आक़ा के दिल पर एक हैबत सी उनकी छा गयी, वह कहने लगा, आप क्या चाहते हैं? उन्हों ने फ़रमाया कि तू अपनी बांदी को मेरे हाथ फ़रोख़्त कर दे। उसने पूछा कि आप इसकी क़ीमत दे सकते हैं? हज़रत मालिक रह० ने फ़रमाया कि मेरे नज़दीक इसकी क़ीमत खजूर की दो बीझी हुई गुठलियां हैं। यह सुनकर सब हंसने लगे। उसने पूछा कि तुमने यह क़ीमत किस मुनासबत से तजवीज़ की? उन्होंने फ़रमाया कि इसमें ऐब बहुत हैं। उसने पूछा कि इसमें क्या क्या ऐब हैं? फ़रमाने लगे, अगर इत्र न लगाये तो बदन से बू आने लगे, अगर दांत साफ़ न करे तो मुंह में से सड़ांध आने लगे, अगर बालों में तेल कंघी न करे तो वे परेशान हाल हो जायें, जुंए उनमें पड़ जायें,

(और सर में से बू आने लगे) ज़रा उम्र ज़्यादा हो जायेगी तो बूढ़ी बन जायेगी (मुंह लगाने के भी क़ाबिल न रहेगी) हैज़ इसको आता है, पेशाब पाख़ाना यह करती है, हर क़िस्म की गंदगियां। (थूक, सिनक, राल, नाक के चूहें वग़ैरह) इसमें से निकलते रहते हैं। ग़म रंज, मुसीबतें, इसको पेश आती रहती हैं। ख़ुद ग़रज़ इतनी है कि महज़ अपनी गरज़ से तुझसे मुहब्बत ज़ाहिर करती है, महज़ अपनी राहत व आराम की वजह से तुझसे उल्फ़त जताती है (आज कोई तक्लीफ़ तुझसे पहुँच जाये, सारी मुहब्वत ख़त्म हो जाये) इंतिहाई बेवफ़ा, कोई क़ौल क़रार पूरा न करे, इसकी सारी मुहब्बत झूठी है, कल को तेरे बाद किसी दूसरे के पहलू में बैठेगी तो उससे भी ऐसी ही मुहब्बत के दावे करने लगेगी।

मेरे पास इससे हज़ार दरजा बेहतर बांदी है जो इससे निहायत कम क़ीमत है, वह क़ाफ़ूर के जौहर से बनी हुई है, मुश्क और ज़ाफ़रान की मिलावट से पैदा की गयी है, उस पर मोती और नूर लपेटा गया है और खारे पानी में उसका आबेदहन डाल दिया जाये तो वह मीठा हो जाये और मुर्दे से अगर वह बात करे तो वह ज़िन्दा हो जाये। अगर उसकी कलाई आफ़ताब के सामने कर दी जाये तो आफ़ताब बे नूर हो जाये गहन हो जाये, अगर वह अंधेरे में आ जाये तो सारा घर रौशन हो जाये, चमक जाये, अगर वह दुनिया में अपनी ज़ेब व ज़ीनत के साथ आ जाये तो सारा जहां मुअत्तर हो जाये, चमक जाये। उस बांदी ने मुश्क व जाफ़रान के बाग़ों में परवरिश पायी है, याक़ूत और मरजान की टहनियों में खेली है, हर तरह की नेमतों के ख़ेमे में उसका महल सराए है, तस्नीम (जो जन्नत की नहरों में से एक नहर है) का पानी पीती है, कभी वायदा ख़िलाफ़ी नहीं करती, अपनी मुहब्ब्त को नहीं बदलती (हरजाई नहीं है) अब तुम ही बताओ की क़ीमत ख़र्च करने के एतिबार से कौन सी बांदी ज़्यादा मौज़ूं है? सबने कहा कि वही बांदी जिसकी आपने ख़बर दी।

आपने फ़रमाया कि उस बांदी की क़ीमत हर वक़्त हर ज़माने में हर शख़्स के पास मौजूद है, लोगों ने पूछा कि उसकी क़ीमत क्या है? अपने फ़रमाया कि इतनी बड़ी अहम और आलीशान चीज़ के ख़रीदने के लिए बहुत मामूली क़ीमत अदा करनी पड़ती है और वह यह है कि रात का थोड़ा सा वक़्त फ़ारिग़ करके सिर्फ़ अल्लाह जल्ल शानुहू के लिए कम अज़ कम दो रक्अत तहज्जुद की पढ़ ली जायें और जब तुम खाना खाने बैठो तो किसी ग़रीब मुहताज को भी याद कर लो और अल्लाह जल्ल शानुहू की रिज़ा को अपनी ख़्वाहिशात पर

ग़ालिब कर दो, रास्ते में कोई तक्लीफ़ देने वाली चीज़ कांटा, ईंट वग़ैरह पड़ी देखो, उसको हटा दो, दुनिया की ज़िन्दगी को मामूली इख़्राजात के साथ पूरा कर दो और अपना फ़िक्र व ग़म इस धोखे के घर से हटा कर हमेशा रहने वाले घर की तरफ़ लगा दो। इन चीज़ों पर एहतिमाम करने से तुम दुनिया में इज़्ज़त की ज़िन्दगी गुज़ारोगे, आख़िरत में बे फ़िक्र और एज़ाज़ व इकराम के साथ पहुँचोगे और जन्नत, जो नेमतों का घर है, उसमें अल्लाह जल्ल शानुहू रब्बुल इज़्ज़त के पड़ोस में हमेशा हमेशा रहोगे।

उस बांदी के आक़ा ने बांदी से ख़िताब करके पूछा कि तूने शैख़ की बातें सुन लीं। ये सच हैं या नहीं, बांदी ने कहा कि बिल्कुल सच हैं, शैख़ ने कहा कि अच्छा तो तू आज़ाद है। और इतना इतना सामान तेरी नज़्र है और अपने सब ग़ुलामों से कहा कि तुम भी सब आज़ाद हो और मेरे माल में से इतना इतना माल तुम्हारी नज़्र है। और मेरा यह घर और जो कुछ माल इसमें है, सब अल्लाह की राह में सदक़ा है और घर के दरवाज़े पर एक मोटे से कपड़े का पर्दा पड़ा हुआ था, उसको उतार कर अपने बदन पर लपेट लिया और अपना सारा लिबासे फ़ाख़िरा उतार कर सदक़ा कर दिया।

उस बांदी ने कहा कि मेरे आक़ा तुम्हारे बाद मेरे लिए भी यह ज़िन्दगी अब खुशगवार नहीं है, और उसने भी एक मोटा सा कपड़ा पहन कर अपना सारा ज़ेब व ज़ीनत का लिबास और अपना सारा माल व मताअ् सद्क़ा करके आक़ा के साथ ही हो ली। और मालिक बिन दीनार रह० उनको दुआयें देते हुए उनसे रूख़्सत हो गये और वे दोनों उस सारे ऐश व इशरत को तलाक़ देकर अल्लाह की इबादत में मश्ग़ूल हो गये और इसी हालत में उनका इंतिक़ाल हो गया, ग़-फ़- रल्लाहु लना व लहुम। *(रौज़)*

57. जाफ़र बिन सुलैमान रह० कहते हैं कि मैं हज़रत मालिक बिन दीनार रह० के साथ एक दफ़ा बसरा में चल रहा था, एक आलीशान महल पर गुज़र हुआ, जिसकी तामीर जारी थी और एक नौजवान बैठा हुआ मेमारों को हिदायत दे रहा था कि यहां यह बनेगा, वहां इस तरह बनेगा। मालिक बिन दीनार रह० उस नौजवान को देख कर फ़रमाने लगे कि यह शख़्स कैसा हसीन नौजवान है और कैसी चीज़ में फंस रहा है, इस को इस तामीर में कैसा इन्हिमका है, मेरी तबीअत पर यह तक़ाज़ा है कि मैं अल्लाह जल्ल शानुहू से इस नौजवान के लिए दुआ करूँ कि वह इसको इस झगड़े से छुड़ा कर अपना मुख़्लिस बंदा बना ले,

कैसा अच्छा हो अगर यह जन्नत के नौजवानों में से बन जाये। जाफ़र चल, इस नौजवान के पास चलें।

जाफ़र रह० कहते हैं कि हम दोनों उस नौजवान के पास गये, उसको सलाम किया, उसने सलाम का जवाब दिया (वह मालिक से वाक़िफ़ था) मगर मालिक को पहचाना नहीं, थोड़ी देर में पहचाना तो खड़ा हो गया और कहने लगा, कैसे तशरीफ़ आवरी हुई? मालिक रह० ने फ़रमाया कि तुमने इस मकान में किस क़दर रूपया लगाने का इरादा किया है? उसने कहा, एक लाख दिरम। मालिक रह० ने फ़रमाया कि अगर तुम यह एक लाख दिरम मुझे दे दो तो मैं तुम्हारे लिये जन्नत में एक मकान का ज़िम्मा लेता हूँ, जो इससे बदरजहा बेहतर होगा और उसमें हशम व ख़दम बहुत से होंगे, उस में ख़ेमे और क़ुब्बे सुर्ख़ याक़ूत के होंगे जिन पर मोती जड़े हुए होंगे, उसकी मिट्टी जाफ़रान की होगी, उसका गारा मुश्क से बना होगा जिसकी ख़ुश्बूएं महकती होंगी, वह कभी न पुराना होगा, न टूटेगा उसको मेमार (कारीगर) नहीं बनायेंगे बल्कि अल्लाह तआला के अमर (हुक्म) कुन से तैयार हो जायेगा। उस नौजवान ने कहा, मुझे सोचने के लिए आज रात की मोहलत दीजिये, कल सुबह आप तशरीफ़ लायें तो मैं इसके मुताल्लिक़ अपनी राय अर्ज़ करूँगा।

हज़रत मालिक रह० वापस चले आये और रात भर उस नौजवान की फ़िक्र और सोच में रहे। आख़िर शब में उसके लिए बहुत आजिज़ी से दुआ की, जब सुबह हुई तो हम दोनों उसके मकान पर गये, वह नौजवान दरवाज़े से बाहर ही इंतिज़ार में बैठा था और जब हज़रत मालिक रह० को देखा तो बहुत ख़ुश हुआ। हज़रत मालिक रह० ने फ़रमाया कि तुम्हारी कल की बात के बारे में क्या राय रही? उस नौजवान ने कहा कि आप उस चीज़ को पूरा करेंगे जिसका कल आपने वायदा फ़रमाया था? हज़रत मालिक रह० ने फ़रमाया ज़रूर।

उसने दराहिम के तोड़े सामने लाकर रख दिये और दवात क़लम लाकर रख दिया। हज़रत मालिक रह० ने एक पर्चा लिखा, जिसमें बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम के बाद लिखा कि यह इक़रार नामा है कि मालिक बिन दीनार ने फ़लां शख़्स से इसका ज़िम्मा लिया है कि उसके इस महल के बदले में हक़ तआला शानुहू के यहां उसको ऐसा एक महल जिसकी सिफ़त ऊपर बयान की गयी (जो जो सिफ़ात उस मकान की ऊपर गुज़रीं, वे सब लिखने के बाद लिखा) मिलेगा, बल्कि उससे भी कहीं ज्यादा उम्दा और बेहतर, जो उम्दा साये में हक़ तआला

शानुहू के क़रीब होगा। यह पर्चा लिख कर उसके हवाले कर दिया और एक लाख दिमर उससे लेकर चले आये। जाफ़र रह० कहते हैं कि शाम को हज़रत मालिक रह० के पास उस में से इतनी भी बाक़ी न था कि एक वक़्त के खाने ही का काम चल सके।

इस वाक़िए को चालीस दिन भी न गुज़रे थे कि एक दिन हज़रत मालिक रह० जब सुबह की नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो मस्जिद की मेहराब में एक पर्चा पड़ा देखा, यह वही पर्चा था जो मालिक रह० ने उस नौजवान को लिख कर दिया था और उसकी पुश्त पर बग़ैर रोशनाई के लिखा हुआ था कि यह अल्लाह जल्ल शानुहू की तरफ़ से मालिक बिन दीनार (रह०) के ज़िम्मे की बराअत है, जिस मकान का तुमने उस नौजवान से ज़िम्मा लिया था, वह हमने उसको पूरा पूरा दे दिया और उससे सत्तर गुना ज़्यादा दे दिया।

हज़रत मालिक रह० उस पर्चे को पढ़कर मुतहय्यर से हुए, उसके बाद हम उस नौजवान के मकान पर गये तो वहां मकान पर स्याही का निशान था (जो सोग की अलामत के तौर पर लगाया होगा) और रोने की आवाज़ें आ रही थीं, हमने पूछा तो मालूम हुआ कि उस नौजवान का कल गुज़िश्ता इंतिक़ाल हो गया। हमने पूछा कि उसका ग़ुस्ले मय्यित किसने दिया था, उसको बुलाया गया, हमने उससे उसके नहलाने और कफ़नाने की कैफ़ियत पूछी तो उसने कहा कि उस नौजवान ने अपने मरने से पहले मुझे एक पर्चा दिया था और यह कहा था कि जब तू मुझे नहला कर कफ़न पहनाये तो यह पर्चा उसमें रख देना। मैं ने उसको नहलाया कफ़नाया और वह पर्चा उसके कफ़न के और बदन के दर्मियान रख दिया।

हज़रत मालिक रह० ने वह पर्चा अपने पास से निकाल कर उसको दिखाया, वह कहने लगा कि यह वही पर्चा है, क़सम है उस ज़ात की जिसने उसको मौत दी, यह पर्चा मैं ने ख़ुद उसके कफ़न के अंदर रखा था। यह मंज़र देख कर एक दूसरा नौजवान उठा और कहने लगा कि आप मालिक हैं। आप मुझसे दो लाख दिरम ले लीजिये और मुझे भी पर्चा लिख दीजिये। हज़रत मालिक रह० ने फ़रमाया कि वह बात दूर चली गयी, अब नहीं हो सकता, अल्लाह जल्ल शानुहू जो चाहता है, वह करता है। इसके बाद जब भी मालिक रह० उस नौजवान का ज़िक्र फ़रमाते तो रोने लगते और उसके लिये दुआ करते थे। (रौज़)

बुज़ुर्गों को इस क़िस्म के वाक़िआत बहुत कसरत से पेश आते हैं कि जोश में कोई बात ज़बान से निकल गयी, हक़ तआला शानुहू उसको उसी तरह पूरा फ़रमाते हैं जिसको हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पाक इर्शाद में इन अल्फ़ाज़ से नक़ल किया गया कि बहुत से बिखरे हुए बालों वाले गुबार आलूद लोग जिन को लोग अपने दरवाज़े से हटा दें, और उन की परवाह भी न करें ऐसे हैं कि अगर अल्लाह जल्ल शानुहू पर किसी बात की क़सम खा लें तो वह उनकी बात को पूरा करे। *(मुस्लिम शरीफ़)*

58. मुहम्मद बिन सिमाक रह० फ़रमाते हैं कि बनू उमैया के लोगों में मूसा बिन मुहम्मद बिन सुलैमान अलहाशमी बहुत ही नाज़ परवरदा रईस था, दिल की ख़्वाहिशात पूरी करने में हर वक़्त मुन्हमिक रहता, खाने पीने में लिबास में, लहव व लिअ़्ब में ख़्वाहिशात और लज़्ज़ात की हर नौअ़् में आला दरजे पर था, लड़के लड़कियों में हर वक़्त मुन्हमिक रहता, न उसको कोई ग़म था, न फ़िक्र, खुद भी निहायत ही हसीन चांद के टुकड़े की तरह से था, अल्लाह तआला शानुहू की हर नौअ़् की दुन्यवी नेमत उस पर पूरी थी। उसकी आमदनी तीन लाख तीन हज़ार दीनार (अशर्फ़ियां) सालाना थी जो सारी की सारी इसी लहव व लअिब में ख़र्च होती थी।

एक ऊँचा बालाख़ाना था जिसमें कई खिड़कियां तो शारे-ए-आम की तरफ़ खुली हुई थीं, जिन में बैठ कर वह रास्ता चलने वालों के नज़ारे करता और कई खिड़कियां दूसरी जानिब बाग़ की तरफ़ खुली हुई थीं, जिनमें बैठ कर बाग़ की हवायें खाता, खुशबूयें सूंघता। इस बाला ख़ाने में एक हाथी दांत का क़ुब्बा था जो चांदी की मेख़ों से जड़ा हुआ था और सोने का उस पर झोल था। उसके अंदर एक तख़्त था जिस पर मोतियों की चादर थी और उस हाशमी के सर पर मोतियों का जड़ाव अमामा था। उस क़ुब्बा में उसके यार, अहबाब जमा रहते, ख़ुद्दाम अदब से पीछे खड़े रहते, सामने नाचने गाने वालियां क़ुब्बा से बाहर मुज्तमअ़् रहतीं। जब गाना सुनने को दिल चाहता, वह सितार की तरफ़ एक नज़र उठाता और सब हाज़िर हो जातीं और जब बंद करना चाहता, हाथ से सितार की तरफ़ इशारा कर देता, गाना बंद हो जाता। रात को हमेशा जब तक नींद न आती, यही शुग्ल रहता और जब (शराब के नशे से) उसकी अक़्ल जाती रहती, याराने मजलिस उठकर चले जाते वह जौन सी लड़की को चाहता, पकड़ लेता और रात भर उस के साथ ख़लवत करता, सुबह को वह शतरज, चौसर वग़ैरह में

मशगूल हो जाता। उसके सामने कोई रंज व ग़म की बात, किसी की मौत किसी की बीमारी का तज़्किरा बिल्कुल न आता। उसकी मजलिस में हर वक़्त हंसी और खुशी की बातें, हंसाने वाले क़िस्से और इसी क़िस्म के तज़्किरे रहते। हर दिन नई नई खुशबूएं, जो उस ज़माने में कहीं न मिलतीं, वे रोज़ाना उसकी मलजिस में आतीं उम्दा उम्दा खुशबूओं के गुलदस्ते वग़ैरह हाज़िर किये जाते, इसी हालत में उसके सत्ताईस बरस गुज़रे।

एक रात को वह हस्बे मामूल अपने क़ुब्बा में था, दफ़्अतन उसके कान में एक सुरीली आवाज़ पड़ी, जो उसके गाने वालों की आवाज़ से बिल्कुल जुदा थी, लेकिन बड़ी दिलकश थी। उसकी आवाज़ ने कानों में पड़ते ही बेचैने सा कर दिया। अपने गाने वालों को बंद कर दिया और क़ुब्बा की खिड़की से बाहर सर निकाल कर उस आवाज़ को सुनने लगा। वह आवाज़ कभी कान में पड़ जाती कभी बंद हो जाती। उसने अपने ख़ुद्दाम को हुक्म दिया कि यह आवाज़ जिस शख़्स की आ रही है, उसको पकड़ कर लाओ।

शराब का दौर चल रहा था, ख़ुद्दाम जल्दी से उस आवाज़ की तरफ़ दौड़े और आवाज़ तलाश करते करते एक मस्जिद में पहुंचे, जहां एक जवान निहायत ज़ओफ़ बदन, ज़र्द रंग, गर्दन सूखी हुई, होंठों पर खुश्की आयी हुई, बाल परागंदा, पेट कमर से लगा हुआ, दो ऐसी छोटी छोटी लुंगियां उसके बदन पर कि उनसे कम में बदन न ढक सके, मस्जिद में खड़ा हुआ अपने रब के साथ मशगूल तिलावत कर रहा, यह लोग उसको पकड़ कर ले गये, न उससे कुछ कहा न बताया। एकदम उसको मस्जिद से निकाल कर वहां बालाख़ाने पर ले जाकर उसके सामने पेश कर दिया कि हुज़ूर यह हाज़िर है। वह शराब के नशे में कहने लगा कि यह कौन शख़्स है? उन्हों ने अर्ज़ किया कि हुज़ूर यह वही शख़्स है जिसकी आवाज़ आपने सुनी थी। उसने पूछा कि तुम इसको कहां से लाये हो? वे कहने लगे हुज़ूर मस्जिद में था, खड़ा हुआ क़ुरआन शरीफ़ पढ़ रहा था। उस रईस ने उस फ़क़ीर से पूछा कि तुम क्या पढ़ रहे थे? उसने अ-ऊज़ु बिल्लाह पढ़कर ये आयतें बतायीं :-

إِنَّ الْأَبْرَارَ لَفِي نَعِيمٍ ۝ عَلَى الْأَرَائِكِ يَنظُرُونَ ۝ تَعْرِفُ فِي وُجُوهِهِمْ نَضْرَةَ
النَّعِيمِ ۝ يُسْقَوْنَ مِن رَّحِيقٍ مَّخْتُومٍ ۝ خِتَامُهُ مِسْكٌ ۚ وَفِي ذَٰلِكَ فَلْيَتَنَافَسِ
الْمُتَنَافِسُونَ ۝ وَمِزَاجُهُ مِن تَسْنِيمٍ ۝ عَيْنًا يَشْرَبُ بِهَا الْمُقَرَّبُونَ ۝ (تطفيف)

"इन्नल् अब्रा-र लफ़ी नअ़ी-मिन्॰ अलल् अराइ-कि यन्ज़ुरून॰ तअ् रिफ़ु फ़ी वुजूहि हिम नज़्-र तन्नअ़ीम्॰ युस्क़ौ-न मिर्र-ही क़िम् मख़्तू मिन् ख़िता मुहू मिस्क्॰ व फ़ी ज़ालि-क फ़ल् य-त नाफ़सिल् मु-त नाफ़िसून्॰ व मिज़ाजुहू मिन् तस्नी मिन्॰ अैनैय्-श्र-बु बिहल् मुक़र्र-बून्॰

(सूर: तत्फ़ीफ़)

जिनका तर्जुमा यह है कि "बेशक नेक लोग (जन्नत की) बड़ी नेमतों में होंगे, मसहरियों पर बैठे हुए (जन्नत के अजाईब) देखते होंगे। ऐ मुख़ातब, तू उनके चेहरों पर नेमतों की शादाबी, सरसब्ज़ी महसूस करेगा और उनके पीने के लिये ख़ालिस शराब सर ब मुहर जिस पर मुश्क की मुहर होगी, मिलेगी (एक दूसरे पर) हिर्स करने वालों को ऐसी ही चीज़ों में हिर्स करना चाहिए (कि ये नेमतें किसको ज़्यादा मिलती हैं और इनका मिलना आमाल की वजह से होता है, इसलिए उन आमाल में हिर्स करना चाहिए, जिनसे ये नेमतें हासिल हों) और उस शराब की आमेज़िश तस्नीम के पानी से होगी (शराब में कोई चीज़ मिलाई जाती है तो उससे उसका जोश ज़्यादा बढ़ जाता है और वह तस्नीम जन्नत का) एक ऐसा चश्मा है जिस से मुक़र्रब लोग पानी पीते हैं (यानी उस चश्मे का पानी मुक़र्रब लोगों को तो ख़ालिस मिलेगा और नेक लोगों की शराब में उसमें से थोड़ा सा मिला दिया जायेगा)

इसके बाद उस फ़क़ीर ने कहा, अरे धोखे में पड़े हुए, तेरे इस महल को, तेरे इस बालाख़ाने को, तेरे इन फ़र्शों को उनसे क्या मुनासबत, वह बड़ी ऊंची मसहरिया हैं जिन पर फ़र्श बिछे हुए हैं, ऐसे फ़र्श जो बहुत बुलंद हैं (अल वाक़िअ: रूकूअ 1) उनके अस्तर दबीज़ रेशम के होंगे (अर्रह्मान, रूकूअ 3) वे लोग सब्ज़ मश्जर और अजीब ग़रीब खूबसूरत कपड़ों पर तकिया लगाये हुए हैं। (अर्रह्मान, रूकूअ 3) अल्लाह का वली उन मसहरियों पर से ऐसे दो चश्मों को देखेगा जो बाग़ों में जारी होंगे, (अर्रह्मान, रूकूअ 3) उन दोनों बाग़ों में हर क़िस्म के मेवे की दो दो क़िस्में होंगी (कि एक ही क़िस्म के मेवे के दो मज़े होगें) (अर्रह्मान, रूकूअ 3) वे मेवे न तो ख़त्म होंगे न उनकी कुछ रोक टोक होगी (जैसा दुनिया में बाग़ वाले तोड़ने से रोकते हैं (अल वाक़िअ:, रूकूअ 1) वे लोग पसंदीदा ज़िन्दगी में बहुत बुलन्द मक़ाम पर जन्नत में होंगे (अल हाक़्क़:, रूकूअ 1) ऐसे आली मुक़ाम जन्नत में होंगे जहां कोई लग्व बात न सुनेंगे उसमें बहते हुए चश्में होंगे और उसमें ऊँचे ऊँचे तख़्त बिछे हुए होंगे और आबख़ोरे रखे

हुए होंगे और बराबर गद्दे लगे हुए होंगे और सब तरफ़ क़ालीन ही क़ालीन फ़ैले हुए पड़े होंगे (कि जहां चाहें बैठें, सारी ही जगह सदर नशीन है (ग़ाशियः) वे लोग सय्यालों और चश्मों में रहते होंगे (वलमुर्सलात, रूकूअ 2) उस जन्नत के फल हमेशा रहने वाले होंगें (कभी ख़त्म न होंगें) उसका साया हमेशा रहने वाला होगा।

यह तो अन्जाम है मुत्तक़ी लोगों का, और काफ़िरों का अंजाम दोज़ख़ है (रअद, रूकूअ 5) वह कैसी सख़्त आग होगी (अल्लाह तआला ही महफ़ूज़ रखे) बेशक मुजरिम लोग जहन्नम के अज़ाब में हमेशा रहेंगे, वह अज़ाब किसी वक़्त भी उनसे हल्का न किया जायेगा और वे लोग उसमें मायूस पड़े रहेंगे (ज़ुख़रूफ़, रूकूअ 6) बेशक मुजरिम लोग बड़ी गुमराही और (हिमाक़त के) जुनून में पड़े हुए हैं। (उनको अपनी हिमाक़त उस दिन मालूम होगी) जिस दिन मुंह के बल घसीट कर जहन्नम में फेंक दिये जायेंगे (और उनसे कहा जायेगा कि) दोज़ख़ की आग लगने का (उसमें जलने का) मज़ा चखो। (क़मर, रूकूअ 3) वे लोग आग में और खोलते हुए पानी में और काले धुऐं के साये में होंगे।

(वाक़िअः, रूकूअ 1)

मुजरिम आदमी इस बात की तमन्ना करेगा कि उस दिन के अज़ाब से छूटने के लिये अपने बेटों को, बीवी को, भाई को और सारे कुंबा को, जिन में वह रहता था और तमाम रुए ज़मीन के आदमियों को अपने फ़िदये में दे दे पर किसी तरह अज़ाब से बच जाये। लेकिन यह हरग़िज हरगिज़ नहीं होगा, वह आग ऐसी शोलों वाली है कि बदन की खाल तक उतार देगी और वह आग ऐसे शख़्स को ख़ुद बुलावेगी जिसने (दुनिया में हक़ से) पीठ फेरी होगी और (अल्लाह तआला की इताअत से) बेरूख़ी की होगी। और (नाहक़)माल जमा किया होगा और उसको उठा कर हिफ़ाज़त से रखा होगा। *(मआरिज, रूकूअ 1)*

यह शख़्स निहायत सख़्त मशक़्क़त में होगा और निहायत सख़्त अज़ाब में और अल्लाह तआला शानुहू के गुस्से में होगा और ये लोग इस अज़ाब से कभी निकलने वाले नहीं होंगे। (इस कलाम में उस फ़क़ीर ने जन्नत और दोज़ख़ की बहुत सी आयात की तरफ़ इशारा कर दिया जिनकी सूरत और रूकूअ् का हवाला लिख दिया गया, पूरी आयात मुतर्जम क़ुरआन शरीफ़ में देखी जा सकती हैं।)

वह हाश्मी रईस फ़क़ीर का कलाम सुनकर अपनी जगह से उठा और

फ़क़ीर से मुआनक़ा किया और खूब चिल्ला कर रोया और अपने सब अहले मलजिस को कह दिया कि तुम सब चले जाओ और फ़क़ीर को साथ में लेकर सेहन में गया और एक बोरे पर बैठ गया और अपनी जवानी पर नौहा करता रहा, अपनी हालत पर रोता रहा और फ़क़ीर उसको नसीहत करता रहा, यहां तक कि सुबह हो गयी उसने अपने सब गुनाहों से अव्वल फ़क़ीर के सामने तौबा की और अल्लाह तआला शानुहू से इसका अहद किया कि आइंदा कभी कोई गुनाह न करेगा फिर दोबारा दिन में सारे मजमे के सामने तौबा की और मस्जिद का कोना संभाल कर अल्लाह तआला शानुहू की इबादत में मशगूल हो गया और अपना वह सारा साज़ व सामान माल व मताअ् सब फ़रोख़्त करके सदक़ा कर दिया और तमाम नौकरों को मौक़ूफ़ कर दिया और जितनी चीज़ें ज़ुल्म व सितम से ली थीं, सब अहले हुक़ूक़ को वापस कीं, गुलाम और बांदियों में से बहुत से आज़ाद किये और बहुत से फ़रोख़्त करके उन की क़ीमत सदक़ा कर दी और मोटा लिबास और जौ की रोटी इख़्तियार की, तमाम रात नमाज़ पढ़ता दिन को रोज़ा रखता हत्ताकि बुज़ुर्ग और नेक लोग उसके पास उसकी ज़ियारत को आने लगे और इतना मुजाहदा उसने शुरू कर दिया कि लोग उसको अपने हाल पर रहम खाने की और मशक़्क़त में कमी करने की फ़रमाईश करते और उसको समझाते कि हक़ तआला शानुहू निहायत करीम है, वह थोड़ी मेहनत पर बहुत ज़्यादा अज्र अता फ़रमाते हैं, मगर वह कहता कि दोस्तों, मेरा हाल मुझी को मालूम है, मैं ने अपने मौला की रात दिन नाफ़रमानियां की हैं। बड़े सख़्त सख़्त गुनाह किये हैं, यह कह कर वह रोने लगता और खूब रोता। इसी हालत में नंगे पांव पैदल हज को गया, एक मोटा कपड़ा बदन पर था, एक प्याला और एक थैला सिर्फ़ साथ था। इसी हालत में मक्का मुकर्रमा पहुँचा और हज के बाद वहीं क़ियाम कर लिया, वहीं इंतिक़ाल हुआ, रहिम-हुल्लाहु रहम-तन वासिअ:।

मक्का के क़ियाम में रात को हतीम में जाकर रोता और गिड़गिड़ाता और कहता कि मेरे मौला मेरी कितनी ख़लतवें ऐसी गुज़र गयीं, जिनमें मैं ने तेरा ख़्याल भी न किया, मैं ने कितने बड़े बड़े गुनाहों से तेरा मुकाबला किया, मेरे मौला मेरी नेकियां सारी जाती रहीं (कि कुछ भी न कमाया) और मेरे गुनाह मेरे साथ रह गये हलाकत है मेरे लिए उस दिन, जिस दिन तुझसे मुलाक़ात होगी (यानी मरने के बाद) मेरे लिए हलाकत पर हलाकत है यानी बहुत ज़्यादा हलाकत है उस दिन जिस दिन मेरे आमाल नामे खोले जायेंगे। आह, वे मेरी

रूसवाईयों से भरे हुए होंगे, वे मेरे गुनाहों से पुर होंगे, बल्कि तेरी नाराज़ी से मुझ पर हलाकत उतर चुकी है और तेरा इताब मुझ पर हलाकत है, जो तेरे उन एहसानों पर होगा, जो हमेशा तूने मुझ पर किये और तेरी उन नेमतों पर होगा जिनका हमेशा मैं ने गुनाहों से मुक़ाबला किया और तू मेरी सारी हरकतों को देख रहा था। मेरे आक़ा, तेरे सिवा मेरा कौन सा ठिकाना है, जहां भाग कर चला जाऊं। तेरे सिवा कौन शख़्स ऐसा है जिससे इल्तिजा करूँ। तेरे सिवा कौन है जिस पर किसी क़िस्म का भरोसा करूँ। मेरे आक़ा मैं इस क़ाबिल हरगिज़ नहीं हूँ कि तुझसे जन्नत का सवाल करूँ। अलबत्ता महज़ तेरे करम से तेरी अता से तेरे फ़ज़्ल से इसकी तमन्ना करता हूँ कि तू मुझ पर रहम फ़रमा दे और मेरे गुनाह माफ़ फ़रमा दे।

فَاِنَّكَ اَهْلُ التَّقْوٰى وَاَهْلُ الْمَغْفِرَةِ

"फ़-इन्न-क अह लुत त़क्वा व अह्लु ल् मग्फ़ि-र:॰" (रौज़)

59. हारून रशीद का एक बेटा था जिसकी उम्र तक़रीबन सोलह साल की थी, वह बहुत कसरत से ज़ाहिदों और बुज़ुर्गों की मजलिस में रहा करता था और अक्सर क़ब्रस्तान चला जाता, वहां जाकर कहता कि तुम लोग हमसे पहले दुनिया में थे, दुनिया के मालिक थे लेकिन इस दुनिया ने तुम्हें निजात न दी हत्ता कि तुम क़ब्रों में पहुँच गये। काश मुझे किसी तरह ख़बर होती कि तुम पर क्या गुज़र रही है और तुमसे क्या क्या सवाल व जवाब हुए हैं और अक्सर यह शेअ्र पढ़ा करता -

تروعنی الجنائز کل یوم ویحزننی بکاء النائحات

"तरू़ अनिल् जना ई-ज़ु कुल्-ल यौमिन् व यह ज़ुनु-नी बुका अुन्ना-इ हाति॰"

मुझे जनाज़े हर दिन डराते हैं और मरने वालों पर रोने वालियों की आवाज़ें मुझे ग़मगीन रखती हैं।

एक दिन वह अपने बाप (बादशाह) की मजलिस में आया, उसके पास वज़ीर, अमरी लोग सब जमा थे और लड़के के बदन पर एक कपड़ा मामूली और सर पर एक लुंगी बंधी हुई थी। अराकीने सल्तनत आपस में कहने लगे कि इस पागल लड़के की हरकतों ने अमीरूल मोमिनीन को भी दूसरे बादशाहों की निगाह में ज़लील कर दिया, अगर अमीरूल मोमिनीन इसको तंबीह करें तो शायद

यह अपनी इस हालत से बाज़ आये। अमीरूल मोमिनीन ने यह बात सुनकर उससे कहा कि, बेटा तूने मुझे लोगों की निगहा में ज़लील कर रखा है। उस ने यह बात सुन कर अपने बाप को कोई जवाब नहीं दिया, लेकिन एक परिन्द वहां बैठा था, उसको कहा कि उस ज़ात का वास्ता जिसने तुझको पैदा किया, तू मेरे हाथ पर आकर बैठ जा, वह परिन्द वहां से उड़कर उसके हाथ पर आकर बैठ गया, फिर कहा कि अब अपनी जगह चला जा। वह हाथ पर से उड़कर अपनी जगह चला गया। उसके बाद उसने अर्ज़ किया कि अब्बाजान, असल में आप दुनिया से जो मुहब्बत कर रहे हैं, उसने मुझे रूसवा कर रखा है। अब मैं ने यह इरादा कर लिया है कि मैं आपसे जुदाई इख़्तियार कर लूँ।

यह कह कर वहां से चल दिया और एक क़ुरआन शरीफ़ सिर्फ़ अपने साथ लिया, चलते हुए मां ने एक बहुत क़ीमती अंगूठी भी उसको दे दी (कि ज़रूरत के वक़्त इसको फ़रोख़्त करके काम में लाये) वह वहां से चल कर बसरा पहुँच गया और मज़दूरों में काम करने लगा। हफ़्ते में सिर्फ़ एक दिन शंबा (बार) को मज़दूरी करता और आठ दिन तक वे मज़दूरी के पैसे ख़र्च करता और आठवें दिन फिर शंबा (बार) को मज़दूरी कर लेता और एक दिरम और एक वानिक (यानी दिरम का छठा हिस्सा) मज़दूरी लेता, इससे कम या ज़्यादा न लेता। एक वानिक़ रोज़ाना ख़र्च करता।

अबू आमिर बसरी रह० कहते हैं कि मेरी एक दीवार गिर गयी थी, उसको बनवाने के लिए मैं किसी मेमार की तलाश में निकला। (किसी ने बताया होगा कि यह शख़्स भी तामीर का काम करता है) मैं ने देखा कि निहायत ख़ूबसूरत लड़का बैठा है, एक ज़ंबील पास रखी है और क़ुरआन शरीफ़ देख कर पढ़ रहा है। मैं ने उससे पूछा कि लड़के मज़दूरी करोगे? कहने लगा कि क्यों नहीं करेंगे? मज़दूरी के लिए तो पैदा ही हुए हैं, आप बतायें क्या ख़िदमत मुझसे लेनी है। मैं ने कहा गारे मिटटी (तामीर) का काम लेना है। उस ने कहा कि एक दिरम और एक वानिक़ मज़दूरी होगी और नमाज़ के औक़ात में काम नहीं करूँगा, मुझे नमाज़ के लिये जाना होगा।

मैं ने उसकी दोनों शर्तें मंज़ूर कर लीं और उसको लाकर काम पर लगा दिया। मग़रिब के वक़्त जब मैं ने देखा तो उसने दस आदमियों की बक़द्र काम किया, मैं ने उसको मज़दूरी में दो दिरम दिये, उसने शर्त से ज़ायद लेने से इंकार कर दिया और एक दिरम और एक वानिक़ लेकर चला गया। दूसरे दिन मैं फिर

उसकी तलाश में निकला, वह मुझे कहीं न मिला। मैं ने लोगों से तहक़ीक़ किया कि ऐसी ऐसी सूरत का एक लड़का मज़दूरी किया करता है, किसी को मालूम है कि वह कहां मिलेगा? लोगों ने बताया कि वह सिर्फ़ शंबा (बार) के ही दिन मज़दूरी करता है इससे पहले तुम्हें कहीं नहीं मिलेगा। मुझे उसके काम को देख कर ऐसी रग़बत हुई कि मैं ने आठ दिन को अपनी तामीर बंद कर दी और शंबा के दिन उसकी तलाश में निकला, वह उसी तरह बैठा क़ुरआन शरीफ़ पढ़ता हुआ मिला। मैं ने सलाम किया, और मज़दूरी करने को पूछा, उसने पहली वाली दो शर्तें बयान कीं मैं ने मंज़ूर कर लीं।

वह मेरे साथ आकर काम में लग गया। मुझे इस पर हैरत हो रही थी कि पिछले शंबा (बार) को इस अकेले ने दस आदमियों का काम किस तरह कर लिया। इसलिये इस मर्तबा मैंनें ऐसी तरह छुप कर कि वह मुझे न देखे, उसके काम करने का तरीक़ा देखा तो अजीब मंज़र देखा कि वह हाथ में गारा लेकर दीवार पर डालता है और पत्थर अपने आप ही एक दूसरे के साथ जुड़ते चले जाते हैं। मुझे यक़ीन हो गया कि यह कोई अल्लाह का वली है और अल्लाह के औलिया के कामों में ग़ैब से मदद होती ही है। जब शाम हुई तो मैं ने उसको तीन दिरम देना चाहे, तो उसने लेने से इंकार कर दिया कि मैं इतने दिरम का क्या करूँगा? और एक दिरम और और एक वानिक़ लेकर चला गया।

मैं ने एक हफ़्ता फिर इंतिज़ार किया और तीसरे शंबा (बार) को फिर मैं उसकी तलाश में निकला मगर वह मुझे न मिला। मैं ने लोगों से तहक़ीक़ किया, एक शख़्स ने बताया कि वह तीन दिन से बीमार है, फ़्लां वीरान जंगल में पड़ा है। मैं ने एक शख़्स को उजरत देकर इस पर राज़ी किया कि वह मुझे उस जंगल में पहुँचा दे वह मुझे साथ लेकर उस जंगल वीरान में पहुँचा तो मैं ने देखा कि वह बेहोश पड़ा है, आधी ईंट का टुकड़ा सर के नीचे रखा हुआ है। मैं ने उसको सलमा किया, उसने जवाब न दिया। मैं ने दूसरी मर्तबा सलमा किया तो उसने (आंख खोली और) मुझे पहचान लिया, मैंनें जल्दी से उसका सर ईंट से उठाकर अपनी गोद में रख लिया, उसने सर हटा लिया और चंद शेअ्र पढ़े, जिनमें से दो ये हैं:-

ياصاحبى لاتغترر بتنعم فالعمر ينفد والنعيم يزول
واذاحملت على القبور جنازة فاعلم بانك بعدها محمول

"या साहिबी ला तग़्तर्-रु बित-नअ्उमिन्
फ़ल् उमरू यन्फ़दु वन्नओमु यज़ूलु
व इज़ा हमल्-त इलल् क़ुबूरि जनाज़-तन्
फ़अ्लम् बिअन्न-क बअ्द-हा मह्मूलु"

"मेरे दोस्त दुनिया की नेमतों के धोखे में न पड़, उम्र ख़त्म होती जा रही है और ये नेमतें सब ख़त्म हो जायेंगी, जब तू कोई जनाज़ा लेकर क़ब्रस्तान में जाये तो यह सोचा कर, कि तेरा भी एक दिन इसी तरह जनाज़ा उठाया जायेगा।

इसके बाद उसने मुझसे कहा कि अबू आमिर जब मेरी रूह निकल जाये तो मुझे नहला कर मेरे इसी कपड़े में मुझे कफ़न दे देना। मैं ने कहा मेरे महबूब इसमें क्या हर्ज है कि मैं तेरे कफ़न के लिये नये कपड़े ले आऊँ। उसने जवाब दिया कि नये कपड़ों के लिये ज़िन्दा लोग ज़्यादा मुस्तहिक़ हैं। (यह जवाब हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ का जवाब है, उन्होंने भी अपने विसाल के वक़्त यही फ़रमाइश की थी कि मेरी इन्हीं चादरों में कफ़न दे देना और जब उनसे नये कपड़े की इजाज़त चाही गयी थी, तो उन्होंने यही जवाब दिया था) लड़के ने कहा कि कफ़न तो (पुराना हो या नया बहरहाल) बोसीदा हो जायेगा, आदमी के साथ तो सिर्फ़ उसका अमल ही रहता है और यह मेरी लुंगी और लोटा क़ब्र खोदने वाले को मज़दूरी में दे देना और यह अंगूठी और क़ुरआन शरीफ़ हारून रशीद तक पहुँचा देना और इसका ख़्याल रखना कि ख़ुद उन्हीं के हाथ में देना और यह कह देना कि एक परदेसी लड़के की यह मेरे पास अमानत है, और वह आपसे यह कह गया है कि ऐसा न हो कि इसी ग़फ़लत और धोखे की हालत में आपकी मौत आ जाये, यह कह कर उसकी रूह निकल गयी। उस वक़्त मुझे मालूम हुआ कि यह लड़का शहज़ादा था।

उसके इंतिक़ाल के बाद उसकी वसीयत के मुवाफ़िक़ मैं ने उसको दफ़न कर दिया और दोनों चीज़ें गोरकन को दे दीं और क़ुरआन पाक और अंगूठी लेकर बग़दाद पहुँचा और क़सरे शाही के क़रीब पहुँचा तो बादशाह की सवारी निकल रही थी। मैं एक ऊँची जगह खड़ा हो गया, अव्वल एक बहुत बड़ा लश्कर निकला जिसमें तक़रीबन एक हज़ार घोड़े सवार थे, उस के बाद इसी तरह एक के बाद एक दस लश्कर निकले, हर एक में तक़रीबन एक हज़ार सवार थे, दसवें जत्थे में ख़ुद अमीरूल मोमिनीन भी थे। मैं ने ज़ोर से आवाज़ देकर कहा कि ऐ अमीरूल मोमिनीन, आपको हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

की क़राबत रिश्तेदारी का वास्ता, ज़रा सा तवक़्क़ुफ़ कर लीजिये मेरी आवाज़ पर उन्हों ने मुझे देखा तो मैं ने जल्दी से आगे बढ़कर कहा कि मेरे पास एक परदेसी लड़के की यह अमानत है, जिस ने मुझे यह वसीयत की थी कि ये दोनों चीज़ें आप तक पहुँचा दूँ।

बादशाह ने उनको देख कर (पहचान लिया) थोड़ी देर सर झुकाया, उनकी आंख से आंसू जारी हो गये और एक दरबान से कहा कि इस आदमी को अपने साथ रखो, जब मैं वापसी पर बुलाऊँ तो मेरे पास पहुँचा देना। जब वह बाहर से वापसी पर मकान पहुँचे तो महल के परदे गिरवा कर दरबान से फ़रमाया कि, उस शख़्स को बुला कर लाओ, अगरचे वह मेरा ग़म ताज़ा ही करेगा।

दरबान मेरे पास आया और कहने लगा कि अमरूल मोमिनीन ने बुलाया है और इसका ख़्याल रखना कि अमीर पर सदमे का बहुत असर है, अगर तुम दस बातें करना चाहते हो तो पांच ही पर इक्तिफ़ा करना, यह कह कर वह मुझे अमीर के पास ले गया। उस वक़्त अमीर बिल्कुल तंहा बैठे थे, मुझ से फ़रमाया कि मेरे क़रीब आ जाओ। मैं क़रीब जाकर बैठ गया। कहने लगे कि तुम मेरे इस बेटे को जानते हो? मैं ने कहा, जी हां, मैं उनको जानता हूँ। कहने लगे वह क्या काम करता था? मैं ने कहा गारे मिट्टी की मज़दूरी करते थे। कहने लगे, तुमने मज़दूरी पर कोई काम उससे कराया? मैं ने कहा, कराया है। कहने लगे, तुम्हें इसका ख़्याल न आया कि उसकी हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से क़राबत थी (कि यह हज़रात हुज़ूर सल्ल॰ के चचा हज़रत अब्बास रज़ि॰ की औलाद हैं) मैं ने कहा कि अमीरूल मोमिनीन पहले अल्लाह जल्ल शानुहू से माज़िरत चाहता हूँ, उसके बाद आपसे उज़्र ख़्वाह हूँ, मुझे उस वक़्त तक इसका इल्म ही न था कि यह कौन है? मुझे उनके इंतिक़ाल के वक़्त उनका हाल मालूम हुआ। कहने लगे कि तुमने अपने हाथ से उसको ग़ुस्ल दिया। मैं ने कहा कि जी हां, कहने लगे कि अपना हाथ लाओ। मेरा हाथ लेकर अपने सीने पर रख दिया और चंद शेअ्र पढ़े जिनका तर्जुमा यह है:-

तर्जुमा:- "ऐ वह मुसाफ़िर, जिस पर मेरा दिल पिघल रहा है और मेरी आंखें उस पर आंसू बहा रही हैं, ऐ वह शख़्स जिसका मकान (क़ब्र) दूर है लेकिन उसका ग़म मेरे क़रीब है, बेशक मौत हर अच्छे से अच्छे ऐश को मुकद्दर कर देती है। वह मुसाफ़िर एक चांद का टुकड़ा था(यानी उस का चेहरा) जो

ख़ालिस चांदी की टहनी पर था (यानी उसके बदन पर) पस चांद का टुकड़ा भी क़ब्र में पहुँच गया और चांदी की टहनी भी क़ब्र में पहुँच गयी।

इसके बाद हारून रशीद ने बसरा उसकी क़ब्र पर जाने का इरादा किया, अबू आमिर रह० साथ थे। उसकी क़ब्र पर पहुँच कर हारून रशीद ने चंद शेअ्र पढ़े, जिनका तर्जुमा यह है :-

तर्जुमा:- "ऐ वह मुसाफ़िर, जो अपने सफ़र से कभी भी न लौटेगा, मौत ने कम उम्री के ही ज़माने में उसको जल्दी से उचक लिया, ऐ मेरी आंखों की ठंडक, तू मेरे लिए उंस और दिल का चैन था, लंबी रातों में भी और मुख़्तसर रातों में भी, तूने मौत का वह प्याला पिया है जिसको अंक़रीब तेरा बूढ़ा बाप बुढ़ापे की हालत में पियेगा, बल्कि दुनिया का हर आदमी उसको पियेगा चाहे जंगल का रहने वाला हो या शहर का रहने वाला हो, पस सब तारीफ़ें उसी वह्द हू ला शरी-क लहू के लिये हैं जिस की लिखी हुई तक़दीर के ये करिश्मे हैं।

अबू आमिर रह० कहते हैं कि इसके बाद जो रात आई तो जब मैं अपने वज़ाइफ़ पूरे करके लेटा ही था कि मैं ने ख़्वाब में एक नूर का क़ुब्बा देखा जिसके ऊपर अब्र की तरह नूर ही नूर फैल रहा है, उस नूर के अब्र में से उस लड़के ने मुझे आवाज़ देकर कहा, अबू आमिर, तुम्हें हक़ तआला शानुहू जज़ाये ख़ैर अता फ़रमाये। (तुमने मेरी तज्हीज़ व तक्फ़ीन की और मेरी वसीयत पूरी की) मैं ने उससे पूछा कि मेरे प्यारे, तेरा क्या हाल गुज़रा? कहने लगा कि मैं ऐसे मौला की तरफ़ पहुँचा हूँ, जो बहुत करीम है और मुझसे बहुत राज़ी है, मुझे उस मालिक ने वे चीज़ें अता कीं, जो न कभी किसी आंख ने देखीं, न कान ने सुनीं, न किसी आदमी के दिल पर उनका ख़्याल गुज़रा (यह एक मशहूर हदीस का पाक मज़्मून है, हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इर्शाद फ़रमाते हैं कि अल्लाह जल्ल जलालहू का पाक इर्शाद है कि मैं ने अपने नेक बंदों के लिये ऐसी चीज़ें तैयार कर कर रखी हैं जो न किसी आंख ने कभी देखीं, न कान ने सुनीं, न किसी के दिल पर उनका ख़्याल गुज़रा)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि० फ़रमाते हैं कि तौरात में लिखा है कि हक़ तआला शानुहू ने उन लोगों के लिये जिनके पहलू रात को ख़्वाबगाहों से दूर रहते हैं (यानी तहज्जुद गुज़ारों के लिये) वे चीज़ें तैयार कर रखी हैं, जिनको न किसी आंख ने देखा न कान से सुना, न किसी आदमी के दिल पर उनका

ख़्याल गुज़रा, न उनको कोई मुक़र्रब फ़रिश्ता जानता है, न कोई नबी, न रसूल जानता है और यह मज़्मून क़ुरआन पाक में भी है :-

فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّآ اُخْفِیَ لَهُمْ مِّنْ قُرَّةِ اَعْیُنٍ (سجدہ ع ۲)

"फ़ला तअ्-ल मु नफ़्सुम्-मा उख़्फ़ि-य लहुम् मिन् क़ुर्र-ति अअ्युनिन्॰" *(सूरः सज्दा, रुकूअ 2)*

किसी शख़्स को ख़बर नहीं, जो जो आंखों की ठंडक का सामान ऐसे लोगों के लिये ख़ज़ाना-ए-ग़ैब में मौजूद है। *(दुर्रे मंसूर)*

इसके बाद उस लड़के ने कहा कि हक़ तआला शानुहू ने क़सम खाकर फ़रमाया है कि जो भी दुनिया से इस तरह निकल आये जैसा कि मैं निकल आया, उसके लिये यही एज़ाज़ और इकराम है जो मेरे लिये हुए।

साहबे रौज़ कहते हैं कि यह सारा क़िस्सा मुझे एक और तरीक़े से भी पहुँचा है, उसमें यह भी है कि किसी शख़्स ने हारून रशीद से उस लड़के के मुताल्लिक़ सवाल किया तो उन्होंने बताया कि मेरे बादशाह होने से पहले यह लड़का पैदा हुआ था, बहुत अच्छी तर्बियत पायी थी, क़ुरआन पाक भी पढ़ा था, और उलूम भी पढ़े थे, जब मैं बादशाह बन गया तो यह मुझे छोड़ कर चला गया था, मेरी दुनिया से उसने कोई राहत न उठायी, चलते वक़्त मैं ने ही उसकी मां से कहा था कि इसको यह अंगूठी दे दे, उस अगूंठी का याक़ूत बहुत ज़्यादा क़ीमती था मगर यह उसको भी काम में न लाया, मरते वक़्त वापस कर गया। यह लड़का अपनी वालिदा का बड़ा फ़रमांबरदार था। *(रौज़)*

जिस बाप की दुनियादारी से यह साहबज़ादा रंजीदा होकर गया है यानी हारून रशीद, बहुत नेक दिल बादशाहों में इनका शुमार है, दौलत और सरवत के साथ लग़्ज़िशें तो हो ही जाती हैं लेकिन उनके दीनी कारनामे तारीख़ की किताबों में कसरत से मौजूद हैं। बादशाहत के ज़माने में सौ रक्अत नफ़्ल रोज़ाना पढ़ने का मामूल मरते वक़्त तक रहा, और अपने ज़ाती माल से एक हज़ार दिरम रोज़ाना सदक़ा किया करते थे। एक साल हज किया करते थे और एक साल जिहाद में शिर्कत करते, जिस साल ख़ुद हज को जाते, अपने साथ सौ आलिमों को मय उनके बेटों के हज को लेकर जाते, और जिस साल ख़ुद हज न करते, तीन सौ आदमियों को उनके पूरे ख़र्च और सामान, लिबास वग़ैरह के साथ हज को भेजा करते, जिनको ख़र्च भी बहुत वुस्अत से दिया जाता और लिबास भी

उम्दा दिया जाता, वैसे भी अताया की बहुत कसरत उनके यहां थी, सवाल करने वालों के लिये भी और बग़ैर सवाल के इब्तिदाअन भी, उलमा का उनकी मज्लिस में बहुत एज़ाज़ था और उनसे बहुत मुहब्बत करते थे।

अबू मुआविय: ज़रीर रह० मशहूर मुहद्दिस नाबीना ने एक मर्तबा उनके साथ खाना खाया, खाने के बाद ख़ुद हारून रशीद ने उनके हाथ धुलाये और यह कहा कि इल्म के एज़ाज़ में मैं ने धुलाये हैं।

एक मर्तबा अबू मुआविया रह० ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीस जिस में हज़रत आदम अलैहि० और हज़रत मूसा अलैहि० के मुनाज़रे का ज़िक्र था, बयान की, कि एक शख़्स ने कह दिया कि इन दोनों हज़रात की मुलाक़ात कहां हुई तो बादशाह को ग़ुस्सा आ गया और कहा, मेरी तलवार लाओ, ज़िन्दीक़, बद-दीन हुज़ूर सल्ल० की हदीस पर एतिराज़ करता है। नसीहत की बातों पर बहुत कसरत से रोने वाले थे।

(तारीख़े बग़दाद लिल्ख़तीब)

60. एक मर्तबा हारून रशीद हज को जा रहे थे, रास्ते में कूफ़ा में चंद रोज़ क़ियाम किया, जब वहां से रवानगी का वक़्त हुआ तो लोग बादशाह की सवारी की सैर के शौक़ में शहर से बाहर बहुत से जमा हो गये, बहलूल मजनूं भी पहुँच गये और रास्ते में एक कूड़ी पर बैठ गये। बच्चे उनको हर वक़्त सताया ही करते थे, डले मारते, मज़ाक़ करते। वह हस्बे दस्तूर उनके गिर्द जमा हो गये। जब बादशाह की सवारी क़रीब आयी तो बच्चे सब इधर उधर हो गये, उन्होंने ज़ोर से आवाज़ देकर कहा, ऐ अमीरूल मोमिनीन, ऐ अमीरूल मोमीनीन, हारून रशीद ने सवारी का पर्दा उठाया और कहने लगे, लब्बैक या बहलूल, लब्बैक या बहलूल, बहलूल मैं हाज़िर हूँ, बहलूल मैं हाज़िर हूँ, कहो क्या कहते हो? उन्होंने कहा मुझसे ऐमन ने यह हदीस बयान की कि हज़रत क़ुदामा रज़ि० यह कहते हैं कि जब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हज को तशरीफ़ ले जा रहे थे तो मैं ने मिना में आप को एक ऊँट पर सवार देखा, जिस पर मामूली कजावा था, न लोगों को सामने से हटाना था, न हटो बचो का शोर था। अमीरूल मोमिनीन तेरा भी इस सफ़र में तवाज़ोअ् से चलना, तकब्बुर से चलने से बेहतर है।

हारून रशीद यह सुनकर रोने लगे, फिर कहा, बहलूल कुछ और नसीहत करो, अल्लाह तआला शानुहू तुम पर रहम करे। बहलूल ने यह सुनकर

दो शेअ्र पढ़े जिनका तर्जुमा यह है कि :-

मान ले, तस्लीम कर ले कि तू सारी दुनिया का बादशाह बन गया और सारी दुनिया की मख़्लूक़ तेरी मुतीअ् हो गयी फिर क्या हुआ? कल को तो बहरहाल तेरा ठिकाना क़ब्र का गढ़ा है। एक इधर से मिटटी डाल रहा होगा, एक उधर से मिट्टी डाल रहा होगा। इस पर हारून रशीद फिर बहुत रोये और कहने लगे, बहलूल, तुमने बहुत अच्छी बात कही, कुछ और कहो। बह्लूल ने कहा, अमीरूल मोमिनीन, जिस शख़्स को हक़ तआला शानुहू माल और जमाल अता करे और वह अपने माल को अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करे और अपने जमाल को गुनाहों से महफ़ूज़ रखे, वह अल्लाह तआला के दीवान में नेक लोगों में लिखा जाता है।

हारून रशीद ने कहा, तुमने बहुत अच्छी बात कही, इसका सिला (इनआम) मिलना चाहिए। बह्लूल ने कहा कि इनआम का रूपया उन लोगों को वापस कर जिनसे (टैक्स वग़ैरह के तौर पर) ले रखा है, मुझे तेरे इनआम की ज़रूरत नहीं। हारून रशीद ने कहा। कि अगर तुम्हारे ज़िम्मे किसी का क़र्ज़ हो तो मैं उसको अदा कर दूँ। बहलूल ने कहा कि अमीरूल मोमिनीन, क़र्ज़ से क़र्ज़ अदा नहीं किया जाता। (यानी यह रूपया जो तेरे पास है, यह ख़ुद दूसरों का हक़ है जो तेरे ज़िम्मे उनका क़र्ज़ है) हक़ वालों का हक़ वापस करो, पहले अपना क़र्ज़ा अदा करो फिर दूसरों के क़र्ज़े को पूछना।

हारून रशीद ने कहा, तुम्हारे लिए कोई वज़ीफ़ा मुक़र्रर कर दें जिस से तुम्हारे खाने का इंतिज़ाम हो जाये। बहलूल ने कहा कि मैं और तुम दोनों अल्लाह तआला शानुहू के बंदे हैं। यह मुहाल है कि वह तुम्हारी रोज़ी का तो फ़िक्र रखे और मेरी रोज़ी का फ़िक्र न फ़रमाये। इसके बाद हारून रशीद ने सवारी का पर्दा गिराया और आगे चल दिये। *(रौज़)*

हारून रशीद की यह मशहूर बात है कि नसीहत के सुनने के बाद बहुत कसरत से रोया करते थे। एक मर्तबा हज को जा रहे थे तो सअदून मजनूं रास्ते में सामने आ गये और चंद शेअ्र पढ़े जिनका मतलब यही था कि मान लो तुम सारी दुनिया के बादशाह बन गये हो लेकिन क्या आख़िर मौत न आयेगी? दुनिया को अपने दुश्मनों के लिये छोड़ दो, जो दुनिया आज तुम्हें खूब हंसा रही है, यह कल को तुम्हें खूब रूलायेगी।

ये अश्आर सुन कर हारून रशीद ने एक चीख़ मारी और बेहोश होकर गिर गये और इतने तवील वक़्त तक बेहोशी रही कि तीन नमाज़ें क़ज़ा हो गयीं।
(रौज़)

इनकी अंगूठी की मुहर थी (अल् अज़्मतु वल् क़ुद-र तु लिल्लह) हर क़िस्म की बड़ाई और हर नौअ् की क़ुदरत सिर्फ़ अल्लाह जल्ल शानुहू के लिये हैं, यह मज़्मून गोया हर वक़्त निगाह के समाने रहता था।

61. हज़रत मालिक बिन दीनार रह० फ़रमाते हैं कि मैं एक मर्तबा बसरा के जंगल में जा रहा था, मैं ने हज़रत सादून को देखा, जो सअ्दून मजनूं के नाम से मशहूर थे, मैं ने उनसे पूछा क्या हाल है? कहने लगे, ऐसे शख़्स का क्या हाल पूछते हो जो सुबह शाम हर वक़्त एक तवील सफ़र के लिये तैयार बैठा हो और सफ़र के लिये तोशा किसी क़िस्म का भी साथ न हो, न कोई सफ़र का सामान, सवारी वग़ैरह उसके पास हो और उसको ऐसे मौला के पास जाना हो, जो निहायत आदिल, बड़ा करीम है और वह लोगों के दर्मियान उस वक़्त फ़ैसला कर देगा, यह कह कर वह बहुत ज़्यादा रोने लगे। मैं ने पूछा कि रोने की क्या बात है? कहने लगे कि मैं न तो दुनिया के छूटने पर रो रहा हूँ, न मौत से घबरा कर रो रहा हूँ, बल्कि मैं अपनी उम्र के उस दिन पर रो रहा हूँ, जो किसी नेक अमल से ख़ाली रह गया हो, ख़ुदा की क़सम, मुझे अपने सामाने सफ़र की कमी रूला रही है, सफ़र बहुत तवील और बड़ी मशक़्क़त का है। बहुत सी घाटियां इस सफ़र में पेश आनी हैं और मेरे पास सफ़र का कोई भी सामान मौजूद नहीं है और इस सफ़र के सब मसाइब बर्दाश्त करने के बाद यह भी पता नहीं कि जन्नत में जाऊंगा या जहन्नम में डाल दिया जाऊंगा।

मैं ने उनसे यह हिक्मत की बातें सुनकर कहा कि लोग आपको मजनूं कहते हैं, आप तो बड़ी अच्छी बातें करते हैं। कहने लगे कि तुम भी दुनियादारों के कहने से धोखे में पड़ गये, मुझे जुनून नहीं है, मेरे आक़ा की मुहब्बत मेरे दिल में, मेरे जिगर में, मेरे गोश्त पोस्त में, मेरी हड्डियों में घुस गयी है, उसके इश्क़ में मैं हैरान व परेशान रहता हूँ (इसकी वजह से दुनिया के पागल मुझे मजनूं कहते हैं) मैं ने पूछा कि आप लोगों से भागते हैं (जंगल में पड़े रहते हैं) इस पर उन्होंने दो शेअ्र पढ़े जिनका तर्जुमा यह है कि :-

"आदमियों से हमेशा दूर रह और अल्लाह जल्ल शानुहू की हमनशीनी

हर वक़्त इख़्तियार कर, तू आदमियों का जिस हालत में दिल चाहे, तजुर्बा कर ले, तू हर हालत में उनको बिच्छू पायेगा कि तक्लीफ़ पहुँचाने के सिवा उनका कोई काम न होगा। *(रौज़)*

62. हज़रत अब्दुल वाहिद बिन ज़ैद रह॰ जो मशाइख़े चिश्तिया में मशहूर बुज़ुर्ग हैं, फ़रमाते हैं कि मैं तीन रात तक मुसलसल यह दुआ करता रहा कि या अल्लाह, जन्नत में जो मेरा रफ़ीक़ हो उससे मुझे दुनिया में मुलाक़ात करा दे। तीन दिन के बाद मुझे बताया गया कि तेरी साथी मैमूना सौदा हैं (जो एक हब्शी औरत थीं, इतनी काली कि उनका लक़ब ही सौदा हो गया था) मैं ने पूछा कि वह कहां मिलेंगी? मुझे बताया गया कि कूफ़ा के फ़लां क़बीले में है।

मैं उनसे मिलने चल दिया। कूफ़ा पहुँच कर मैं ने उनका हाल दर्याफ़्त किया, मुझे बताया गया कि बकरियां चराया करती हैं, फ़लां जंगल में हैं मैं उस जंगल में पहुँचा, वह एक गुदड़ी ओढ़े नमाज़ पढ़ रही थीं, उनके क़रीब ही बकरियां और भेड़िये इकटठे चर रहे थे। जब मैं पहुँचा तो उन्होंने अपनी नमाज़ को मुख़्तसर करके सलाम फेरा और सलाम फेरने के बाद कहने लगीं, अब्दुल वाहिद आज नहीं, आज तो चले जाओ, मुलक़ाता का वायदा कल को (क़ियामत में) है।

मैं ने उन से कहा, अल्लाह तआला तुम पर रहम फ़रमाये तुम्हें किस तरह मालूम हुआ कि मैं अब्दुल वाहिद हूँ, कहने लगीं तुम्हें मालूम नहीं कि रूहें (अज़ल में) सब एक लश्कर की तरह मुज्तमा थीं, जिनका वहां आपस में तआरूफ़ हो गया, उनका यहां भी ताअरूफ़ हो जाता है (यह एक हदीस पाक का मज़्मून है जो मशहूर हदीस है।) मैं ने उन से कहा कि मुझे नसीहत कर दीजिये कहने लगीं, बड़े ताज्जुब की बात है कि जो ख़ुद वाअिज़ हो, वह दूसरों से नसीहत की दर्ख़्वास्त करे (तुम तो ख़ुद ही बड़े वाअिज़ हो) इसके बाद उन्होंने कहा, मुझे बुज़ुर्गों से यह बात पहुँची है कि जिस बंदे को हक़ तआला शानुहू दुनिया की कोई नेमत (माल, दौलत वग़ैरह) अता फ़रमाये और वह शख़्स फिर भी उसी की तलब में लगा रहे तो हक़ तआला शानुहू उस शख़्स से अपने साथ तंहाई की मुहब्बत ज़ायल कर देते हैं, और अपने से क़ुर्ब की बजाए अपने से बुअ्द (दूरी) उस पर मुसल्लत कर देते हैं और अपने साथ उन्स (ताल्लुक़) के बजाए अपने से वहशत उस पर सवार कर देते हैं इसके बाद उन्होंने पांच शेअ्र पढ़े, जिनका तर्जुमा यह है कि :-

तर्जुमा:- "ऐ वाअिज़, तू लोगों को वअ्ज़ नसीहत और तंबीह के लिये खड़ा होता है, तू लोगों को गुनाह से रोकता है हालांकि तू खुद उन गुनाहों का बीमार है, उनमें मुब्तला है, अगर तू दूसरों को नसीहत से पहले अपनी इस्लाह कर लेता, अपने गुनाहों से तौबा कर लेता, तो तेरे कहने का उनके दिलों पर असर पड़ता, लेकिन जब तू ऐसी हालत में दूसरों को मना करता है कि तू खुद उनमें मुब्तला है तो तू अपने इस मना करने में खुद शक में है (और जिसको खुद किसी बात में तरद्दुद हो, वह दूसरे को ज़ोर से क्या कह सकता है)

मैं ने पूछा कि तुम्हारी बकरियां भेड़ियों के साथ चर रही हैं। भेड़िये उनको कुछ कहते नहीं? कहने लगीं कि जा अपना काम कर, मैं ने अपने सरदार से सुलह कर ली, उसने मेरी बकरियों और भेड़ियों में सुलह करा दी। *(रौज़)*

यह अजीब बात मैं ने अपने चचा जान मौलाना मुहम्मद इल्यास साहब रह० के यहां हमेशा देखी कि उनके मकान में कई कई बिल्लियां और मुर्ग़ियां तमाम दिन मकान में इकट्ठी फ़िरती रहतीं, न वे मुर्ग़ियां बिल्लियों से भागतीं, न वे बिल्लियां मुर्ग़ियों को कुछ कहतीं।

63. हज़रत उत्बा ग़ुलाम रह० कहते हैं कि मैं बसरा के जंगल में जा रहा था, मैं ने जंगली लोगों के चंद ख़ेमे देखे, जिनकी खेती वहां थी। उन ख़ेमों में से एक ख़ेमे में एक मजनूना लड़की थी, मैं ने उसको सलाम किया, उसने मेरे सलाम का जवाब न दिया (मुम्किन है कि उसने सलाम न सुना हो या उन्होंनें जवाब न सुना हो या किसी ऐसी हालत में हो कि उस वक़्त सलाम का जवाब साक़ित हो जाता है कि बहुत सी जगह सलाम का जवाब साक़ित हो जाता है) और चंद शेअ्र पढ़े, जिनका तर्जुमा यह है कि -:

तर्जुमा:- "वे ज़ाहिद और आबिद फ़लाह को पहुँच गये, जिन्होंने अपने मौला की रिज़ा के लिऐ अपने पेटों को भूखा रखा, उन्होंने रातों को अपनी आंखों को जगाया, उनकी सारी रात ऐसी हालत में गुज़रती है कि वे मुशाहदा करते रहते हैं। उनको हक़ तआला शानुहू की महब्बत ने ऐसा हैरत में डाला है कि दुनियादार उनको मजनूं समझते हैं हालांकि ज़माने के सबसे ज़्यादा अक़्लमंद लोग यही हज़रात हैं लेकिन इनको इनके अह्वाल ने बेचैन कर रखा है। उत्बा रह० कहते हैं कि मैं उस मजनूना के क़रीब गया और मैं ने पूछा कि यह खेती किसकी है? कहने लगी कि अगर सही सालिम रही तो हमारी है।

मैं उसके बाद दूसरे ख़ेमों की सैर करता रहा, इतने में बड़े ज़ोर की बारिश शुरू हो गयी और आसमान से ऐसा मूसलाधार पानी पड़ा गोया मश्कों का मुंह खुल गया। मैं ने सोचा कि उस मजनूना, को देखूं, वह बारिश के मुताल्लिक़ क्या कहती है (इसमें तो सारी खेतियां बर्बाद हो गयीं) मैं ने जाकर देखा कि उसकी खेती बिल्कुल पानी में डूब गयी और वह खड़ी हुई कह रही है, क़सम है, उस पाक ज़ात की, जिसने अपनी ख़ालिस मुहब्बत का कुछ हिस्सा मेरे दिल में रख दिया, मेरा दिल तुझ से राज़ी रहने में बिल्कुल पुख़्ता है। फिर वह मेरी तरफ़ मुतवज्जह होकर कहने लगी, देखो जी, उसी ने तो यह खेती जमाई, उसी ने उगाई उसी ने इसको सीधा खड़ा किया, उसी ने इसमें बालें लगायीं, उसी ने इन बालों में ग़ल्ला पैदा किया, उसी ने बारिश बरसा कर इस की परवरिश की, उसी ने इसकी ज़ाया होने से हिफ़ाज़त की और जब इसके काटने का वक़्त बिल्कुल क़रीब आ गया तो उसी ने इसको ज़ाया कर दिया, फिर आसमान की तरफ़ मुंह करके कहा कि यह सारी मख़्लूक़ तेरे ही बंदे हैं और उन सब की रोज़ी तेरे ही ज़िम्मे है तू जो चाहे कर, तुझे इख़्तियार है।

मैं ने उस से कहा कि इस खेती के बर्बाद हो जाने पर तुझे किस तरह सब्र आ गया, कहने लगी कि उत्बा चुप रहो, मेरा मालिक बड़ा ग़नी है, बड़ा क़ाबिले तारीफ़ है, उसकी तरफ़ से हमेशा नई रोज़ी मिलती रही, तमाम तारीफ़ें उस पाक ज़ात के लिये हैं जो मेरे साथ मेरी ख़्वाहिश से बहुत ज़्यादा इनआम फ़रमाता रहा। उत्बा रह० कहते हैं कि मुझे जब भी उसकी हालत और उसकी बातें याद आती हैं, बे इख़्तियार रोना आ जाता है *(रौज़)*

64. हज़रत अबुर्रबीअ् रह० फ़रमाते हैं कि मैं ने एक गांव में एक नेक औरत की शोहरत सुनी, जिसका नाम फ़िज़्ज़ा था, मेरी आदत किसी औरत से मिलने की न थी, मगर उसके अह्वाल मैं ने ऐसे सुने कि मुझे उस के पास जाने की ख़्वाहिश पैदा हुई। मैं उस गांव में गया और उसकी तहक़ीक़ की तो मुझे लोगों ने बताया कि उसके यहां एक बकरी है, जिसके थनों से दूध और शहद दोनों निकलते हैं। मुझे यह सुनकर ताज्जुब हुआ, मैं ने एक नया प्याला ख़रीदा और उसके घर जाकर मैं ने कहा, कि तुम्हारी बकरी के मुताल्लिक़ मैं ने यह शोहरत सुनी है कि वह दूध और शहद देती है मैं भी उसकी बरकत देखना चाहता हूँ। उसने बकरी मेरे हवाले कर दी, मैं ने उस का दूध निकाला तो वाक़ई उसमें दूधा और शहद निकला। हमने उसको पिया।

इसके बाद मैं ने पूछा कि यह बकरी कहां से तुम्हारे पास आयी, कहने लगी, इसका क़िस्सा यह है कि हम ग़रीब आदमी हैं, एक बकरी के सिवा हमारे पास कुछ न था, उसी पर हमारा गुज़र था, इत्तिफ़ाक़ से बक़रईद आ गयी। मेरे ख़ाविंद ने कहा कि हमारे पास कुछ और तो है नहीं, यह बकरी हमारे पास है, लाओ इसी की क़ुर्बानी कर लें। मैं ने कहा कि हमारे पास गुज़र के लिये इसके सिवा तो कोई चीज़ है नहीं ऐसी हालत में क़ुर्बानी का हुक्म तो है नहीं, फिर क्या ज़रूरी है कि हम क़ुर्बानी करें। ख़ाविंद ने यह बात मान ली और क़ुर्बानी मुल्तवी कर दी। इसके बाद इत्तिफ़ाक़ से उसी दिन हमारे पास एक मेहमान आ गया तो मैं ने ख़ाविंद से कहा कि मेहमान के इकराम का तो हुक्म है और कोई चीज़ तो है नहीं इस बकरी को ही ज़िब्ह कर लो। वह उस बकरी को ज़िब्ह करने लगा, मुझे यह ख़्याल हुआ कि मेरे छोटे छोटे बच्चे इस बकरी को ज़िब्ह होते देख कर रोने लगेंगे, इसलिये मैं ने कहा कि बाहर ले जाकर दीवार की आड़ में ज़िब्ह कर लो, बच्चे न देखें। वह बाहर ले गये और जब उस पर छुरी चलाई तो यह बकरी हमारी दीवार के ऊपर खड़ी थी और वहां से खुद उतर कर मकान के सहन में आ गयी। मुझे यह ख़्याल हुआ कि शायद वह बकरी ख़ाविंद के हाथ से छूट गयी। मैं उसको देखने बाहर गयी तो ख़ाविंद उस बकरी की खाल खींच रहे थे। मैं ने उनसे कहा कि बड़े ताज्जुब की बात है कि ऐसी ही बकरी घर में आ गयी। उसका क़िस्सा मैं ने सुनाया। ख़ाविंद कहने लगे कि क्या बईद है कि हक़ तआला शानुहू ने उसका बदला हमें अता फ़रमाया हो।

यह वह बकरी है जो दूध और शहद देती है, यह सब कुछ महज़ मेहमान के इकराम की वजह से है, फिर वह औरत कहने लगी कि ऐ मेरे बच्चों यह बकरी दिलों में चरती है। अगर तुम्हारे दिल नेक रहेंगे तो इस का दूध भी अच्छा रहेगा और अगर तुम्हारे दिलों में खोट आ गया तो इस का दूध भी ख़राब हो जायेगा। अपने दिलों को अच्छा रखो, हर चीज़ तुम्हारे लिये अच्छी बन जायेगी। *(रौज़)*

65. हज़रत बहलूल रह० फ़रमाते हैं कि मैं एक मर्तबा बसरा की सड़क पर जा रहा था, रास्ते में चंद लड़के अख़रोट और बादाम से खेल रहे थे और एक लड़का उनके क़रीब खड़ा रो रहा था, मुझे यह ख़्याल हुआ कि इस लड़के के पास बादाम और अख़रोट नहीं हैं, इनकी वजह से रो रहा है। मैं ने उसको कहा,

बेटा तुझे मैं अख़रोट, बादाम ख़रीद दूँगा। तू भी उनसे खेलना। उसने मेरी तरफ़ निगाह उठा कर देखा और कहा, अरे बेवकूफ़, क्या हम खेल के वास्ते पैदा हुए हैं। मैं ने पूछा फिर किस काम के वास्ते पैदा हुए हैं? कहने लगा कि इल्म हासिल करने के वास्ते और इबादत करने के वास्ते। मैं ने कहा अल्लाह जल्ल शानुहू तेरी उम्र में बरकत करे, तूने यह बात कहां से मालूम की? कहने लगा कि हक़ तआला शानुहू का इर्शाद है :-

اَفَحَسِبْتُمْ اَنَّمَا خَلَقْنٰكُمْ عَبَثًا (مؤمنون ع ٦)

"अ-फ़ हसिब्तुम् अन्नमा ख़लक़्नाकुम् अ-ब-सा॰"

(मुअमिनून, रूकूअ 6)

"क्या तुम्हारा यह गुमान है कि हमने तुमको यों ही बेकार पैदा किया और यह कि तुम हमारे पास नहीं लौटाये जाओगे।

मैं ने कहा कि बेटा तू तो बड़ा हकीम मालूम होता है, मुझे कुछ नसीहत और कर, उसने चार शेअ्र पढ़े जिनका तर्जुमा यह है -

"मैं देख रहा हूँ कि दुनिया हर वक़्त चल चलाव में है (आज यह गया, कल वह गया) हर वक़्त चलने के लिये दामन उठाये क़दम और पिण्डली पर (दौड़ने के लिये तैयार रहती है) पस न तो दुनिया किसी ज़िन्दा के लिये बाक़ी रहती है, न कोई ज़िन्दा दुनिया के लिये बाक़ी रहता है, ऐसा मालूम होता है जैसा कि मौत और हवादिस दो घोड़े हैं जो तेज़ी से आदमी की तरफ़ दौड़े चले आ रहे हैं, पस ओ बे वक़ूफ़, जो दुनिया के साथ धोखे में पड़ा हुआ है, ज़रा ग़ौर कर और दुनिया से अपने लिये कोई (आख़िरत में काम करने वाली) एतिमाद की चीज़ ले ले।

यह शेअ्र पढ़कर लड़के ने आसमान की तरफ़ मुंह किया और दोनों हाथ उठाये और आंसुओं की लड़ी उसके रूख़सारों पर जारी थी और ये दो शेअ्र पढ़े :-

يامن اليه المبتهل   يامن عليه المتكل

يامن اذا ماامل   يرجوه لم يخط الامل

"या मन् इलै हिल् मुब्तहिलु

या मन् अलै हिल् मुत्तकिलु

या मन् इज़ा मा आमिलु
यर्जूहू लम् यख़ुतुल् अ-म-लु"

जिनका तर्जुमा यह है कि "ऐ वह पाक ज़ात कि उसी की तरफ़ आजिज़ी की जाती है और उसी पर एतिमाद किया जाता है। ऐ वह पाक ज़ात कि जब उससे कोई शख़्स उम्मीद बांध ले तो वह ना मुराद नहीं हो सकता, उसकी उम्मीद ज़रूर पूरी होती है।

यह शेअ्र पढ़ कर वह बेहोश होकर गिर गया। मैं ने जल्दी से उसका सर उठा कर अपनी गोद में रख लिया और अपनी आस्तीन से उसके मुंह पर जो मिट्टी वग़ैरह लग गयी थी, पोंछने लगा, जब उसको होश आया तो मैं ने कहा, बेटा अभी से तुम्हें इतना ख़ौफ़ क्यों हो गया, अभी तो तुम बहुत बच्चे हो, अभी तुम्हारे आमाल नामे में कोई गुनाह भी न लिखा जायेगा। कहने लगा, बहलूल हट जाओ मैं ने अपनी वालिदा को हमेशा देखा कि जब वह आग जलाना शुरू करती हैं तो पहले छोटी छोटी छपटियां ही चूल्हे में रखती हैं उसके बाद बड़ी लकड़ियां रखती हैं। मुझे डर है कि कहीं जहन्नम की आग में छोटी लकड़ियों की जगह मैं न रख दिया जाऊँ। मैं ने कहा, साहब ज़ादे तुम तो बड़े हकीम मालूम होते हो मुझे कोई मुख़्तसर सी नसीहत करो। उसने इस पर चौदह शेअ्र पढ़े जिनका तर्जुमा यह है:-

मैं ग़फ़लत में पड़ा रहा और मौत को हांकने वाला मेरे पीछे पीछे मौत को हांके चला आ रहा है, अगर मैं आज न गया तो कल ज़रूर चला जाऊँगा। मैं ने अपने बदन को अच्छे अच्छे और नर्म नर्म लिबास से आरास्ता किया, हालांकि मेरे बदन के लिये (क़ब्र में जाकर) गलने और सड़ने के सिवा चारा-ए-कार नहीं है, वह मंज़र गोया इस वक़्त मेरे सामने है जबकि मैं क़ब्र में बोसीदा पड़ा हुआ हूँगा। मेरे ऊपर मिट्टी का ढेर होगा और नीचे क़ब्र का गढ़ा होगा और मेरा हुस्न व जमाल सारा का सारा जाता रहेगा, और बिल्कुल मिट जायेगा, हत्ता कि मेरी हड्डियों पर न गोश्त रहेगा, न खाल रहेगी। मैं देख रहा हूँ कि उम्र तो ख़त्म होती जा रही है और आरज़ूएं हैं कि पूरी नहीं हो चुकतीं और बड़ा तवील सफ़र सामने है और तोशा ज़रा सा भी साथ नहीं है और मैं ने खुल्लम खुल्ला गुनाहों के साथ अपने निगहबान और मुहाफ़िज़ का मुक़ाबला किया और बड़ी बुरी हरकतें की हैं, जो अब वापस भी नहीं हो सकतीं (यानी जो गुनाह कर चुका हूँ, वह बे किया

नहीं हो सकता) और मैं ने लोगों से छुपाने के लिये पर्दे डाले कि मेरा ऐब किसी पर ज़ाहिर न हो, लेकिन मेरे जितने मख़फ़ी गुनाह हैं, वे कल को उस मालिक के सामने ज़ाहिर होंगे (उसकी पेशी में पेश होंगे) इसमें शक नहीं कि मुझे उसका ख़ौफ़ ज़रूर था, लेकिन मैं उसके ग़ायते हिल्म पर भरोसा करता रहा (जिसकी वजह से जुर्रत होती जा रही है) और इस पर एतिमाद करता रहा कि वह बड़ा ग़फ़ूर है, उसके सिवा कौन माफ़ी दे सकता है? बेशक तमाम तारीफ़ें उसी पाक ज़ात के लिये हैं, अगर मौत के और मरने के बाद गलने और सड़ने के सिवा कोई दूसरी आफ़त न भी होती और मेरे रब की तरफ़ से जन्नत का वायदा और दोज़ख़ की धमकी न भी होती तब भी मरने और सड़ने ही में इस बात पर काफ़ी तंबीह मौजूद थी कि लह्व व लअिब से एहतिराज़ किया जाता, लेकिन क्या करें कि हमारी अक़्ल ज़ायल हो गयी (किसी बात से इब्रत हासिल नहीं होती, बस अब इसके सिवा कोई चारा नहीं कि) काश गुनाहों का बख़्शने वाला मेरी मग़्फ़िरत कर दे। जब किसी ग़ुलाम से कोई लग़्ज़िश होती है तो आक़ा ही उसको माफ़ करता है। बेशक, मैं बद्तरीन बंदा हूँ, जिसने अपने मौला के अहद में ख़ियानत की और नालायक़ ग़ुलाम ऐसे ही होते हैं। कि उनका कोई क़ौल क़रार मोअ्तबर नहीं होता। मेरे आक़ा जब तेरी आग मेरे बदन को जलायेगी तो मेरा क्या हाल बनेगा जब कि सख़्त से सख़्त पत्थर भी उस आग को बर्दाश्त नहीं कर सकते। मैं मौत के वक़्त भी तने तंहा जाऊँगा, क़ब्र में भी अकेला ही जाऊँगा क़ब्र से भी अकेला ही उठूँगा (किसी जगह भी कोई मेरा मुईन व मददगार न होगा) पस ऐ वह पाक ज़ात जो ख़ुद अकेली है, वह्द-हू ला शरी-क लहू है ऐसे शख़्स पर रहम कर जो बिल्कुल तने तंहा रह गया।

बहलूल कहते हैं कि उसके ये अश्आर सुनकर मुझ पर ऐसा असर हुआ कि मैं ग़श खाकर गिर गया, बड़ी देर में जब मुझे होश आया तो वह लड़का जा चुका था। मैं ने उन बच्चों से दर्याफ़्त किया, यह बच्चा कौन था? वे कहने लगे कि तू उसको नहीं जानता यह हज़रत इमाम हुसैन रज़ि॰ की औलाद में है, मैं ने कहा, मुझे ख़ुद हैरत हो रही थी कि यह फल किस दरख़्त का है. वाक़ई यह फल उसी दरख़्त का हो सकता था। हक़ तआला शानुहू हमें उस ख़ानदान की बरकतों से मुन्तफ़ा फ़रमाये। आमीन! (रौज़)

८८. हज़रत शिब्ली रह॰ फ़रमाते हैं कि मुझे एक मर्तबा मेरे दिल ने कहा

कि तू बख़ील है, मगर मेरे नफ़्स ने कहा कि नहीं, बख़ील नहीं हूं। मेरे दिल ने फ़िर कहा कि नहीं तू बख़ील है, मैं ने उसके जांचने के लिये यह इरादा कर लिया कि सबसे पहले मेरे पास जो कुछ आयेगा (ख़्वाह वह कितना ही हो) मैं सब का सब उस फ़क़ीर को दे दूँगा, जो मुझे सबसे पहले मिलेगा।

मेरी यह नीयत पूरी भी न होने पायी थी कि मुझे एक शख़्स ने पचास दीनार (अशर्फ़ियां) नज़्र किये, मैं ने वे ले लिये और अपनी नीयत के मुवाफ़िक़ किसी फ़क़ीर की तलाश में निकला। सबसे पहले मुझे एक नाबीना फ़क़ीर मिला, जो एक हज्जाम से हजामत बनवा रहा था, मैं ने वे सब के सब उस नाबीना को दे दिये। उसने कहा कि ये (हजातम की उजरत में) इस हज्जाम को दे दो। मैं ने कहा कि पचास अशर्फ़ियां है (इतनी अशर्फ़ियां भी कहीं हजामत की उजरत में दी जाती हैं) उस नाबीना ने ऊपर सर उठाकर कहा कि हमने कहा नहीं था कि तू बख़ील है।

मैं ने जल्दी से वे हज्जाम को दे दिये, उस हज्जाम ने कहा कि जब यह नाबीना हजामत बनवाने बैठा था तो मैं ने इसकी ग़ुरबत को देख कर यह नीयत कर ली थी कि इसकी उजरत न लूँगा (मुझे उन दोनों की गुफ़्तगू सुनकर इस क़दर ग़ैरत आयी कि) मैं ने उन अशर्फ़ियों को दरिया में फेंक दिया कि ख़ुदा तेरा नास करे, तुझको जो भी ज़रा दिल लगाये, हक़ तआला शानुहू उसको इसी तरह ज़लील करते हैं। *(रौज़)*

ग़ैरत की शिद्दत में इस क़िस्म के अमर का पेश आ जाना मुस्तब्अद नहीं, अगर हज़रत सुलैमान अला नबिय्यिना व अलैहिस्सलातु वस्सलाम "फ़-तफ़ि-क़ मस्हम् बिस्सू-क़ि वल् अअ्ना-क़ि" (साद, रूकूअ 3) कर सकते हैं। और उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा रज़ि॰ हुज़ूर सल्ल॰ की मौजूदगी में दूसरी सौत का प्याला फोड़ सकती हैं और उसका खाना फेंक सकती हैं और हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन अल्आस रज़ि॰ अस्फ़र की रंगी हुई चादर को सिर्फ़ हुज़ूर सल्ल॰ के इस सवाल पर कि यह क्या पहन लिया, तनूर में जला सकते हैं और अंसारी हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अपने से बेइल्तिफ़ाती देख कर बने बनाये क़ुब्बा को गिरा सकते हैं। तो हज़रत शिब्ली रह॰ के अशर्फ़ियां फेंक देने में कोई इशकाल नहीं।

67. हज़रत ज़ुन्नून मिस्री रह॰ (जो अकाबिरे मशहूर सूफ़िया में हैं)

फ़रमाते हैं कि मैं एक जंगल में जा रहा था, मुझे एक नौजवान नज़र पड़ा, जिसके चेहरे पर दाढ़ी की दो लकीरें थीं (यानी निकलनी ही शुरू हुई थी) मुझे देख कर उसके बदन में कपकपी आ गयी और चेहरा ज़र्द हो गया और मुझसे भागने लगा। मैं ने कहा, मैं तो तेरे ही जैसा इंसान हूँ (जिन्न तो नहीं हूँ फिर क्यों इतना डरता और भागता है) वह कहने लगा कि तुम (इंसानों ही) से तो भागता हूँ।

मैं उसके पीछे चला और मैं ने उसको क़सम दी कि ज़रा खड़ा हो जाये वह खड़ा हो गया। मैं ने पूछा कि तू इस जंगल बयाबान में बिल्कुल तंहा रहता है कोई दुसरा रफ़ाक़त के लिये नहीं है, तुझे ख़ौफ़ नहीं मालूम होता? कहने लगा नहीं, मेरे पास तो मेरा दिल लगाने वाला है (मैं ने समझा कि इसका कोई रफ़ीक़ कहीं गया होगा) मैं ने कहा, वह कहां है? कहने लगा कि वह हर वक़्त मेरे साथ है, वह मेरे दायें बायें आगे पीछे हर तरफ़ है। मैं ने पूछा कि कुछ खाने पीने का सामान भी तेरे पास नहीं है? वह कहने लगा कि वह भी मौजूद है। मैं ने कहा वह कहां है? कहने लगा जिसने मेरी मां के पेट में मुझे रोज़ी दी, उसी ने मेरी बड़ी उम्र में भी रोज़ी की ज़िम्मेदारी ले रखी है। मैं ने कहा कि खाने पीने के लिये कुछ तो आख़िर चाहिए, उससे रात को तहज्जुद में खड़े होने की क़ुव्वत पैदा होती है, दिन के रोज़े रखने में मदद मिलती है और (बदन की क़ुव्वत से) मौला की ख़िदमत (इबादत) भी अच्छी तरह हो सकती है और मैं ने खाने पीने की ज़रूरत पर बहुत ज़ोर दिया तो वह चंद शेअ्र पढ़ कर भाग गया जिनका तर्जुमा यह है :-

तर्जुमा:- अल्लाह के वली के लिये किसी घर की ज़रूरत नहीं है, और वह हरगिज़ इसको गवारा नहीं करता कि उसकी कोई जायदाद हो, वह जब जंगल से पहाड़ की तरफ़ चल देता है तो वह जंगल उसकी जुदाई में रोता है, जिसमें वह पहले से था। वह रात के तहज्जुद पर और दिन के रोज़े पर बहुत ज़्यादा सब्र करने वाला हुआ करता है, वह अपने नफ़्स को समझा दिया करता है कि जितनी मेहनत और मशक़्क़त हो सके कर ले, इसलिये कि रहमान की ख़िदमत में कोई आड़ नहीं होती (वह बड़ी फ़ख़्र की चीज़ होती है) वह जब अपने रब से बातें किया करता है तो उसकी आंख से आंसू बहा करते हैं। और वह यह कहा करता है कि या अल्लाह, मेरा दिल उड़ा जा रहा है (इसकी तू ख़बर ले) वह यों कहा करता है कि या अल्लाह मुझे न तो (जन्नत में) याक़ूत का घर चाहिए, जिस में हूरें रहती हों और न मुझे जन्नते अदन की ख़्वाहिश है

और न जन्नत के फलों की आरज़ू है, मेरी सारी तमन्ना सिर्फ़ तेरा दीदार है, इसका मुझ पर एहसान कर दे, यही बड़ी फ़ख़्र की चीज़ है। (रौज़)

68. हज़रत इब्राहीम ख़वास रह॰ कहते हैं कि मैं एक मर्तबा जंगल में जा रहा था, रास्ते में एक नसरानी राहिब मुझे मिला, जिसकी कमर में ज़ुन्नार (पटका या धागा वग़ैरह जो कुफ़्र की अलामत के तौर पर काफ़िर बांधते हैं) बंध रहा था, उसने मेरे साथ रहने की ख़्वाहिश ज़ाहिर की (काफ़िर फ़क़ीर अक्सर मुसलमान फ़ुक़रा की ख़िदमत में रहते चले आये हैं।) मैं ने साथ ले लिया, सात दिन तक हम चलते रहे (न खाना, न पीना) सातवें दिन उस नसरानी ने कहा, ऐ मुहम्मदी ! कुछ अपनी फ़ुतूहात दिखाओ (कई दिन हो गये, कुछ खाया नहीं) मैं ने अल्लाह तआला शानुहू से दुआ की कि या अल्लाह तआला, इस काफ़िर के सामने मुझे ज़लील न फ़रमा। मैं ने देखा कि फ़ौरन एक ख़्वान मेरे सामने रखा गया, जिस में रोटियां, भुना हुआ गोश्त, और तरो ताज़ा खजूरें और पानी का लोटा रखा हुआ था, हम दोनों ने खाया, पानी पिया और चल दिये।

सात दिन तक चलते रहे। सातवें दिन मैं ने (इस ख़्याल से कि वह नसरानी फिर न कह दे) जल्दी करके उस नसरानी से कहा कि इस मर्तबा तुम कुछ करके दिखाओ, अब के तुम्हारा नम्बर है। वह अपनी लकड़ी पर सहारा लगा कर खड़ा हो गया और दुआ करने लगा, जब ही दो ख़्वान जिन में हर चीज़ उस से दो गुनी थी, जो मेरे ख़्वान पर थी, सामने आ गए। मुझे बड़ी ग़ैरत आयी, मेरा चेहरा फ़क़ हो गया और मैं हैरत में रह गया और मैं ने रंज की वजह से खाने से इंकार कर दिया। उस नसरानी ने मुझ पर खाने का इसरार किया, मगर मैं उज़्र ही करता रहा। उसने कहा कि तुम खाओ मैं तुमको दो बशारतें सुनाऊँगा, जिनमें से पहली यह है कि:-

اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ

"अश्हदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु व अश्हदु अन्-न मुहम्म दर्रसू लुल्लाह"-

(सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) मैं मुसलमान हो गया हूँ और यह कह कर ज़ुन्नार तोड़ कर फेंक दिया।

और दूसरी बशारत यह है कि मैं ने जो खाने के लिये दुआ की थी, वह यही कह कर की थी कि या अल्लाह, इस मुहम्मदी का अगर तेरे यहां कोई

मर्तबा है तो इसके तुफ़ैल तू हमें खाना खिला दे। इस पर यह खाना मिला है और इसी वजह से मैं मुसलमान हुआ।

इसके बाद हम दोनों ने खाना खाया, फिर आगे चल दिये। आख़िर मक्का मुकर्रमा पहुँचे, हज किया और वह नौ मुस्लिम मक्का ही में ठहर गया, वहीं उसका इंतिक़ाल हुआ। "ग़-फ़र ल्लाहु लहू" (रौज़)

काफ़िरों के इस तरह मुसलमान होने के बहुत से वाक़िआत तारीख़ की कुतुब में मौजूद हैं और इस वाक़िए से यह भी मालूम हुआ कि हक़ तआला शानुहू बसा औक़ात दूसरों के तुफ़ैल किसी को रोज़ी देते हैं, जिनको वह मिलती है, वे अपनी बेवक़ूफ़ी से यह समझते हैं कि यह हमारा कारनामा है, हमारी कोशिश का नतीजा है। अहादीस में कसरत से यह मज़्मून आया है कि तुमको तुम्हारे ज़ोअफ़ा (कमज़ोरों, बूढ़ों) के तुफ़ैल (अक्सर) रोज़ी दी जाती है।

नीज़ इस वाक़िए से यह भी मालूम हुआ कि काफ़िरों पर भी बसा औक़ात मुसलमानों की वजह से फ़ुतूहात होती हैं जिस को ज़ाहिर में उन की मदद समझा जाता है लेकिन वह हक़ीक़त में दूसरों का तुफ़ैल होता है।

69. एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं कि मैं ने एक ग़ुलाम ख़रीदा, जब मैं उसको लाया तो उससे पूछा कि तुम्हारा क्या नाम है? कहने लगा कि जो नाम आक़ा रखे, मैं ने पूछा कि तुम क्या काम करोगे? कहने लगा कि जो आप हुक्म देंगे। मैं ने पूछा कि तुम क्या खाना चाहते हो (ताकि तुम्हारी ख़ातिर मैं उसका फ़िक्र करूं) कहने लगा मेरे आक़ा जो आप खिलायेंगे? मैं ने पूछा कि तुम्हारा भी किसी चीज़ के खाने का दिल चाहता है? कहने लगा, आक़ा के सामने ग़ुलाम की ख़्वाहिश क्या चीज़ है? जो आक़ा की मरज़ी है, वही ग़ुलाम की ख़्वाहिश है। उसका यह जवाब सुनकर मुझे रोना आ गया। और मुझे यह ख़्याल आया कि मेरा भी तो मेरे मौला (जल्ल शानुहू) के साथ यही मामला होना चाहिए। मैं ने उस से कहा कि तुम ने तो मुझे अपने आक़ा(तआला ज़िक्रुहू) के साथ अदब करना सिखा दिया उसने इस पर दो शेअ्र पढ़े जिनका तर्जुमा यह है कि -

अगर तेरे किसी बंदे की ख़िदमत मुझ से पूरी पूरी अदा हो जाये तो इससे बढ़कर मेरे लिये और क्या नेमत हो सकती है? पस तू महज़ अपने फ़ज़्ल से मेरी कोताही और ग़फ़लत को माफ़ कर, इसलिए कि मैं तुझे बड़ा मुहसिन और बड़ा रहीम समझता हूँ। (रौज़)

70. हज़रत मालिक बिन दीनार रह॰ मशहूर बुज़ुर्गों में हैं, इस रिसाले में उनके कई किस्से ज़िक्र हो चुके हैं। वह इब्तिदा में कुछ अच्छे हाल में न थे, एक शख़्स ने उन से उनकी तौबा का किस्सा पूछा कि क्या बात पेश आयी जिस पर आपने अपनी साबिक़ा ज़िन्दगी से तौबा की? वह कहने लगे कि मैं एक सिपाही था और शराब का बहुत शौक़ीन था और बहुत आदी था (हर वक़्त शराब ही में मुन्हमिक रहता था) मैं ने एक बांदी ख़रीदी जो बहुत ख़ूबसूरत थी और मुझे उस से बहुत ताल्लुक़ था उससे मेरे एक लड़की पैदा हुई। मुझे उस लड़की से भी मुहब्बत थी और वह लड़की भी मुझ से बहुत मानूस थी। यहां तक कि वह पांव चलने लगी तो उस वक़्त मुझे उस से और भी ज़्यादा मुहब्बत हो गयी थी कि हर वक़्त वह मेरे पास ही रहती। लेकिन उसकी आदत यह थी कि जब मैं शराब का गिलास पीने के लिये लेता, वह मेरे हाथ में से छीन कर मेरे कपड़ों पर फेंक देती (मुहब्बत की ज़्यादती की वजह से उसको डांटने को दिल नहीं मानता था) जब वह दो बरस की हो गयी तो उसका इंतिक़ाल हो गया। इस सदमे ने मेरे दिल में ज़ख़्म कर दिया।

एक दिन 15 शअ्बान की रात थी, मैं शराब में मस्त था। इशा की नमाज़ भी न पढ़ी थी, इसी हाल में सो गया। मैं ने ख़्वाब में देखा कि हश्र क़ायम हो गया, लोग क़ब्रों से निकल रहे हैं, मैं भी उन लोगों में हूं जो मैदाने हश्र की तरफ़ जा रहे हैं। मैं ने अपने पीछे कुछ आहट सी सुनी, मैं ने जो मुड़ कर देखा तो एक बहुत बड़ा काला अज़्दहा मेरे पीछे दौड़ा आ रहा है। उसकी कैरी आंखें हैं, मुंह खुला हुआ है और बेतहाशा मेरी तरफ़ को दौड़ा हुआ आ रहा है। मैं उस के डर से घबरा कर ख़ौफ़ ज़दा ज़ोर से भाग रहा हूं और वह मेरे पीछे भागा चला आ रहा है। सामने मुझे एक बूढ़े मियां निहायत नफ़ीस लिबास, निहायत महकती हुई ख़ुश्बू उनमें से आ रही है मिले, मैं ने उनको सलाम किया, उन्होंने जवाब दिया। मैं ने उनसे कहा कि ख़ुदा के वास्ते मेरी मदद कीजिये, वह कहने लगे कि मैं एक ज़ईफ़ आदमी हूं, यह बहुत क़वी है यह मेरे क़ाबू का नहीं है लेकिन तू भाग जा, शायद आगे कोई चीज़ ऐसी मिल जाये जो इस से निजात का सबब बन जाये।

मैं बेतहाशा भागा जा रहा था, मुझे एक टीला नज़र पड़ा, मैं उस पर चढ़ गया, मगर वहां चढ़ते ही मुझे जहन्नम की दहकती हुई आग उस टीले के परे नज़र पड़ी। उसकी दहशत नाक सूरत और उसके मंज़र नज़र आये। इन सब

हालात के देखने के बावजूद उस सांप की इतनी दहशत मुझ पर सवार थी और ऐसी तरह भागा जा रहा था कि मैं क़रीब ही था कि जहन्नम के गढ़े में जा पडूं। इतने में एक ज़ोर की आवाज़ सुनाई दी, कोई कह रहा है पीछे हट जा तू इन (जहन्नमी) लोगों में से नहीं है। मैं वहां से फिर पीछे को दौड़ा वह सांप भी मेरे पीछे को लौट आया, मुझे फिर वह बड़े मियां सफ़ेद लिबास में नज़र पड़े। मैं ने उनसे फिर कहा कि मैं ने पहले भी दर्ख़्वास्त की थी कि इस अज़दहे से किसी तरह बचायें, आपने क़ुबूल न किया।

वह बड़े मियां रोने लगे और कहने लगे मैं बहुत ज़ईफ़ हूं, यह बहुत क़वी है, मैं इसका मुक़ाबला नहीं कर सकता, अलबत्ता सामने यह एक दूसरी पहाड़ी है, इस पर चढ़ जा, इसमें मुसलमानों की कुछ अमानतें रखीं है मुम्किन है तेरी भी कोई ऐसी चीज़ अमानत रखी हो जिसकी मदद से इस अज़दह से बच सके।

मैं भागा हुआ उस पर गया और वह अज़दहा मेरे पीछे पीछे चला आ रहा है,। वहां मैं ने देखा, एक गोल पहाड़ है, उसमें बहुत से ताक़ (खिड़कियां) खुले हुए हैं, उन पर पर्दे पड़े हुए हैं। हर खिड़की के दो किवाड़ हैं सोने के, जिन पर याक़ूत जड़े हुए हैं और मोतियों से लद रहे हैं और हर किवाड़ पर एक रेशमी पर्दा पड़ा हुआ है। मैं जब उस पर चढ़ने लगा तो फ़रिश्तों ने आवाज़ दी कि किवाड़ खोल दो और पर्दे उठा दो और बाहर निकल आओ, शायद इस परेशान हाल की कोई अमानत तुम में ऐसी हो जो इस वक़्त इसको इस मुसीबत से निजात दे।

उसकी आवाज़ के साथ ही एकदम किवाड़ खुल गये और पर्दे उठ गये और उस में चांद जैसी सूरत के बहुत से बच्चे निकले मगर मैं इंतहाई परेशान था कि वह सांप मेरे बिल्कुल ही पास आ गया था। इतने में बच्चे चिल्लाने लगे, अरे तुम सब जल्दी निकल आओ, वह सांप तो इसके पास ही आ गया, इस पर फ़ौजें की फ़ौजें बच्चों की निकल आयीं, उनमें दफ़अतन मेरी निगाह अपनी उस दो साला बच्ची पर पड़ी जो मर गयी थी। वह मुझे देखते ही रोने लगी और कहने लगी, खुदा की क़सम, यह तो मेरे अब्बा हैं और यह कहते ही तीर की तरह कूद कर एक नूर के पलड़े पर चढ़ गयी और अपने बाएं हाथ को मेरे दाहिने हाथ की तरफ़ बाढ़ाया, मैं जल्दी से उस से लिपट गया और उस ने अपने दाहिने हाथ को उस सांप की तरफ़ बढ़ाया। वह फ़ौरन पीछे को भागने लगा। फिर उसने मुझे विठाया और खुद वह मेरी गोद में बैठ गयी। और अपने दाहिने हाथ को मेरी दाढ़ी

पर फेरने लगी और कहने लगी, मेरे अब्बा जान, "अलम यअ्नि लिल्ल ज़ी–न आमनू", अल आयत (सूरः हदीद, रूकूअ 2) क्या ईमान वालों (में से जो लोग गुनाहों में मुब्तला रहते हैं उन) के लिये इस बात का वक़्त अभी तक नहीं आया कि उनके दिल अल्लाह के ज़िक्र के वास्ते और उस हक़ बात के वास्ते जो उन पर नाज़िल हुई है, झुक जायें।

उस की यह बात सुन कर मैं रोने लगा और मैं ने पूछा, क्या बेटी तुम सब क़ुरआन शरीफ़ को जानती हो? वह कहने लगी कि हम सब क़ुरआन शरीफ़ को तुम सबसे ज़्यादा जानते हैं, मैं ने पूछा बेटी यह सांप क्या बला थी जो मेरे पीछे लग गयी थी? उसने कहा कि यह आपके बुरे आमाल थे, आपने उसको अपने गुनाहों से इतना क़वी कर दिया था कि वह आपको अब जहन्नम में खींच कर डालने की फ़िक्र में था। मैं ने पूछा कि वह सफ़ेद पोश ज़ईफ़ बुज़ुर्ग कौन थे? कहने लगी वह आपके नेक अमल थे, जिन को आप ने इतना ज़ईफ़ (कमज़ोर) कर दिया कि वह इस सांप को आप से दफ़ा न कर सके (अलबत्ता इतनी मदद भी कर दी कि बचने का रास्ता बता दिया) मैं ने पूछा कि बेटी तुम इस पहाड़ में क्या करती हो? कहने लगी कि हम सब मुसलमानों के बच्चे हैं, क़ियामत तक हम यहां रहेंगे, आप के आने के मुन्तज़िर हैं, जब आप सब आयेंगे तो हम सब सिफ़ारिश करेंगे। इसके बाद मेरी आंख खुल गयी तो उस सांप की दहशत मुझ पर सवार थी, मैं ने उठते ही अल्लाह जल्ल शानुहू के सामने तौबा की और अपने बुरे अफ़्आल को छोड़ दिया। *(रौज़)*

यह रिसाला अंदाज़े से बहुत ज़्यादा बढ़ गया, शुरू में तो मुख़्तसर ही लिखने का ख़्याल था मगर बे इरादा तवील होता चला गया और अब इस दर्जे तक पहुँच गया कि इसके पढ़ने की उम्मीद भी कम हो चली है कि दीनी रिसालों के पढ़ने के लिये भी हम लोगों के पास वक़्त नहीं है, इस लिए दफ़अतन ख़त्म कर दिया। हक़ तआला शानुहू अपने लुत्फ़ व करम से इस नापाक को भी, जो हर वक़्त मआसी और दुनिया ही में ग़र्क़ रहता है, अपनी तरफ़ रूजूअ् की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये और इस नापाक दुनिया से नफ़रत का ज़ायक़ा नसीब फ़रमा दे।

इस रिसाले की इब्तिदा शव्वाल 1366 हि॰ में हुई थी मगर दर्मियान में ऐसे अवारिज़ पेश आते रहे कि इख़्तिताम में देर ही लगती रही, अब भी इस में